जीवन का सत्व

महान प्रशिक्षण के दिल की खोज

Paul J. Bucknell
पॉल जे. बकनैल

पॉल जे. बकनैल की अन्य किताबें

बाईबल को हमारे जीवन से बात करने के लिए आज अनुमति दें।

* चिंता पर काबू पाना : शांति ढूंढना, परमेश्वर की खोज करना
* विजयेता कैसे बने :
* जीवन का मूल : महान प्रशिक्षण के दिल की खोज
* धार्मिक मनुष्य : जब परमेश्वर एक व्यक्ति को स्पर्श करते हैं।
* वचनों के द्वारा मुक्ति
* परिवार के लिए धार्मिकता की शुरूआत
* बाईबल पर आधारित परवरिश के सिद्वांत और तरीके
* एक महान विवाह का निर्माण
* मसीही विवाह से पहले परामर्शदाताओं के लिए परामर्श
* शिष्यत्व का रिश्ता : प्रशिक्षण को पार करना
* दौड़ को दौड़ें: इच्छाओं पर काबू पाना।
* उत्पत्ति : मूलआधार की पुस्तक
* रोमियों की पुस्तक:जीवित टिप्पणी
* रोमियों की पुस्तक: बाइबल अध्ययन के प्रश्न
* इफिसियो की पुस्तक: बाइबल अध्ययन के प्रश्न
* यीशु के साथ चलना : मसीह में बने रहना।
* तीतूस की पत्री में बाईबल अध्ययन का उत्पादन
* पहला पतरस बाइबल अध्ययन के सवाल: एक पतित दुनिया में जीना
* सेवकाई के अध्ययन में अगला कदम
* सेवकाई के लिए अगुवों का प्रशिक्षण
* योना की पुस्तक का अध्ययन : परमेश्वर के दिल को समझना
* दर्शाए गए निम्नलिखित बिन्दुओं की प्राप्ति हेतु वेबसाईट पर अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

www.foundationsforfreedom.net

जीवन का सत्व

महान प्रशिक्षण के दिल की खोज

जीवन का सत्व

महान प्रशिक्षण के दिल की खोज

पॉल जे. बकनैल

The Life Core: Discovering the Heart of Great Training
Copyright © 2012, Updated 2015 by Paul J. Bucknell
Digital
ISBN- :
ISBN- :
Also in paperback
ISBN-10: 1619930269
ISBN-13: 978-1-61993-026-1
www.foundationsforfreedom.net
Pittsburgh, PA 15212 USA
The NASB version is used unless otherwise stated.
New American Standard Bible ©1960, 1995 used by permission, Lockman Foundation www.lockman.org.
All rights reserved. Limited production is acceptable without prior permission for home and educational
use.
For extensive reproduction contact the author at info@foundationsforfreedom.net.

Translation from English to Hindi is done by Revive India. (www.reviveindia.org)

परिचय

देशों या राज्यों में चेले बनाना – चौका देने वाली चुनौती है। चर्च पूरी दुनिया में फैल गया है, लेकिन कुछ ही चर्चो को मालूम हैं कि शिष्यता क्या है, एवं कैसे शिष्य बनाए। परिणामस्वरूप चर्च को ही इस बात का भुगतना करना पड़ता है। अवधारणा अभी तक हमारे दिलों को ही स्पर्श नहीं कर पाए, क्योंकि विचार काफी हद तक दर्शन के क्षेत्र से बाहर रहते हैं, तथा हमारे हृदय में जगह नहीं ले पाते।

परिस्थितियाँ शीघ्रता से छवियों या प्रभाव के कारण बिगड़ती है और इस स्थिति के कारण हम मानसिक रूप में मीडिया का सहारा लेते हैं। इस प्रकार असंतोष और अविश्वास जीवन में फैल रहा है। इसके बजाये कि विश्वासी दूसरो को यह बताये कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या किया वे कुडकुडाने लगे कि परमेश्वर ने उनके लिए अधिक कार्य क्यो नहीं किये

एक गुब्बारे के विषय में सोचे, कि किस तरह एक गुब्बारा बिना हवा के निराकार है, यह प्रतिक्रिया लोगों को रोमांचित करने में असक्षम है। ठीक इसी तरह जैसे एक पतंग बिना ढांचे के आकाश में नहीं उड़ सकती, यद्यपि हवा बह रही हो, एक पतंग को हवा में उड़ाने के लिए ढांचे की आवश्यकता है ताकि वह आकाश में ऊँची उड़ान भर सके।

मसीही और उसके अद्‌भुत कार्य के बिना हमारा जीवन और हमारा शरीर एक फूल की तरह है जो एक दिन खिलता है और दूसरे दिन मुर्झा जाता है। यह सिर्फ परमेश्वर के शक्तिशाली वचन और उसकी आत्मा के द्वारा जो हमें नया जीवन उत्पादित और आत्मिक आकार, शक्ति और उद्देश्य प्रदान करता है। (1 पतरस 1:24.25 ओह, इसीलिए हमें इस बात को स्मरण रखना है कि मसीह के बिना हम कुछ भी नहीं है। उसे साथ और वह हमारे जीवन के माध्यम से अपने मूल अनुग्रह को प्रगट कर सकता है और उसके नाम को महिमा मिल सकती है।

जीवन का मूल कलीसियाओं में इस बात या इस संकट के मूल कारण का पहचान कराती है, और उचित नेतृत्व व प्रशिक्षण के माध्यम से कलीसिया के हृदय में परमेश्वर के जीवन के एकीकरण पर ध्यान केंद्रित करके व्यवहारिक समाधान का प्रस्ताव देती है। परमेश्वर के जनों को इस बात की आवश्यकता है कि वे अपने कलीसियाओं को, बाईबल कॉलेज, विद्यालय और अपने अगुओं को इस बात के लिए प्रेरित करें कि वे परमेश्वर की सत्यता को कुछ इस रीति से प्रगट करें, ताकि वे दूसरे लोगों के जीवन को बदलने के द्वारा उन्हें नेतृत्व दे सकें।

परमेश्वर के लोगों को अपने जीवन में ईश्वर की शक्तिशाली आध्यात्मिक प्रयोजनों के लिए फिर से जगाने की आवश्यकता है। इफिसियों 4:12–16 हमें इस बात के लिए प्रेरित करता है कि हमें इस पृथ्वीं के महिमा में उठकर एक कलीसिया का पीछा करना है। यह पुस्तक हमें सिर्फ इन बातों को समझने के लिए ही सहायता नहीं करेगी, कि मसीही प्रशिक्षण क्या है, वरन चर्च में या स्कूलों में, औपचारिक या अनौपचारिकता में यह किस प्रकार दिखाई देता है, किंतु उद्देश्यों और वाक्यों को प्राप्त करने में भी हमारी सहायता करेगी। इस पुस्तक के अंतिम मुख्य भागों में कुछ ऐसे अध्याय हैं जो जीवन के मूल सिद्धांतों को चर्चो, मदरसे और मसीही स्कूलों में किस तरह से प्रयोग में लाते हैं, इन सारी बातों का वर्णन किया गया है। अध्ययन अंक, छंद पर ध्यान करने के लिए और आवेदन सवालों के प्रत्येक अध्याय के साथ आध्यात्मिक विकास के दो महत्वपूर्ण चार्ट के परिशिष्ट में स्थित है।

जीवन का सत्व एक ऑडियो और वीडियो शिक्षण साथी की तरह कार्य करता है। चर्चो में आत्मिक विकास के लिए जिम्मेदारी लेता है, और शिष्यत्व के दिल और किस तरह व्यवहारिक रूप से आत्मिक जीवन के विभिन्न चरणों में एक दूसरे के विकास के बारे में बताता है। यह डी–1 (बी.एफ.एफ. शिष्यत्व #1 डिजिटल) पुस्तकालय में पाया जाता है।[1]

सच्चाई को पनपनें दें और परमेश्वर के लोग पुर्नजागृत हो जाए, हमारे मिशन की समाप्ति, चर्चो की परिपूर्णता के द्वारा ही पूरी की जा सकती है, किन्तु मसीही लोगों को स्पष्ट समझ की आवश्यकता है कि किस तरह वे अपने विश्वास में आगे बढ़ रहे है।

इस पीढ़ी को ना केवल गवाहों, ज्ञान और तकनीकी जानकारी की अवश्यक्ता है लेकिन एक ऐसे व्यक्ति कि है, जो परमेश्वर को गहराई से जानता है, और दुसरों को भी ज्ञान, खुशी और परमेश्वर के लिए जोश पहुंचाने की कोशिश करता है।

2012, अद्यतन 2015

रेव्ह, पाल जे. बकनैल

---

[1] www.foundationsforfreedom.net/Help/Store/Intros/DLibrary-D1.html

विषय सूची

जीवन के स्त्रोत

- 1. एक सफलता की कहानी – 10
- 2. दृष्टिकोण का महत्व – 12
- 3. बदलाव आना ही चाहिए – 14
- 4. जीवन की गौरवशाली अभिव्यक्ति – 17
- 5. जीवन का जोर – 20
- 6. नए जीवन के संकेत – 22
- 7. जीवन के स्त्रोत – 24
- 8. आत्मा को पकड़ना – 26

जीवन के स्त्रोत और आप

- 9. जागरूक बनना – 30
- 10. स्वागत – 33
- 11. बढ़ता हुआ विश्वास – 35
- 12. हमारे जीवन के लक्ष्य – 37
- 13. दिशा की मांग – 39
- 14. जिज्ञासा – 41
- 15. बाल अवस्था – # 1 – 44
- 16. युवा अवस्था– # 2 – 47
- 17. परिपक्व अवस्था – # 3 – 49
- 18. जीवन का चक्र – 51

जीवन के स्त्रोत और जीवन के मूल

- 19. शिष्यता का उद्देश्य – 55
- 20. जीवन का सत्व – 58
- 21. दर्शनाभिलाषी – 60
- 22. हमारी सीमाएं – 63
- 23. पूर्णांक के भाग – 66
- 24. एक उद्देश्य के साथ प्रशिक्षण – 68
- 25. सावधानीपूर्वक लक्ष्य का होना – 71
- 26. अंतर को पूरा करना – 73
- 27. नए विश्वासियों को प्रशिक्षित करना – 76
- 28. नए विश्वासियों को तैयार करना – 79
- 29. नए विश्वासियों का सर्मथन करना – 84
- 30. युवा विश्वासी को तैयार करना – 87
- 31. विश्वासियों को परिपक्व बनाना एवं सलाह देना – 91
- 32. विश्वासियों को परिपक्वता से तैयार करना – 92

जीवन के स्रोत और प्रशिक्षण

- 33. मुख्य उद्देश्य – 99
- 34. अंदरूनी कामकाज – 103
- 35. अगुवेपन की उन्नति – 109
- 36. कलीसियाओं में प्रशिक्षण – 113
- 37. प्रशिक्षण विद्यालयों में एकीकरण – 117
- 38. मसीही के 12 स्कूलों में प्रशिक्षण – 121
- 39. एक दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य – 124
- 40. जीवन शान्ति – 127

परिशिष्ट 1–4

परिशिष्ट 1. उत्कृष्ट शिक्षण के लिए मार्गदर्शन – 131

परिशिष्ट 2. जीवन की उपमा – 132

परिशिष्ट 3. प्रवाह – 134

परिशिष्ट 4. लेखक के बारे में – 135

जीवन का स्रोत

अध्याय 1 - 8

1
एक सफल कहानी

असफलता के काले बादल मसीही कलीसिया पर छाए हुयें है। यह आक्रमक रीति से अपने जीवन और आराधना को व्यक्त करने के लिए मसीही स्वतंत्रता को दबाने और दमनकारी संस्कृति पास करने के लिए काफी बुरा है। लेकिन नैतिक रहने के लिए अपनी प्रतिबद्धता से दूर खिसक रहा है। पासबान और विश्वासीगण जैसे : तलाक दे रहे हैं, जुआ के साथ दाग, और दुनिया के साथ छेड़कानी की जा रही है।

परिवार के नींव की खुर और भी बदतर है। हमारे बच्चों के मनों में परमेश्वर के प्रेम के प्रति गिरावट आई है। स्पष्ट रूप से चर्च में कुछ गलत हो रहा है। जिसके कारण किशोर वर्ग की बड़ी संख्या जो चर्च में ही बड़े हुए है वे प्रभु और चर्च को छोड़ रहे हैं।

खतरों में हम दुबके हुए हैं। मुझे आशंका है कि चर्च में क्षय इतना स्पष्ट है कि इसे और अधिक कहे जाने कि आवश्यकता है, पराजयता कि भावना देश भर में जीवित है, और यह हम पर आता है। हम निराशा की परिस्थिति में चले जाते है और ऐसे समय में हम यह सवाल करते है कि हमने स्वयं को सत्य के द्वारा समर्पित कर दिया है और वास्तव में क्या सच है और क्या हम अच्छा कर रहे हैं।

क्या किया जा सकता है।

बुराई के इस प्रलोभन से निपटने के लिए सबसे अच्छे तरीका हैं कि हम वजन की ओर दुबारा फिरें।''सो हम इन बातों के विषय में क्या कहे यदि परमेश्वर हमारी और हैं तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है। (रोमियो 8:31) वास्तव में परमेश्वर हमारे लिए हैं पुराने नियम में कई सफलता की कहानी है ये आदमी की चतुराई की ठेठ सफलता को प्रदर्शित नहीं करता, या उस कहानी की तरह नहीं है। इसके बजाए यह एक व्यक्ति के चित्र को इस तरह से चित्रित करती है कि जब वह अंधेरे समय में भयानक हार का सामना करता है और उस अंधेरे समय में उस आदमी की तस्वीर उभर आती है। केवल उस बिंदु पर बाइबल यह प्रदर्शित करती है कि कैसे परमेश्वर हस्तक्षेप करते हैं और बड़े ही अद्‌भुत तरीके से उस व्यक्ति को बचाते हैं जो उसके नाम को पुकारते हैं।

यह सच्ची कहानियाँ हमें अपरिवर्तित सत्य की याद दिलाती है। हम इसी तरह इस बुरे समय में परमेश्वर की असाधारण शान्ति पर भरोसा करते हैं और उस छुटकारे को देख सकते हैं। हो सकता है, कि हम नहीं जानते कि परमेश्वर इस समस्त संसार के लिए क्या करना चाहते है, किन्तु हम भली भांति इस बात को जानते हैं कि इस वर्तमान परिस्थिति में परमेश्वर हमारे जीवन में क्या करना चाहते हैं। प्रभु परमेश्वर हमें मजबूत बनाना चाहते हैं ताकि हम उस कार्य को पूरा करें जो कार्य उसने हमें सौंपा है जितना अधिक हम आंतरिक जीवन की शांति को स्मरण रखें, उतना ही अधिक हम परमेश्वर की शक्ति को अपने आंतरिक जीवन में समझ पाएंगें। हमें संसाधनों के बीच में भी शिकार करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, परमेश्वर यही चाहते है कि हम उस पर भरोसा रखे, परमेश्वर का वचन हमें यह याद दिलाता है कि वह हमारे पक्ष में है यह एक वास्तविक बढ़ावा है जो हमारे आत्मिक जीवन के लिए है और हमें विश्वास रखना है कि यह सचमुच हमारे आध्यात्मिक जीवन के लिए जरूरी है। परमेश्वर ने हमें सफल होने के लिए बनाया है, ''और सब कुछ हो भी रहा है और कुछ स्थिर भी है'' (इफिसियो 6:13) परमेश्वर के लोग स्थिरता से खड़े रह सकते हैं क्योंकि परमेश्वर इस बात से परेशान नहीं है कि शत्रु कितने है। और ना ही हमें इस बात की चिन्ता करने की जरूरत है।

हमारा सबसे बड़ा खतरा

परमेश्वर, एक मजबूत नदी की तरह है, जो लगातार नीचे के बहाव से महान विकास की तरफ ले चलता है हमारा सबसे बड़ा खतरा यह है कि हम अपनी बेड़ा या नाव को नदी के बाहर करने की अनुमति देते हैं। मसीह लोगों को हमेशा चौकस रहना चाहिए। हम हमेंशा खुद को जागरूक बना कर परमेश्वर की सत्यता के साथ लड़ते हैं जिससे कि वो हमें सुरक्षित रूप से जीवन के उथल-पुथल में हमारी सहायता कर सकते हैं। तब जब परीक्षाएं हमारे पिछले दरवाजे से अपने शैतानी सुझावों के साथ हमारे जीवन में आती है।

कोई भी शान्ति या बल परमेश्वर से बड़ा नहीं है जो परमेश्वर की उत्तम योजनाओं को हताश कर सके। यदि हम परमेश्वर के साथ या वह हमारे साथ है तो हम सब कुछ कर सकते है। ऐसे समय में जब हम संघर्ष कर रहे हैं या हमारी परिस्थिति खराब है उस समय यह जानकर कि परमेश्वर सच्चा है और हमें उस पर भरोसा करना चाहिए, ऐसा निर्णय हमें लेना चाहिए। हम तेजी से हमारे जीवन में परमेश्वर कि लगातार शक्तिशाली और प्रसंगकीय गतिविधि के बारे में जानते हैं, और हम अपने विश्वास का विकास करते है कि कैसे परमेश्वर हमारे तकलीफों के समय में अपनी अनोखी शान्ति को हमारे जीवन में देता है। परमेश्वर कि उपस्थिति की यह जागरूकता और आश्वासन हमारे जीवन में एक शाक्तिशाली बन जाता है।

सीख :-

* युद्ध जीत लिया अर्थात परमेश्वर जीता । हमें हमेशा परमेश्वर की शान्ति को स्मरण रखना है और उस पर भरोसा रखना है।
* प्रभु परमेश्वर हमेशा हमें सशक्त बनाने कि इच्छा रखते है जैसे युसूफ, दानियल, यीशु मसीह, तथा हम इन सभी लोगों के समान बनें और परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का सम्बंध रखे ताकि वह अपनी इच्छाओं को हमारे जीवन के द्वारा पूरा करें।

स्मरण व मनन करने हेतु

* रोमियों 8:31
* इफिसियों 6:13

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ क्या आप आत्मिक रूप से घायल है ? किस क्षेत्र में आप सोचते है कि आप हारे हुए है उन बातों कि सूची बनाए जो सबसे पहले आपके दिमाग में आती हैं।

*

*

*

*

⇨ यदि आप मसीही विश्वास से अपने कदम को बाहर रख चुके हैं, तो प्रभु से क्षमा मांगे और अपने संदेह को कबूल करें और उसके पास वापस लौट आए और अपने आपको भी उसकी बहती नदी में गणना करें।

⇨ इसी वक्त ऊँची आवाज में प्रार्थना करें। (या लिख लें) किसी भी बात की परवाह ना करें और कहे कि किसी रीति से आप लड़ेगें चाहे कितनी भी मुश्किल क्यों न आ जाए, परमेश्वर कि स्तुति करें कि आप विजय है और परमेश्वर की उपस्थिति को आपके जीवन में उस समय में प्राप्त कर रहे हैं जब आप विकट परिस्थिति में है उसके इस साथ के लिए उसके नाम की प्रशंसा करें।

2
दृष्टिकोण की गणना

दृष्टिकोण हमारे जीवन को हमारे सोच के द्वारा ही आकार देते है, और जीवन की कठिनाईयों और समस्याओं में पहुँचकर उसका हल ढुँढने का प्रयास करते हैं। हमारी दृष्टिकोण ही हमारी सहायता कर सकती है या हमें आघात करा सकती है बस हमें इस बात को सोचनें की आवश्यकता है कि हमारे दृष्टिकोण क्या बाईबल पर आधारित है। उदाहरण स्वरूप : यह दुनिया अंतरिक्ष की तुलना में बहुत ही अलग दिखाई देती है जैसा इस पृथ्वी पर है यह वही दुनिया है, लेकिन एक अलग सुविधाजनक मोर्चा है।

दुनिया को देखने के लिए बाईबल दृष्टिकोण एक सटीक जाली को प्रदान करती है। हमारे अधिक अवधारणाओं से हम कुटिल मान्यताओं को गले लगाते है और ये कार्य ही हमारे आध्यात्मिक विकास में बाधा डालते हैं। ताकि हम मसीह की समानता को धारण ना करें और ना ही उसके अच्छे कार्यो को करें। कलीसिया को यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि गलत दृष्टिकोण में पकड़े जाने पर यह धर्मी, व फुर्तीले विश्वास पर बना नहीं रह सकता। एक कमजोर कलीसिया और धर्मभ्रष्ट व्यवहार मसीह हमें वह समय यह दर्शाता है कि हम कुछ और ही बातों में अपनी आस्था या अधिक विश्वास रखते है। (उदाहरणत: - मुर्तियाँ) ।

संसार आधुनिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से दिल और घर पर हमला कर रहा है। यह पीढ़ी कई मामलों में, अनजाने में, अपने सभी रूपों में नास्तिक संसाधनों जैसे की संगीत, वीडियो, साहित्य इत्यादि बातों में लिप्त हुई जा रही है। यदि हम इन बातों को आमंत्रित करते है तो हम अपने घर व कलीसिया को सुरक्षित नहीं रख सकते हैं।

महत्वपूर्ण विकल्प बनाना

आंतरिक युद्ध के दौरान कलीसिया एक राष्ट्र की तरह है। हम अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए मजबूर कर रहे हैं । यद्यपि हम इससे घृणा करते, लड़ते व इसे एक तरफ रखना चाहते हैं। हम या चर्च या तो अपने बच्चों को आत्मिक रूप से प्रशिक्षित करेगें, या तो वे अपने आस-पास के बलों के शिकार होगें, ठीक उसी तरह जिस तरह इस्राएल के लोग अपने आस-पास के देशों का विरोध किया था।

विश्वभर में मसीही कलीसिया केवल एक ही समस्या से ग्रस्त है यह क्रांति ऑनलाईन कनेक्टीविटी के साथ प्रत्येक देशों और संस्कृति पर हमला कर रही है। हाल ही में, मैं दक्षिण मालदीव के एक छोटे से शहर में पासबानों और मसीही अगुवों को प्रशिक्षित करके लौटा हूँ। अनुमान लगाए कि मैंने वहाँ क्या पाया ? युवा वर्ग के लोग स्मार्ट फोन के साथ वेब सर्फिंग कर रहे थे वे इतने गरीब है फिर भी दुनिया के प्रभाव उनके जीवन में उछलकर सामने आया है और उनकी गरीबी को पार करके उनके मन में एक नया आकार दे गया है। आक्रमण आ गया है और अब जरूरत है कि हम अपने बाईबल के ज्ञान को पैना-पैनी करें और सर्म्पण अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि दुनिया अपने घमण्ड, अहंकार और झूठी सोच को हमारे दिमाग में पूरे अधिकार से डाल रही है। यदि हम चर्च को इस खतरे से अवगत कराते है, तो क्या यह समस्या का समाधान है ? नहीं! आरोपित दृष्टिकोण मुश्किल में भर जाते है! यह अत्यंत कठिन है कि हम अपनी मुर्खता कि गलतियों को स्वीकार करें लेकिन इन सभी के साथ हमारे युद्ध में जीतने के लिए जरूरी है कि वह प्रभु परमेश्वर हमें प्रदान करें। हालांकि विश्वासी एक भक्ति की तरह है जो पहली बार अपने हाथ में तलवार उठाता है, और वह पूरी रीति से अपने शब्द-शब्द को साबित करने में निष्प्रभाव कर दिया जाता है।

परिवर्तन आ रहा है

परिवर्तन आना ही चाहिए और यह आएगा किन्तु यह उम्मीद है कि यह दुनिया कि दास्तां के लिए नहीं आता परन्तु यह परिवर्तन आएगा। हमें आवश्यक है हम परमेश्वर के सत्य को परखें और जीत के लिए सवारी करें और दूसरों को धार्मिकता के लिए प्रशिक्षण दें। कृपया गलती ना करें हम नए सत्य के बारे में बात नहीं कर रहे हैं किन्तु परमेश्वर ने भरोसा शब्द के बारे में बात कर रहे हैं। ''ईश्वर का एक-एक वचन ताया हुआ है, वह अपने शरणागतों कि ढाल ठहरा है'' (नीतिवचन : 30:5) कुछ भी नहीं बदला।

हमारी कमजोरियाँ उजागर हो रही हैं अंधियारा कलीसियाओं पर अतिक्रमण कर रहा है अब यह समय बाईबल कि मानसिकता से लौटने का समय है सारे भागों के लिए मसीही शिक्षा दृष्टिकोण का भाग बन गया है। और वह दुनिया कि विधियों से प्रभावित हो गया है जो वह मदरसे और मसीही विद्यालय (सेनोनाटी) से प्रशिक्षित होकर बाहर आ रहे है वे सही रीति से प्रशिक्षित नहीं हो पा रहे है और यह उनके समझौते और उनके निषप्रभावी कार्यो से झलकता है जब वे चर्चो या मिशन संस्थानों में कार्य करते हैं।

परमेश्वर का दृष्टिकोण

हमारी प्रत्येक परिस्थिति में हमें परमेश्वर के नजरिए की आवश्यकता है कि हम क्या देखते हैं ? परमेश्वर ने चर्च को मजबूत और जीवंत बनाने के लिए सबकुछ दिया है, चाहे वह पश्चिम हो या पूर्व हो प्रभु ने इसे बना दिया है ताकि लोग मसीह के स्वभाव को उसकी समानता, चरित्र, विश्वास और उत्साह को प्रतिबिंबित करें और पिता के कार्यो को पूर्ण करें। और उन्होनें उसका दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी-किसी को संदेह हुआ'' (मती: 28: 17-18) यीशु ने उनके पास आकर कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।

परमेश्वर ने हमें यह प्रतिज्ञा दिया है कि वह हमारी सारी जरूरतों को पुरा करेगा जैसे उसने इस्राएलियों को अधिकार दिया था कि प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार कर लो। यीशु मसीह के पास अधिकार था क्या हम परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करते या उस पर संदेह करते हैं ?

शिक्षाएं :-

दुनिया भर के चर्च एक खतरनाक स्थिति में है क्योंकि दुनिया के बढ़ते प्रभाव हमारे मस्तिष्क और जीवन को प्रभावित कर रहे हैं।

चर्च अवसर कि भूमि पर खड़ा हुआ है ताकि अपने पुरानी खाल को उतार कर बाहर फैकें और परमेश्वर कि पूर्ण महिमा को अपने लिए और दुनियाभर के लोगों के लिए लेना चाहते हैं।

मनन और चिंतन

* नीतिवचन : 30:5
* मती : 28 : 17- 18

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ क्या आप सोचते हैं कि कलीसिया में परमेश्वर की सच्चाई है बाधाओं से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है ? या फिर आप पुराने चेलों (शिष्यों) कि तरह कुछ संदेह रखते हैं ? यदि हां, तो आप क्या संदेह रखते हैं? यदि हां, तो आप क्या शंका रखते हैं ?

⇨ आप अपने हालात के बारे में विशेष रूप से सोचे, उस बात को चिन्हित करें जिसमें आप जीत व हार को देखते हैं।

* व्यक्तिगत जीवन
* कार्य
* परिवार और घर
* सेवकाई
* अन्य

3

बदलाव आना ही चाहिए

परिवर्तन हमेशा हमें असहज बना देते है इसलिए हम उसका विरोध करते है। एक बाइबल के विद्वान ने मुझसे शिकायत किया कि उसके स्कूल के सारे प्रोफेसरों को कम्प्यूटर का इस्तेमाल करना ही चाहिए इस तरह के परिवर्तन मामूली है हालांकि इसकी तुलना में चर्च या कलीसिया वास्तविक चुनौतियों का सामना कर रही है, और इसका अस्तित्व अधर में लटका हुआ है।

बढ़े या मर जाए। विजय हो या हार पीड़ित हो। ये सारी बातें हमारे चुनाव पर निर्भर करती है। हमारे चारों तरफ चर्च ढलते जा रहे हैं एक समय में चर्च उदार हुआ करता था परंतु चर्च अब मर रहे हैं, और यही स्थिति अभी सु-समाचार सुनाने वाले चर्चो की भी है। ऐसा कैसे हो सकता है? बाहर की दुनिया में गलत तरीके से संदेश पहुँच रहा है कि संदेश अप्रासंगिक व नपुंसक है लेकिन हम उन्हें कैसे दोष दे सकते है। यदि एक तरफ चर्च अपने यीशु में विश्वास को एक तरफ कर देता है तो यह अप्रासंगिक हो जाता है। और अपनी शान्ति खो बैठता है। सूचना नेटवर्क ने हम गीगाबाईट डेटा फेंक दिया है और इसके द्वारा हमारी आंखों व दिमाग पर हमला किया है। क्या परमेश्वर ने अपने ज्ञान की बाढ़ में तेजी लाने के लिए उसकी सच्चाई के वितरण को खोला है ? बेशक उसने ऐसा किया है लेकिन ठीक उसी समय में दुश्मन उसकी शैतानी योजना के लिए इन उपकरणों का ही उपयोग कर रहा है। हमें अभिभूत महसूस नहीं करना चाहिए, परमेश्वर हमारी सहायता करता है, चाहे दुश्मन किसी भी प्रकार के हत्यारों का इस्तेमाल क्यों न कर लें हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। हो सकता है शैतान परमेश्वर के लोगों से निपटने के लिए अपनी रणनीति को बदल दें लेकिन वह केवल अपनी ही रणनीति में रह पाता है। परन्तु परमेश्वर के लोगों कि सहायता करने की क्षमता हमेशा स्थिर रहती है।

परमेश्वर की गुप्त सहभागिता

यद्यपि पुराने समय में चर्च तितर-बितर हो गए थे और विभिन्न प्रकार के नियमोंनुसार चल रहे थे। ठीक उन चीटिंयों के समान जो कुम्हड़ा के बाम्बी के साथ पूरी रीति से निचोड़ने के भाव रखते हैं। किन्तु फिर भी परमेश्वर उनके साथ था, और उसने कभी भी उनके पक्ष का नहीं छोड़ा। ''सो जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तितर-बितर हो गये थे,'' (प्रेरितों के काम 11:19)।

क्या परमेश्वर चर्च कि ओर देख रहा था) ? निश्चित रूप से हां, उसने इस अवधि में उत्पीड़न का इस्तेमाल किया ताकि उसके शब्द और उसके उद्देश्यों की सच्चाई का प्रचार-प्रसार बहुत ही शीघ्रता से फैलने के लिए उत्पीड़न का इस्तेमाल किया गया था। उत्पीड़न या सताव परमेश्वर के महान योजनाओं की सेवा थी। प्रेरितों के काम अध्याय 13 में हम क्या पाते हैं ? चर्च या कलीसिया उन तितर-बितर हुए चेलों के बारे में बताता है जो अब एक नए आकार में और परमेश्वर के कार्य के लिए तैयार किए गए थे। जो संसार में जाकर सु-समाचार सुनाए। वे सारे चेलें अब अंताकियां कि कलीसिया में थे और सेवकाई कर रहे थे। (प्रेरितों : 13: 1- 3)।

परमेश्वर के कुछ लोग एक तरह की सुक्ष्म या एकमुश्त उत्पीड़न का सामना कर रहे हैं जैसा कि प्रेरितों के काम 13 अध्याय में बताया गया है। दक्षिण ऐशियाई देश में मेरे एक पासबान मित्र को लगातार संदेश दिया जा रहा है और उसे खतरे का सामना करना पड़ रहा है कि वह बाइबल प्रतियां लोगों को वितरित ना करें। हालांकि, दुसरों को अप्रसांगिकता की धमकियों का सामना करना पड़ रहा है। परन्तु चर्च पहले ही की गतिविधियों को जारी रखता है। किन्तु वे एक ही प्रकार का प्रभाव उठा नहीं पा रहे है। यहां तक कि छोटे लीग बेसबॉल खेल परमेश्वर के लोगों को आराधना से दूर रखती है।

समाधान की तलाश

हमारी आराधना की सेवा को छोटा बनाने की एक प्रवृत्ति है। हम ऐसा करते हैं कि यह सिर्फ चाहने या पसंद करने वाले लोगों के लिए है, लेकिन जो लोग परमेश्वर को गहराई से जानते है। उन्हें भी छोटी प्रवृत्ति पसंद है। हम जल्द से जल्द अपने घर पहुंच कर वही करते हैं जो हम चाहते हैं कुछ ही लोग अपने कई खाली समय में अपना मात्र 10 मिनट प्रार्थना के लिए व्यतित करते हैं। परमेश्वर के वचन के प्रति उत्साह हमारे जीवन से कोसों दूर चली गई है। क्योंकि हम नहीं देखते है कि किस तरह यह हमारे जीवन में हमारी सहायता करता है।

हालांकि वास्तव में कुछ भी नहीं बदला है। परमेश्वर का वचन बढ़े ही शक्तिशाली रूप में किसी भी पीढ़ी या संस्कृति या धर्म या संसार में किसी से भी बात कर सकता है। या किसी भी आधुनिक मन के साथ भी क्रियाकलाप कर सकता है। हमारे पुराने तरीके या पद्धति जो हम चर्च या कलीसिया में वचन बांटने के लिए करते हैं वह परमेश्वर के लोगों के जीवन में अपर्याप्त रूप से सांसरिक सोच ने आक्रमण कर लिया है।

प्रश्न यह है कि हम कैसे इन चीजों को बदलने जा रहे हैं? एक नया कार्यक्रम? उच्च शिक्षा? इन सारी बातों में बहुत देर और धीमी हो चुकी है पहले से ही दुनिया में परमेश्वर के लोग अपने समझौते के जीवन में सत्य के शान्ति की चमक के बिना पीड़ा सह रहे हैं। औसत शादी पर बस एक नजर डालें। क्या हम वहां परमेश्वर के प्यार को, देखभाल व शांति को उस विवाह में पाते हैं ? मैंने दुनियाँ भर के पादरियों को प्रशिक्षण दिया हैं और यहां तक कि कई शादियों के प्रशिक्षण का आयोजन भी उनके लिए किया है चरवाहे और भेड़ सब की एक ही कहानी है अधिकतर के पास या उनके विवाह में गंभीर समस्या है और कई लोग विवाह के इस गंभीर परिस्थिति का सामना कर रहे हैं।

मूलभूत समस्या को पहचानें

मैनें देखा है कि परमेश्वर की आत्मा बढ़े ही अद्भुत तरीके से कुछ महान झुण्ड के लोगों और विभिन्न प्रकार की संस्कृति के लोगों को बचाता है। लेकिन कुछ निम्नलिखित पीढ़ियों या पीढ़ी के लोग उनके बहुत ही अधिक उद्देश्य और तिरस्कार्, घृणा के कारण समाप्त या खत्म हो जाते हैं उन्होनें क्या सीखा था वो भूल जाते है। यह नयी पीढ़ी की अस्वीकृति लेकिन किसी भी रूप से अपनाई नहीं गई है। (न्यायियों : 1:2 - 3)।

हालांकि चमत्कार और चंगाई कठिन है, पर हम उनमें एक लहर को नहीं ढूंढ सकते जो हमें उस स्थान तक नहीं पहुंचा सकती जहां हमें होना चाहिए था। मैनें बहुत से मजबूत मसीह अगुवों को सु-समाचार सुनाया और वे अद्भुत रीति से बचाए गए और परमेश्वर के द्वारा एक विशेष समय में सहायता प्राप्त किए, लेकिन यह कई मामलों में सही साबित नहीं हुआ इतना ही नहीं उनके पारिवारिक जीवन में अर्थात उनकी पत्नियों से संबंधित बातों में यह अभी सहायता नहीं कर पाया, हमें मदद के लिए और अतिरिक्त जाने की आवश्यकता है ताकि हम अपने जीवन की सहायता कर सकें और परमेश्वर के एक मजबूत एवं शुद्ध जन बन सकें, और लोगों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति से स्पर्श किए हुए बने रहें।

चर्चो और मसीही स्कूलों में जहां प्रशिक्षण दी जाती है ये सारी समस्या वहां स्थायी रूप से बनी हुई है। उनके पास कार्यप्रणाली का अभाव है जिससे वे लोगों को शक्तिशाली और मसीह के सरल सु-समाचार को जोड़ नहीं पा रहे हैं।

अविश्वास हमारी मूल समस्या है। हमारे व्यक्तिगत अनुभव हमारे दृष्टिकोण को आकार देते हैं। मसीही जीवन जीने के विफलता के कारण हम परमेश्वर के वचन में आशा और आत्मविश्वास को खो बैठते हैं और इससे अविश्वास बढ़ता जाता है। निम्नस्तर की बातों को सहना और गिरी हुई बातों को बर्दाश्त करना एक दूसरे के अविश्वास के कंधों पर सवारी करना है।

बदलाव की जरूरत है।

हमें बदलने की आवश्यकता है और इस दुनियां में मजबूत बनें रहना है। नए कार्यक्रम नए परिवर्तन का प्रस्ताव लाते हैं। किन्तु वे सतही हैं वे मूलभूत समस्याओं से निपटने की उपेक्षा करते हैं और वही समस्या जारी रही है और कार्यक्रम बदलाहट का प्रस्ताव देते रहते है। हम उन पोस्टरों, शिक्षकों, और सु-समाचार प्रचारकों की सराहना करते हैं जिन्होनें कठिन कार्य किया। वे ऐसा सोचते है कि केवल वो ही जोर से बोलते है या प्रेम कि अधिक भावना उत्पन्न करते है तब ही परमेश्वर के लोगों को मदद मिलेगी तो यह सत्य नहीं या ऐसा नहीं हो सकता।

ऐसे चर्च जो दूसरों की सुनते है या और विकल्प के रूप में विभिन्न सम्प्रदायों और पूर्वी धर्मो की पेशकश के लिए प्रयास करते हैं जैसे : टी.एम., योग इत्यादि। वे ऐसा सोचते हैं या आशा रखते हैं कि ये सारी बातें उन बातों को पुरा करने में समर्थ है। जैसा वो चाह रहे हैं कि हो। ऐसा नहीं होता क्योंकि ये सारी बातें जीवन के स्रोत से दूर नेतृत्व करती है। और वे यीशु मसीह के नेतृत्व से भी दूर है।

घर वापसी की राह

हमें परमेश्वर के पास आने की जरूरत है। पश्चाताप हमारे लिए परमेश्वर के पास वापस जाने की राह है। इसलिए, मन फिराओं और लौट आओ की तुम्हारे पाप मिटाए जाए, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रांति के दिन आए। लेकिन एक और कार्य प्रणाली न बनाए और दूसरे तौर तरीकों को लाकर लोगों को ना भरमाए कि उनके मनों का परिवर्तन हो बल्कि आवश्यक जरूरतों को देखकर आवश्यक परिवर्तन लाए।

वास्तविक पश्चाताप के कारण जागृति एक ही समय व स्थान पर कई दिलों में जगह बना रही है। ये व्यक्तिगत परिवर्तन है जो वास्तव में हमारे समग्र संस्कृति की दिशा को बदलने के लिए आवश्यक है। ऐसा न सोचे, कि तटरेखा एक छोटी सी लहर के वश से महासागर वश में आ जाएगा किन्तु सुनामी जो हमारे परम्परागत् दृष्टिकोण को तोड़ती हुई मसीही जीवन में समय का अंकण करती है।

यद्यपि बलिदान के राशि कि पेशकर बहुत ही प्रभावशाली थी, मंदिर का पूर्ण समर्पण इसलिए इतना असाधारण उत्सव बन गया क्योंकि सुलेमान ने परमेश्वर के लोगों की तरफ से प्रार्थना किया था। हमें ऐसे दिल की जरूरत है जो हमें वेदी की ओर ले जाता है। हमें सुलेमान के समान प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता है यदि मेरी प्रजा के लोग, जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें, और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूंगा। और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।'' (2 इति. 7:14)।

और कोई रास्ता नहीं है हमें हमेशा वेदी की तरफ वापस आना होगा जहां से हमें क्षमा की प्राप्ति होगी चाहे अभिशाप, अकाल या कैद - यदि इस्राएल वेदी की तरफ फिरता है/मुड़ता है तो परमेश्वर उसकी सुनेगा और उसे चंगाई देगा। नई वाचा की तहत यीशु मसीही हमारी वेदी है जो हमें क्षमा करने और बहाल करने की चाह रखते हैं।

इस पीढ़ी में चर्च जिस समस्या का सामना कर रही हैं। वह छोटी नहीं है। हम उन्हें बाइबिल के पदो के द्वारा कम करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। हम थोड़े विश्वास का उपयोग करते हैं। हमें अपने दिल को खोलने की शुरूआत करनी चाहिए जहां हम फिर से परमेश्वर के दृष्टिकोण को समझें और जरूरतों के अनुसार कार्य कर सकें।

परमेश्वर को ज्ञान के विस्फोट का कोई डर नहीं है वह इसे इस्तेमाल कर रहा है यह उसकी योजना है कि वह शैतान के हमले के तहत दूल-मुल नहीं है प्रभु स्वर्ग में विराजमान है और अपने दुश्मन को देखते हुए हँसकर कहते हैं (भजन संहिता 1:2) हमें अपने दिल को तैयार करने की आवश्यकता है जिसके लिए परमेश्वर ने हमारे दिल को नम्र बनाया है। घुटने में प्रभु की उपस्थिति में आना और अपने अविश्वास का अंगीकार करना हम आज सु-समाचार प्रासंगिक और शान्तिशाली है ऐसा विश्वास नहीं कर पाते है। यदि हम उसके पास आते है तो वह हमारे पास आएगा और हमें यह दिखाएगा कि कैसे चर्च शक्तिशाली बनकर या उसके प्रकाश के साथ दुनिया के अंधेरे का सामना करके अपनी ज्योति को पूरी दुनियां में प्रगट करेगा।

शिक्षाएं :-

* परमेश्वर चर्चो के ऊपर हुए आक्रमण का इस्तेमाल करते है ताकि हम अपने पुराने दृष्टिकोण को तोड़ दे व पुन: परमेश्वर के गौरवशाली सत्य के शान्ति की खोज करें।
* वास्तव में चर्च जिस समस्या का सामना करती है वह अविश्वास है।
* परिवर्तन की शुरूआत परमेश्वर के पास वापस लौटने के द्वारा होती है अपने दिलों को नम्र बनाते हुए, और अपने पापों का अंगीकार करते हुए।
* परमेश्वर के लोगों को शत्रु ने सामने क्रियान्वित होना व उसे छोड़ देना चाहिए।

मनन व चिंतन

* 2 इतिहास : 7:14
* 2 इतिहास : 6:7
* नहेम्याह : 1 इतिहास (विडियो देखें)

समुनदेशन (असाइनमेंट)

क्या आप स्वयं में और चारो ओर के पास से दूर रहे हैं या आप उसे स्वीकार कर रहे हैं जैसा वह आप के साथ हो रही है ?

नहेम्याह की तरह परमेश्वर की वेदी के पास आए, सिर्फ आपके भटके हुए दिल और आँख और अपने पापों के लिए ही नहीं लेकिन कैसे परमेश्वर के लोग व्यर्थ व निराशा में रह रहे हैं किन्तु उन्हें परमेश्वर की पूरी शान्ति में रहने की जरूरत है उनके लिए मध्यस्थता करें।

4

जीवन की गौरवशाली अभिव्यक्ति

जीवन एक अद्‌भुत रहस्य है जो दुनियाँ के सबसे बड़े रहस्यों को रखता है। हम सभी यह जानते हैं कि भौतिक जीवन क्या है लेकिन हम अवलोकन से ही यह परिभाषित कर सकते है। यह खाता है, बढ़ता है, चलता, सांस लेता है, इत्यादि)

यद्यपि इन मानवता की उपलब्धि की सराहना करते है जो हमारे लिए डी.एन.ए. की पहचान करता है। हालांकि यह जीवन की प्रकृति को स्पष्ट करने में लाभप्रद है किन्तु अभी भी हम अंधकार में ही जी रहे हैं।

आध्यात्मिक जीवन एक विषय है जिसके बारें में अकसर मसीही लोग करते हैं लेकिन वास्तविकता यह है कि अज्ञानता के कारण से हम इसे दबा रहे है। सौभाग्य से हमारे पास वचनों की सुराग या सुप्त है हमें इसके संभावित प्रभाव को हमारे जीवन में खोलने की या उजागर करने की जरूरत है।

जीवन की समानता

बाईबिल के लेखक और यहुन्ना कुछ प्रतीकों से बहुत ही ज्यादा ही चकित थे जैसे : प्रकाश, प्यार और जीवन। परमेश्वर जो आवश्यक आत्मिक सच्चाई के बारें में हमसे बातचीत करना चाहते थे वह इस संसार के भौतिक सृष्टि की उपमा हैं उनमें से ये तीन है, जीवन सबसे मौलिक है यहुन्ना ने कहा ''उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी'' (यहुन्ना 1 : 1 : 4) वास्तव में यहुन्ना यीशु मसीह के बारे में बातें कर रहा था यीशु जीवन था और यही जीवन मानव जाति के लिए समझ और स्पष्टता लाया।

जीवन के इस बुनियादी धारणा के द्वारा शिष्यता को अच्छी तरह से समझ पाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। जब हम जीवन के अवधारणा को ज्यादा समझते हैं उतनी ही आसानी से हम दुसरी सच्चाईयों को पकड़ पाते हैं जीवन एक ऐसा ढांचा है जिस पर सारी सच्चाईयां लटकी हुई है।

नया जीवन आध्यात्मिक जीवन की शुरूआत का वर्णन करती है । जब हम उद्धार की घोषणा करते हैं हममें से और मुझे मिलाकर परमेश्वर के न्याय या फैसले से बचने के लिए अनंत जीवन की घोषणा करते हैं। हमारे पास उद्धार के अनुमान लगाने का कोई भी सुराग नहीं था बेशक हम अगर इसके बारे में सोचते तो हमारे जीवन की शुरूआत होगी यह अकसर पढ़ाया और सिखाया जाता है कि हमें दुबारा या पुनः जन्म लेने की आवश्यकता है। किन्तु बहुत ही कम आध्यात्मिक विकास के बारे में पढ़ाया जाता है।

जीवन एक ढांचा है जिस पर सारी सच्चाईयां लटकी हुई है।

धर्मशास्त्र कक्षाओं में पवित्रता और पवित्रीकरण को जोड़ा जाता है (बहुत ही आवश्यक विषय इसमें कोई भी संदेह नहीं है) लेकिन वे अवधारणा के संदर्भ के प्रस्तुतिकरण को ज्यादा ध्यान देते है ना कि आध्यात्मिक जीवन यापन करने के लिए व्यवहारिक कदम। इतना तो है कि बहुत से लोग पवित्रीकरण क्या है उसका वर्णन कर सकते हैं लेकिन बहुत ही कम लोग इस बात की व्याख्या करते है कि कैसे आध्यात्मिक जीवन प्राप्त किया जा सकता है।

दृष्टि से छिपा हुआ

चर्च के अगुवे सत्य के संवाद को सामग्री के समान कुछ इस तरीके से लपेट के रखते है जिसे केवल सेमीनारी/मदरसे और बाईबिल के ज्ञानी लोग ही समझ सकते हैं यह एक पक्ष है कि कैसे यीशु मसीह ने हमारे दैनिक अनुभवों को जीवन के महत्वपूर्ण सत्य संवादों को हमें बताया हैं

ये महत्वपूर्ण सच्चाई/ धर्मशास्त्रीयों को छोड़कर उन लोगों के लिए सीखने योग्य नहीं होती। यह दिलचस्प बात है कि धर्मशास्त्री अक्सर सबसे ठंडे और प्रतिकूल हो जाते है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शायद क्या वो अपने आप को अपनी दृष्टि से छिपाकर रखते हैं ?

हालांकि किसी भी मामले में परमेश्वर के लोग अपने चर्च के घेरे या चटाइ पर बैठे रहते हैं, इस बात पर निर्भर रहते हैं कि वे कहां पर आराधना करें। यद्यपि वो परमेश्वर के बारे में जानने से प्रेम करते हैं, किंतु काफी हद तक अनभिज्ञ रहते है कि किस तरह व्यवाहरिक रूप से कैसे अपने परमेश्वर के साथ विशेष संबंधो को विकसित करें। कुछ लोगों का निश्चित् परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध है वो इस बात से बेखबर है। कीमती सत्य बंद है, और वो पहुंच से बाहर है। सौभाग्य से वहां कुछ पल ऐसे हैं जिसमें आध्यात्मिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया है जैसे कोस्विक आंदोलन लेकिन यह बहुत ही सीमित है। हम ऐसा भी सोच सकते है कि शाक्तिशाली जागृति ने जड़ से दुबारा परमेश्वर ने लोगों के हृदय और दिमाग को अपनी सत्यता के तरफ खोला। मैं चकित हूं यद्यपि वहां अनुभव की तुलना में सुझावों पर ज्यादा ध्यान दिया गया था किंतु उन्हें इस बात को सीखने की जरूरत नहीं थी कि परमेश्वर की उपस्थिति में कैसे आना चाहिए वह अपनी उज्जवल महिमा में उनके साथ था। उन्होनें आसानी से इस बात को महसूस किया।

चंगाई और वरदानों के बारे में अनेक चर्चाए हुई है। परमेश्वर की कलीसिया के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है और उनमें से कुछ सच्चाईयां प्राप्त भी की गई है। किन्तु वे बड़ी ही कठिनता से चर्च का केन्द्र बिन्दु बन रहे है। कम से कम उन्हें ऐसा नहीं होना चाहिए, हालांकि आध्यात्मिक विकास आस्था के विकास से चमत्कार से आता है। परमेश्वर के लोगों कि एक अल्पसंख्यक संख्या के लिए है जो बुनियादी विश्वास आध्यात्मिक विकास के लिए अग्रनिय है। लेकिन वे उस तरह के नहीं है। जैसा अधीनस्थ परमेश्वर इस्तेमाल करता है। वे मसीह के काम की पुष्टि करने के लिए नहीं होते, और ना ही सर्वेसर्वा बनने के लिए।

परमेश्वर के पास चमत्कार के लिए महान लक्ष्य है। वे केवल एक शुरूआत कर रहे है, उदाहरणत: हालांकि एक व्यक्ति पीठ की चोट से चंगाई प्राप्त कर सकता है और मसीह को प्राप्त कर सकता है, पर वह अभी भी पवित्रात्मा की शान्ति से अपने गुस्से को काबू में रख सकता हैं।

चंगाई ने उसके हृदय को खोल दिया किन्तु यह वह योग्यता नहीं जो उसकी जीभ को उसके क्रोध के समय नियंत्रित रखे। परमेश्वर (इफिसियों 4:16-29) अगर वह इस बात को नहीं सीखता कि कैसे आत्मा इसके साथ उसकी मदद कर सकता है। तो वह अपनी पत्नी को धमकाता है और संभवत: एक दबंग भावना की आत्मा के साथ चर्च में जाता है।

आत्मिक अनुशासन

मसीही अनुशासन से जुड़े अनुशासन पर जब ध्यान दिया गया तब मसीही लोगों ने मसीहत का विलाल बेहतर किया। लेकिन कभी -कभी केन्द्र बिन्दु की कार्यप्रणाली बहुत अधिक दिखाई दी। हालांकि वो महत्वपूर्ण है किन्तु यह उद्देश्य के अंत का कारण भी हो सकता है।, क्या आपने अपने आपको बाईबिल पढ़ने व प्रार्थना करने के बाद बधाई दिया, लेकिन यह आपके जीवन में बहुत ज्यादा नवीनीकरण नहीं लाया? इस मामले में अनुष्ठान ने नवीनीकरण की जरूरत को बदल दिया।

विश्वासियों को इनके विकास के लिए उत्साहित करना एक तरह से उनसे यह कहना है कि वे लगातार ड्रायविंग करते रहे जिससे वे अपने गंतव्य तक पहुंच जाएगें। शुरूआत में वो बहुत ही ज्यादा कार में उत्साहित है और अपनी यात्रा की शुरूआत और उसी यात्रा की समाप्ति के लिए भी। किन्तु धीरे -धीरे ड्रायविंग के बाद और लगातार जब वे अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पा रहे है तो वे अपना ध्यान खो बैठते हैं और अपने आप में प्रश्न करते हैं मैं ऐसा क्यों कर रहा हूँ ?

मसीही प्रशिक्षण और शिक्षा केन्द्र में पहचान करने में गलती कर दी कि विश्वासी लोग कहां जा रहे हैं और कैसे उन्हें वहां लाया जाए (और मेरा मतलब स्वर्ग नहीं)। प्रभु ने इस मूलभूत सत्य को इतना सरल और संचारी बनाया है।क्यों चर्च उन्हें पारित करने में इतना निष्प्रभावी है? चर्च अनावश्यक अज्ञानता और व्यर्थता में ऐंठा हुआ है, जबकि परमेश्वर का वचन आसानी से पढ़ा और अध्ययन दिया जा सकता है?

यह समय है कि हम न केवल जानने के लिए किंतु यह आवश्यक है कि हम उसे फैलायें एवं पहुंचाये क्योंकि एक पूर्ण और प्रचुर मात्रा में मसीही जीवन व्यतीत करना बहुत ही महत्वपूर्ण हैं । यहुन्ना 10: 10 ''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाए, और बहुतायत से पाए''। पतरस ने कहा '' वह आप ही हमारी पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के मर करके धार्मिकता के लिए जीवन बिताए, उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए'' (पतरस 2: 24)

शिक्षाएं :–

* परमेश्वर हमसे यह चाहते हैं कि हम सच्चाईयों को जाने और इसीलिए उन्होनें अपनी रचना में हमें बनाया।
* यीशु और शास्त्र लेखकों ने जीवन सहित उपमा का इस्तेमाल किया जिससे हम महत्वपूर्ण सत्य को समझें जो हमारे मसीह जीवन के लिए बेहद आवश्यक है।
* एक चर्च पूरे रूप में वास्तव में जीवन और उसके उद्देश्य के अवधारणा को नहीं समझा है।
* मसीह शिक्षण संसाधनों ने अपने छात्रों के जीवन को लकवाग्रस्त किया हैं किन्तु बहुत ही ज्यादा चर्च को।

मनन और चिंतन

* यहुन्ना : 1 : 4
* यहुन्ना : 10 : 10

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ आप अपने आध्यात्मिक जीवन के लिए उत्तम करें और कैसे एक व्यक्ति का आत्मिक विकास होता है।

⇨ मसीही जीवन का लक्ष्य क्या है ? जितना संभव हो विषय से जुड़े रहें।

⇨ क्या आप पाते हैं कि लोग मसीही जीवन में बहुतायत को देखते है। या खोजतें हैं ? अपना जवाब समझाएं।

⇨ आध्यात्मिक जीवन और उसकी परिपूर्णता के विकास के बारे में वो कौन सी समस्या है जो स्पष्ट नहीं है। समझाइयें क्यों ?

5
जीवन का जोर

सरलता सबसे अच्छा है । बार बार यह साबित हो गया है कि सरल सबसे उत्तम है। आत्मिक विकास के प्रशिक्षण के लिए भी यह सत्य है।

परमेश्वर ने जीवन के महत्वपूर्ण सत्य को सिद्धांतों के द्वारा या उस पर चित लगाया है जो बड़ी ही आसानी से इस सृष्टि में देखी जाती हैं। यही कारण है कि यीशु मसीह ने उत्पत्ति से सरल दृष्टांतों का इस्तेमाल किया अन्यथा अस्पष्ट आत्मिक सच्चाई। उत्पत्ति, उदाहरण के लिए आध्यात्मिक विकास का एक बहुत ही स्पष्ट तस्वीर प्रदान करती है। आध्यात्मिक जीवन की वजह से अपनी आध्यात्मिक जीवन का वर्णन करना मुश्किल है। हम इसकी शुरूआत व विकास के बारे में कई बातें जानते है एक पल के लिए सोचे वास्तव में हम कैसे रहते हैं, क्या आपने देखा है कि माता-पिता सुबह बहुत जल्दी उठ जाते हैं और बच्चों के पास जाकर उनसे कहते हैं बढ़ो-बढ़ो और विकसीत हो जाओ, यह हास्यापद होगा, इसलिए नहीं कि हम उन्हें बढ़ता हुआ नहीं देखना चाहते हैं। कोई भी माता-पिता चिंतित नहीं होगें? यदि उनके बच्चे ठीक ढंग से बढ़ नहीं रहे हैं तो। हम ऐसा नहीं करते क्योंकि हम जानते है कि विकास स्वाभाविक रूप से आता है। विकास हमारी योजना या उत्साह के द्वारा नहीं आता लेकिन विकास हमारे जीवन का भाग है। जीवन यह जानता है कि कैसे इसका विकास और कैसे उसे आगे बढ़ाना है। यही सत्य आध्यात्मिक जीवन के साथ भी है। एक बार की प्रस्तुति से एक व्यक्ति बड़ी आसानी से अपने आत्मनिर्णय के विकास को देख सकता है। किसी भी व्यक्ति को किसी के साथ आकार मसीहीयों को यह कहने की आवश्यकता नहीं है ''बढ़ो-बढ़ो, बढ़ो या विकसित हो जाओ''। यह विश्वासियों की आगे बढ़ने में सहायता नहीं करेगा लेकिन निश्चित रूप से उन्हें भ्रमित कर सकता है।

जीवन की उपस्थिति

परमेश्वर का आत्मा जीवन के इन छवियों से जुड़ा हुआ है क्योंकि आत्मा जीवन है, ''आत्मा जीवन देता है'' आत्मिक जीवन विश्वासियों के जीवन में प्रगट होता हैं जब पवित्रात्मा नए जीवन की शुरूआत करता है। एक बार जब पवित्रात्मा विश्वासियों के जीवन में ध्यान केंद्रित करने के लिए आता है तो कोई स्त्री या पुरूष विकास और अभिव्यक्ति के रास्ते पर नियुक्त किया जाता है। यह बस शारीरिक विकास की तरह ही है यह लक्ष्य अपने अस्तित्व की अभिपुष्टि नहीं है परन्तु परिपक्वता का विकास है।

जब विश्वासीगण यह महसूस करते हैं, तो उनके आध्यात्मिक विकास के बारे में आशंका अलग स्थित हो सकती है। विश्वासियों में पवित्रात्मा की उपस्थिति उन्हें यह विश्वास दिलाती हैं कि उन्हें शान्ति और उनके आत्मिक जीवन की परिपक्वता में परिपूर्णता लाती हैं। परेशान होने के बजाए कि वे अपने अतीत में चल रही विफलताओं की वजह से विकसीत हो सकते हैं। वे परमेश्वर के लक्ष्यों या उद्देश्य में प्रसन्न रह सकते हैं। और तरीके देख सकते हैं कि परमेश्वर उनके लिए उनके जीवन में अपने लक्ष्यों को पुरा करेगा।

विश्वास चिन्ता की जगह ले लेती है या उसे हरा देती हैं प्रत्यक्ष दिशा की कमी को हरा देती है। जब हम परमेश्वर के कार्य पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं तो उत्साह की शुरूआत होती हैं और वह उस समय शुरू होता है जब से हम विश्वास में आए हुए होते है। विश्वास के प्रारंभ में नवीनीकरण की भी शुरूआत होती है। यह ना केवल व्यक्तिगत विश्वासी के लिए लेकिन परमेश्वर के प्रशिक्षित लोगों के लिए होती हैं यह सच है। शिक्षकों को भी परमेश्वर की अलौकिक शक्ति को स्वीकार करना चाहिए और विश्वासियों में परमेश्वर की अलौकिक शान्ति की तलाश करनी चाहिए।

परमेश्वर ने जो आरंभ किया है। वह उसे जारी भी रखेगा। अगर उसने हमें नया जन्म दिया है, तो इसका मतलब यह है कि पृथ्वी में रहते समय हमें अपना विकास करना चाहिए। ''और मुझे इस बात का भरोसा हैं, कि जिसने तुममें अच्छा काम आरंम्भ किया है, (फिलिपियो : 1:6)

आत्मिक जीवन पर निरीक्षण

हमें इससे कुछ सरल लेकिन शक्तिशाली निष्कर्ष निकालना चाहिए। कुछ लोग चकित रहते है कि अक्सर विश्वासी लोग आध्यात्मिक रूप से क्यों नहीं बढ़ रहे है। आत्मिक विकास की समस्या आम तौर पर नहीं परन्तु इसकी गुणवत्ता है। भौतिक जीवन की तरह कि हम जीवित है या नहीं। एक व्यक्ति कभी भी यह नहीं कहता कि ''मैं पर्याप्त जीवित नहीं हूँ'', हालांकि शारीरिक समस्या जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। सही अर्थ में एक व्यक्ति यदि वास्तविक रूप से जन्म को प्राप्त किया है तो उसका/उसकी आत्मिक जीवन के विकास के लिए वर्तमान में पूर्व रीति से खत्म है। और वह पूरी तरफ से तैयार किया गया है।

आध्यात्मिक जीवन सभी के लिए समान है। हमें अपने जीवन में सिर्फ इस बात को सुनिश्चित करना है कि हमारा जीवन मौजूद है, और तब हममें विश्वास होना चाहिए कि जीवन स्वयं अपने विकास को कदम से कदम बढ़ाकर ढुंढ लेगा। आत्मिक जीवन के विभिन्न गुण व श्रेणियां नहीं होती। हमें इस बात का निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि एक पासबान का आत्मिक जीवन हमसे बेहतर है।

मसीही लोग विभिन्न प्रकार की गति के द्वारा विकास कर सकते है, किन्तु यह किसी शक्ति या जीवन के स्रोत की वजह से नहीं है। इसके लिए अन्य कारण है।

शिक्षा

* विश्वासियों को अपने आपको अप्राकृतिक या असामान्य बनाने की आवश्यकता नहीं है। आत्मिक जीवन स्वाभाविक रूप से वास्तविक विश्वासियों के जीवन में विकास करता है।
* परमेश्वर के जीवन में विभिन्न प्रकार कि उपाधि या गुण नहीं हैं, परमेश्वर प्रत्येक विश्वासियों के जीवन में समानता से रहते हैं।
* नवीनीकरण की शुरूआत तब होती है जब हमारा हृदय परमेश्वर की सराहना करता हैं और जीने के लिए इच्छा रखता है, आगे बढ़ने और काम में हमारे भौतिक व आत्मिक जीवन के द्वारा व्यक्त करता है।

मनन और चिंतन

* फिलीपियो : 1: 6
* कुरिन्थियों : 3 : 6

समनुदेशन (असाइनमेंट)

➪ केवल वास्तविक विश्वासी ही नया जन्म प्राप्त किए हुए हैं (''कि उसी तरह उपर से पैदा हुआ)। क्या आप निश्चित कर सकते है कि आपने नया जन्म प्राप्त किया है ? उदाहरण के लिए जानों कि परमेश्वर ने यीशु मसीही की क्रुस कि मृत्यु के माध्यम से क्षमा पाया। समझाईये।

➪ एक बिन्दू बनाए और तारीख व समय लिखे : जब आप अच्छे विश्वासी बन जाते है तब यह बात आपके अच्छे स्मरण शक्ति के लिए है। कब आत्मिक जीवन की शुरूआत आपके जीवन में हुई। तो एक रेखा खिंचे और उसे सही करने के लिए एक तीर का निशान बनाए, यह तीर आपके जीवन में परमेश्वर के विशेष प्रकार की नामित विकास का प्रतीक है और परमेश्वर इसे आपके जीवन में लाने की योजना बना रहा है।

➪ इफिसियों 1:13 – 14 पढ़े। ध्यान दें कि कैसे पवित्रात्मा सारे वास्तविक विश्वासीयों के दिल में रहता है। आपके जीवन में किए गये कार्य के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें।

6
नए जीवन के संकेत

अध्यात्मिक जीवन वो ज्यादतर भौतिक जीवन एक मुख्य लेकिन शाक्तिशाली बल हैं जो सारे मसीही विश्वासियों में निहित है। हमें इस बात को सुनिश्चित कर लेवें कि जरूरत हैं कि हममें वो आत्मिक जीवन है स्मरण रखों कि प्रभु यीशु मसीह ने यह चेतावनी दी थी कि गेहूं और जंगली दानों में बुनियादी फर्क है। और जिनके पास सही व वास्तिविक जीवन परमेश्वर से हैं और जो मानता है। (मत्ती 13: 24 - 30)

शुरूआत में, लगभग अंतर को पता लगाना असंभव है। मुझे लगता है कि भौतिक जीवन के साथ भी यही सच है। गर्भ में दूर छिपा हुआ है, किन्तु जीवन की उपस्थित वाणी के लिए हम संकेतों को देख सकते है। एक पराश्रय चित्रण (सोनोग्राफी) गर्भ के भीतर अर्थात एक अजन्में बच्चे की क्रियाएं और उसकी विशेषताओं को दर्शा या दिखा सकता है और एक उम्मीद करने वाली माँ को उसके बच्चे के स्वास्थ्य के बारे में आश्वस्त करता है यदि यह गर्भ में सत्य पाया जाता है तो निश्चित रूप से यह बाहर भी सच होता है।

हमारे बच्चों के जन्म के तुरंत बाद बच्चों की प्रसाविका / दाई नये जन्में बच्चों का परीक्षण उनके रंग, श्वास, नाड़ी दर, इत्यादि द्वारा करती है। इन सारे परीक्षण से ही जीवन की उपस्थिति को दर्शाया जाता हैं।

भौतिक दुनिया में हम काफी बड़ी संख्या में लोगों की हरकतों का वर्णन करते है जैसे पानी या वातावरण जैसे धाराएं या हवाएं - वे पर्याप्त और विशाल हैं जिसे सहजपूर्वक महसूस व देखा जा सकता है।

हम देखते हैं कि बादल ऊपर बड़ी ऊँचाई के साथ क्रियांन्ति हैं या एक पत्ता नदी की सतह पर बहता हुआ देख सकते है। यीशु, परमेश्वर के आत्मा की तुलना हवा और पानी से है '' हवा जिधर चाहती है, उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती और किधर को जाती है ? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है'' (यहुन्ना 3: 8)। यहुन्ना 4 में यीशु बहते हुए पानी के उपयोग से हमें बेहतर आत्मिक जीवन के बारे में समझाते हैं, ''परन्तु जो कोई उस जल में से पीयेगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनंतकाल तक प्यासा न होगा, वरण जो जल मैं उसे दूंगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनंत जीवन के लिए उमड़ता रहेगा। (यहुन्ना 4: 14)

ये उपमा जीवन के भीतर निहित शक्ति हैं। प्रत्येक लोग जीवन के राजसी सत्ता के बारे में उसकी दिशा के साथ वार्तालाप करते हैं। यीशु ने यहुन्ना तीन में आत्मा का वर्णन किया है कि उसी प्रकार जैसे हवा इस या उस तरफ से बह रही है। बल ध्यान केन्द्रित करने के बजाए बिखरा हुआ पड़ा है और ऐसा ही आत्मिक जीवन के साथ है अर्थात आत्मिक जीवन परिपूर्ण और मुक्त हैं, फिर भी उद्देश्यपूर्ण है।

आत्माओं के कार्य की अभिव्यक्ति

यहुन्ना 3:8 में यह स्पष्ट है कि एक विश्वासी आत्मा से जन्मा है। उसके आत्मिक जीवन की पहचान परमेश्वर की आत्मा के साथ की जाती है। आत्मिक जीवन के पास अपने स्वयं के संकेत होगे, जो पूरी रीति से पवित्रात्मा की उपस्थिति से जुड़े रहेगें। यहां पर आत्मा से द्वारा उत्पन्न इस नए जीवन के कुछ संकेत मिल रहे हैं।

* परमेश्वर के वचनों के लिए लालसा।
* अन्य विश्वासियों के साथ लालायित होना।
* परमेश्वर से बात - चीत करने की इच्छा रखना (प्रार्थना)।

* पापों के प्रति जागरूकता
* यीशु मसीह के माध्यम से क्षमा प्राप्ति की जरूरत।
* परमेश्वर और उसकी राह के बढ़ता हुआ स्नेह।
* दूसरे की जरूरतों और उनके देखभाल के प्रति जागरूकता।

यह सूची आगे जा सकती थी, लेकिन हमने इसे गिना नहीं है। ताकि हम मसीह में नए जीवन पर जोर डालें। जो कुछ बुनियादी इच्छाओं और ज्ञान के माध्यम से स्वयं को व्यक्त करता हैं, जैसे एक बच्चा जन्म लेता हैं तो वह सांस लेता है,चलता, रोता है और उसे भूख भी लगती है।

यीशु ने कहा ''सो मन फिराओ के योग्य फल लाओं'' (मती : 3: 8) इसका क्या मतलब था ? यीशु ने यह सिर्फ इसलिए कहा, कि यदि वे परमेश्वर के सामना रहने लिए पेशेवर हैं तो उनके जीवन में स्पष्ट लक्षण होना चाहिए । इस परिस्थिति में वे अपने पापों के बारे अवगत होकर अपने आप को नम्र बनाएगें। और लोगों से गलत व्यवहार करने के बजाए, वे उनका ध्यान रखेगें। नए जीवन के कई लक्षण है, जो कुछ हमारी परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं, कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक स्पष्ट है। और कुछ हमारी परिस्थितियों पर निर्भर करता है। हमारे नए जीवन के जन्म से जो पवित्रात्मा के द्वारा हमारे दिल में गहराई से है। यह उनमें तना या डंठल चाहते हैं। वे हमारे सोचे और स्वभाव को समय के साथ आकार देगें, और यह हमारे आध्यात्मिक विकास को दूसरों के लिए स्पष्ट कर देगा।

शिक्षाएं :–

* हवाएं और नदियां हमें पवित्रात्मा की उपस्थिति उद्देश्य और शान्ति के बारे में सिखाते हैं।
* नया जीवन हमारे आत्मा में आत्मा की उपस्थिति से ही आता है।
* आध्यात्मिक जीवन भौतिक जीवन की तरह हैं । संकेत के माध्यम से अपनी असलीयत का पता दूसरों की उम्मीद से पता चलता है।
* आध्यातमिक जीवन में ये संकेत हमेशा एक वास्तविक विश्वासी के जीवन में बने रहेगें। हालांकि वे दामित या पाप में जारी रहेने के द्वारा क्षतिग्रस्त किया जा सकता है।

मनन और चिंतन

* मत्ती : 3:8
* 1 यहुन्ना : 3:10,23 – 24

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ उस समय के बारे में सोचों जब आप पहली बार यीशु के पास आए थे। जीवन के संकेत की समीक्षा करें। क्या आप अपने जीवन में उन्हें निरीक्षण कर सकते हैं ? सबसे महत्वपूर्ण जो है वह नीचे लिखे .....।

*

*

*

*

- आज के बारे में क्या? क्या यह संकेत अभी वहां है। प्रभु से लालच और बहती को उन्हें दबाना होगा लेकिन आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है? यदि ऊपर दर्शाए गए संकेतों में आपके लिए कुछ भी सत्य हैं तो नीचे बनाए हुए चिन्ह के नीचे उन्हें लिखें।

- उन्हें नीचे लिखने के बाद हर एक को जोर से इस तरह प्रार्थना करें, '' प्रभु मैं तेरे वचनों से प्यार करता हूँ'' ये सारी गहरी इच्छाएं अब आप के लिए सत्य है आपने उन्हें पूरी तरह से व्यक्त किया है या नहीं (परन्तु प्रार्थना बहुत महत्वपूर्ण है)।
- यदि ये सारी इच्छाएं आपका सच नही ंतो अधिक से अधिक संभावना है कि आपमें अभी जीवन की आत्मा नहीं है। आपको प्रभु के पास आकर उसे जानने की जरूरत है। प्रभु जो पुकारे िकवह यीशु के नाम में आपको बचा सके।
- यहुन्ना 3:1-18 और यहुन्ना 4:10-14 का अध्ययन करें जैसा आपको मिलता है। कुंजी वाक्यांशों का पता लगाए। जो पवित्र आत्मा के साथ हवा और पानी को जोड़ता है। और हमें याद दिलाता है कि पवित्र आत्मा अनंत जीवन का स्रोत है।

7

जीवन के स्रोत

आत्मिक जीवन भौतिक जीवन की तरह प्रत्येक मसीही विश्वासियों के जीवन में निहित एक शक्तिशाली बल है। यदि एक बार स्वीकार कर लिया जाए तो नया जीवन अलग-अलग साधनों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए शुक्र होते हैं।

यह जीवन, एक शक्तिशाली बहती हुई धारा के समान हैं, यह ध्यान देने योग्य और निर्देशित है यह जीवन की शान्ति पर जोर नहीं डालता, उदाहरण के लिए हमें दूसरों के बारे गलत सोच लाता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि यह पवित्र आत्मा के दबाव के द्वारा होता या उसके स्रोत के द्वारा होता है। परमेश्वर स्वयं हममें जन्म लेते हैं या श्रेष्ठता से जन्में हैं ''यीशू ने उत्तर दिया, कि मैं तूझसे सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो व परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर हैं, और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।'' (यहुन्ना : 3:5-6) हमारे नए जीवन के शक्तिशाली स्रोत स्वयं परमेश्वर हैं हमारा नया जीवन ठीक वैसा है जैसे पवित्रात्मा अपना जीवन हमारे जीवन के द्वारा जीता है। यही एक कारण है कि शास्त्र सामान्यत: नए विश्वासियों को उल्लेखित करता है कि आत्मा में नए जीवन का होना या आत्मा के रूप में होना (एक ही युनानी शब्द से बाईबल में है)

परमेश्वर का आत्मा हमारे मध्य में काम कर रहा है।

यह समझ आवश्यक है क्योंकि इसके माध्यम से हम यह देख सकते हैं की पवित्रात्मा हमारी कई तरह से मदद करता है। वह में और भी अधिक पिता की तरह बनाना चाहता है। इस कारण वह अपनी शन्ति को अपने लक्ष्य के अनुरूप खिंचता है। (वह सिर्फ एक शक्ति नहीं है पर स्वयं परमेश्वर है) ठीक उसी तरह जैसे पवित्र आत्मा) हमें उसके अच्छे और पवित्र उद्देश्य के विपरीत गलत या बुराई या कोई भी बात जो उसके अच्छे और पवित्र उद्देश्य के विपरीत है ।

अधिकतर हमारे मसीही जीवन के गुण की पहचान पवित्रात्मा के द्वारा की जाती, िकवह हमारे जीवन से क्या चाहता है। और विश्वास को नाम लेने के द्वारा वह उन्हें बाहर ले जाता है।

आत्मा की शन्ति, प्रभावशाली है हम उसे वश में नहीं कर सकते (उदा. उसमें) हम सफलतापूर्वक उसका मुकाबला भी नहीं कर सकते और ना ही उसे खेदित कर सकते हैं, (इफिसियों - 4:30) । हमारी बेहतर आशा जैसे सफेद पानी के कढ़ी के समान है, जो अपने सारे प्रयासों को पाठ्यक्रम में डाल देते है। ताकि वह साथ रहे और शक्तिशाली आत्मा के पाठ्यक्रम के साथ भी चलते हैं।

शिक्षाएं :-

* पवित्र आत्मा हमारे नए जीवन के शक्ति का स्रोत है, यह हमें प्रेरणादायक और शक्ति प्रदान करता है ताकि हम परमेश्वर की इच्छानुसार सारे कार्य को करें।
* हमें अपने दम पर मजबूत होने की जरूरत नहीं है हम उन इन्सानों की तरह है जो लठ्ठो की बेड़ा को उठाते हैं और इस बात पर अपना ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है कि उन्हें बाहर ले जा सके जैसे परमेश्वर का आत्मा हमारे जीवन से चाहता है।

मनन और चिन्तन

* यहुन्ना : 3 : 5-6
* 1 यहुन्ना : 5 : 1 : 4

[4] यहाँ बहुत तकलीफ पाने के लिए इच्छुक नहीं पर इसके गुण बहुत दिलचस्प है, यहुन्ना 3 इस बात को दर्शाता है कि परमेश्वर के आत्मा के साथ जन्मे हुए और ोज यहुन्ना परमेश्वर के यहुन्ना की समक्ष इस बात को दर्शाती है कि आत्मा परमेश्वर की समानता के साथ है।

समनुदेशन (असाईनमेंट)

⇨ पवित्रात्मा आपसे क्या चाहता है, तीन बातों को बताओ ' ' '

*

*

*

⇨ परमेश्वर से प्रार्थना करके कहें। उसे धन्यवाद दे कि उसने आपको उसे प्रसन्न करने के लिए इच्छा दिया है। और इन बातों को बाहर ले जाने के लिए शक्ति दिया है। परमेश्वर से विशेष ज्ञान, शान्ति और सहायता के लिए प्रार्थना करें जिससे आत्मा के द्वारा या उसकी रक्षा के साथ आप दिन रीति से इन सारी प्रतिक्रियाओं को बाहर ले जाकर परमेश्वर की महिमा कर सकते है।

8

आत्मा को पकड़े

एक बड़ी नदी की तस्वीर विश्वासी की जीवन में बहती धाराओं के समान है। एक अन्य तेज हवा धाराएं हैं हालांकि तूफानों में वातमम् हवाएं हो सकती हैं वे एक बड़ी प्रणाणी का हिस्सा है जो विशाल बहती धाराओं में शामिल हैं हवाओं के पास दिशाएं है जो मानदण्डों के भीतर कार्यस्त रहती है।

ये मजबूत धाराएं हमें हमारे जीवन में पवित्रात्मा के काम के बारे में अधिक रूप से सोचने में मदद करते हैं। सबने हले हमें, जैसे पिछले अध्याय में वार्तालाप किया गया, हमें स्मरण रखना है कि कैसे परमेश्वर अपनी योजनाओं को बाहर ले जा रहा है। तूफान के बीच में हम बह रही हवा के दिशा के मध्य उलझन महसूस करते हैं हमें चितिंत होने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि किसी भी तरह परमेश्वर उसे नियंत्रित करते है तब जब दुष्ट ताकते उभर कर आती है। हमारा कर्तव्य है कि हम परमेश्वर के अधिक से अधिक प्रयोजनों में अपनी छोटी किन्तु महत्वपूर्ण भूमिका अदा करें। इस बात को मान लेना है कि चाहे हालत कितने भी कठिन ना हो लेकिन आप परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किए जाना चाहते हैं। हमें इस बात को भी याद रखना है कि जितनी भी शक्ति हमारे पास है उसे हमें परमेश्वर की योजनाओ के लिए ही उसे ले जाना है। हमें यह निश्चय करना चाहिए कि हम परमेश्वर को प्रसन्न करें और उसकी शान्ति पर निर्भर रहें। हवा का झौंका एक तस्वीर को प्रगट करता है कि कैसे हमें परमेश्वर के आत्मा की आवश्यकता है। कि वो हमारी मदद करें। उकाब के शक्तिशाली पंख तो होते है परन्तु उन पंखों के नीचे तेज बहती हवाओं की आवश्यकता होती और वह अत्यधिक ऊँचाई पर उड़ते हैं।

मेरा एक मित्र है जो आकाश में ऊँचाई पर (ग्लाइडर) के माध्यम से लटका रहता है(उसके तस्वीरों को उपर से देखता है) मुझे नहीं लगता कि हमें ऐसा करना चाहिए। हमारे पास एक चुनाव है या तो हम वैसे हवा में लटके अन्यथा नहीं। लेकिन परमेश्वर की आत्मा के साथ रहने के साथ नहीं। लेकिन सवाल यह है कि कैसे हम परमेश्वर के उद्देश्यों में कार्यस्त है नई विश्वासी इस एक बात पर विश्वास करते है कि मुझे मालूम नहीं परमेश्वर क्या कर रहे हैं।

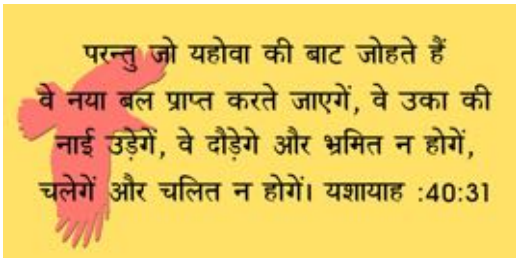

जीवन के असम्भव चरण

आत्मा हमेशा हमें परमेश्वर के कार्यो को करने के लिए अगुवाई करेगी। कभी-कभी यह उन मार्गो में ले जाएगी जो असम्भव दिखाई देगी। वे मार्ग असंभव क्यो लगेगें ?

* शारीरिक रूप से हमारे क्षमताओं से परें।
* अपर्याप्त समय
* आर्थिक रूप से अपने मतलब से परे।
* परिवार और दोस्तों द्वारा प्रतिकार
* अपर्याप्त योग्यता व दान/ तोड़े।
* आत्मविश्वास की कमी।

यह सूची आगे जा सकती थी , आत्मा हालांकि कई बार हमें मुश्किल हालत में नेतृत्व करेगें। क्या आपने एक कठिन व्यक्ति का अनुभव किया है ? जरूर। आपको यकीन रखना है कि वो आपको धैर्य देगा, और वो सारी चीजें जो परमेश्वर से प्रेम रखने के लिए जरूरी है। यह परमेश्वर के चिन्हित राह है जो हमें प्राकृतिक क्षमता से परे जाने के लिए कह रहे हैं जिससे हम उस पर भरोसा रख सकते हैं।

हम अक्सर स्वाभाविक प्रवृत्ति के साथ जाते है, और व्यक्तित्व और सहज ज्ञान के आधार पर निर्भर रहते हैं। कुछ लोग किसी भी बात में पतरस की तरह बहादुर है। हालांकि वे हमेशा सफलतापूर्वक बाहर नहीं आते हैं। और कुछ अधिक डरपोक है थोमा की तरह। वो संदेह की वजह से हार जायेगें।

यहां हमारी बात में आपको यह दिखाना नहीं है कि कैसे पवित्र आत्मा के साथ कार्य करना चाहिए, पर यह उजागर करना है कि वह कैसे कार्य करता है। और हमें उसके मदद के लिए उस पर भरोसा रखने की आवश्यकता है। (बेहतर आध्यात्मिक विकास और युद्ध की गतिशीलता को समझने के लिए शिष्यत्व के दूसरे स्तर पर हमारी किताब को देखें) केवल परमेश्वर के पास शक्ति, बुद्धि और अंतदृष्टि है जो जानता है कि कैसे उसकी इच्छा को पूरी करने के लिए विशेषकर शैतान की तरह एक चालाक दुश्मन जो हमारे निधन की मांग करता है।

अपने ध्यान को केन्द्रित और जागृत रखें

यीशु ने कहा ''जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो, आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है'' (मती 26:41) वास्तविक विश्वासी के पास इच्छा होती है कि वो परमेश्वर को प्रसन्न रखें, लेकिन किसी तरह हम प्रलोभन में परमेश्वर हमारी विपरीत परिस्थिति को संभालने में हमारी मदद को कर सकते हैं। हमें न सिर्फ प्रार्थना के समय में अपने ध्यान चाहता है, किंतु यह भी सीखें कैसे उससे विश्वास शक्ति और ज्ञान को हासिल करें। जब हम प्रार्थना प्रारंभ करते हैं शायद उस समय हमारे पास ये आवश्यक चीजें ना हो किंतु जब हम प्रार्थना के द्वारा उसके पास आते हैं वो हमें वो सारी चीजें देगा।

परमेश्वर को बातों के लिए प्यार और परमेश्वर की बातों को लगाने की चाह यह सब पवित्र आत्मा के तरफ से है। ये तब हममे प्रत्यारोपित किये गये जब हमने मसीह पर उद्धार अपने दम पर भावनाओं को उत्पादित करने की जरूरत नहीं हैं। नया विश्वासी परमेश्वर की आराधना उतनी गहराई से कर सकता है जैसा एक अनुभवी मसीही। हमें उन इच्छाओं को विकसित करने के लिए संघर्ष करने की जरूरत नहीं है। लेकिन हम पर भ्रम आ सकता है, जब हम यह प्रश्न करते है कि हम किसे प्यार करते है, और हम कौन है, और हमें क्या करना चाहिए। परमेश्वर की सच्चाई की प्राप्ति हमारे स्वयं के सच को मसीह में स्पष्ट करती है, जब बुराई हमारे सच्चाई की पहचान पर पट्टी करने की कोशिश करता है।

परमेश्वर हमारी ताकत है। और शक्तिशाली हवा हमें अपने साथ ले जानें, जैसे हम उसके सिद्धांतों के पालन और सहायता के लिए उसे फोन करते हैं।

शिक्षायें :

* परमेश्वर हमसे उनसे ज्ञान, समय, अवसर के लिए उस पर भरोसा चाहतें हैं, और अन्य चीजों के लिए ताकि उनका कार्य पूरा हो।
* प्रभु बेसब्री से हमें उस चीज को देना चाहते है जो उसकी इच्छा को पूरी करने के लिए हमारे जरूरत है। लेकिन हम अपने स्वयं के संसाधनों पर भरोसा रखते हैं, जो हमें अंततः असफल कर देती है।
* कभी-कभी असंभव लोगों और परिस्थितियों का सामना करते हैं, लेकिन परमेश्वर तब भी हमारे साथ रहते हैं ताकि हमारे सफल होने में हमारी मदद करें, जब हमें चमत्कार की जरूरत हैं।

मनन चिंतन

* मत्ती 26: 41
* भजन संहिता 5 : 3 यशायाह 40 : 31

समनुदेशन (असाईनमेंट)

➪ किस मायने में आप अपने स्वयं के संसाधनों पर भरोसा रखते हुए परमेश्वर के कार्य को बहर हो जाते हैं, लेकिन उसमें निराश और विफल हो जाते हैं।

*

*

*

➪ आपका व्यक्तित्व कैसा है? और किस प्रकार के हैं, कठिन परिस्थिति के माध्यम से आप कैसे प्राप्त करने की कोशिश कर सकते हैं?

➪ मत्ती 26 : 41 ध्यान में रखते हुए क्या आप 'जागते और प्रार्थना' करते हैं, या केवल तब जब आप सोचते हैं कि यह कठिन परिस्थिति है या दैनिक आत्मिक अनुशासन में? समझाईयें।

जीवन का स्रोत और आप

अध्याय 9 - 18

9
जागरूक बनना

आम तौर पर आत्मा कैसे काम करता है, हमें व्यक्तिगत दृष्टिकोण से उसके काम को देखने की आवश्यकता है। इस पुस्तक के अंतिम भाग में हम शिक्षण और प्रशिक्षकों के नजरिये को देगें।

हमारे भौतिक जीवन में हम अक्सर जीवन की मौजूदगी से अन्जान रहते हैं और पूरी तरह से इसे जीवन के द्वारा संचालित शक्तिशाली जीवन शान्ति से प्रभावित है, और हम अपने दैनिक जीवन के गुणों से बेखबर रहते हैं।

जवान स्त्री और पुरूष जो अपने यौवन शरीर के दौर से गुजर रहे है वे अपने शारीरिक परिवर्तन और रूचि की और अत्यधिक सजग रहते हैं। किन्तु अभी तक वे बड़ी कठिनता से उस विषय में सोच पाए हैं जो उनके जीवन में बदलाहट लाता है। परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी के लोग इस बात पर अधिक ध्यान देने में ढल लाते हैं कि वे क्या है। बाद में जिंदगी में लोग अपना अधिक ध्यान क्या उनके पास है उस पर लगाते हैं। कुछ लोग अपने आप को व्यस्क के रूप में विकसित करने में सक्षम है और बाद में नौकरी पाने के लिए सक्षम है। कारोबार के दिन व अवकाश के दिन दोनों हमारी शारीरिक व आध्यात्मिक समझ और जागरूकता को नकाबपोश बना दिए है।

हमारी अज्ञानता परमेश्वर के लिए ध्यान कि सभी ओर सबको सख्त बनाने वाली सांस, और परमेश्वर ने हमको सांस फुंका है। जीवन के रहस्य के बारे में हमें अप्रशंसनीय बनाता है। अकृतज्ञता हमें स्वतंत्र रहने की ओर ले जाती है जो बदले में अहंकार की भावना को जन्म अकृतज्ञता हमें स्वतंत्र रहने की ओर ले जाती है जो बदले में अहंकार की भावना को जन्म देती है।

यह आज से भौतिक वादी और धर्मनिरपेक्ष क्रम से किया गया है कि सभी बात रसायनों के द्वारा परिभाषित की गई है। लम्बे समय तक उनके जीवन की शान्ति की प्रेरणा को देखने के लिए कोई नहीं है। वे आसानी से परमेश्वर के इस दुनियां के मामलों की भागीदारी को रोक देते हैं। जबकि वे प्रत्येक कार्यो के लिए और हर पल उसी पर निर्भर रहते है।

एक छिपी हुई आध्यात्मिक समस्या

इस अज्ञानता के एक अन्य स्तर पर चर्च को भी प्रभावित किया है। हम हमारे आत्मिक जीवन मे बल देने वाली शान्ति के लिए कमजोर है। हम हमारे ध्यान को ज्यादतर क्या हम देखते है उस पर केन्द्रित करते हैं परन्तु उस बात पर ध्यान नहीं लगाते जो हमें शान्ति के लिए सक्षम बनाता है।

मेरे जीवनकाल के दौरान में परमेश्वर की उपस्थिति ने चर्च को ताजा कर दिया है। रे स्टेडमेन के द्वारा पुस्तक, शरीर जीवन ने परमेश्वर के लोगों को आत्मिक वरदान साथ ही साथ परमेश्वर की आत्मा जो अपने लोगों को इन सारे वरदानों के लिए सशक्त बनाता है, साथ ही दोनों के बीच व्यवाहारिक और धार्मिक अधिकार के प्रति जागरूक बनाता है। परमेश्वर के लोग आशीषित थे, किंतु यह संक्षिप्त विकास कम था, और अन्य धार्मिक विकासों के पीछे छुपा हुआ था।

एक समान तरीके से करिश्माई आंदोलन आत्मिक वरदान और पवित्र आत्मा से जुड़ा हुआ है किन्तु दुनियां भर में इसकी खींच बहुत ही व्यापक थी। लोगों ने बाईबिल अध्ययन और प्रार्थना सभा बेजान चर्चो में भी शुरू कर दिया। भले ही इन उपहारों में से एक दृश्य पर है, और निश्चित रूप से कुछ स्थानों में संकेत पर ज्यादा ध्यान दिया गया है, आत्मा के कार्य ने हमारे जीवन में नए सिरे से ध्यान को जीवन में लाया है जिससे हमारे मृत्यु चर्च में एक नए रूप में जगह बना लिया है।

जब हम परमेश्वर की आत्मिक जागृति के अपने मसीही जीवन से अलग करेगें, उतना ही ज्यादा हम आत्मिक जीवन में मृत बनेगें। कलीसियां या चर्च के बारे में जान लेने से हम कलीसिया के सदस्य नहीं बन जाते और ना ही परमेश्वर के बारे में अत्यधिक जानना परमेश्वर को जान लेना नहीं है। ये अच्छा है जब हम इन बातों को जान लें। परमेश्वर का हमारे जीवन या प्रशिक्षण में केन्द्रिय स्थानों पर जोर डालने की उपेक्षा एक बड़ी बाधा बन सकता है। इस आत्मिक अंधेपन को अविश्वास कहा जाता है। और हमें सफलता हासिल नहीं हो पाती।

पूर्ववतन का पुर्नजागरण

पिछला पुर्नजागरण परमेश्वर की एक बड़ी वेदति या जागरूकता का बहाल करती है। लोग यह जानते थे कि यह वह नहीं जो उन्होनें किया और फर्क लाया, परंतु परमेश्वर का ही आत्मा उनके माध्यम से कार्यरत था। हमारे मौलिक जीवन के माध्यम से परमेश्वर की आत्मा सक्रिय रूप से कार्यरत है। जब विकृतियां उत्पन्न होती है जैसे :- धार्मिकता, धार्मिक गौरव, आध्यात्मिक अब वे हमारे नैतिक स्तर को नीचे कर देते हैं उन सारे परिणामों में यह स्पष्ट हो ही नहीं पाता कि परमेश्वर कैसे हमारे जीवन के जरिए कार्यरत रहते हैं। या काम करते हैं।

जिसके परिणाम स्वरूप धार्मिक मानवतावाद भाईचारे को समाप्त कर देता है। मनुष्यों का केन्द्रबिन्दु उनके प्रयासों पर है ना कि परमेश्वर पर । बिलकुल ठीक आज के समाज में हम मानवीकरण के विश्व को देखते हैं।

व्यवहारिक नास्तिकता

मैनें व्यवाहारिक नास्तिकता शब्द का इस्तेमाल कई वर्षो के विश्वासियों के मानसिकता का जो कई वर्षो से विश्वासी है जो अपने मसीही जीवन का संचालन बिना परमेश्वर की उपस्थिति के करते है। भजनकार ने परमेश्वर के लोगों को आगह किया है ''मनुश्य चाहे प्रतिष्ठित भी हो, परन्तु यदि वे समझ नहीं रखते, तो वे पशुओं के समान है जो मर मिटते हैं।'' (भजन : 49 : 20)

मसीही लोग परमेश्वर की सच्ची जागरूकता की उपस्थिति के बिना एक बड़ी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। परमेश्वर परदे के पीछे है किन्तु विश्वासी लोग किसी भी वास्तविक चेतना के बिना कहीं भी जा सकते हैं। यह बात उनके लिए स्तय है जो परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं। वे उपदेश देने, सिखाने और सु. समाचार का प्रचार कर सकते हैं। लेकिन वे पवित्र आत्मा के आंतरिक कार्य से अन्जाने हैं। हमें प्रश्न पूछना चाहिए कि ''क्या परमेश्वर वास्तव में उनको विश्वास प्रणाली का हिस्सा है ? क्या उनकी धार्मिक गतिविधियां परमेश्वर के बिना बाहर जा सकती है ? यदि हाँ तो यह मानव निर्मित परमेश्वर के बनाए और इन्सान के बनाए में तुलना किया जा रहा है। और यह अपनी सही पहचान को क्या प्रगट नहीं करता ? चर्च में एक कुंजी महत्वपूर्ण रणनीति लौटनी चाहिए जो विश्वासियों के जीवन में परमेश्वर के कार्य के लिए निरंतर जागरूकता देती है। यह ऐसा नहीं है कि जैसा एक व्यक्ति दे रहा है। चर्च चल रहा है या गरीब मदद कर रहा है। हम परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हैं। और वह हमारे जीवन के माध्यम से उसके अच्छे उद्देश्यों को बाहर ले रहा है।

मुर्ख ने अपने हृदय में कहा है ''कोई परमेश्वर है ही नहीं। वे बिगड़ गए, उन्होनें घिनौने काम किए है, कोई सुकर्मी नहीं, परमेश्वर ने स्वर्ग में से मनुष्यों पर दृष्टि की है कि देखे कि कोई बुद्धिमान, कोई परमेश्वर का खोजी है या नहीं। क्या किसी अर्थनादि को कुछ भी ज्ञान नहीं रहता। जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते है जैसे रोटी, और परमेश्वर का नाम नहीं लेते ? (भजन : 1:4 : 1 - 4)

उसकी उपस्थिति की मांग

जागरूकता हमारे जीवन में जब आती है जब हम पुन: अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति को अपने जीवन में जगह देते हैं। जब तक हम आत्मनिर्भर है हम अपने स्वयं के संसाधनों से कार्य करते है। और थोड़ी या कोई महिमा परमेश्वर को नहीं देते।

जब हम किसी तरह हताश - निराश हो जाते तब हम उसे पुकारते है। जब हम उसकी उपस्थिति को जानते है और प्रार्थना में मिले प्रत्युतर का अनुभव करते है। तब सच्ची आराधना की शुरूआत होती है ।

इस तरह परमेश्वर हमारे जीवन को जीवन्त करने के लिए हमारे कठिन समय को उपयोग करता है। (भजन 119 : 23 - 24) क्या होगा किसी तरह जब हम नियमित रूप से उसके चेहरे कि ओर निहारने की वजह यदि हमारे जीवन में तकलीफों और परेशानियों का सामना हों?

हमारे समाज के लोगों ने एक होकर ऐसा सोचना शुरू कर दिया है कि यदि परमेश्वर कार्यरत नहीं हैं और यही सांसरिक सोच चर्च में भी आ गई है। जहां हम सीमित अन्तर को दुनिया और मान लेने वाले विश्वासियों के जीवन में देखते हैं।

शिक्षाएं

* मानव जाति सहित कई स्वीकृत मसीही परमेश्वर के भौतिक और आध्यात्मिक जीवन देने के बलों से अनजान रहते हैं।
* हमारे जीवन में परमेश्वर के एक कार्य के चेतना के बिना, हमारे हृदय कठोर हो जाते है। और अहंकार बढ़ता है।
* जब हम अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति पर अपने ध्यान को केन्द्रित करते हैं। तब हम नम्र रहे हैं, सराहनीय भी है, परमेश्वर केन्द्रित और हम उस पर भली-भांति निर्भर है।

मनन और चिंतन

* भजन संहिता : 14 : 1 - 2
* फिलिप्पीयो : 3 : 17 - 19

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ परमेश्वर की ओर से स्वायत्ता के संकेत के लिए अपने जीवन की जाँच । क्या आप अपना मसीही जीवन जी रहे है या उसे परमेश्वर की मदद और मार्गदर्शन की भावना के बिना बाहर ले जाने या उसे करते हैं। समझाइये।

⇨ आप अपने आसपास के लोगों की चेतना का मूल्यांकन परमेश्वर की उपस्थिति (चर्च और गैर चर्च) का मूल्यांकन करते हैं। मसीहीयों के लिए क्या वे प्रार्थना करते है या परमेश्वर से वार्तालाप करते है ? क्या परमेश्वर अपने वचन के माध्यम से उनसे बाते कर रहे हैं ? या बस इसे पढ़ रहे हैं ?

10
स्वागत करना

जब परमेश्वर हमारे दिलों दिमाग में जीवित है हम लगातार उसकी उपस्थिति को चाहते है। यहुन्ना अपने सु.समाचार के प्रथम अध्याय में जिज्ञासी तरीके से कहते हैं सर्वप्रथम जीवन के बारे में कहते है। जो संसार में आया और अपनी पहचान जीवन और प्रकाश को यीशु मसीही में ही है इस बात से अपनी पहचान कराता है । (यहुन्ना 1 : 14) ।

पूर्ववर्ती वचन यह बताते है कि ''जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते है। तो लोहू से ना शरीर की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए है। (यहुन्ना : 1 : 12 - 13) जिसने परमेश्वर को प्राप्त किया वे एक हैं जिसे परमेश्वर ने उसके नए जीवन और परमेश्वर ने उनमें जन्म लिया ओर उसकी आत्मा दे दी और उस नए जीवन को अस्तित्व में लाया।

ये उसका स्वागत कर रहे हैं। या उसका ही स्वागत कर रहे हैं। युनानी शब्द का इस्तेमा अपने घर में आए हुए व्यक्ति का अभिवादन और स्वागत एक मेजबान के रूप में ही किया गया है।

एक व्यक्ति जो अपने मेहमान का स्वागत करता है और उसका मनोरंजन करता है, और एक व्यक्ति अपने अतिथि की उपस्थिति को मान्यता नहीं देता है। इन दोनों में क्या अंतर है। परमेश्वर हमारे आसपास सिर्फ एक ऊर्जा या शक्ति के रूप में नहीं रहते हैं। वह एक व्यक्ति है और हम उसे सक्रिय रूप से मनोरंजन कराते है, उसे प्रसन्न रखते है और उसे घर पर महसूस करते है। मजबूत मसीही जीवन आत्मा के माध्यम से परमेश्वर के साथ चल रही एक रिश्ते के समान है।

परमेश्वर की उपस्थिति की चेतना होने के नाते एक व्यक्ति के दिल के द्वारा पीछा किया जाता है। वह स्वागत करता व उसे चाहता है शब्द ''तलाश'' शास्त्र में कई बार इस्तेमाल किया गया है परन्तु यह अस्पृश्य है। मैनें कई बार इस पर मनन किया है और उस पर कई बार ध्यान साधने की कोशिश की ओर उसका पूर्ण निहितार्थ करने की कोशिश किया है।

प्रभु की खोज यर्थात रूप से बनी है, जो यह दर्शाती है कि परमेश्वर है। जहां विश्वास तस्वीर में आती है। क्योंकि हम उसे नहीं देख सकते है। ''और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास चाहिए कि वह है और अपने खोजनेवाले को प्रतिफल देता है। (इब्रानियो 11 : 6)

विश्वास मसीही जीवन के रीढ़ की हड्डी है। विश्वास के बिना कोई आध्यात्मिक जीवन नहीं है। परमेश्वर ने राजा रहूबियान के बारे में कहां, ''उस ने वह कर्म किया जो बुरा है, अर्थात् उसने अपने मन को यहोवा की खोज में न लगाया है।'' (2 इतिहास 12 : 14)।

जब एक व्यक्ति परमेश्वर को ढूंढता है, वहां ना सिर्फ परमेश्वर के बारे में जागरूकता, लेकिन उसे जानने और उसे प्रसन्न करने की इच्छा है। उसके लिए हमारे खोज इच्छाओं की अभिव्यक्ति है कि हम उसे और उसकी इच्छा को जानें। हम उसे जानना चाहते हैं और उसके तरीके से सीखना चाहते हैं। हम उसके करीब आना चाहते हैं और उसके कार्य में शामिल होना चाहते हैं।

एक मेजबान अपने मेहमान को घर जैसा ही महसूस कराता है। उस समय तक मेहमान, मेजबान और घर का हिस्सा बन जाता है। एक मसीही विश्वासी के लिए उसका व्यक्तिगत संबंध कभी समाप्त नहीं होता है। विश्वासी के जीवन में यीशु मसीह जब प्रवेश कर लेते है तब वह तेजी उस मेहमान का अपने जीवन में रहने का क्या मतलब है खोजता है।

शिक्षाएं

* विश्वासी शुरूआत (उद्धार के साथ) में ही यीशु का स्वागत नहीं करता है, परन्तु उसके जीवन में लगातार यीशु मसीह के बारे में उसकी जागरूकता को गहरा करने का प्रयास करता है।

* विश्वास नए प्रकृति से उत्पन्न होता है जो परमेश्वर हमें देता है। एक बढ़ता हुआ विश्वास हमारा जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति और उसके कार्यो का स्वागत करते हुए प्रतिनिधित्व करता है।

मनन और चिंतन

* इब्रानियो : 11 : 6
* यहुन्ना : 1 : 12 – 13

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ अपने विचारों को वापस लाए जब परमेश्वर ने आपके हृदय को उसका प्रत्युत्तर देने के लिए खोला। यहुन्ना 1 : 12 – 13 पर प्रतिबिंबित और कैसे आपने अपना हृदय उसके लिए खोला।

⇨ बाईबल में इस वाक्यांश की खोज करें ''परमेश्वर की तलाश'' टिप्पणियाँ बनाए।

⇨ पिछले हफ्ते या सप्ताह के बारे में सोचे। किस प्रकार आपने प्रभु की खोज की ? और यह कितना आपके लिए महत्वपूर्ण था ? बहुत ज्यादा नहीं ..... , थोड़ा..... अत्यधिक? समझाईए।

11
बढ़ता हुआ विश्वास

जिस तरह हम स्वीकार करते है, तलाश और प्रभु का पीछा करते है ये हमारे मसीही जीवन की वृद्धि के लिए प्रभु का कार्य करना जरूरी है। ये प्रतिक्रियाएं केवल आध्यात्मिक विकास ही वर्णन करती है, जैसे ऊँचाई में बढ़ रहे, परिपक्व और मजबूत हो रहे है ये भौतिक विकास के संकेतक है।

विश्वासी जो परमेश्वर की तलाश करते है और वो उनके विश्वास को मजबूत बनाती है। जो उसको नहीं ढुंढते वे विश्वास में नहीं जीते। लेकिन दृष्टि से जीने के लिए वापस छोड़ दिए जाते है।

मसीहियों के पास दो प्रमुख चुनौतियां हैं, और प्रत्येक को उनके अपने (उसका/उसकी) विश्वास करने की आवश्यकता होती है।

1. गिरी हुई अवस्था में (स्त्री/पुरूष) को प्रभु के पास वापस कैसे लौटना है, इसे सीखना है।

2. लगातार प्रभु का पीछा करना, जब सारी परिस्थितियां ठीक है।

इन दोनों मामलों में विश्वास कि जरूरत है जब एक विश्वासी अपने हृदय को नम्र बनाना है, वास्तविक स्वीकारोक्ति के संयुक्तता के साथ, परमेश्वर को ढूंढते हुए वह अपने विश्वास का व्यायाम /कसरत कर रहा है।

राजा रहूबियाम, उसके पिता सुलेमान के विपरीत था उसने अपने शासन की शुरूआत अच्छी तरह से नहीं किया था बुद्धिमान सलाहकारों की वजह उसने अपने दोस्तों के विचारों को स्वीकार किया था। परिणामस्वरूप उसका राज्य विभाजित हो गया। किन्तु इतने बड़े झटके के बावजूद, जब उसने प्रभु की तलाश किया वह आषिशीत हो गया था।

यह केवल उन प्रारंभिक वर्षो में हुआ जब वह परमेश्वर से दूर हो गया था। परन्तु जब रहूबियामक ा राज्य दृढ़ हो गया और वह आप स्थिर हो गया तब उसने और उसके साथ सारे इस्राएल ने यहोवा की व्यवस्था को त्याग दिया । (2 इतिहास 12 : 1)

इस भाग को लगातार सीधे रहूबियाम के पांचवे वर्ष में जब उसने परेशानी का सामना किया तब इसे जोड़ दिया। अपने अविश्वास की अवधि के साथ उसने समस्या का सामना किया। ''क्योंकि उन्होनें जो यहोवा से विश्वासघात किया इस कारण राजा रहूवियाम दूर हो गया'' (2 इतिहास 12 :2) हांलाकि प्रभु ने रहूबियाम की ताड़ना कि जब वह उससे दूर हो गया था और जब उसने प्रभु को दुबारा पुकारा था।

> जब रहूबियाम दीन हुआ तब यहोवा का क्रोध उस पर से उतर गया और उसने उसका पुरा विनाश ना किया और यहुदा ने अच्छे गुण भी थे। (2 इतिहास 12 : 12)

इन सिद्धांतों के साथ कैसे परमेश्वर अपने लोगों के साथ कार्य करते है इन बातों को जानना हमारे लिए महत्वपूर्ण है, किन्तु यह परस्पर जोड़ने के लिए संकटपूर्ण है कि हम परमेश्वर की तस्वीर और पूरे प्रशिक्षण योजना से क्या अनुभव कर रहें है। यह हमें और अधिक करने के लिए सक्षम बनाता है कि शीघ्रता से स्पष्ट तस्वीर को समझे कि कैसे परमेश्वर हमारे साथ काम कर रहे हैं। और उसमें कैसे सुधार लाना चाहिए।

विश्वास के तथ्य

हमारा आध्यात्मिक कल्याण हमारे विश्वास पर निर्भर है, ''वास्वतिक समय में'' हम परमेश्वर के बारे में क्या विश्वास करते है, जब हमारा विश्वास मजबूत है। तो हमारा आध्यात्मिक बढ़ता है। और जब यह कमजोर है, तो हम आध्यात्मिक हार के साथ संघर्ष करते है।

हमारे विश्वासी की सामर्थ हमारे पिछले कार्य पर या वर्तमान में हम क्या अच्छा या बुरा कर रहे थे उस पर निर्भर नहीं है। याद रखे, जब उसने टूट गया, तो उसने परमेश्वर को पुकारा। हमारी आध्यात्मिक अच्छाई इस बात पर निर्भर करती है। कि हम वर्तमान में प्रभु को वैसे उत्तर देते हैं।

इस बात को बताता है कि हम कैसे गिर सकते है जबकि सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है ऐसा प्रतीत होता है, हम टुटी हुई अवस्था में परमेश्वर को विशेष सहायता के लिए बुलाते है। और उसे प्राप्त कर सकते है। हमारी शक्ति हमारे वर्तमान विश्वास पर निर्भर करती है।

परमेश्वर हमें आध्यात्मिक विफलता से बचने के लिए और हमें मजबूत रखना चाहता है। शास्त्र नियमित रूप से हमें मजबूत करने के लिए समझाता है। एक मजबूत विश्वास हमें प्रलोभनों के आंतरिक व बाह्य से यह सिखाता है कि कैसे हमें अपने ध्यान को केन्द्रित और स्थिर रखने के लिए सीखना चाहिए। विश्वास में मजबूत रहें। प्रत्येक परिदृश्य पर मनन करना और कैसे एक व्यक्ति प्रभु को ढुंढता है यह बात आगे उसके विश्वास को मजबूत करती है। हमारा बढ़ता हुआ विश्वास नजदिकता से जुड़ा हुआ है और परमेश्वर के कार्य की पुष्टि और बारिकी से हमारे निर्णयों को आकार देता है। आध्यात्मिक कमजोरी विश्वास की कमी से जुड़ी हुई है। और हमारे जीवन के क्षेत्रों में एक या अधिक करने के लिए एक या एक से अधिक करने के लिए प्रभु महत्वपूर्ण है।

इन परिवर्तनों और अवसरों ने चुपके से हमारे दिल में और दिमाग में जगह ले लिया हैं अगले अध्याय में हम बेहतर परमेश्वर की ओर से एक सम्पन्न जीवन निश्चित बढ़ती शर्तो पर निर्भर है उसे समझ पाएगें।

शिक्षाएं

* परमेश्वर पर भरोसा रखने से खड़ा है।
* आध्यात्मिक हार का परिणाम अब कोई ईमानदारी से परमेश्वर पर विश्वास करना महत्वपूर्ण या उचित राह और उचित है।

मनन और चिंतन

* 2 इतिहास : 2 : 12
* 2 इतिहास 2 : 1-14

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ परमेश्वर में अपने विश्वास का वर्णन करें जैसे आप करते हैं शुन्य (0) से दस पैमाने पर देखें कि परमेश्वर आपके जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

⇨ उस वक्त/समय के बारे में सोचे जब आप स्वधर्म त्याग कर रहे थे। उस समय के अपने संदेहों का वर्णन करें। क्या आप परमेश्वर के तरीके व उसके पहलु पर शंका कर रहे थे।

12
हमारे जीवन के लक्ष्य

प्रत्येक बल में दिशामत्कता और ताकत है। उदाहरण के लिए, वायु प्रति घंटे 60 मील की दूरी पर उत्तर पूर्व से उड़ सकती है। और वह एक मजबूत वायु या हवा बन जाती है। हमारे जीवन की शान्ति समान है इसी जीवन के कारण हमारे भौतिक विकास होता है। और इस आधुनिक दुनिया में हमें नाम करने के लिए सक्षम बनाता है, हम सेल फोन पर बात कर सकते है या एक व्यस्त और लोगों से भरी हुई बस से नीचे कूद कर भी बात कर सकते है। आत्मिक जीवन अच्छी तरीके से हमारे भौतिक जीवन को भीगो देता है । हालांकि यह काफी हद तक हमारे शारीरिक ढांचे और मन के माध्यम से कार्य करता है, लेकिन इसके पास इसके स्वयं की ताकत और उद्देश्य है।

हमें विकसीत करने के लिए, आदेश में हमें बेहतर दिशा या आध्यात्मिक जीवन के लक्ष्यों को विचार करने की जरूरत है। हमारे जीवन के लक्ष्यके के लिए काउंटा में कार्य करने के बजाए हमें उनके साथ कार्य करना चाहिए। मैं शिलांगो की गलियों में तूफानी हवाओं के समय जब यह महान कोशिशों को लेता है उस समय में मैं चला था। हवा मेरे विरोध में चल रही थी और दूसरे हाथ में मै एक महान गति से साईकिल के साथ आगे बढ़ रहा था। एक मजबूत या जोरो की हवा मुझे धकेल रही थी और मैं साइकिल का पैडल चलाए बिना आगे बढ़ रहा था।

हमारे ज्ञान को विस्तृत बनाना।

हमारे आध्यात्मिक विकास में ज्ञान एक महत्वपूर्ण पहलु बनी हुई है। यदि हमारे जीवन में परमेश्वर क्या कर रहा है उसे परमेश्वर के हाथों में समर्पित कर दे और इस जागरूकता का गठबंधन करें तो मसीही जीवन में सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक संघर्ष गायब हो जाएगा।

तथ्य यह है कि, हालांकि कई विश्वासी इस बात से अंजान है कि उनके जीवन में परमेश्वर के क्या लक्ष्य है। इसमें से कुछ स्वाभाविक है। हम गली में हमारी खिड़की के माध्यम से देखते हैं तब हम आध्यात्मिक बात नहीं देखते हैं । हो सकता है हम लोगों को, कारों को पेड़ या राह चलते, लेकिन शायद ही हम कभी स्वर्गदूतों या राक्षसों की झलक पाते है। जिस तरह हवा है उसी तरह परमेश्वर की आत्मा को आँखों से नहीं देखा जा सकता। हम केवल वास्तविक दुनियां में यह बातें कैसे प्रभाव डालती हैं वह देख सकते हैं।

एलीशा के सेवक की आँखे आध्यात्मिक दुनियां को देखने के लिए खोलने की जरूरत थी। ''तब एलीशा ने यह प्रार्थना की हे यहोवा, इसकी आँखे खोल दें कि ये देख सके। तब यहोवा ने सेवक की आँखे खोल दी और जब वह देख सका, तब क्या देखा, कि एलीशा ने चारों और का पहाड़ अग्नीमय घोड़ो और रथों से भरा हुआ है।''

परमेश्वर के वचन के माध्यम से हम आध्यात्मिक दुनिया को महसूस करने की शुरूआत करते हैं। उदाहरण के लिए, हम इब्रानियों की पुस्तक से यह परमेश्वर के प्रत्येक बच्चों के लिए कम से कम एक स्वर्गदूत उनकी देखभाल के लिए खड़ा होता है (इब्रानियों 1 : 4)

हवा बह रही है

परमेश्वर का वचन अधिक उत्सुक विवरण के बारे में ज्यादा बात नहीं करता, पर यह उस बात को रोशन करता हैं कि परमेश्वर हमारे आध्यात्मिक जीवन में कौन से महत्वपूर्ण कार्य को कर रहा है। पौलूस ने विश्वासियों के लिए इस लक्ष्य की पहचान की है।'' जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक व्यक्ति को या मनुष्य को सिखाते है, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।'' (कुलिसियों 1 :28)

पतरस इसे थोड़े अलग ढंग से कहते हैं, ''पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलनों में पवित्र बनों, क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनों, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।'' (पतरस 1 : 15 – 16)

मसीह में परिपूर्ण और पवित्रता सिर्फ से तरीके है जो आध्यात्मिक जीवन की और हवा कैसे हमारे जीवन में कार्य करती है।

हमने आध्यात्मिक शान्ति का उपयोग किया है, भौतिक जीवन शान्ति की तूलना में हम इसे बेहतर रूप से समझ सकें। लेकिन इस सबके लिए बहुत अधिक है। जैसे मसीह उसके शब्दों के द्वारा हमारे भौतिक जीवन को चलाता है, (कुलिसियो 1 :15 – 17) तो मसीह आत्मा के द्वारा हमारे भीतर जीवन शान्ति प्रदान करता है।

भौतिक जीवन और आत्मिक जीवन विश्वासियों के पूर्वानुमान की ही ध ारणा है जो एक सबसे बड़ी मुसीबत है। यह सच नहीं है। परमेश्वर की सेना उसकी इच्छा को पुरी करने के लिए नाम कर रहे हैं। यह हर एक व्यक्ति और सोची गई बात के लिए भी सत्य है। सभी चीजें परमेश्वर को महिमा देने के लिए बनी है। यह पवित्रात्मा के साथ भी सच है जो विश्वास करने वालों के लिए आध्यात्मिक जीवन प्रदान करता है।

> और मैं पिता से विनती करूंगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहें, अर्थात सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता और ना उसे जानता है। तुम उसे जानते हों, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और व तुम में होगा। (यहुन्ना 14:16 – 17)।

परमेश्वर हमारे आध्यात्मिक जागरूकता को सख्त बनाने के लिए जीवित है, कि वह हमारे साथ बातचीत कर सकें, ताकि हम समुह के रूप में हमारे जीवन के माध्यम से उसके गौरवशाली उद्देश्यों को पूरा कर सकते है।

शिक्षाएं

* आध्यात्मिक जीवन शान्ति हमारे भौतिक जीवन शान्ति जो हमारे मानव शरीर के चालन के अनुरूप है।
* आध्यात्मिक जीवन हमारे कार्य पर जोर डालते हैं जैसे मसीह हमारे जीवन पवित्रात्मा के माध्यम से कार्य करता है।
* जब हम पूरे होश में अपनी इच्छा को परमेश्वर के उद्देश्य के साथ कार्य करने, हमारे दोनों भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में, और हमारा आत्मिक जीवन बहुत ही आसान और ध्यान केन्द्रित हो जाता है।

मनन और चिन्तन

* 1 पतरस 1: 15 – 16
* यहुन्ना 14: 16 – 17

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ क्या आपने कभी सोचा है कि परमेश्वर अपनी पवित्र आत्मा का उपयोग आपके जीवन में उसकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए करते हैं ? समझाएं।

⇨ केवल कलिसियो 1:28 पहला पतरस 1:15 – 16 के माध्यम से परमेश्वर आपके आत्मिक जीवन में आध्यात्मिक जीवन की शान्ति जेा आपके भीतर है उसके द्वारा आप कितने दूर साथ में है ?

13
दिशा की मांग

परमेश्वर सक्रिय रूप में हममें रहते है ताकि हमें मसीह की तरह होने में मदद करते हैं। यह एक अद्भुत और आश्चर्यजनक सत्य है। लेकिन हम अभी भी भ्रमित हो सकते है। दुष्ट हमें दुबारा कार्य करता है ताकि हम अपनी दौड़ में भ्रमित हो जाए। विश्वासी उलझन में आ सकते हैं कि जीवन से बाहर रहने का मतलब और मसीह के समान जीवन और यह देखें कि अभी भी असम्भव है कि स्वर्ग आरक्षित होने के लिए अभी असम्भवनाएं है या असम्भवना है।

वे आध्यात्मिक संघर्ष के सभी प्रकार का सामना करते है और नहीं जानते कि कैसे उससे छुटकारा प्राप्त किया जाए। शायद इन विश्वासियों को एक उदाहरण के रूप में व्यक्तिगत संबोधनों को ठीक से सम्भालने की जानकारी नहीं है। वे लोगों के साथ कड़वा अनुभव प्राप्त करते हैं। कैसे भी मार जातें हैं परन्तू प्रेम के साथ।

हम एक छोटे से बच्चे को देखते हैं, हम उन पर एक व्यस्क के साथ जुड़ें उम्मीदों को जगह नहीं देते हैं। यह पागलपन हो जाएगा बच्चे स्वयं तो पोषित नहीं कर सकते हैं। वह उन्हें मालूम हो जाएगा या आ जाएगा, किन्तु यह काफी समय लेगा। कि ऐसा ही आध्यात्मिक जीवन के साथ भी होता है।

यहुन्ना ने हमें अस्तित्व व आध्यात्मिक जीवन का सार दोनों को समझने में मदद करने के लिए एक सादृश्य के रूप में भौतिक जीवन का इस्तेमाल किया है। (और हमने यहुन्ना 1, 3 और 5 अध्याय से चर्चा की है) उसने हमें एक बहुत ही उपयोगी सादृश्य प्रदान की है जो हमारे आध्यात्मिक जीवन के विकास को स्पष्ट करता है।

मानव आध्यात्मिक जीवन, मानव भौतिक जीवन के लिए एक समान तरीके से विकास करता है इससे कोई शक नहीं। वहाँ मतभेद रहे हैं, लेकिन कुछ मिलाकर समानताएं हमें मसीही जीवन में विभिन्न चरणों में आध्यात्मिक जीवन के विकास के महान अंतदृष्टि हासिल करने के लिए अनुमति देते है। यह सादृश्य बहुत ही उपयोगी है। जब मुझे आध्यात्मिक जीवन के पहलू में कठिनाईयां आ रही थी, तब मैं अकसर इस बात को देखता हूं कि हमारे भौतिक जीवन में क्या हो रहा है ताकि उस स्तर पर निरीक्षण कर सकूं।

यहुन्ना 2:12 –14 में, यहुन्ना हमें आत्मिक जीवन के तीन स्तरों को समझाने की कुंजी प्रदान करता है। ये जीवन के इन आध्यात्मिक चरणों और अभी तक गहराई से आध्यात्मिक जीवन की प्रक्रिया के बारे में हमारी समझ को गहरा किया है। क्या वैचारिक या छिपा हुआ प्रतीत हो रहा है, अब इसमें व्यवहारिक और स्पष्ट हो जाता है।

यहुन्ना 2:12 – 14

> ''हे बालको, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हुं, उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए। हे पितरों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हुं कि जो आदि से है, तुम उसे जानते हो; हे जवानो, मैं तुम्हे इसलिए लिखता हूं कि तुमने उस दुष्ट पर जय पाई है; हे लड़को, मैं तुम्हे इसलिए लिखा है, कि तुम पिता को जान गए हो।
>
> हे पितरो, मैनें तुम्हें इसलिए लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो; हे जवानों, मैनें तुम्हें इसलिए लिखा है कि तुम बलवन्त हो और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है और तुमने उस दुष्ट पर जय पाई है।

वाक्यांश बच्चों, युवा पुरूषों और पिताएं परिचित और शक्तिशाली छवियां है मुझे चुनौती मिली है शारीरिक विकास और उम्र पर जोर देने के आध्यात्मिक विकास के लिए क्या यह सचमुच लागू होती है। जैसे यहुन्ना में प्रत्येक श्रेणी के लिए संलग्न विवरण अधिक गंभीरता है कि प्रस्तुत लिया गया है।

यहुन्ना शारीरिक बातों की वजह आध्यात्मिक विशेषताओं के बारे में बातें कर रहा है। बुराई पर जय पाओं तुम में परमेश्वर का वचन है यह स्पष्टता से भौतिक जीवन को स्पष्ट नहीं कर रहा है किन्तु आत्मिक जीवन ।

केवल तीन चरण

विकासात्मक के क्षेत्र में (जैविक) क्षेत्र में हम शारीरिक विकास के विषय में हम बहुत कुछ सीख चुके है। विकास के इन तीनों क्षेत्र में से प्रत्येक का संक्षेप में उल्लेख किया जाएगा। लेकिन इस बात को ध्यान में रखा जाएगा कि वह पुरी रीति से जैसे आध्यात्मिक जीवन में जुड़ सकेगा। हमारे पास अन्य प्रशिक्षण सामग्री है। जो समर्पित है कि समझाइए और सत्य को इन तीनों चरणों में लागु कर सकें।

आध्यात्मिक जीवन शान्ति पवित्रात्मा के द्वारा निकाली गई, यीशु मसीह के अनुयायियों में परिवर्तन की पुरी मसीही कि छवि की सैर कराती है।

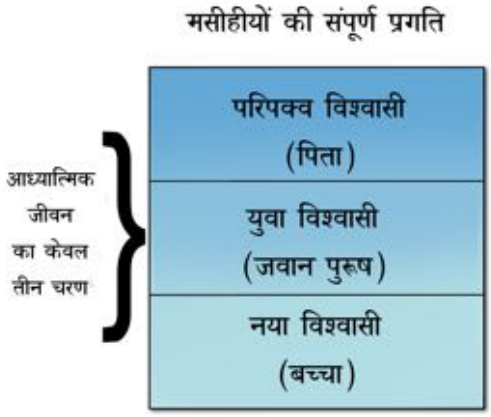

यह तीनों चरणों में स्पष्टता की मदद दी जाएगी कि इसमें से प्रत्येक चरण में क्या होगा। विकास की इस सुविधा में श्वासी मजबूती से बढ़ेगा। कब और कहाँ हम अपनी जिम्मेदारियों को स्वयं की या दुसरे विश्वासियों की बढ़ोत्तरी के लिए भूल जाते हैं। जो विश्वास को कमजोर करेगा। आज अब हम कलीसियों को देखते है तो, हमें परमेश्वर के वचनों पर या परमेश्वर को उन बेमतलब की बातों के लिए दोष नहीं देना चाहिए। जो आज हमें कलीसिया/चर्च में देखने को मिलती है।

कलीसियां में स्वयं पर ध्यान ना देते हुए चेले बनाने की जिम्मेदारी ली है। तथापि, हमारी आशा यही है कि जब हम मसीही कि तरह गंभीर हो जाते और उन आज्ञाओं को मानते जो मसीही चाहते है। तब कलीसिया मजबूती से बढ़ेगी। यीशु ने अनुनायियों जैसे पुराने चेलों की तरह अपने प्यार में उसके काम को बाहर ले जाएगें।

परमेश्वर ने हमारे मन में इस विकास पथ को प्रभावित करने के लिए चुना है हमें चुना है कि सबसे आम या साधारण तस्वीरों में से एक का उपयोग करके परिवारों में आगे बढ़ने की हिदायत या सलाह दी है। सफलता के अध्यायों में, हम इन तीन चरणों में प्रकाश जलेगें जो विश्वासीयों को खुद को, या दूसरों को बढ़ने में और ध्यान केन्द्रित करने में मददगार होगी।

शिक्षाएं

* एक विश्वासी की आत्मिक उन्नति और मनुष्यों की शारीरिक उन्नति में काफी समानताएं पाई जाती है।
* चर्च की कमजोरी के साथ परमेश्वर के वचन या परमेश्वर की शान्ति से कोई तात्पर्य नहीं है। लेकिन विफलता आसपास के लोगों को प्रशिक्षित करने में है।
* आध्यात्मिक विकास के तीन चरण है । नए विश्वासी (बच्चे), युवा विश्वासी (युवा, पुरूषों के लिए) और परिपक्व विश्वासी (पिता)

मनन और चिंतन

* 1 यहुन्ना 2 : 12 - 14

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ अध्ययन करें : 1 यहुन्ना : 2 : 12 -14 आपने कौन से तीन चरणों को ढूंढा है? प्रत्येक चरण के लिए एक अंतर स्पष्ट कर ले उस पर प्रकाशन डाले या विशिष्टता प्रगट करे।

⇨ किस चरण पर आाप ने प्रकाश डाला है, या दूसरों के साथ चर्चा कि हैं?

⇨ क्या आपने किसी की शिष्यता के बारे में सोचा है ? यदि नहीं, तो आप इस मामले पर क्यों नहीं सोचते ?

14
जिज्ञासा

एक बार विश्वासियों के समुह ने इन तीन चरणों के बारे में सुना, और उन्हें महसूस हुआ कि कोई और चौथा चरण नहीं है, वे इस बात पर आश्चर्यचकित हुए कि वे किस समुह में जुड सकते है, यह लगभग एक पिकनिक या सैर की समुह के तस्वीर को स्कैन करती है कि क्या मैं इस तस्वीर में हूं? और मैं कैसे दिखाई देता हूँ?

मसीही लोग स्वयं अपने जीवन के बारे में जिज्ञासा से भरे हुए हैं इसके साथ वे जानना चाहते हैं कि वे कितनी दूरी तक आ गए है। अधिकांश विश्वासियों ने आत्मिक विकास के इन स्तरों के बारे में सुना ही नहीं है। यह उन विश्वासियों के लिए जो विश्वास में अभी तक गुनगुने ही है एक दिलचस्प चिंगारी के समान हैं। परमेश्वर ने भी परिवार की उपमा का इस्तेमाल किया ताकि प्रत्येक विश्वासी दुसरों का आलिंगन करें और इस बात को आसानी से समझ सकें।

जब हम स्तरों की बात करते हैं तो वहां खतरा है हर एक व्यक्ति दूसरे की तुलना में खुद को अधिक से अधिक या अत्यधिक महत्वपूर्ण मानता है। और यहां तक सोचने लगता है कि उसे दूसरों से पल्ला करना चाहिए (आप उन्हें आत्मिक बदमाश कर सकते हो) यही उद्देश्य यहुन्ना के मन में हैं। स्वयं को दूसरों के साथ तुलना करने की बजाय, हमें स्वयं की पहचान करनी चाहिए कि पवित्र आत्मा के बल में कितना हमारे जीवन में हमने मसीह को प्रतिबिंबत किया है। इन दोनों रास्तों में हम अपने जीवन का संचालन सेवा में करते हैं। यह उचित रूचि हमारे आत्मिक जीवन में हमें आगे बढ़ाती कि हमें किसी क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए और कितना अधिक परिपक्व होने की आवश्यकता है। एक छोटे बच्चे के समान सोचो जो सपना देखता है कि एक दिन वह पिताजी के समान बनेगा।

विकास की एक ताजा दृष्टि की जरूरत

अधिकतर विश्वासी, स्वास्थ्य की बढ़ोत्तरी के बजाए, आध्यात्मिक, रूढ़िवाद या अकर्मण्यता में घिर गए हैं। वे यह भी नहीं जानते कि उन्हें आगे बढ़ने की उम्मीद जारी रखनी चाहिए। या यदि उन्हें जब पता होता तो वे स्वयं को पराजित महसूस करते है। उन्हें अपने जीवन के क्षेत्र में एक या अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है और यहां तक कि वे हताश और आशाहीन हो जाते है और वे अपने आप को वर्तमान परिस्थिति से भिन्न समझते हैं। और सोचने लगते हैं कि वे शायद वे वहीं रहेगें जहां वे हैं।

जैसे हम यह देखना पसंद करते हैं कि अंगूर की लता बढ़ती है वैसे ही हमें अपने विचारों को बढ़ाने की आवश्यकता है। जब कभी हम अपने मसीही जीवन के हर चरण में हमारे लिए परमेश्वर की शक्तिशाली जीवन शान्ति की समझ को एकत्रित करते हैं तो फिर हम अपने मसीही विकास में उभर कर आ सकते हैं।

जैसे विकास हमारे भौतिक जीवन में उछलता और व्यस्कता के रूप में धकेलता, वहीं हमें आत्मिक विकास के लिए हमारी आध्यात्मिक जीवन में सत्य के बारे में विश्वास में वृद्धि लाने का कारण है। विचारों की श्रृंखला कुछ इसी तरह हमारी आध्यात्मिक विकास की प्रत्याशा का निर्माण है।

* अभी भी पवित्र आत्मा पूर्ण आध्यात्मिक विकास की और मुझे ले जा रहा है। वह मुझे अभी भी प्राप्त नहीं हुआ है।
* ओह! मैं किसी गलत मार्ग में अभी भी खड़ा हूँ?
* परमेश्वर की एक योजना मेरे लिए हैं।
* मैं कहाँ पर हूँ।

* परमेश्वर ने मुझे परिपवक्ता के रूप में विकसित होने के लिए सुसज्जित किया है।
* मुझे बढ़ने या विकसित होने के लिए अगला कदम क्या है ?
* मैं और अधिक कैसे बढ़ूँ।

संभवत: इस आध्यात्मिक जीवन के विचारों पर परमेश्वर के वचन के समुचित कुछ शिक्षण शुरू किए जा रहे हैं। यह सच विश्वासियों को पुन: परमेश्वर ने सही कार्य और उनके विश्वास को प्रज्जलवित करेगा।

एक बढ़ती आशा

आपका मतलब सच में आप यीशु की तरह बनना चाहते हैं? क्या आप मुझे उस व्यवहारिक को समझने और वो रास्ता दिखाओगें? कि अगला कदम मेरे लिए क्या है?

इस प्रकार के विचार प्रत्याशा पैदा करते, कैसे विश्वासी आध्यात्मिक विकास कर सकता है।

अब वे आध्यात्मिक विकास के बारे में सोचते हैं, और उन लक्ष्यों की ओर बढ़ते जो परमेश्वर ने उनके लिए रखा है। इसके बजाय कि वे समस्या का सामना करते। और परिवर्तन होने की आशा वापस आती है। विश्वास की आस्था के साथ-साथ परमेश्वर का वादा उनके साथ होता है कि वे वृद्धि की ओर बढ़ते रहेगें।

प्रत्येक विश्वासी, कदम से कदम, परिपक्वता में पूरी तरह से आध्यात्मिक जीवन के विभिन्न चरणों में बढ़े। इस शिक्षा पर कुछ आपत्ति हो सकती है। लेकिन 1 यहुन्ना 2 : 12-14 में यहां सिखाया जा रहा है। हमारे बड़े संदेह की परिपवक्ता के पीछे हमारी दोषपूर्ण अवधारणाएं है।

पाप को जाने बिना कोई भी आदर्श नहीं बन सकता। हम पहले से ही पापी कलंकित, धब्बा लगे हुए लोग है लेकिन हम अपने जीवन को परमेश्वर के धर्मी निर्णयों के कारण बदलता हुआ देख सकते है। जो स्वयं परमेश्वर को महिमा देता है। यहुन्ना के इस शब्दों और विचारों पर ध्यान करें :-

> ''हे मेरे बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि तुम पाप न करो, और यदि कोई पाप करें, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह। और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है। और केवल हमारी ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी। यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेगें, तो हम जान लेगें कि हम उसे जान गए हैं।'' (1 यहुन्ना 2 : 1-3)

जब विश्वासी उत्सुक हो जाते है तो वे अधिक जानने व विकसित होने के लिए विवश हो जाते है। (शिक्षक इस बात को जानते हैं कि अनेक विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षा का क्या महत्व हैं) यह विश्वासियों की मानसिकता से बहुत अलग है। जो यह सोचते हैं कि वे पन्द्रह साल से चर्च आते है (इसका मतलब कुछ भी हो)।

जीवन कैसा भी या जीवन कुछ भी नहीं है, हमें इसमें विकास करने की जरूरत है यह तो अपने आप ही बढ़ता है। ठीक एक अंकुर या कोपल की तरह, हमें जरूरत है कि हम जीवन रूपी पौधे की रक्षा, पानी, उर्वरक, धुप जैसे आवश्यक तत्वों को प्रदान करके करें। हम जीवन को विकास या केवल आकार ही नहीं देते लेकिन हम इसे जोड़ते और उन्नति की ओर ले चलते है। ऐसा ही मसीही जीवन के साथ भी है।

एक बार, जब विश्वासी अपने विकास की क्षमता को समझता है, वह अपने मन को नई आकृति प्रदान करने के लिए परमेश्वर के वचनों की सच्चाई को अधिक प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है। अज्ञानता पीछे जा रहा हो पर वह मसीह यीशु में परमेश्वर के वचनों की सच्चाई को अधिक प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है। अज्ञानता पीछे जा रहा हो पर वह मसीह यीशु में परमेश्वर के महान उद्देश्यों की महिमा करता है।

> अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेजा वे मेरी अगुवाई करें, वे ही मुझको तेरी पवित्र पर्वत पर और तेरे निवास स्थान में पहुँचाए। तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा, उस ईश्वर के पास जा जो मेरे अति आनंद का कुण्ड है, ''और हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर मैं वीणा बजा बजाकर तेरा धन्यवाद करूंगा।''(भजन संहिता 43: 3-4)

जब हम विश्वास करते हैं, तो विकास का होना संभव है। जब हम दाऊद की तरह विश्वास करते हैं। हमारे आध्यात्मिक जीवन के किसी भी स्तर में क्यों न हो और चाहे पाप में दाऊद के तरह भी क्यों न हो, परमेश्वर की दया से हम बच सकते हैं। (भजन 32)

शिक्षाएं

यह उल्लेख किया गया है कि स्थिर विकास को विकसित करने के लिए इच्छा की कमी को देखा गया है, या ऐसा विश्वास किया गया है कि विश्वास महत्वपूर्ण या जरूरी नहीं रह गया है।

यदि विश्वासी आध्यात्मिक विकास को एक वास्तविक संभावना के रूप में देखते हैं, तो उनकी बढ़ रही रूचित में ताजगी आ जाती है।

मनन और चिंतन

* भजन संहिता 42:3 – 4
* 3 यहुन्ना 2 : 1 – 3

समनुदेशन (असाइनमेंट)

- ⇨ आप के चारो ओर परमेश्वर के शब्द सीखने के लिए लोग कैसे उत्सुक हैं ? यह जानने के लिए प्रार्थना और आराधना करने के लिए, उनके व्यवहार का मूल्यांकन करें।
- ⇨ आप सीखने और बढ़ने में कैसे उत्साहित हैं? आप किन क्षेत्रों में मजबूत हो सकते हैं, क्या आप सोचते हैं कि बढ़ोत्तरी के लिए आपके पास अलग से कमरा है , समझाइए।

15
बाल अवस्था

आध्यात्मिक विकास के वादें मसीही जीवन के प्रत्येक चरण में क्या होने वाला है के विवरण में छिपे हुए है। इस अध्याय में हम नए विश्वासियों के लिए, या छोटे बच्चे के लिए परमेश्वर ने क्या प्रतिज्ञा लिया है। उस बात को देखते है।

हममें से प्रत्येक ने अपने जीवन की शुरूआत उसका या या उसकी एक बच्चे के रूप में किए हैं, हम सभी इस तरह से बड़े हुए हैं। बचपन/बाल्य अवस्था की उम्र से गुजरे हुए हैं, हममें से पाठ्य व्यस्क है या उम्र में बड़े हैं, इस तरह से उसने व्यस्कता में कदम रखा है। जब एक उम्र एक चरण से दूसरे चरण से होकर गुजरती है तो यह पूरी रीति से स्पष्ट नहीं हो पाती है। लेकिन यह एक प्रक्रिया है।

दो मुख्य विकास अंकित करने वाले हमारी मदद कर रहे हैं कि हम विकास पगडंडी को या राह को कैसे रख सकते है। जब पहली बार हम जन्म लेते है, तब एक उत्सव का पीछा करते है। जब एक नए शीशु या बच्चे नें इस दुनियां में प्रवेश लिया है तो गर्व से भरे माता-पिता एक घोषणा और इस नए खजाने की तस्वीर को बाहर या दुसरों तक पहुंचाते है।

और एक अन्य स्पष्ट अंकित है कि एक व्यक्ति पूरी रीति से बन गया है, पहले यहुन्ना के अनुसार एक पिता जो एक समय छोटा था अ बवह पूरी रीति से बढ़ गया है। और अब उसका स्वयं का भी एक बच्चा है। यह एक पूरा चक्र आ गया है, एक पीढ़ी दूसरे पीढ़ी का उत्पादन कर रही है।

आधुनिक युग में व्यस्कता को साधारण रूप से पुराने और स्वतंत्र होने के रूप में नए सिरे से परिभाषित करने की कोशि की हैं। जिसमें नेतृत्व की कोई आवश्यकता नहीं है। और निहित जिम्मेदारियों की भी जरूरत नहीं है। दुर्भाग्य से कई मायनों में (अर्थ में) चर्च ने भी इस मानसिकता को अपनाया है। अधिक परिपक्व विश्वासीगण छोटे विश्वासियो के प्रशिक्षण के लिए कार्यस्तर (कार्यवाही) नहीं करते और ना ही जवाबदेही बनते है इसी कारण वे समाज और चर्च को व्यथीत छोड़ दिया जाता है।

एक एक है, पुरा चक्र विश्वासियों को ना सिर्फ व्यस्क बनने के लिए बुलाता है, लेकिन फलदायी और अगली पीढ़ी के लिए जिम्मेदारी लेने के लिए कहता [1]

एक पूरा चक्र : जन्म से पितृत्व तक

यह वर्तमान सबक उन सारी महत्वपूर्ण पहली चरण पर केंद्रित है, जहां हमारी नई जिंदगी की शुरूआत होती है। प्रेरित यहुन्ना हमें परमेश्वर के आध्यात्मिक परिवार में हमारे विकास को समझने में मदद करनरे के लिए परिवार में हमारे विकास को समझने में मदद करने के लिए परिवार में हमारे शारीरिक विकास के सादृश्य का उपयोग करता है। यीशु की तरह वह अपरिचित को पढ़ाने के लिए क्या परिचित है, उसका उपयोग करता है। पिछले अध्यायों में हमने नये आध्यात्मिक जीवन के महत्वों पर चर्च की है। नये विश्वासी के पास नया जीवन है और इसलिए वह एक बच्चे के समान है।

तथाकथित 'परिवार नियोजन' के नाम से पुनः नामकरण किया जाना चाहिए कि यह 'बंजर नियोजन' क्या है। चर्च के साथ समाज भी अधिकता से विरोधी बाइबिल मानसिकता से पीड़ित है।

बच्चा बढ़ता है

जिस तरह एक बच्चा अपने शारीरिक विकास आदि तो परमेश्वर के पास नये विश्वासियों के आध्यात्मिक विकास के इस पहले चरण के दौरान कई बुनियादी सबक है जिन्हें उन्हें सीखना है। जीवन के चरण बहुत महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि व्यक्ति अलग-अलग तरीकों से सीख रहा है या बढ़ रहा है।

मेरी दस वर्षीय बेटी रीबेका ने पिछले सप्ताह मुझे उसके भाई इसहाक जो अभी तेरह वर्ष का है, उन दोनों को खेल के मैदान में हो जाने के लिए राजी कर लिया। वो पिछले साल से अच्छी यादें आयोजित के लिए एक निश्चित पार्क में जाना चाहते थे। इसलिए हम तीनों चलें गये। पांच या दस मिनट के खेलने के बाद उन्होनें महसूस किया कि यह कहते सुना ''मैं सोचता हूं कि हम इस पार्क के लिए बहुत पुराने है'' वे प्रकृति वृद्धि के लिए सुझाव देने के बजाए तब उन्होनें पहाड़ियों पर चढ़ने में उन्हें मजा आ रहा है। लोग बदलते हैं जब वे बढते हैं।

छोटा बच्चा इसलिए मजा आ गया है। ताकि परमेश्वर को जानें। यह एक पचास वर्षीय व्यक्ति को हो सकता है, लेकिन यह कोई बात नहीं है। आत्मिक जन्म प्रत्येक विश्वासी के नये सदस्य के रूप में परमेश्वर के परिवार में भेंट करवाता है।

मसीह में पुराने विश्वासियों को पहले चरण के माध्यम से थोड़ा तेज विकसित करना चाहिए। किंतु यह आवश्यक है कि इस बात को स्मरण रखना चाहिए कि वे अभी भी बुनियादी विकास के मंच के माध्यम से जाते हैं। यदि ठीक से परवाह नहीं की गई तो आध्यात्मिक विकास की बढ़ोत्तरी की संभावना पड़ती है।

नए विश्वासियों के लिए देखभाल

जब आप एक विश्वास बने को आपके लिए परवाह या आपकी देखभाल की गई थी ? क्या किसी व्यक्तिगत रूप से आपका ख्याल या ध्यान रखा गया था? ये सवाल अप्रासंगिक लगते है। पर वे अप्रासंगिक नहीं है। ध्यान दे। जब बच्चे का जन्म होता है तो वह एक विशेष ध्यान को प्राप्त करता है। यह आम तौर पर माता-पिता के द्वारा उनके बच्चे की एक-एक हरकतों पर ध्यान दिया जाता है।

इतना ही नहीं, बच्चे को स्तनपान भी किया जाता है, और उसे प्यार किया जाता, कपड़े पहनाए जाते, उसे स्नान कराया जाता है इत्यदि। यहां तक कि मध्यरात्री में भी समय सारणी या कार्यक्रम काफी कठिन होते हैं। यह केवल महत्वपूर्ण ही नहीं। परन्तु ध्यान दे कि क्या हो रहा है। माँ के पास, बच्चे को यह अवसर मिलता है कि वह प्यारे शब्दों, आवाजों, और हाव-भाव को प्राप्त करें। केवल बच्चा ही मात्र नहीं सीख रहा कि कैसे बात करें व प्रत्युत्तर दें। लेकिन उसे गले लगाने से वह बच्चा प्यार को महसूस करता है।

क्या होता है कि जब बच्चे को डर लगता और वह रोने लगता है, तुरंत माँ बच्चे के पास जाती और बच्चे को प्यार से उठा लेती है और कहती है- ''सब कुछ ठीक है, मत रो! मँ तुम्हारे साथ है।''

बच्चे को केवल यंत्रवत या उसके व उसकी या मात्र भोजन की ही जरूरत नहीं होती है। लेकिन ये महत्वपूर्ण है कि उसे भावनात्मक प्यार की आवश्यकता है। यह आदर्श स्थिति है। दूसरे ओर, यदि माँ अनुपस्थित या उससे अलग है तो परिणामस्वरूप वह बच्चा भयभीत व अप्रियता को स्वयं में महसूस करता है। परमेश्वर पुराने विश्वासियों के माध्यम से प्यार, पोषण और देखभाल करता है। पुराने विश्वासी, नए विश्वासियों की देखभाल परमेश्वर के उद्देश्य अनुसार करता है तो लगता है कि एक विश्वासी निश्चित मजबूती से बढ़ेगा। और यदि ऐसा नहीं हो रहा है तो एक नये विश्वासी की नींव कमजोर हो जाएगी।

जानने के लिए बहुत कुछ

नए विश्वासी के पास जानने हेतु कई बातें होती है। पतरस भी हमें एक विश्वासियों को समझने में मदद करने के लिए एक सादृश्य का उपयोग करता है। वह नवजात शिशु दूध की लालसा में रहता वैसे ही विश्वासी उद्धार के सम्बन्ध में आदरपूर्वक बढ़ता है।

(पतरस 2: 2)। ''नये जन्में बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ''।

एक नवजात शिशु को लगभग खाने-पीने की कोई चाहत नहीं होती। परन्तु वह बच्चा रोता और रोता है और माँ कहीं भी हो वह बच्चे तक पहुँच कर उसे स्तनपान कराती ही है। लेकिन बच्चा जब दूध चूसना शुरू करता है तो (कुछ दिलचस्प आह और अन्य ध्वनियों के साथ) उसे संतोष या आनंद प्राप्त होता है। वहीं एक नए विश्वासीयों के साथ सच है। नया जन्म परमेश्वर के वचनों को जानने की भूख है। हमें वहाँ होना चाहिए कि हम उन नए विश्वासियों को परमेश्वर के वचन से तृप्त करें। ताकि वे विकसीत हो जाए।

जीवन की शुरूआत नए आध्यात्मिक जीवन से होती है (इसे धार्मिक संदर्भ में उत्थान कहा जाता है) जैसे एक शीशु पोषण प्राप्त करता है, वैसे ही जब एक विश्वासी परमेश्वर के वचनों की प्राप्ति करता है तब उसका विकास होता है।

परमेश्वर के वचनों की जरूरत हमारे जीवन भर के लिए एक सत्यता होगी। हम जीने के लिए खाने की आवश्यकता है, लेकिन जैसे हम बढ़ते है हमारे अंदर विकास हेाता जाता है। प्रारंभिक चरण में, खाद्य एवं पोषण दूध के रूप में है और माता के द्वारा यह पोषित किया जाना चाहिए। परमेश्वर ने अंतरंगता के बढावा के लिए इस आहार को बनाया है। जब दूध की बोतल या स्तनपान द्वारा बच्चे को पोषित किया जाता है तब बच्चा या माँ दोनों एक दूसरे को अकसर देखते हैं।

जब हम आध्यात्मिक नए जीवन के बारे में सोचते है तब कुछ बुनियादी तत्व सामने आते हैं। जैसे अंतरंगता, संबंध, प्रेम, परमेश्वर का वचन और ध्यान देना। जब एक शिशु की देखभाल की जाती है तो कुछ जरूरी बातों की आवश्यकताएं होती है। लेकिन कुछ भी इन बुनियादी पहलुओं के पोषण के रूप में महत्वपूर्ण नहीं है।

पूरे वर्ष भर कलीसिया एक ध्यान को केन्द्रित करती है कि परमेश्वर के राज्य में नए लोगों को लाए, लेकिन इन नए विश्वासी (शिशुओं) को कई नई आघातों का सामना करना पड़ता है। क्योंकि उन्हें वह व्यक्तिगत देखरेख व पोषण अन्य विश्वासीयों के द्वारा नहीं मिलता। वे अभी अनुयायी (चेलें) बने ही नहीं थे। एक शिशु खुद पोषित नहीं हो सकता या एक नया विश्वासी स्वयं की परवाह नहीं कर सकता क्योंकि उसे किसी की आवश्यकता होती है कि कुछ समय तक उसे पोषित किया जाए और कुछ समय उपरान्त वह स्वयं जान लेता है कि खुद को कैसे पोषित करें।

हमने पहले ही इन मूल बातों के बारे में पता हैं, समस्या यह है कि चर्च होने के नाते हम जानते हैं कि जो हमें पता था या है हम उन बातों में वफादार ही हैं। और इसीलिए मसीहा की देह भयानक परिणामों से पीड़ित है। मैं नियमित रूप से विश्वासीयों से यह पूछता हूँ, ''आप में से कितनों की देखभाल एक नए शिशु या विश्वासी के रूप में की गई? कुछ ही या थोड़े ही विश्वासीगण सकारात्मक जवाब देते है।

परमेश्वर का हृदय तो टूट ही गया होगा, हमारी वजह से क्योंकि हमने उनके कीमती बच्चों की देखरेख ठीक से नहीं की। हमारा दिल भी उतना ही क्यों नहीं टूटता? आने वाली अगली पीढ़ी के लिए क्यों चर्च अपनी अनिच्छा के लिए पछतावा नहीं करता है?

शिक्षाएं

* यीशु मसीह के नए अनुयायी, एक छोटे बच्चे, या एक बच्चा बनने की कोशिश कर रहे हैं। बच्चा या बच्ची की जरूरत समान है उन्हें आवश्यकता है कि कोई उनकी देखभाल करें।
* परमेश्वर हमसे चाहते है कि हम एक माता के रूप में एक नए विश्वासीयों की देखभाल धैर्यपूर्वक ओर कोमलता से करें।
* परमेश्वर के वचनों द्वारा, परमेश्वर नए विश्वासीयों को बुनियादी सत्य सिखाता है।
* परमेश्वर चाहते हैं कि परमेश्वर के नए बच्चे को एक शिष्य निर्माता का व्यक्तिगत रूप से ध्यान के माध्यम से उनके प्रेम व भावना की देखभाल हो।

मनन और चिंतन

* पहला पतरस : 2 : 2

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ क्या आप नए विश्वासी के रूप में अनुयायी बनें ? समझाइए क्या किया और क्या हुआ।

⇨ आपके आस-पड़ोस के विश्वासीयों के प्रति आपका प्रतिउत्तर क्या था ? क्या आपने उन्हें अनुयायी या चेला बनाया? तो क्यो? और नही तो क्यों नहीं ?

⇨ यदि आप पहले अनुयायी नहीं थे, तब आपने क्या अनुभव किया कि आप कुछ खोए हैं, यद्यपि आप अनुयायी या चेले नहीं थे तो आपने क्या प्राप्त किया?

16
युवा अवस्था

यदि नए विश्वासियों को अंतरंग प्यार और देखभाल की आवश्यकता होती है, तो युवा विश्वासी की क्या आवश्यकता होगी ?

जवान व्यक्ति को जिस मार्ग पर चलना होता है वह स्वयं ही अपने जीवन के निर्णयों को लेता व नियंत्रित करता है। और वहां वो संक्रमण है जहां वह गैर जिम्मेदार और अनभिज्ञ है और जिस रास्ते में चल रहा है वह ठीक से जानता भी नहीं है और खुद की परवाह किए बिना दूसरों की परवाह करता है। जवान लोग व्यस्कता के मार्ग या बढ़ोतरी पर है, कुछ बिन्दु पर उन्हें दुसरों के लिए, पहले स्वयं की देखभाल करने की जरूरत है। परमेश्वर के समग्र लक्ष्यों को ध्यान या मन में रखना अत्यंत उपयोगी हैं कि तनाव व परेशानी को कम करें अन्यथा वे बढ़ भी सकती है।

ऐसा कोई भी चिन्हानी नहीं कि ये (जवानी) कब शुरू हो और इसका अंत कब हो। अन्य भाषाओं में ''किशोर अवस्था'' इस शब्द का संक्रमणकालीन अवधि का वर्णन करने के लिए कोई विशेष शब्द नहीं है। मूल ग्रीक शब्द ''युवा'' विश्वासी के लिए उपयोग में लाया गया है। कि वे ना तो छोटे है ना परिपक्व।

(युवा विश्वासीयों की चुनौती)

जवान या युवा विश्वासीयों को विपरीत परिस्थिति या लालच के खिलाफ खड़े रहने के लिए परमेश्वर के वचन को सीखने की आवश्यकता है। परमेश्वर का वचन महत्वपूर्ण है। इस प्रथम चरण या अवस्था के लिए लेकिन अभी जवानों या ''युवाओ'' को प्रलोभन का सामना करने के लिए काफी सीखने की आवश्यकता है। यह अभिन्न ''बाहर या जय पाने'' का हिस्सा है।

जीवन का तथ्य यह सिखाता है कि जब युवा, प्रोढ़ अवस्था की ओर बढ़ते है तब उन्हें माता-पिता से अलग होकर दुनिया में कार्य कर लेना सीख लेना चाहिए। पशुओं की तुलना में मनुष्यों के लिए यह अत्यंत धीमी प्रक्रिया हैं, लेकिन वास्तव में ये होता है। जैसे नन्हा बच्चा या शीशु स्वयं ही खाना-पीना सीखते है। वैसे जो व्यस्कों के पास रहने उन्हें यह सीखना चाहिए की भोजन प्राप्त करने के लिए काम को करने की जरूरत है ताकि वे किसी को संतृप्त कर सके या खिला सके।

आध्यात्मिक विकास के पक्ष में पुराने युवाओं को परमेश्वर के वचन की आवश्यकता हैं। वे हर समय/पल उनकी अपनी आवश्यक जरूरतों के लिए दुसरों पर निर्भर नहीं रह सकते उन्हें स्वयं को खिलाने के लिए परमेश्वर ने वचनों को जानने की जरूरत है। इसके अलावा वे परमेश्वर के वचन को सीखते हैं ताकि छिपे हुए दुश्मन में स्वयं का बचाव कर सके।

युहन्ना के इन शब्दों पर ध्यान दे। जो जवान विश्वासी के बारे में उल्लेख करता है ''मैं तुम्हे इसलिए लिखता हुँ; जवानो, ताकि तुम मजबूत रहो और परमेश्वर का वचन तुममे बना रहें कि तुमने उस दुष्ट पर जय पाई है'' (यूहन्ना 2:13:14)।

यह दुनिया इतनी सीधी मददगार नहीं है जैसा हम देखने की चाह रखते है। इस दुनिया में एक वास्तविक शत्रु है जो हमारे जीवन की घात में बैठा हुआ है। सच में हमें निश्चित रहना चाहिए क्योंकि यीशु मसीह ने पहले से ही युद्ध को जीत लिया है। लेकिन युवा विश्वासियों को यह सीखने की आवश्यकता है कि कैसे परमेश्वर के अनुग्रह पर टिके व भरोसा रखें। जब वे जीवन की भिन्न समस्याओं का सामना करते है।

नीचे दर्शाये गये वचनों मे पतरस परमेश्वर की सच्चाई की घोषणा बहुत ही मजबूती से सुनाता है

''जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञा ही है; ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होता है, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ।'' (2 पतरस 1:4)

जवानों को ऐसा सोचना अच्छा लगता है कि वे उनकी उम्र से अधिक बुजर्ग है और बिना जिम्मेदारी के स्वतंत्रता की मांग करते है। वे चुनौतियों से अनभिज्ञ है जो उनका सामना करती है। शायद ऐसा सोचना उन्हें किसी भी चुनौतियों के लिए उत्सुक है।

विकास के अगले कदम

वे विकास के दो चरणों के मध्य रहते हैं, ''छोटा बच्चा और ''व्यस्क''। विचारों को पकड़ रहे है कि परमेश्वर उन्हें किस दिशा में नेतृत्व कर रहे है। ये ''युवा पुरूष'' हालांकि, अभी भी दुसरों पर निर्भर है जैसे वे अभी भी एक शिशु के समान है, अभी भी वे निर्भर है कि कोई उन्हें खिलाएगा। अब जबकि वे परिपक्व है तो उन्हें स्वतंत्र लेने की आवश्यकता है। ताकि वे स्वयं को ''पिता'' की चरण में पहुंचाए जहां वे दूसरों की परवाह कर सके।

बुद्धिमान बालक अच्छे अध्यात्मिक विषयों को स्थापित करता है और परीक्षाओं और प्रलोभन से बचने के लिए कैसे परमेश्वर के वचन का उपयोग करना चाहिए दूसरों से सिखता है। एक तेज नजर के साथ युवा विश्वासी यह ध्यान देगा की वहां भीतर एक लड़ाई है। और एक तरफ लड़ाई नहीं है। वह आश्चर्य करेगा। क्यों वह एक विश्वासी के रूप में इस तरह लड़ाई का सामना करता है, जो उन चीजों के साथ जिसे वह तिरस्कृत करता है। ठीक उसी समय, वह बुराई का बोध करता है। और यही बात अर्थात प्रलोभन और मोहक दुनिया में पूर्ण मायनो में उसे चलने के लिए प्रेरित करते है।

परमेश्वर ने लड़ाई जीत ली है और युवा विश्वासी को पुरी रीति से लड़ने और जीतने के लिए सुसज्जित किया है। यह जानने के लिए एक समय लग जाएगा। वहां विफलताएं और सफलताएं भी होगी। यदि कोई व्यक्ति इन विश्वासियों को अनुयायी बनाता है, तो यह प्रशिक्षण का समय छोटा हो जाएगा। एक चेला बनाने वाला इन बातों की व्याख्या कर सकता है। कि क्यों आत्मिक जीवन काम करता है जिस तरह से ये काम करता है। इस सबक को बड़ी ही शीघ्रता से समझने के लिए उन बिन्दुओं को एक साथ जोड़कर उसकी सहायता से एक लड़का या लड़की कार्य कर सकते है। अन्यथा नए विश्वासीयों को अतिरिक्त लड़ाई लड़ने और आस्थिक निराशा या शायद खराब करने के लिए अनेकियों हार भुगतना पड़ सकता है।

हम इस बात को जानते है कि एक नए बच्चे की देखभाल न करने की निन्दा की गई है, किन्तु युवा विश्वासीयों के लिए भी देखभाल आवश्यक है। यद्यपि वह अपने उम्र के द्वारा या पृष्ठभूमि के कारण परिपक्व लग सकता है। पर्यवेक्षण इस अवस्था के कारण परिपक्व लग सकता है। पर्यवेक्षण इस अवस्था के दौरान बहुत उपयोगी है। और यह बहुत ही ''पारदर्शी'' के द्वारा विश्वासी की सहायता कर सकता है जब वे प्रलोभनों और परीक्षाओं का सामना करते है।

शिक्षाऐं:

* युवा विश्वासी मजबूत मसीही जीवन के लिए परमेश्वर के वचन का उपयोग करने के लिए सीखने की चुनौती का सामना करते है।
* आध्यात्मिक लड़ाई की वजह से हमारे शरीर और हमारे नुकसान की तलाश के लिए दुश्मन हमारे नए जीवन में घटित होगा और दुनिया का उपयोग करेगा।
* परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा किया है कि उनका वचन हमें लगातार जीत का अनुभव करा सकता है।
* आध्यात्मिक निरीक्षण इस स्तर पर युवा विश्वासीयों में उलझन डाल सकते है। जिससे वे अपने आध्यात्मिक जीवन में नहीं समझ पाते है कि क्यों ये बातें उनके आत्मिक जीवन में हो रही है।

मनन और चिंतन

* 2 पतरस 1:4

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ क्या आपने जीवन में अपने आपको पोषण करने के लिए आत्मिक अनुशासन है? क्यों? या क्यों नहीं?

⇨ क्या आप सोचते है कि दैनिक निवेश परमेश्वर का वचन एक मजबूत आध्यात्मिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण है? आपको क्या लगता है?

⇨ एक हार और जीत से संबंधीत, इनमें से प्रत्येक पर दर्शाते है। तुम पर क्यों गिर पड़ें। तुम क्यों विजयी रहें?

⇨ क्या आप पर्याप्त परिपक्व है? जिसे जानने के द्वारा क्या आप दूसरों को जो प्रलोभन के साथ जुझ रहे हैं उनसे क्या कहना चाहिए?

17
परिपक्व अवस्था #3

यूहन्ना के व्यवहारिक रूप से इस तीसरे और अंतिम चरण का वर्णन किया है वह है ''पिता'' यद्यपि वहां कुछ अस्पष्टता हो सकती है कि एक ''नवजवान'', पितृत्व और अधिक स्पष्ट हो जाता है। और पिता के बच्चे है।

हमारी आधुनिक दुनिया ने आसानी और खुशी के रूप में जीवन पर चर्चा करने जैसा परमेश्वर ने इसे आयोजित किया है। राजनीतिक शुद्धता के कारण उसे नष्ट कर दिया गया है। अगर हम इससे पार पाने के लिए और सिर्फ़ हमारे अपने परिवारों के बारे में सोच सकते है। तो हम परमेश्वर के लक्ष्यों के बारे में और भी अधिक समय हासिल कर सकते है। और विश्वासीयों के बारे में भी, क्योंकि हममें से प्रत्येक के पास पिता थे। हमारे पिता आवश्यक नहीं है कि वे अच्छे पिताए थे। वास्तव में मैंने एक सेमिनार का आयोजन किया, और वहाँ मैनें पाया कि बहुत से लोग जिनके पिता अच्छे नहीं थे। और वे अगर इस बात का पता करे कि वे एक अच्छे पिता थे, तो उनके पास स्पष्ट समझदारी नहीं है कि अच्छा पिता क्या है ?

परमेश्वर का लक्ष्य हमारे लिए

परिपक्व आस्तिक चरण के बारे में तीन विशिष्ट पहलू है।

1. परमेश्वर हममें से प्रत्येक को इस तीसरे और अंतिम चरण के लिए स्थानांतरित करना चाहता है।
2. परमेश्वर चाहते हैं कि हममें से प्रत्येक दूसरों को आत्मिक जीवन की ओर ले चले।
3. परमेश्वर की इच्छा है कि जो आत्मिक जीवन हासिल करते है हम उनकी जिम्मेदारी की परवाह न करे।

सर्वप्रथम परमेश्वर परमेश्वर इच्छाओं और हममें से प्रत्येक को आध्यात्मिक परिपवक्ता के लिए इसे रूपांकित किया है। जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाए, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाए (इफिसियों 4 : 13)

बच्चे का चरण एक प्यारा मंच है, लेकिन यह लक्ष्य नहीं है, और ना ही किशोर अवस्था है। वे अभी तक प्रशिक्षण में हैं जो परमेश्वर ने उनके लिए रखा है। प्रेरित पौलुस मसीह की परिपूर्णता के साथ एक परिपक्व व्यक्ति (स्थूल, लेकिन आत्मिक परिपक्व नहीं) के रूप में पिता के इस 'चरण' को परिभाषित करता है। यीशु मसीह की निशान स्पष्ट रूप से हमारे जीवन में दिखाई देना चाहिए। हालांकि पौलुस यहां पितरों का उपयोग करता है पुरूषों के आध्यात्मिक विकास के बारे में बात नहीं कर रहा है। परन्तु महिला के बारे में भी। पूरे विश्वासीयों, हर देश और संस्कृति से, इस सदी में, मसीही की समानता को बढाने की उम्मीद की जा रही है।

विकसित करने के क्रम में, हमें दर्शन को प्राप्त करना है कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या रखा है । इस कार्य के लिए विश्वास की आवश्यकता है। हमारा तर्क यह है या इस तरह से सोचते हैं कि यदि परमेश्वर हमें बढ़ाना चाहता है, तो इसका मतलब यह है कि उसने हमें विकास हेतु ही बनाया है। यह विश्वास निर्माण सत्य है (वास्तव में सारी सच्चाईयां सत्य और लिखने योग्य है) । हम सभी इस बात को जानते है कि हम सभी विश्वासी इस पृथ्वी पर मसीह की छवि के रूप में हैं तो हम विकास करने के लिए ही है, तो हम सभी को इस तथ्य से सहमत होना चाहिए जो परमेश्वर ने बनाया है। चाहे हम किसी भी बाधाओं का सामना क्यों ना करें। तो भी हम बहते है।

दूसरों के बारे में सोचना

दूसरा, परिवक्व नए जीवन को आगे लाने के लिए प्रभु ने इसे तैयार किया है, ये जीवन के तथ्य है। क्या वे नहीं है, हमारी दुनिया ने जीवन को अस्वीकार कर दिया और परिणाम हुए प्रसव की इस तस्वीर को विकृत कर दिया हैं। लेकिन उस व्यक्ति के बारे में सोचे जो आगे बढ़ रहा हैं, एक महान व्यक्ति को पता है कि उससे शादी करें और यह आकांक्षा रखता है कि उसके बच्चे हों - ये सारी इच्छाएं हममें बनी हुई होती है।

आध्यात्मिक बोल, हमें कभी भी अपनी जिम्मेदारी को अर्थात दूसरों को सु.समाचार सुनाने और उन्हें यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ संबंधा बनाने को कभी नहीं भूलना चाहिए। जब हम उन्हें इस नए रिश्तें में लाते हैं, यह हमारी जिम्मेदारी बन जाती है कि हम उनकी देखभाल करें। हम सभी लोग प्रचारक और परमेश्वर के वचन के शिक्षक नहीं, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति उनके आस-पास के लोगों की मुक्ति और विकास की तलाश के लिए भार दे रहा है।

आध्यात्मिक देखभाल

अंत में, हम लोग अपने आध्यात्मिक देखभाल की व्यायाम अपने आसपास के लोगों के लिए कर रहे हैं। हम उन लोगों की सहायता के लिए है जिन्हें हम प्रभु के पास लाते, लेकिन हम उनके लिए भी जिम्मेदार है जिसे परमेश्वर हमारे जीवन में लाता हैं इस मोबाइल की दुनिया में लोग नियमित रूप से नौकरी बदलने के साथ, मसीही लोग बुलंद गति से दुनिया भर में आगे बढ़ रहे हैं। देश के दूसरे भाग के विश्वासी या दुनिया के अन्य भागों से निकट स्थित हो सकते है।

हमें जानबूझकर दूसरों की सेवा करने के लिए अवसरों के लिए बाहर देखने की जरूरत है। हम इसे गर्व के अनुसार नहीं करते है, परमेश्वर का मतलब यह है कि अपने भेड़ों की देखभाल करें। उसने हमारे आस-पास के लोगों की देखभाल के लिए अधिक परिपक्व विश्वासीयों का उपयोग किया है।

कई देशों में रोग और आपदाएं बेशुमार अनाथ पैदा कर रहे हैं, यह कई चर्चो और पादरियों को नम्र बना रहा है, ताकि वे अपने परिवारों के लिए पर्याप्त भोजन नहीं हे इस बात को ध्यान ना देते हुए इन बच्चों को अपनाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

इसी तरह से हमें हमारे कार्य को करने की आवश्यकता है जैसे चर्च को इस बात को निश्चित करने की आवश्यकता है कि प्रत्येक लोग ''पिता'' के समान बन रहे है वह, जो आध्यात्मिक रूप से उनकी देखभाल कर रहा है।

विश्वासीयों के विकास हेतु परमेश्वर का प्यार और उनके देखभाल के लिए यह आत्मा परमेश्वर के अधिकार की वृद्धि के लिए तथा चेले बनाने के लिए दी गई है। कई चर्चो में छोटे समुह के विकास के कई चर्च बहुत ही महत्वपूर्ण तरीके से इस प्रक्रिया के द्वारा सहायता प्राप्त करते हैं, लेकिन हमेशा हमारे कार्यक्रमों कुछ जुड नहीं पाते इसीलिए हमें उनकी आवश्यकता या जरूरतों के लिए सतर्क रहना चाहिए।

कितने शर्म की बात है कि एक पिता को अपने बच्चों की जरूरतों पर ध्यान नहीं देता, किन्तु वह स्वयं आराम से रहना चाहता है यह गलत है। एक सकारात्मक प्रकाश में, दूसरों की देखभाल करने वाले अन्य लोगों के लिए उनका प्यार और ज्ञान एक महान अवसर हैं, जो परमेश्वर के द्वारा दूसरों को प्रदान करते हैं।

पुरूषों के लिए यह उनकी इच्छाओं के द्वारा बढ़ाए गए कदम विशेष प्रकार की सलाह भी है जो एक जोड़े व दूसरे के साथ, एक बहन के साथ एक बहन, और एक पुरूष के साथ एक पुरूष के बीच सलाह शामिल होगी व परस्पर जुड़ेगी। अपने आस-पास के लोगों के जरूरतों पर ध्यान दें, परमेश्वर सिर्फ आपको इस्तेमाल करना चाहता है ताकि आप लोगों को बढ़ने में उनकी मदद करें।

शिक्षाएं

* पितागण परिपक्व विश्वासी हैं जिन्होनें अपने संघर्ष से परे कदम युवा विश्वासियों के उसका या उसकी देखभाल या ध्यान रखने में स्वयं को सक्षम बनाया।
* परमेश्वर के लोग मसीह में पूर्ण परिवक्वता के साथ विकसित या विकासशील बन सकते है।
* हम परमेश्वर की सच्चाई के सच्चाई के जीवन को देखभाल करने के लिए और आत्मिक विकास करने के लिए जिम्मेदार है।

मनन और चिंतन

* इफिसियों 4:13

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ आप कितने समय या कब तक यीशु मसीह की अनुयायी है क्या आप एक आत्मिक पिता है ?
⇨ क्या मसीह में अपने युवा साथियों का ख्याल रखा है? और वह कैसे गया? और यह कैसे बेहतर हो सकता था?
⇨ आपके आस-पास कोई है? जिसकी देखभाल आप कर रहे हैं ?

18
जीवन का चक्र

जीवन का चक्र न केवल शारीरिक दायरे में सच है, लेकिन आध्यात्मिक दुनिया में थी हमने दुनियां में जन्म लिया है, विकास के संघर्ष के माध्यम से जाने के लिए और दुनियां में अन्य लोगों को लाने और उनकी देखभाल के बारे में भागीदारी लेने के लिए। तब हम दूसरों को मौका देने के लिए जीवन के इस चक्र से बाहर कदम रखते है।

इस चित्र की परिपूर्णता स्पष्टता के विकास में सहायक है सीमित समय और विशेष लाभ करने के लिए जो परमेश्वर हम सभी के लिए जीवन के लिए चाहता है। हम यहां अनिश्चितकाल के लिए नही हैं, समय व अवसर सीमित वस्तुएं रही हैं। योजनाओं को समझने के लिए शुरू करते हैं उतना ही अधिक हम उसके अनुग्रह को अपने क्षेत्र में लाते हैं।

यद्यपि पृथ्वी पर हमारा समय कम हैं, यह शक्तिशाली रूप से अनंत आकार देता है। हमारे दैनिक जीवन के निर्णय अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हम आमतौर पर उन्हें ऋण की तुलना में हममें से प्रत्येक अपने जीवन का आयोजन करते हैं जिस तरह से हमारे अनंतकाल में हमारे जीवन में काफी प्रभाव पड़ता हैं। परमेश्वर इस बात को यकीनन बनाना है।

संपूर्णता से एक समझ को पाना

आध्यात्मिक विकास की पूरी गुंजाइश को समझना हमें उत्पादक और पूरे रहने पर एक छोर को देता है। यहां तीन तरीके हैं जो होती है।

* जवाबदेही - हम और अधिक आसानी से हमारे जीवन में वर्तमान स्थिति के महत्व को जगाते हैं।
* स्पष्टता - हम पहले से ही या हमारे जीवन के माध्यम से एक काफी स्पष्ट चित्र को प्राप्त करें।
* केन्द्रियकरण :- हम परिपवक्ता तक पहुंचने के लिए और हमारे जीवन के लिए उसकी विशेष योजना को पूरा करने के लिए हमारे संकल्प को तेज करते हैं।

मेरे पिताजी हमारी बढ़ती ऊँचाईयों को मापने के लिए दरवाजों की चौखट पर पैंसिल का निशान लगाते थे। मैं हमेशा इस बात को देखने के लिए उत्साहित रहता था कि मैं कितना बढ़ गया हूँ। वही हमारे आध्यात्मिक विकास के बारे में स्वाभाविक रूप से उत्सुक है। कुछ यह प्रतिस्पर्धी हो सकते है, लेकिन पूरी परिपवक्ता के विकास के लिए स्वास्थ्य प्रत्याशा है। यह विकास दुनियां में लगातार जारी रहेगा, जब तक हम परिपक्व अवस्था में क्यों न पहुंच चुके हो।

विश्वासीयों के बीच में आध्यात्मिक समस्या एक मूल समस्या है। कि उनके जीवन में कोई भी लक्ष्य नहीं है। और इसीलिए उनके आध्यात्मिक विकास में स्थिरता आ जाती है। परमेश्वर उनके जीवन में वर्तमान में क्या जोड़ रहे हैं उस बात पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय, वे व्यक्तिगत समस्याओं से विचलित है या दुनियां में धार्मिक अंहकार में फंस गए हैं।

दो दिल रोते है

यहोशू और न्यायियों की पुस्तक को पढ़ने के माध्यम से मैं मेरे दिल में दो गहरे रोते हुओं के प्रति जागरूक हो गया हूँ।

1. यहोशू की पुस्तक परमेश्वर के महान् कार्य को मेरे जीवन के द्वारा आशा देने के लिए मेरे दिल को बुलाता है। सब कुछ संभव है परमेश्वर के कार्य को मुझमें या चर्च में, स्थानीय या दुनियां भर में कुछ भी या कोई या उनमें से मुझे रोक या पकड़ नहीं सकता।
2. न्यायियों की पुस्तक मेरे दिल को नम्र बनाती है। मैं अपने जीवन की जिम्मेदारियों को तिरस्कृत करने के लिए बहुत ही शोकितन होता हूँ। मैनें बाहर ले जाने की उपेक्षा की जिसे मैं बहुत अच्छे तरीके से कर सकता था।

जीत की पूरी क्षमता भयानक हार की शर्म की बात करने के लिए ठीक बगल में ही बैठता है। प्रत्येक अन्य की याद दिलाता कि क्या हो सकता था। हम किसी भी तरह गैर विकास के बंधन में पकड़े शिकार नहीं हैं, हर पल हम अवसर की दहलीज पर खड़े हैं।

जैसे हम द्वार के माध्यम से कदम रखते हैं, हम हमारे आध्यात्मिक विकास में कहां खड़े हैं, हम उसका मूल्यांकन कर कर सकते हैं। परमेश्वर ने हमारे जीवन के लिए क्या किया, हमारे हृदय इस बात के लिए परमेश्वर के आभारी हैं, किंतु अक्सर हम उन तरीकों को नजरअंदाज किया, जीवन के सिद्धांत को न्यायाधीशों की तरह हमने नकार दिया। एक बार जिसने हमें उत्साहित किया, उसने अब हमें नजर से गिरा दिया।

यहाँ जीवन के कुछ अवसर हैं। तुम्हारे क्या हैं ?

* क्या आप एक भयानक पति के साथ रह रहे हैं?
* क्या आपके अधिकारी आपकी क्षमताओं के प्रति असंवेदनशील है?
* क्या किसी ने आपकी लड़की को चुराया है?
* क्या आप अपने बुढ़ापे के प्रति क्रोधी हो रहे हैं?

यदि हम अपने आसपास या हमारे जीवन में या दुसरों में समस्याओं का निरीक्षण करते हैं तो हमें स्मरण रखना चाहिए कि हम जीत के लिए बगल में बैठे हैं। क्या कभी आपने इस बात को ध्यान दिया की दुश्मन की शक्ति वास्तव में बाइबिल मे कभी भी मायने नहीं रखती। ऐसा बस इसीलिए है क्योंकि परमेश्वर हमेशा महान और पर्याप्त हैं, और इसलिए यहोशु की पुस्तक हमारी चेतावनी के रूप में न्यायाधीशों के ठीक बगल में बैठता है।

जहिर है, हम अतीत को पीछे नहीं हटा सकते हैं, किंतु हम विश्वास के साथ खत्म भरी भविष्य में कदम रख सकते हैं, उच्च इच्छाओं पर प्रभु हमारी सेवा और पिछली नाकामियों को ध्यान नहीं देते हैं। परमेश्वर आज हमें नेतृत्व के लिए तैयार हैं।

प्रेरित ने हमें याद दिलाई, ''इसीलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो, निर्बुद्धियों की नाई नहीं पर बुद्धिमानों की नाई चलो। और अवसर को बहुमोल समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं। इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है। (इफिसियों 5:15 – 17)

समय जीवन की एक पहलू है कि हम सभी को प्रभावित करता है। सौभाग्य से परमेश्वर की कृपा और एक विनम्र और खोजने वाला हृदय हमें खोये हुए समय में भी बना सकता है। दाखरस बनाने के लिए किण्वन प्रक्रिया में समय लगता है, किंतु यीशु ने पापी को एक क्षण में ही दाखरस में बदल दिया।

आपके आत्मिक विकास का चार्ट

आपके आत्मिक विकास की तालिका

आध्यात्मिक रीति से आप कितने पुराने हैं। स्पष्ट करें कि आध्यात्मिक चार्ट के अनुसार आपके आध्यात्मिक जीवन में आप कहां है। ध्यान दें। आपको कहां होना चाहिए था।

शिक्षाएं –

* हमारे सीमित समय को जो हमें जरूरत और पहचान देता है हम आध्यात्मिक विकास की चार्ट पर कहां हैं उसे देखते हुए हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।
* परमेश्वर रणनीतिक रूप से हमारे जीवन के माध्यम से काम करना चाहता हैं। लेकिन एक बढ़ती हुई विकास और परिपवक्ता महत्वपूर्ण और आवश्यक है।
* जब हम योजनाबद्ध रूप तरीके से विकास करना चाहते हैं, तो विकास अचानक रोमांचित और तेज हो जाता है।

मनन और चिंतन

* इफिसियों 5: 15 – 17

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ आध्यात्मिक जीवन के विकास के चार्ट पर आप कहां है इंगित करें। आप उस स्थान के लिए क्यों सुझाव देते हैं ?

⇨ क्या आपमें आध्यात्मिक विकास से इस बारे में बात करें, परमेश्वर से कहे कि वह अपनी इस बिन्दु पर जीवन में अपनी प्राथमिकता को उजागर करें।

⇨ अपने कार्य को पहचाने, दिनचर्या बद्ध, सुधार इत्यदि को पहचाने, ये सारी बातें, आपके ध्यान को केन्द्रित कर सकते हैं और आपके व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है कि आप परिवर्तन को गोद ले लें। और इन्हें आप लिख लें कि आप कैसें और कब लागू करेंगे। (नीतिवचन 3:6)

जीवन के स्रोत और जीवन के सत्व

अध्याय : 19 - 32

19
शिष्यता का उद्देश्य

जिस समय तक विश्वासी इन तीन चरणों के बारे में सुनते है वे अवसर पहले से ही बहुत प्रोत्साहित हो जाते हैं वे इस विचार को समझने के लिए इस उपाय को कुछ इस तरह से समझते है जैसे पैरों के लिए उन्हें एक नया सेट दिया गया है। उनमें से अधिकांश लोगों ने मसीही शिक्षक और प्रचारक शामिल हैं इस कारण से बहुत से मूल्यांकन उपकरण नहीं बनाई गई हैं जो हमारे व्यक्तिगत जीवन और आध्यात्मिक जीवन किस जगह पर है हम उसे माप नहीं सकते।

वह बात जो मैं नहीं जानता

आम तौर पर विश्वासी यह सोचते हैं कि आध्यात्मिक जीवन अस्पष्ट और भ्रमपूर्ण है। उनका सारांश कुछ तरह हो से जाता है, ''मैं बचाया गया हूँ, और स्वर्ग की ओर देखने वाला हूँ''। वे पवित्रीकरण का रास्ता किस तरह का दिखना चाहिए के बारे में नहीं बल्कि भ्रमित हो रहे है।

मेरी पत्नी और मैं अभिभावकों को अर्थात माता-पिताओं के बच्चे के पालन-पोषण पर प्रशिक्षण दिया हैं। हम वहां एक ही समय को देखते हैं। कम से कम अनुभव के साथ बढ़े परिवारों और घर में रहने वाली माताओं के कमी के कारण, युवा जोड़े ये नहीं जानते कि अपने छोटे बच्चे की देखभाल कैसे करें।

ऐसा करना सहज होगा कि एक बच्चे को बढ़ाना या स्तनपान कराना या उसके बारे में सोचना स्वभाविक है, लेकिन वे ऐसा नहीं कर रहे हैं। इस बात पर जोर देना चाहिए कि बच्चों को ठीक से स्तनपान और उन्हें सही रीति से बढ़ाने के लिए सीखना चाहिए। स्वभाव समय पर चिढचीडा या बेकार हो सकता है। इसी कारण अस्पतालों और दाई क्लीनिकों में ऐसे वर्गो को शामिल किया गया हैं।

मसीह की शिक्षाओं के साथ यह भी सच क्या हम सिर्फ परमेश्वर की उपस्थिति को ही महसूस करते हुए आराधना कर सकते हैं? क्या विश्वासीगण स्वभाविक रूप से विकसित होगें? नहीं, यह सहजता के साथ कम से कम कार्य नहीं कर सकता। वो भी हमारी गिरी हुई दुनिया में।'' फिर जब अन्य जाति के लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही व्यवस्था की बातों पर चलते है, तो व्यवस्था उनके पास न होने पर भी वे अपने लिए आप ही व्यवस्था है''। (रोमियो 2:14-15)'' वे व्यवस्था की बातें अपने अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और उनके विवेक भी गवाही देते हैं, और उनकी चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती हैं। या उन्हें निर्दोष ठहराती है। 19 वचन इसलिए कि परमेश्वर के वचन के विषय में ज्ञान अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आता हैं, यहां तक कि वे निरूतर है। (रोमियो 1:19-20)।

यही कारण है कि यीशु ने हमें चेले बनाने के लिए कहा है, हमें दुसरों को लाना है। जहां वे इस बात को सीखेगें कि यीशु ने क्या कहा और किया हैं। इन सभी बातों का निरीक्षण करने के लिए यीशु ने आज्ञा दी''। (मत्ती 28:19)

हाल के वर्षो में, मैं इस बात को देखते हुए खुश हुँ कि अत्यधिक लोग शिष्यता के बारे में लोगों को प्रशिक्षण दे रहे और शिक्षा दे रहे हैं, हालांकि मैं निराश हूँ, कि लोग इसे विधि के बजाए एक पथ या राह के साथ करना चाहते है, व्यक्तिगत संबंध के बजाए सामग्री पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं, मैं व्यक्तिगत रूप से दूसरों को प्रशिक्षण करने के तरीके पर ध्यान केन्द्रित करने की सराहना करता हूँ।

मैं यह भी सीखता हूं कि क्योंकि यह कई मामलों में, एक अस्मरणीय कला और महंगी परामर्श सत्र में चला। हमें इससे परे जाने की जरूरत है, हालांकि हमारा उद्देश्य इतना है कि हम लोगो को सिखाएं। जिससे लोग जाने सीखना ही शिष्यता का वास्तविक अर्थ है। हममे सें अधिकांश लोग मात्रात्मक शिक्षण के साथ अधिक सहज महसूस करते हैं, उन सारी चीजों का परीक्षण और उन्हें मापा जा सकता है। पश्चिमी शिक्षा ने आध्यात्मिक विषयों पर हमें इस बात के लिए प्रशिक्षित किया है, हालांकि, इतनी

आसानी से परीक्षण नहीं कर रहे हैं। इसीलिए :

1. अधिक आसानी से नजरअंदाज कर दिया।

2. अस्पष्ट (जब तक दिल से पढ़ाया जाता है)

3. कम प्रासंगिक मालूम पढ़ता है।

पौलुस और दूसरे लोग परिवर्तन के महत्व जो जब हम यीशु मसीह के बारे में जानने के लिए प्रयास करते हैं तब यह ठीक जगह लेती है ''और नए मनुष्यत्व को पहिनलो जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है'' (इफिसियों 4:24)'' और अपने मन को आत्मिक स्वभाव में नए बनते जाओ।'' (इफिसियों 4:23)। नवीनीकरण बहुत महत्वपूर्ण हैं परन्तु यह प्र्याप्त स्पष्टता और विश्वास के साथ पालन लिया जाना चाहिए।

सत्य की शन्ति में 1 यूहन्ना 2:12 – 14 में

प्रस्तुत शिक्षण दृष्टिकोण में उत्साहित हूं (1 यूहन्ना 2:12 - 14) यूहन्ना एक बार इस बात को बहुत ही साधारण बनाता हैं जिससे हम सीख सकें क्योंकि हम सभी परिवार के सादृश्य से परिचित हैं शायद वह परिवार में बढ़ा हुआ हैं या कम से कम बढ़े हुए लोगों को उसने देखा है। परमेश्वर इसे बहुत आसान बनाता है। ताकि इसे सीखे और जानें । इससे अधिक हालांकि यूहन्ना हमें बेहतर अलग अलग हिस्सों को जानने में मदद करता है और पूर्ण प्रणाली प्राप्त करता है। इन तीन चरणों को पूर्व खं डमें बताया गया है। लेकिन यह सिर्फ शुरूआत है। आध्यात्मिक बातें सीखना सागर में गहरे और गहरे पानी में चलना है। हम शायद एक अप्रत्याशित लहर द्वारा टकरा सकते हैं, या नीचे देखने में सक्षम नहीं हो सकते लेकिन परमेश्वर ने हमें गहरे पानी में आगे बाहर आने के लिए इंगित कर रहा है।

परमेश्वर हमसे यह चाहता है कि हम उस पर भरोसा रखें जो वह हमारे जीवन में लाता है ताकि हम उसके वैभवशाली व्यक्तित्व और योजनाओं का अधिक अनुभव कर सकें।

एक प्रशिक्षित के नजरिए से

इस खण्ड में, जीवन के स्रोत और जीवन का सत्व, हम दिखाएगें कि कैसे यह संपूर्ण व्यवस्था एक शैक्षणिक और प्रशिक्षण के नजरिए से भागों के साथ परस्पर कैसे सम्बंध रखती है। हमने इसे व्यक्तिगत स्तर पर सीमित रास्ते में किया है, लेकिन यह बड़े पैमाने पर चर्च के प्रशिक्षण की जांच करने के लिए तथा इस उपकरण का विश्लेषण करने के लिए महत्वपूर्ण है।

यह दृष्टिकोण केवल आधारित शिक्षा ज्ञान के लिए विरोध के रूप में आगे हमारे प्रशिक्षण में आध्यात्मिक विकास के लिए प्रेरित करेगें कि जो हमारे शिक्षण में लागू किया जा सकता है और प्रशिक्षण के व्यवहारी तरीको के साथ आने में हमारी मदद करता है। मुझे यंकीन नहीं हैं कि हम शिक्षकों को आमतौर के लिए लग रही मात्रात्मक मापन उत्पादन कर सकते हैं लेकिन हम निश्चित रूप से से परमेश्वर के लक्ष्य तक पहुंचने में मदद कर सकते है। जब हम दूसरों को प्रशिक्षित कर रहे हैं।

आदर्श रूप में, एक मसीही शिक्षक चर्च या स्कूल में यह चाहता है कि प्रत्येक छात्र आध्यात्मिक विकास करें और यह कार्य उसका या उसकी मसीही की संपूर्णता में हो, यदि हमारा लक्ष्य है तो हमें उत्सुकता से सीखने को बढ़ावा देने के लिए सही माहौल को विकसीत करना चाहिए। शिष्यत्व एक महत्वपूर्ण अवधारणा हैं जो हमें परमेश्वर के पास हमारे लिए जो लक्ष्य है उस तक पहुंचने में हमारी मदद करता है।

शिक्षाएं

* शिष्यताएं सीखने का वर्णन करती है जो कि क्या होता है जब एक अत्यधिक परिपक्व विश्वासी एक नए विश्वास में आए व्यक्ति की यीशु मसीह के बारे में आवश्यक बातें सीखने और मसीही की तरह कैसे मजबूत जीवन जी सकते हैं। इन छोटी से छोटी बातों बताने में सहायता करता है।

* औपचारिक या अनौपचारिक मसीही प्रशिक्षण की चुनौती वास्तव में विश्वासी को ईश्वरीय परिवर्तन अनुभव करने के लिए हैं।

* औसत दर्जे के ज्ञान पर ध्यान की कमी यह मुश्किल मात्रात्मक सीखने का मूल्यांकन करने के लिए बनाता है।

* जीवन परिवर्तन तब जगह होती है जब हम मसीह के माध्यम से परमेश्वर के बारे में जााने के लिए रोमांचित होते हैं, शिक्षक छात्र में परिवर्तन को देखने में सक्षम हैं।

मनन और चिंतन

* इफिसियों : 4:24

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ एक उदाहरण दे, जब आपने कुछ सीखा, किंतु उसे प्रयोग में लाने के लिए अभाव है।

⇨ क्या आप यह कह सकते है कि आप वर्तमान में आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए उत्सुक है? क्यों या क्यों नहीं ?

⇨ क्या आपने कभी किसी को चेला बनाया है? कब और किसे?

20
जीवन के सत्व

हम में से अधिकांश लोग पृथ्वी की अंदरूनी कामकाज करने के लिए अपने जीवन को पूरी रीति से अनजान रखते हैं। शायद वहां एक भूकंप आया हो, हम में से कुछ को आश्चर्य हो सकता है, कि हमारे पैरों के नीचे क्या स्थित है लेकिन हम में से अधिकांश लोग बिना दिए सोच के रह रहे हैं।

हम में से बहुतों का मसीही जीवन ऐसा ही है। मसीह लोग इस बात से पुरी तरह अनजान है कि उनका मसीह जीवन उनके स्वयं के कारण सतह से नीचे चला जाता है। यद्यपि पवित्रीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन किया गया है और इसके बारे में काफी कुछ लिखा जा चुका है, फिर भी सबसे जरूरी आध्यात्मिक जीवन क्या है के बारे में एक सूक्ष्म और छिपी अज्ञानता बनी हुई है।

पहले पुस्तक में हम पवित्र आत्मा के प्रतिनिधि के माध्यम से काम कर जीवन शक्ति की शक्ति का वर्णन किया है। जीवन सिर्फ एक सामान्य बल नहीं है, लेकिन यह एक व्यक्तिगत उद्देश्य के साथ है और होगा। जब कोई पूरे होश में आत्मा के उद्देश्य के साथ काम करता है तो उस बल की शक्ति को और अधिक आसानी से महसूस और समझा जाता है। जब विश्वासीगण आत्मा के मंशा से अनभिज्ञ होते हैं, तो वे भावना के विपरीत रहने वाले भ्रम के विभिन्न रूपों को जन्म देती है।

पवित्र आत्मा के कार्य की कुछ धाराओं की पहचान मसीह धर्म के साथ जुड़े आंदलनों के द्वारा की गई है। वे आत्मा की परिपूर्णता की कड़ी को बुलाने के लिए उत्साहित हैं लेकिन दुर्भाग्य से अक्सर नहीं, वो भी जीवन में परमेश्वर के अधिक उद्देश्य से अनभिज्ञ हैं।

प्रेरित जाानबुझकर बीच में रखते हैं, 1 कुरिन्थियों 13 प्रेम का अध्याय, 12 और 14 अध्याय के बीच में पहला कुरिन्थियों 13 को रखा हैं, जो पवित्रात्मा के वरदानों को संबोधित करता हैं। ये वरदाान निश्चित रूप से महत्वपूर्ण हैं अन्यथा इसका उल्लेख नही किया जाता। ध्यान दे हालांकि चेलो ने अधिक से अधिक बात करने के लिए या चर्च हेतु हमे बाधित किया ताकि कुछ महान हो, "क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़ी से बड़ी बरदानों की धुन में रहो! परन्तु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं।" (1 कुरिन्थियों 12:31)

दिल क मुद्धों पर ध्यान केद्रित

पवित्रात्मा के माध्यम से परमेश्वर हमारे जीवन में क्या करता है हमें मसीह की तरह अधिक पवित्र करता है, यह पवित्रात्मा का मूल उद्देश्य हैं। पवित्रात्मा के बिना वरदानों कर दुरुपयोग और दुरव्यवहार होता हैं।

पवित्रात्मा के भीतर के कामकाज और प्रयोजन यह है कि हम, जो मैने, "जीवन का सत्व" कहा है क्योंकि यह सभी का दिल हैं, जो हम विश्वसियो के रूप में करते है। पवित्रात्मा जीवन लाता है, लेकिन यह विश्वासी के जीवन को अंलकृत भी करता हैं। वह ना सिर्फ हमें आत्मिक वरदान देता हैं किन्तु हमसे परमेश्वर के वचन के माध्यम से बातचित करता हैं और हमें उभारता है कि हम विश्वास से बाहर जायें।

> " परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।"

दुर्भाग्य से हम पवित्र आत्मा के बारे में जान सकते है बिना उसके प्रभाव के द्वारा। यह हमारे ज्ञान पर आधारित शिक्षा प्रणाली हमारे सीखने की एक बुनियादी समस्या को बहुत अच्छी तरह से हमारे जीवन के लिए लागू नहीं करती हैं। कुछ हद तक विपरीत भी सच है। लोग पवित्र आत्मा को और उसकी योजना को समझे बिना उसके द्वारा ले जाया जा सकता है। यही अज्ञानता है।

पवित्र आत्मा के अच्छे और ईश्वरीय योजना को पटल में छोड देना "अनाज्ञाकारिता" कहलाता है। कुछ लोग जानते है कि पवित्र आत्मा उन्हें क्या करने के लिए कहता है, लेकिन बाहर ले जाने के लिए रास्ते में क्या चाहता है वह उसे पूरी करने

की इच्छा रखता है। राजा शाऊल दिल की इस कठोरता का एक दुखद और निराशापूर्ण उदाहरण हैं। उसने कई भूल से सबक सीखने के कई अच्छे अवसरों को गवां दिया।

हमारे नजरिए की जाँच हमें हमारे भीतर के व्यक्तित्व को एक बेहतर तस्वीर मिलने में मदद करता हैं ''हर एक जन जैसा है में ठाने वैसा ही दान करें ना कुड़कुड़ाने और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है'' (2 कुरिन्थियों 9:7) हमें बिना शिकायत के दूसरों की सेवा करना है। हम कितनी जल्दी परमेश्वर के कार्य को पूरा करने के लिए जाते हैं ज बवह हमें प्राथमिकता देकर किसी बाते दिखाता है।

परमेश्वर के दो सामान्य प्रतिक्रियाएं

जब हम इस बात की गहराई को माप लेते है कि ईश्वर पवित्र आत्मा के माध्यम से हम में क्या करना है यह बहुत आसान और अधिक खुशहाल हो जाता है, हम स्वयं को उसके साथ और उसकी योजनाओं के साथ सीधे संबंध बांध देते है।

दा नमूना : एक विश्वास क साथ पावत्र आत्मा का सहभागता

ऊपर के चित्र में हम दिल की अज्ञानता और कठोरता विश्वासी और पवित्र आत्मा के बीच एक बाधा के रूप में कैसे है उसे देते है और दाहिनी तरफ प्रतिबंध नीचे ले लिया गया है विश्वासी ने जीवन में पवित्र आत्मा के प्रभाव की अनुमति दे दी गई है। तब विश्वासी पवित्र आत्मा की तरह हो जाता है। यह पवित्र आत्मा से प्रभावित व्यक्ति और पवित्रात्मा से भरे हुओं का सही अर्थ है।

मसीही प्रशिक्षण में स्पष्ट रूप में पवित्र आत्मा के उद्देश्यों की पहचान करनी चाहिए जिससे परमेश्वर के लोग उत्सुकता से परमेश्वर के कार्य में शामिल हो सकते है। दुर्भाग्य से कई लोग स्पष्ट रूप से इस काम की व्याख्या नहीं कर सकते हैं। तो परमेश्वर के लोग एक सम्पूर्णता के रूप में अंजान हैं कि उनके मसीही जीवन की सतह के नीचे क्या चला जाता है।

विश्वासी बाहर कमजोरी में जीते है, खुशी की कमी में रहने की तुलना में क्या परमेश्वर उनसे चाहता है। विश्वासी की शान्ति पवित्र आत्मा के काम के साथ विश्वास की शान्ति को जोड़ने के द्वारा जाती है। (रोमियो : 12:1-2)

शिक्षाएं

* कई विश्वासीगण उनमें पवित्र आत्मा से अनभिज्ञ है और इस तरह से बेस्वर या उसके परमेश्वर के कार्य के प्रति शंका व्यक्त कर रहे हैं।
* जब विश्वासी पवित्र आत्मा के कार्य करने से प्रतिक्रिया करने के लिए तैयार नहीं हैं तब एक आत्मिक कठोरता और निरूत्तरता विकसित करता है।
* जब हम स्पष्ट करते हैं कि कैसे परमेश्वर पवित्र आत्मा के माध्यम से उसके पवित्र उद्देश्यों को पूर्ण करता है तो हम हमारे आध्यात्मिक जीवन के एक व्यापक परिपेक्ष को प्राप्त करते है, और यह आत्मा से भरे रहने वाले को गले लगाने की अनुमति देता है।

मनन और चिंतन

* यूहन्ना : 16:13

समनुदेशन : (असाइनमेंट)

- ⇨ यूहन्ना रचित सु.समाचार 16:5 – 15 पढ़े। और पवित्रात्मा के बारे में आप क्या निरीक्षण करते है उसे लिखिए।
- ⇨ हाल ही में एक समय के बारे में सोचों जब तुम संघर्ष करते है आत्मा के साथ कुछ करने के लिए उत्साह करे या न करे के बारे में। यह क्या था। आपने कैसे प्रतिक्रिया की थी।

21
दर्शनाभिलाषी

प्रशिक्षिकों और प्रशिक्षकों के रूप में, हमें पूरे प्रभाव को जो परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी के लिए रखते हैं, उसे काबू में रखने की जरूरत है। क्यों? क्योंकि यह वह विश्वास है जो परमेश्वर के पास है और वह हम तक पहुंचने के लिए पकड़ने के लिए, और दूसरों तक पहुंचा सके।

आज कई लोग लक्ष्यों, दृष्टि और दूसरों तक पहुंचा सकें। आज कई लोग लक्ष्यों, दृष्टि और मिशन के बयान के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन वास्तव में उन्होनें लंबे समय के बारे में सोचा आधुनिक पुरूषों और महिलाओं से पहले शास्त्रों में सन्निहित किया गया है। परमेश्वर एक डिजाइन के अनुसार कार्य करता है क्योंकि वह उसके महान योजना को पुरा कर रहा है। सृजन का काम एक अद्भुत येाजना है, लेकिन यह उसकी सर्वोत्कृष्ट रचना है। और परमेश्वर की कलिसिया उसके छुटकारे की योजना है। (कुलिसियों 1:15 - 20)

2 इतिहास:29 अद्भुत परिवर्तन का वर्णन कर रही है जो हिजकिय्याह के सुधारों के दौरान यहूदा में स्थान ले लिया वे पिछले राजाओं के पिछले सुधारों की तुलना में बहुत गहरी पीठ में बना हुआ है उसे उम्मीद थी कि वह क्या हो सकता है।

वही उम्मीद परमेश्वर के शब्द सुनने से आई है। उसने कल्पना की की परमेश्वर पसंद के रखने के बारे में क्या चाहते थे और इसलिए वह तद्नुसार काम किया और इस्राएल के सभी लोगों के बजाए यहुदा ने सिर्फ दक्षिणी राज्य को आमंत्रित किया, उसने ऐसा किया क्योंकि शास्त्र इस्राएल के सभी पुरूषों के भाग लेने के महत्व पर प्रकाश डाला है उसने परमेश्वर के वचन को बाहर ले जाने के लिए राजनीतिक विवाद का बहादुरी से सामना किया।

हमारा लक्ष्य है कि शास्त्र से हम क्या पाते है बल्कि संस्कृति हमें क्या कहती हैं वह महत्वपूर्ण हैं बाइबल हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर हमारे विवाह, कलीसियाई जीवन, व्यक्तिगत संबंधो और हमारे जीवन के अन्य पहलुओं के लिए क्या चाहता हैं। जब शब्द यह हम क्या सोचते है या क्या अनुभव करते है इससे अलग बताता है तो यह हमें दो सवालों के साथ चुनौती देता है।

1. क्या आप परमेश्वर के लक्ष्यों पर विश्वास करते हैं? और क्या यह आपके व्यक्तिगत लक्ष्यों को आकार दे सकता हैं?

2. क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपको लक्ष्य तक पहुंचने में सहायता करेगा?

लक्ष्य और फल

हमारे बगीचे के सारे पौधे (यहां तक कि एक अवांछित खरपतवार) योजनाबद्ध रूप से विकसीत होने के लिए एक छिपे हुए योजना के अनुरूप बढ़ते हैं, तो पवित्र आत्मा भी हममें से प्रत्येक में उसकी योजना का खुलासा करते है। इस पुस्तक को लिखने का हमारा मुख्य उद्देश्य है कि परमेश्वर की छिपी योजनाएं और सत्ता के बीच की कडी यीशु मसीह में हमारे स्वयं के जीवन को प्रगट करने के लिए है।

बेशक, हर व्यक्ति और सेवकाई अद्वितीय है, लेकि वहां समानताएं हैं। पौधों की जड़े शाखाओं, पत्तियों और फलों के बारे में सोचो। प्रत्येक पौधे अद्वितीय और अभी तक संदर्भ है, और अभी तक समारोह की समानताएं है। जामुन के पौधों में समानताएं है कि वे रस भी बना सके परंतु अभी भी यह बहुत भिन्न है जामुन की तुलना में फर्क ज्यादा गहरा हो जाता है।

मसीही विश्वासीयों को उनके धर्मी जीवन जीने के लिए कई तरह की समान सुविधाएं होती हैं लेकिन वहां अद्वितीय बुलाहट और मसीह के प्रत्येक अनुयायी में परमेश्वर के उद्देश्य के भाव का भाव नहीं होगा। जैसे वे समर्पण में बढ़ रहे हैं और प्रभु में स्वयं को अर्पण कर रहे हैं, और हमारे अच्छे प्रभु, उचित समय में इन बातों को उन्हें प्रगट करते है। एक पौधा तब तक फल नहीं लाता जब तक वह परिपक्व नहीं बन जाता। यदि एक पौधा स्वस्थ्य और मजबूत है तो वह बहुत अच्छा फल दे सकता हैं।

समय मुददा कभी-कभी एक परीक्षण की जगह बन जाता है। जैसा यह अब्राहम के लिए हुआ था। उत्पत्ति : 16

वहां एक बुनियादी मूलभूत सेवा है जो परमेश्वर के लोगों को समर्थ बनाता है, बाकि लोगों के लिए एक अधिक विशेष प्रशिक्षण भी हैं जो परमेश्वर के राज्य के कार्य में उनके अद्वितीय भागीदार को स्पष्ट करता है। यह यहां है जहां हम सबसे महत्वपूर्ण विकास और परिवर्तन को देखेंगे जब वे फल देने की शुरूआत करेगें। कोई भी नए पौधे में परिपक्व फल की उम्मीद नहीं करता, और ना ही जल्दी फल के विकास पर ध्यान केन्द्रित करता है, इसी तरह यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि हम ऊर्जा पर ध्यान केन्द्रित करें और इस बात की पहचान करें कि वह निश्चित विश्वासी अपना या अपनी बढ़ोतरी, और फिर जरूरत है कि कुछ भी विकास को बढ़ावा देने के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। फल समय पर आ जाएगा, परमेश्वर ने इसे इसी तरह बनाएगा।

> ''और रात को सोए और दिन को जागे और वह बीज ऐसे उगे और बढ़े कि वह न जाने। पृथ्वी आप से आप फल लाती है। पहले अंकुर, तब बाल, ओर तब बालों में तैयार दाना''। (मरकुस : 4: 27-28)

यह मसीह में अपने नए जीवन को चलाने वाली जीवन शान्ति का जोर है वह अपने उद्देश्यों के बारे में लाने के लिए और परमेश्वर की भली और दयालु योजनाओं के अनुरूप फल प्रदान करने की चाहत रखता हैं। कुछ लोगों का मानना हैं, दुर्भाग्य से, लक्ष्यों और मानकों के बारे में सोच से बचना चाहिए, यदि ठीक से समझा प्रशिक्षण हमें लक्ष्यों की ओर ले जाता है, उनसे दूर नहीं ले जाती।

फर्श पर चारों और घसीटने वाले एक छोटे बच्चे के बारे में सोचों, माता-पिता बच्चों के भविष्य के बारे में सपना देखना शुरू कर देते हैं। और ज बवह बच्चा व्यस्क हो जाता हैं तो वह इस तरह कि बातें कह सकते है ''कि जब उसकी शादी हो जाती है ..... तब वह बढ़ता है।

शिशु, बच्चा और किशोर चरणों ने एक व्यक्ति का जीवन अस्थायी है। क्योंकि वे निर्मित और प्रारंभिक है, अच्छे प्रशिक्षण की शुरूआत व्यक्ति के पहचान के द्वारा होती है। और वह कदम से कदम बढ़ाकर आवश्यक आध्यात्मिक देखभाल और शिक्षण को लागू करता है। ज्ञान और अनुभव के बिना, हम केवल नकल कर सकते हैं जिसका हमने अनुभव किया हैं। एक निश्चित बिन्दू तक यह सही है लेकिन अभी भी हम अज्ञानता में प्रशिक्षण दे रहे हैं।

प्रशिक्षण और अभिभावक

मैं और मेरी पत्नी ने अभिभावकों या माता-पिताओं की कक्षा में शिक्षाएं की है अभिभावक कई क्षेत्र में सवाल (उनमें से कई है) करते हैं, मेरी पत्नी बुद्धिमानी से बच्चे की उम्र की पहचान उसके सवालों के जवाब देने से पहले करती है। बच्चा साल में, एक या दो साल का होगा या इन दो के बीच भारी अन्तर बना सकते है एक कि सलाह क्या होगी।

जब हम अपने मसीही जीवन के हर चरण में परमेश्वर के पास हमारे लिए क्या है समझते हैं तो, ''वैसे'' प्रशिक्षण और प्रशिक्षु दोनों को बहुत स्पष्ट हो जाता है। हम ना सिर्फ बिखरे हुए चर्च के कार्य को पूरा करने के लिए हैं, परन्तु विश्वासियों को प्रशिक्षण की सहायता से संवारना ताकि विशिष्ट लक्ष्यों को पूरा कर सकें, और यह उनकी परिपवक्ता के स्तर पर निर्भर करता है।

प्रशिक्षक या अधिक यर्थात से ढंढने वाले उपदेशकों, दोनों में मैं ओर मेरी पत्नी परमेश्वर के साथ कार्य करने के साथ परमेश्वर की इच्छा की खोज कर रहे थे। ओर उचित रास्ते की भी खोज कर रहे थे जिसमें शिष्यों के जीवन में प्रशिक्षण को शामिल कर लें। एक अच्छे माता-पिता अपने बच्चों को किस तरह से प्रशिक्षित करते हैं यह उससे अलग नहीं है।

परमेश्वर की योजना और शान्ति

इस प्रक्रिया के बारे में सबसे बड़ी बात यह है कि यीशु मसीह के जीवन की शक्ति हममें बढ़ रही है और हमें अपने लक्ष्य की और नेतृत्व कर रही है ताकि हम उसके समान बन जाएं। यह एक संयोग नहीं हैं परन्तु एक बहुत ही विशेष प्रक्रिया हैं परमेश्वर हममें है ताकि उसके उद्देश्यों को बाहर ले जा सके।

हमें इस जीवन को ना बनाने और ना ही बढ़ने के लिए मजबूर करने की जरूरत हैं। यदि वास्तविक है, तो आगे बढ़ने और फल देने के लिए जन्मजात गति से चलना होगा। हम बस परमेश्वर के साथ, परमेश्वर क्या कर रहा है, एक किसान कि तरह जो अपने बगीचे की देखभाल करता है। याद रखें, यीशु ने पतरस से कहा ''मेरी भेड़ों को चरा'' पतरस को भेड़ जीवन देने की जरूरत नहीं थी लेकिन उन्हें खिलाने और उनकी देख-भाल एक अच्छे चरवाहे के रूप में करनी थी।

प्रशिक्षण हमारे साथ शुरू होता है और फिर इसे और अधिक आसानी से दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए हस्तांतरित किया जा सकता हैं, प्रशिक्षण तो बस दूसरों को सिखाना है जो परमेश्वर पहले से ही हमारे स्वयं के जीवन के साथ कर रहा है।

शिक्षाएं

* आत्मिक दृष्टि हमारी उम्मीदों और ध्यान देने के आकार के द्वारा लिखित सत्य से पैदा होता है।
* लक्ष्यों को आध्यात्मिक विकास के हर चरण के लिए विशिष्ट होने की जरूरत है।
* हम रचनात्मक विकास का मार्गदर्शन करने के लक्ष्यों के लिए तैयार नहीं हैं लेकिन ध्यानपूर्वक ध्यान दे रहे है कि परमेश्वर ने शास्त्रें में क्या कहा हैं उसे हमारे जीवन में जोड रहे हैं।
* परमेश्वर के पास विशेष योजनाए हैं जो वह प्रत्येक विश्वासी के लिए है कि वह परमेश्वर का प्रेम और प्रकाश को इस संसार में बनाए रखें। यह उनके (उसका/उसकी) अपने फल हैं (यह अच्छे कार्य करना भी कहलाता है)।

मनन और चिंतन

* मरकुस 4:27-28

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ परमेश्वर का आपके जीवन में इस बिन्दू पर क्या लक्ष्य है? कम-से-कम तीन की पहचान के लिए प्रयास करें।

⇨ आप लक्ष्यों को बनाने और स्थापित करने के लिए कैसी प्रतिक्रिया करते हैं क्या आप इस प्रक्रिया से उत्तेजित या निराश है? समझाओ क्यों ?

⇨ कुछ बगीचे, पौधों या फसलों के लिए परमेश्वर के दीर्घकालिक लक्ष्य क्या है? आपका आध्यात्मिक जीवन के संदर्भ में क्या मतलब है?

⇨ ऊपर उल्लेख लक्ष्य तक पहुंचने के लिए प्रक्रिया को याद दिलाओ और आपके आसपास के कुछ विश्वासीयों के बारे में सोचे, प्रत्येक के लिए प्रार्थना करें कि परमेश्वर उनकी सहायता करें ताकि वे आगे बढ़ सकें। यदि परमेश्वर आपके दिल से उन्हें सहायता देने के बारे बात करता है तो इसे पूरा करे।

22
हमारी सीमायें

विश्वासी की जीवन की लम्बी अवधि का लक्ष्य मसीहा की समानता में बढ़ना है। लेकिन इसे अधिक से अधिक विशेष रूप से विश्वासी की जीवन की लम्बी अवधि का लक्ष्य मसीहा की समानता में बढ़ना है। लेकिन इसे अधिक से अधिक विशेष रूप से परिभाषित करने की जरूरत है। जितना स्पष्ट रूप से हम अधिक कल्पना करते है कि परमेश्वर हमारे जीवन से क्या चाहते है उतना ही आसान यह लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए होता है।

जैसे एक प्रशिक्षक, एक स्कूल, एक माता-पिता इत्यादि के रूप में हम उन लोगों तक जो परमेश्वर के लक्ष्यों से परे जा रहे हैं। उनकी खोज करेगें। ऐसा ही कुछ हम समझते हैं और उन्हें स्वीकार करने की जरूरत है।

सर्वप्रथम, हम ऐसी इच्छा रखते है कि प्रशिक्षण किसी एक खास व्यक्ति के साथ एक महीने, एक साल, पाँच साल के दौरान हो उसी तरह उनके साथ हमारा समय भी अलग-अलग होगा। हमें कई बार एक या एक सप्ताह में या एक घण्टे में व्यक्तिगत को पढ़ा सकते है और इस प्रकार से हम उनके साथ परस्पर कई बार मिल सकते है।

परन्तु तुम रब्बी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरू है ..... और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता ना कहना ..... क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है अर्थात मसीह (मत्ती : 23: 8-10)

यीशु यह नहीं कहता कि हमें किसी को शिक्षक, और कुछ लोगों को गुरू कहें लेकिन वह हमारी उपाधि, स्थान और अनुसंधान के बारे में हमारी दृष्टिकोण को संबोधित कर रहे थे। हमें इस बात का एहसास करना चाहिए कि हम परमेश्वर के साथ काम कर रहे हैं ताकि एक व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास के काम कर सके। यद्यपि हम महत्वपूर्ण है किंतु हम कुंजी नहीं है। भौतिक जीवन के पोषण करने की छवि हमें यहां मदद करता हैं, हम किसी व्यक्ति के विकास का कारण नहीं है लेकिन हम उसे आसान बनाते है कि वे आगे बढ़ सके।

हमारे हिस्से की सही परख

जब हम हमारे स्कूल या चर्च के पदों में वापस कदम रखते हैं तो हम देख सकते हैं कि हमारे पास अगवेपन का उपहार या पवित्र आत्मा से दी हुई शिक्षा (रोमियो 12:7-8) वही आत्मा जो हममें भावना देती है आगे दूसरे के विकास के लिए उपयोग करते हैं। हमारे प्रशिक्षण की अवधि निराशा की वजह से हम कम लगती है लेकिन हमें विश्वास रखना चाहिए। परमेश्वर पर विश्वास रखें उस आकार के लिए और उस अवधि के लिए। पूर्वानुमान लगायें कि कैसे आप उस विकास को बढ़ावा देगें जो परमेश्वर उस समय के दौरान में छात्र या शिष्य के जीवन में लाना चाहते हैं। इसके अलावा परमेश्वर के महान कार्य को भी स्मरण रखें। आत्मविश्वास में परिश्रम करें प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमेश्वर के मन में पूरा काम हैं और हमारा हिस्सा केवल एक छोटा सा है लेकिन महत्वपूर्ण है।

हमारे सीमाओं की खोज

लम्बी अवधि के लक्ष्यों की जांच करने के बाद वे सारे विश्वासीयों के लिए समान होगें। हमें विचार करने की जरूरत है विकास की विशिष्ट चरण उस व्यक्ति में कितनी है जिस व्यक्ति के साथ हम काम कर रहे हैं। हमारे समय, स्थिति, संसाधनों, उपहार और परमेश्वर की योजना को ध्यान में रखते हुए परमेश्वर इस समय के द्वारा या उसे पूरा करने के लिए क्या कोशिश कर रहा है? प्रत्येक पहलू पर नजर डालें।

समय: निर्धारित करें कि हम प्रशिक्षु के साथ कितना समय व्यतीत करते हैं। उदाहरण के लिए हम वर्ग समय के तेरह घण्टे हो सकता है। पूरे घण्टे में क्या किया जा सकता है कि योजना बनाए और निश्चित करें कि आप घर असाइनमेंट/समनुदेशन घर ले जाकर उस कार्य का उपयोग सुनिश्चितता से करते है।

परिस्थिति : सीखने की स्थिति एक व्यस्क रविवार स्कूल की कक्षा हैं एक कालेज वर्ग, सलाह, समय या कोई अन्य स्थान है हमारी परिस्थितियां हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि हमें किस बात पर चर्चा करने की जरूरत है। और उम्मीद है कि हम इस बड़े लक्ष्य मे उचित है उसे जोड़ कर देख सकते हैं। उदाहरण के लिए : पास्टर आपसे यह चाहता होगा कि आप आठ सप्ताह शिष्यता से बुकलेट का उपयोग करें, जब आप किसी विश्वासी से मिलते हैं, या मदरसा/सेमीनारी आपसे यह चाहते है कि आप उनके उद्देश्यों को पूरा करें।

संसाधनः हमारे संसाधन मोटे तौर पर हमें आकार देते हैं कि हम क्या कर सकते है। एक स्थान में पुस्तक हैं जबकि एक के पास मुद्रित सामग्री है चाहे कुछ भी हो। एक के पास कम्प्यूटर हो सकता है जबकि दूसरे के पास नहीं, एक और वर्ग के लिए यात्रा करने के लिए पर्याप्त धन है। इन जरूरतों के प्रति सचेत रहें सीमित संसाधन अकसर प्रभावित प्रशिक्षण के लिए चुनौती है, लेकिन शायद इन सीमाओं के बावजूद परमेश्वर आपको कठिन परिस्थिति ने माध्यम से प्रशिक्षित कर रहा है ताकि आप दूसरों को उत्साहित करे कि परमेश्वर कैसे काम कर सकता है। सीमाओं से बचे।

वरदानः आशापूर्वक हमने काफी हद तक क्या लिया है रेखंकित करें कि परमेश्वर ने आध्यात्मिक रूप से उपहार दिया है। यह महत्वपूर्ण है कि हमने हमारे आध्यात्मिक उपहार की तर्ज पर हमारी सेवाओं को बाहर ले जाने के लिए अपने विश्वास तो बढ़ा दिया है। याद करें, हालांकि हमारे वरदान या उपहार विशेष स्थिति में कार्य करने में सक्षम नहीं हो सकता है। इस समय में धैर्य और परमेश्वर के ज्ञान की मांग जरूरत है।

परमेश्वर का उद्देश्यः यह, शायद सभी का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है परमेश्वर हमारे उपहार या संसाधनों के द्वारा ही सीमित नहीं है। इस कारण से प्रार्थना और सावधान विवेचना जरूरी है कि परमेश्वर इन घण्टों या मिनट के माध्यम से क्या करने की इच्छा रखता है।

हमारी भूमिका को समझना

कुछ लोग अपने आप को सहज और तैयार महसूस करते हैं और इस बीच कुछ लोग अपने आपको भ्रमित और असहाय महसूस करते हैं। जब हम परमेश्वर की इच्छा को अधिकता से पकड़ते हैं। तब हम अधिकता से देखते है कि कैसे हमारा योगदान बहुत कम है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि काम कितना भी छोटा हो। लेकिन फिर भी परमेश्वर बड़ी महानता से आपके सेवा को महत्वता देता है। यह आपको कभी भी तिरस्कृत करने के लिए नहीं है।

उस व्यक्ति के बारे में सोचो जो एक नली या (पाईप) के साथ उसके सख्त जरूरतमंद पौधों को पानी देने के लिए खड़ा है। वह जीवन या विकास नही ला रहा है। लेकिन उसकी सेवा के माध्यम से परमेश्वर उनके बड़े काम को पूरा करने में सक्षमहै। छोटी सी सेवा? हाँ! महान योगदान? और हाँ ।

> ''मैंने लगाया अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया,'' इसलिए ना तो लगानेवाला कुछ है और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है। (1 कुरिन्थियों 3 :6-7)।

तो हालांकि हमारे कई सीमाओं के बारे में जानने या पता करने की आवश्यकता है, हम उन्हें परमेश्वर के स्वर को कम करने या हमारे योगदान को घृणा करने के या पैदा करने के लिए अनुमति नहीं देते हैं। न ही हम उचित है और ना अधिक से अधिक अत्याधिक खुद के बारे में सोचते हैं। विश्वास की कमी ''शंका'' साथ ही घमण्ड परमेश्वर के अद्भुत काम के विद्धंसक है जो वह दूसरों के माध्यम से करवाने की इच्छा रखता है।

हमारे विश्वास को मजबूत बनाने के लिए प्रशिक्षित करें

जब परमेश्वर के लक्ष्यों की जाँच करते हैं, हम कभी भी आवंटित सीमाओं, समय या अन्यथा में इन लक्ष्यों को पूरा कर सकते है आश्चर्य है कि कैसे (वे आपने पादरी या विभाग को प्रमुख के लक्ष्य से काफी अलग हो सकता है।) हमें एक चमत्कार की जरूरत है।

हर समय मैं मसीही अगुवों के लिए विदेशी द्विभाषी प्रशिक्षण संगोष्ठि का संचालन करता हूँ, मैं, दुनिया का सामना करता हूँ। समय सीमित है। भाषा एक बाधा है। बहुत गर्मी हो सकती है। मैं स्मरण करता हूँ एक बार शिक्षण साईट के बाहर एक मूर्ति यात्रा का प्रदूषण देखा था। और पटाखे हमारे संदेश के साथ जोरों की प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।

शिक्षक होने के नाते यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने विश्वास का संचालन करें। अपने जीवन में निराशाओं को राज्य करने ना दे कि किसी उद्देश्य के लिए अपनी दृष्टि को परमेश्वर से दूर ले जाना पड़े। प्रशिक्षण के समय अपने दिल में परमेश्वर को स्थान दे कि उसका नाम महान बने। वह एक मिनट में बहुत कुछ हासिल कर सकता है। जबकि हमें एक घण्टा या उससे अधिक लगता है। हमारा विश्वास परमेश्वर के संपूर्ण उद्देश्यों और उसके लोगों को बढ़ाने के लिए काफी थोड़ा या छोटा है। ''और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है(और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।'' (मत्ती 16:18)

पतरस के पास ज्यादा अधिकार या ज्यों उसे दिया गया था, परंतु यह यीशु ही है जो जोर देकर उसकी कलीसिया का निर्माण किया था। और उसकी योजनाओं को हताश करने में कोई बात सक्षम नहीं हो पाएगी।

परमेश्वर की निर्भरता पर जीवन जीये

यदि हमारे लक्ष्य ठीक तरह से परमेश्वर के महान उद्देश्यों के प्रकाश में बनते हैं, तब हम नित्य देखेगें कि हम मात्र जीवन को बढ़ावा देगें इसके बजाए कि पैदा करने की हम शिक्षक नहीं हैं, मसीह हैं के तहत शिक्षकों और प्रशिक्षकों के रूप में हमें हमारे हिस्से पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है। जैसे हम इसे करते हैं, परमेश्वर ढुंढता है कि वह हमें अपनी पवित्र आत्मा से भरें और हमारे सीमित समय और परिस्थितियों में परमेश्वर चाहता है कि सभी बातें पूर्ण हो।

यद्यपिह म एक धर्मोपदेश श्रृंखला कि शिक्षा दें, एक रविवारीय स्कूल कक्षा, छोटे समूह इत्यादि। हम प्रकाश में परमेश्वर के महान उद्देश्यों में रहते हैं। और इसलिए ताकि हम ठीक से उसके अद्भुत का को बाहर ले जा सके।

मसीही की फटकार याद रखें, यदि हम सोचते है कि हम इन बातों में महारत है या निपूण है, तब हम समस्या का हिस्सा है इसके बजाए कि समाधान कर रहे हैं। परमेश्वर वास्तविक वृद्धि का कारण बनता है और इस तरह के विकास के एक मंच से दूसरे छात्रों में विकास लाता है।

मसीह गुरू या शिक्षक है। यह उसकी आत्मा है जो दोनों शिक्षक/प्रशिक्षक के साथ/ इसके साथ-साथ प्रत्येक छात्र/चेला साथ-साथ काम करते हैं। वह मध्यस्थ को देखता है जिसके द्वारा वह प्रभावी रूप से उसकी सच्चाई को पारित करें। ठीक से, इन बहुमूल्य छात्रों के लिए जीवन का पानी बाहर रखने के बारे में अनुभव करें। शायद हम और अधिक प्रार्थना करना खत्म कर दें।

शिक्षाएं

* लम्बी अवधि के लक्ष्य हमें बेहतर शिक्षण में हमारी छोटी लेकिन महत्वपूर्ण जगह की सराहना करने में मदद करते हैं।
* क्योंकि हम समय में सीमित है, और अन्यथा, हम विनम्रतापूर्वक परमेश्वर के ज्ञान के लिए कि कैसे अपने संसाधनों का अच्छे से उपयोग करें कि विश्वासीयों के विकास को तेजी से बढ़ाएं।
* हमें विश्वास में सिखाना और सलाह देना चाहिए जिससे परमेश्वर उसका अधिक से अधिक करके उसके महान गुण को पूरा करेगा।
* सबसे अच्छा शिक्षक अपने वफादार सहायक के रूप में परमेश्वर की ओर से काम करने पर उसके दिल को शुरू करेगा।

मनन और चिंतन

* 1 कुरिन्थियो 3 : 6-7
* मत्ती :23:8-10

समनुदेशन (असाईनमेंट)

⇨ आप इस अध्याय से सबसे महत्वपूर्ण सबक/ शिक्षा जो सीखे हुए है उसे नाम दे व उस पर प्रार्थना करे।

⇨ क्या आप उच्च लक्ष्यों के अधिकारी है और निराश हो जाते है या कम लक्ष्यों के कारण अप्रभावी हो जाते है कृप्या समझाईये।

⇨ यह सबक/शिक्षा कैसे आपकी मदद कर सकते है उच्च या उपलब्धि हासिल करने के शिक्षण के अपनी दृष्टिकोण में सुधार कर सकते है।

⇨ पहला कुरिन्थियों 3:5-10 पर मनन करे और संक्षेप में प्रमुख करें कि क्या सबसे अच्छा तरीका है। दूसरों के शिक्षण और प्रशिक्षण के लिए।

23
पूर्णांक के भाग

एक महत्वपूर्ण समस्या प्रशिक्षण के साथ परमेश्वर के समग्र लक्ष्यों को पूरी रीति में समझने में सक्षम नहीं है। यूहन्ना के विश्वासीयों के आत्मिक यात्रा का विश्लेषण में यूहन्ना 2:12 – 14 हालांकि हमें वहीं प्रदान किया जाता है जिसे हमें जानने को जरूरत है और किसी भी खास स्तर पर विकास को समझने में मदद करता है।

जीवन के सादृश्य, स्रोत, बिजली, डिजाइन और जीवन का अभियान बहुत उपयोगी है। लेकिन यह हमें मध्यम श्रेणी के लक्ष्य तक पहुंचने में मदद नहीं करता है, हम आसानी से वर्तमान में एक से एक स्तर को दुसरे से अलग है, लेकिन वह प्रमुख क्षेत्रों की पहचान भी विशेष स्तरों पर घटित करने के लिए कर रहे हैं। ये हमारे प्रमुख लक्ष्य हो जाते हैं।

विशिष्ट आध्यात्मिक लक्ष्य एक बच्चे में वृद्धि के संकेत के समान है। एक बच्चे का पहला कदम या पूरे वाक्य में बोलना शारीरिक विकास के सामान्य निशान हैं। ये निशान अप्रत्यक्ष लक्ष्य हैं वे एक नहीं है कि हम उसे सीधे प्रभावित कर सकें। माता – पिता की यह जिम्मेदारी है कि वे सामान्य देखभाल और विकास के लिए अनुकूल माहौल प्रदान करें।

मेरे एक या दो बच्चे बोलना शुरू करने में धीमी गति से थे। माता – पिता के रूप में हम सोच रहे थे, कि कुछ गलत था। सौभाग्य से कुछ गलत नहीं था। हमें सीखना है कि प्रत्येक बच्चे अलग गति से विकास करते है। हम इस विकास में तेजी लाने के लिए ज्यादा कुछ नहीं कर सकते, विकास के ये निशान बहुत महत्वपूर्ण है और यह हमें बताते हैं कि सब कुछ ठीक है।

आज की दुनिया में अनुसंधान के अपने विशाल ढेर के साथ, चिकित्सा कर्मचारी अक्सर कह सकते हैं कि कुछ गलत है जो बच्चे के ठीक से ना बढ़ने के कारण हैं। शायद एक बच्चे के समुचित विकास के लिए एक निश्चित पोषक तत्व की कमी है। कई विकल्प है, रसायनिक पूरक हो सकते है, या आगे बनाये सही शरीर के अंग प्रेरक द्वारा या शायद शल्यचिकित्सक की जरूरत हो सकती है। सभी समाधान किसी तरह संदर्भ के भीतर कार्य और शरीर पर शासी निकाय कार्य करना चाहिए यदि वे सफलता प्राप्त करना चाहते हैं।

आध्यात्मिक लक्ष्य

हमारे आध्यात्मिक आवश्यकताओं के साथ एक ही स्थिति है। हम प्रणाली नहीं बनाते है, बल्कि इसके बजाए इसके साथ काम करते है। हम हमारे आत्मविश्वास को आध्यात्मिक प्रणाली में जगह देते है जिसे परमेश्वर ने बनाया है। यह काम करता है। आध्यात्मिक विकास होता है और शास्त्र हमारे विकास का अंदाजा लगाने में मदद करने के लिए विकास प्रदान की है। परमेश्वर ने शिक्षकों और प्रशिक्षकों की नियुक्ति की है, हम इस सामान्य विकास स्वरूप को प्रोत्साहित करते है।

विकास के निशान हमारे लक्ष्य बन गये हैं। इसलिए नहीं कि हम लोगों को बढ़ाते हैं, लेकिन यह हमें बाध्य करता है कि हम इस बात से अवगत रहें कि परमेश्वर विभिन्न चरणों में लोगों के साथ क्या कर रहा है। हमें जरूरत है कि हम पूरक सकारात्मक विकास को बढ़ावा दें, और उन्हें प्रोत्साहित करें। पौलुस के शिक्षाओं के तीन लक्ष्य को ध्यान दें। 'आज्ञा का सारांश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो'' (तीमुथियुस 1:5)

यूहन्ना ने विभिन्न चीजों की पहचान की है जिसे प्रत्येक चरण में होने की संभावना है। हम आगे शारीरिक विकास के सादृश्य का उपयोग करके इन विचारों को पूरक कर सकते है। मैनें व्यक्तिगत रूप से यह पाया है कि यूहन्ना के सादृश्य आसानी से हस्तांतरणीय अवधारणाओं को प्रदान करता है और साथ ही कार्यान्वयन के व्यावहारिक कदमों की पहचान करता है। वे सरल और अभी तक गहरे रहे हैं।

एक प्रशिक्षक के रूप में मैनें हर एक कुएं को गहराई से खोदा है। लेकिन अभी तक सीखने की परिपूर्ण गहराईयों को नहीं समझ पाया। जैसे खनन की तरह एक व्यक्ति थोडी गहराई तक ही खोद सकता है।

महान प्रशिक्षण

महान प्रशिक्षण के लिए हम दो प्रमुख बिन्दुओं /पहलुओं को हम कैसे अधिक-अधिक से अधिक जोड़ जानते है।

1. स्पष्टता, जिसके द्वारा हम सभी परमेश्वर के समग्र उद्देश्य और विकास से जुड़े हुए हैं।
2. सामरिक आध्यात्मिक देखभाल और शिक्षा की जरूरत हर एक व्यक्ति के लिए किसी भी जब आवश्यक है।

विश्वासी एक महान/बड़ी समस्याओं का सामना करते है जब उन्हें सही शिक्षण नहीं दिया जाता, जब समस्या बढ़ जाती है तब कलीसिया के मजबूत विश्वासी परमेश्वर से दूर चले जाते है।

कुछ सख्त कलीसियाओं कुछ समय के लिए आने वाली है। मैं जानता हूँ ये समस्या काफी बड़ी है। क्योंकि दो महत्वपूर्ण चरण चर्च में से गायब हो चुके हैं और इसी कारण से विश्वासी सही शिक्षा या देखभाल को प्राप्त नहीं कर पा रहे है।

शिक्षाएं

* परमेश्वर क्या कर रहे है कि समग्र तस्वीर हमें परिपेक्ष्य में सब कुछ रखने में मदद करती है।
* प्रशिक्षण में सबसे बड़ी समस्या संपूर्ण भागों में भिन्नता के कारण होती है, दीर्घकालिक लक्ष्यों से कम अवधि के लक्ष्यों में (उदाहरण : परमेश्वर के लक्ष्य)

मनन और चिंतन

* 1 तिमुथियुस : 1:5

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ अपने जीवन में प्रमुख जिम्मेदारियों को लिखों जैसे - स्कूल, काम, इत्यादि।

⇨ परमेश्वर के लम्बे अवधि का लक्ष्य इस पृथ्वी पर आपके लिए क्या है? परमेश्वर कैसे चाहता है कि आप आत्मिकता में बढ़े? और उसकी सेवा करें।

⇨ परमेश्वर आपने अपनी आध्यात्मिक जीवन को परमेश्वर की लम्बी अवधि और विकास के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया है।

24

एक उद्देश्य के साथ प्रशिक्षण

वास्तव में एक प्रशिक्षण के नजरिए या दृष्टिकोण के विकास के हर चरण में किसी बात पर चर्चा करने से पहले, आईए देखें, कैसे हम अलग-अलग हिस्सों के बारे में हमारी समझ के आकार दे सकते हैं?

इस मामले में, आईए हम चेला या अनुयायी बनाने के लक्ष्य के बारे में सोचें। शायद हो सकता है हमने व्यक्तिगत रूप से तीन अनुयायी या चेला बनाया है। (शिष्यत्व प्रशिक्षण की विशेष आकृति या रूप है) घमण्ड करें कि वे बढ़ चुके हैं, जैसे माता-पिता उनके अपने विकास पर घमण्ड करते है वैसे ही हम भी उनके जीवन के क्षेत्रों के अंतर्गत अपने संबंध को बना सकते हैं। (एक माता-पिता की तरह)।

उनके प्रशिक्षण के दौरान हमें सावधान रहना होगा कि हम उन्हें क्या शिक्षा दे रहे हैं। उनको शिक्षा देना स्वयं को प्रशिक्षित करने जैसा है शिक्षा के दौरान उन्हें यह महसूस होना चाहिए कि वे भी दूसरों को चेला या अनुयायी बना सकते हैं। हम केवल इस बात पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते कि हमने उस आज्ञा को आना है बल्कि यह सोचना है कि क्या हमारे अनुयायी/चेलों के पास भी दूसरो को प्रशिक्षित करने का बोस या दर्शन है।

जिन्हें हमने पढ़ाया या शिक्षाएं दी है अब क्या वे दूसरों को चेला बना सकते हैं ? क्या वे जानते हैं कैसे ? क्या वो परवाह करते हैं ? क्या वे स्वयं को प्रशिक्षित कर रहे हैं कि अन्य चेले बनाएं ? पौलूस वही किया करते थे?

> ''और जो बातें तूने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने योग्य हो। (2 तीमुथियुस : 2:2)।

2 तिमुथियुस इस भाग के साथ-साथ शिष्यत्व प्रक्रिया का वर्णन करता है। पौलुस ने तिमुथियुस को चेला बनाया। और तिमुथियुस स्वयं को प्रशिक्षित करता है कि उसके द्वारा प्रशिक्षित लोग दूसरों को भी चेला बनाये।

अत्यधिक मुझे भूमिका निभाना पसंद नहीं हैं, अधिकतर मैं महसूस करता हूँ कि मुझे अगुवों की सहायता करनी चाहिए, वास्तव में उनसे जो आशा की जाती है मैं उस भावना से उन्हें प्रशिक्षण देता हूँ। हमें अंत तक लक्ष्य के लिए आगे कि और दौड़ने की आवश्यकता है। जो प्रकाशमय हो और कैसी शिक्षाएं प्रदान की जा सकती है।

कई नौजवान शादी ही नहीं चाहते और वे अब शादी से मना कर देते हैं। क्योंकि वे शादी के लिए बेहतर आश्वस्त नहीं है। परन्तु वे अलग ही रहना चाहते है। मसीही माता-पिता अपनी जिम्मेदारियों को अपने बच्चों के रवैयों के साथ बांटते हैं बिना उनकी समझ और जानकारी के बिना, कि वे चेले बने। वे एकसाथ रहने के लिए संतुष्टि प्रदान करेगें। लेकिन शादी के लिए यह बहुत कम लक्ष्य है। दंपति को चाहिए कि वे विवाहित हो और उनका परिवार हो ताकि उनके बच्चे प्यार, खुशी, संवाद, परस्पर बातचीत और व्यावहारिक प्रेम जो जीवन को बढ़ाता है भक्ति में मिलाए।

जो शादी शुदा जो अपने ही बच्चों के साथ रहते है वे आगे के बारे में नहीं सोचते हैं। यदि यह विवाहित जोड़े केवल अपने में रहते और मात्र बच्चों को ही चला रहे हैं तो उन्हें बताते हैं कि क्यों शादी से तिरस्कार करना और वे शादी नहीं करते।

हमारे मसीही स्कूलों या शिक्षण क्षेत्र संस्था के बारे में क्या विचार है? क्या वे सोचते हैं कि परमेश्वर संपूर्णता में क्या चाहते है कई बार की तुलना मे अधिक लघु अवधि में लक्ष्यों को, और बहुत से हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली से, और सरकार की अपेक्षाओं, पाठ्यक्रम कार्यप्रणाली का आकार देकर खत्म कर देते है। यह कहते हुए कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं? परमेश्वर क्या कहते है।

मसीह लोग दबाव का मुकाबला करने के लिए प्रयासरत है, वहां वे उपासनालय को थामें हुए हैं जहां आध्यात्मिक जीवन के लिए संदेश सुनाया जा रहा है। यह सराहनीय है, परन्तु क्या ये पर्याप्त है? ज्यादातर मामलों में हमें मिल जाएगा पर वह नहीं हैं। मसीहियों को व्यक्तिगत रूप से अपने आपाको उपयुक्त स्तर पर आध्यात्मिक विकास के लिए चुनौती देने की आवश्यकता है पर कुछ लोग आराधनालय के सेवा में भाग लेने की द्वारा अपने आप को संतुष्ट रहते हैं।

निश्चित रूप से परमेश्वर उत्तरदायी छात्रों तक पहुंचने के लिए इन समयें का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन वे लोग जो कड़वे है, केवल वे अधिक कठोरता को प्राप्त करेगें।

मेरे जीवन में एक संकट

मैं एक उदाहरण के साथ समाप्त करता हूं। एक ठोस बाइबिल स्कूल से स्नातक प्राप्त करने के बाद, कई वर्ष भाषा सीखने के बाद और एक अच्छे चर्च में अनिवार्य निवासी सेवा देने के बाद, अंत में मैने मेरे सपने को सच होते हुए देखा। मैं एक चर्च शुरू करने के लिए कुछ अन्य मिशनरियों के साथ-साथ नागरिकों के एक महान टीम के एक विदेशी मिशनरी का हिस्सा बन गया। लोग प्रभु को जानने के लिए आने लगे। सबसे अद्भुत बात है जब पहली बार बपतिस्मा सेवा दक्षिणी ताइवान में एक नई आवासीय क्षेत्र की एक पार्किंग में आयोजित किया गया था।

एक प्रमुख अलगाव

यह था इसके बाद मैंने एक जीवन झरनों के अनुभव का महसुस किया मैं नहीं जानता था कि इन नए विश्वासियों के साथ क्या करना चाहिए इसके अलावा उन्हें मसीही गतिविधियों में शामिल होने और सेवाओं में भाग लेने को कहा जाए। ऐसा नहीं है कि मैनें बाइबल स्कूल के दौरान मिशन के पाठ्यक्रम को नहीं लिया, मैनें चर्च निर्माण पर एक मदरसा/या सेमिनारी में क्लास लिया। मैंने शिष्यता पर भी क्लास लिया था। लेकिन कुछ गड़बड़ी थी।

ऐसा कैसे हो सकता हैं कि मसीही अगुवेपन के प्रशिक्षण में जो बने आवश्यक है वही मेरे प्रशिक्षण में कमी थी, लेकिन यह कई साल पहले की बात है, और अक्सर मैं इस अनुभव के बारे में सोचते हूँ।

किसी तरह मैं नहीं सिखाया गया था कि एक विश्वासी कैसे बढ़ता हैं और विकास के हर चरण में कैसे उसे सहायता देनी चाहिए चेलों के निर्माण की प्रक्रिया मेरे शिक्षण में अनुपस्थित थी।

तब से मुझे अपने प्रशिक्षण अैर चारों और के लोगों के और उसके आंकलन करने के लिए मेरे पास ज्यादा समय है, मुझे ऐसा लगता है कि मैनें परमेश्वर क्या कर रहा है कि एक समग्र समझ को मैंने कभी भी हासिल नहीं किया है। धार्मिक सभाओं में पवित्रीकरण कभी भी शिष्यत्व के रूप में लागू नहीं किया गया। शास्त्रों के द्वारा जो प्रचार किए गए किसी भी तरह पार नहीं गए और वे आध्यात्मिक जीवन विकास की प्रक्रिया से संबंधित थे। उसी की समझ उन्होनें पैदा की ।

कई देशों और चर्चो में यात्रा करने के द्वारा मैनें सीखाया, और मैं देखता हुँ कि यह समस्या भूगोल, सम्प्रदाय या शिक्षा तक सीमित नहीं है। कुछ विश्वासी और चर्चो के लोगों में एक दर्शन है कि वे अपने लोगों के निर्माण शिष्यता की प्रशिक्षण के द्व ारा करना चाहता हैं। कई ऐसे चर्च जो भाग आज की तरह ओर एक महान उत्साह और भक्ति के साथ है, शायद कभी भी उनके चर्च में शिष्यत्व प्रशिक्षण दिया गया हो, बड़े पैमाने में हिस्सों में जुड़े ना होने के कारण प्रशिक्षण का भाग कभी भी पूरा नहीं होता है।

दो हजार वर्षो के बाद, चर्च अभी तक समझ नहीं पाया हैं और शिष्यत्व कि मूल बातें लागू नहीं किया है क्या इसका एक उचित मूल्यांकन हो सकता है ? ऐसा क्यों है कि सबसे प्राथमिक चीजों को उपेक्षित किया गया है?

मेरी राय में, परमेश्वर परमेश्वर के प्रति समर्पण और यही प्रशिक्षण दूसरे धर्मो लोगों के एक आंदोलन के निर्माण के लिए सबसे बड़ी बाधा से एक इसाई जीवन की एक समग्र तस्वीर की कमी है। मसीही लोगों ने स्पष्टता के माध्यम से और वास्तविकता के द्वारा नहीं सोचा कि विश्वासी जीवन की प्रक्रिया उसकी या उसका आत्मिक जीवन और विशेष निर्देश की उसका अगले कदम पर विकास का अगला रूप ले लें।

एक मजबूत ईश्वर लक्ष्य की कमी के कारण कई अन्य छोटे और अपर्याप्त लक्ष्यों के लिए हमारे गतिविधियों को पूरा करने के लिए अनुमति देता है। हमारे व्यापक लक्ष्य यहून्ना की जिन्दगी सादृश्य के माध्यम से सोच द्वारा जगह में स्थापित किया जाता है, हालांकि यहून्ना के बढ़ते सादृश्य हमें बस क्या कि जरूरत है वही प्रदान करते है ताकि हम लघु अवधि प्रशिक्षण को बनाए या जोड़े रखें।

शिक्षाएं

* लघु अवधि के लक्ष्य आकारपूर्ण होने चाहिए और बड़े आध्यात्मिक जीवन लक्ष्य से जुड़े हो जो सभी विश्वासियों के लिए प्रभु के पास है।
* यह आवश्यक है कि हम दूसरों को प्रशिक्षित करें ताकि ये दर्शन दूसरों को प्रशिक्षित करने में जरूरी हो।
* कुछ व्यावहारिक रूप से लक्ष्य यहून्ना हमारे लिए प्रदान करता है। लघु अवधि के लक्ष्यों के साथ परमेश्वर का पूरा उद्देश्यों संबंधित है। क्योंकि मसीही जीवन और अनुभव की पूरी दृष्टि पर्याप्त रूप से पारित नहीं किया जाता है।

मनन और चिंतन

* 2 तिमुथियुस 2 : 2

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ क्या आपने कभी भी दूसरों को अनुयायी बनने के लिए प्रशिक्षित किया है? क्या आप वास्तव में यह कर रहे हैं?

⇨ यदि ऐसा है तो आपने किस स्तर के विश्वासी के साथ काम करने के लिए प्रशिक्षित किया है? कैसे समझाओं?

⇨ यदि आप विवाहित है (यदि नहीं तो अपने माता-पिता के बारे में सोचे) क्या आप शादी से सिर्फ प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं?

25

सावधानीपूर्वक लक्ष्य का होना

शिक्षकों और उपदेशकों के रूप में, हमारी समस्या का आधा हिस्सा यह जानता है कि हमें क्या पढ़ाना है, दुसरा आधा हिस्सा सीखने के लिए छात्रों को प्रेरित कर रहा है। हर मामले में, हालांकि सीमित समय हमारी चुनौती को आकार देगें ताकि दुसरों को प्रभावी ढंग से प्रशिक्षण दे सकें।

हमारे आत्मिक विकास के लिए परमेश्वर के जीवन की योजना हर समय सक्रिय रूप से सिर्फ सतह के नीचे काम करते है। हम प्रभावी ढंग से अपने हिस्से को बाहर ले जाने के लिए उस पर विश्वास कर सकते हैं। लेकिन क्या यह दूनियां के तेजी से शैतानी ताकतों का मुकाबला करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है? यकीन से यही है। चर्च के साथ समस्या यह है कि वे ठीक से अपने दिए गए कार्य को बाहर नहीं ले जा सकते।

हमें पुन: विचार करने की जरूरत जैसे हम अपने लोगों को प्रशिक्षित करते हैं दोनों औपचारिक, शैक्षिक समायोजन जैसे मदरसा (सेमिनारी) और चर्च साथ ही साथ घर पर अनौपचारिक प्रशिक्षण स्थितियों में एक-एक पर दोनों में। जब हम केवल अधिक रणनीतिक रूप से केन्द्रित होते है तो हम सफल हो सकते है हमारे अकिंत तरीके प्रभावी ढंग से परमेश्वर के लोगों और अगुवों को प्रशिक्षण नहीं दे रहे हैं। जीवन का जल बहुतायत से नहीं बह पा रहा है। कई अगुवे इस बात कि शिकायत करते है कि उनके पास पर्याप्त संख्या में अगुवें नहीं है, जबकि वे उन अगुवों की समस्या के बारे में उपद्रव करते या सोचते हैं।

समस्या यह है कि क्या हम जीत सकते है या नहीं? यहून्ना कहता है कि हम उभरे हुए है यहां तक कि युवा विश्वासी। यह विश्वास है जो हम ठीक से शिक्षकों और छात्रों को उत्साहित करने के लिए करेगें। लेकिन कई मामलों में, छात्र इस विश्वास तक नहीं पहुंच पाते। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षकों के पास पर्याप्त विश्वास होना चाहिए। जिससे वे स्वयं को छात्रों को लेकर आगे बढ़े।

नए छात्रों के कक्षाओं के बारे में सोचो, उनके विकास का स्वर, चरित्र, ज्ञान और कौशल में क्या है? शिक्षण को लक्ष्यों के पाठ्यक्रमों को लेकर और इसे तोड़कर घटको में या एकल वर्ग अवधि में ले जाने की आवश्यकता हैं।

क्योंकि छात्रों के साथ समय बहुत सीमित है इसीलिए हमें ध्यान से हमारे विषयों और पाठ्यक्रम सामग्री का चयन करने की जरूरत है। छात्रों का सच क्या है, क्या हम यह मान सकते है? वे कितनी दूरी तक आगे बढ़े है? वे कोर्स के अंत में (पाठ्यक्रम के) अंत में कहां रहेगें। या एक व्यापक संदर्भ में, पांच साल के बाद सदस्य चर्च में कहां होगें या छात्रों के स्नातकोत्तर के बाद उनका स्तर क्या होना चाहिए?

बाइबिल के बारे में जानना अच्छा है या नहीं?

हम मान लेते है कि बाइबिल का ज्ञान पूरे समय सेवा में जाने वाले छात्रों के लिए पर्याप्त है। इसमें कोई संदेश (शंका) नहीं है यह बिल्कुल सत्य है? इसलिए शिक्षकों को इस तरह के पुराने करार के लिए एक परिचय और नए करार के एक नए परिचय के रूप में उनके पाठ्यक्रम को नए आकार देने में व्यस्त हो जाते है। *जैसे समय इजाजत/अनुमति देता है विशिष्ट पाठ्यक्रम के रूप में, यहून्ना रचित सु.समाचार जोड रहे हैं।*

यह अच्छा है लेकिन क्या यह सबसे उत्तम है। यह एक महान भावना को प्रस्तुत करता है। मैं एक भारतीय सु.समाचार प्रचार से मिला जो प्रताड़ित किया गया था। क्योंकि एक बाइबिल की बेहतर व्याख्या नहीं कर सका कि उत्पत्ति के शुरूआत अध्यायों में लोगों की बड़ी संख्या कहां से गई।

मैं पासवानों और प्रमुखों को जानता हूं या मिशन या परामर्शदाता पटरियां हमारे बाइबिल स्कूलों में है, लेकिन वे संबोधित कर रहे है कि हम क्या करेगें बजाए इसके कि हम क्या हैं? जीवन सत्व परिपेक्ष्य इस दृष्टिकोण में चुनौती देता है, क्योंकि यह गहरी परीक्षा की मांग करता है कि छात्र को क्या सीखने की जरूरत है और वह इसे कैसे सीखता है। केवल जब हम पहचान करते है कि कैसे परमेश्वर प्रशिक्षित करता है यह प्रभावी रूप से स्वयं के तरीकों का समन्वय उसके साथ कर सकते हैं।

हमारी बात हमारे आस-पास के प्रशिक्षण के लिए संकटपूर्ण नहीं है, कई लोगों ने पाठ्यक्रम के द्वारा लिए गए बातों को महान रूप से शामिल किया है, मुझे भी मिलाकर। हमें अत्यन्त इसी तरह हमारी दृष्टि को पैना-पैनी करने के लिए, आम तौर पर हमारे लक्ष्य सही है, लेकिन वे परमेश्वर के मुख्य साधन और प्रशिक्षण के उद्देश्यों से अलग है।

जब बुनियादी बाइबिल की कक्षाओं के उदाहरण के लिए जारी करते हैं तो हमें बड़े लक्ष्यों की जरूरत हैं ना कि बाइबिल के ज्ञान मात्र प्राप्त करने की ।

* हम परमेश्वर के वचन के हमारे ज्ञान पर फूल सकते है।
* हम परमेश्वर के वचन को इस तरीके से सीख सकते हैं कि हम विश्वास को नजरअंदाज कर रहे है(उदाहरण के लिए सदुकि जिन्होनें पुनरूउत्थान पर विश्वास नहीं किया था)
* हमें परमेश्वर के वचन का अध्ययन कुछ इस रीति से करना चाहिए ताकि हम बेहतर तरीके से सुन सके कि परमेश्वर हमारे हृदय से बातचीत कर रहा है।
* हमें परमेश्वर के वचन का अधिक ज्ञान प्राप्त करने के रूप में और हमारे विश्वास की बढ़ोत्तरी के लिए सीख सकते है।
* परमेश्वर ने वचन को दिल रीति से सीखने के लिए हमारे दिल हृदय को तैयार रखना चाहिए।

यह सूची आगे जा सकती थी, लेकिन इस बात का उल्लेख किया गया है ताकि इस बात को महसूस करें कि एक बड़ी चुनौती शिक्षक और छात्र दोनों के सामने है। यीशु ने इसे स्पष्ट रूप से बताया है।

> तुम कानों से तो सुनोगें, पर समझोगे नहीं और आंखों से तो देखोगे, पर तुम्हें सुझेगा। क्योंकि इन लोगों का मन मोटा गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते है और उन्होनें आंखे मूंद ली है, कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें और कानों से सुने और मन से समझें और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा करूं। (मत्ती 13:14-15)

हमें यह नहीं मान लेनी चाहिए कि बाइबिल का ज्ञान अकेली हो हमें मदद देगी जब कई बार विपरीत परिस्थिति आती है। दूध का उत्तम भाग खट्टा हो सकता है। जब तक हमारे शिष्य अपने हृदय से समझने हैं और प्रभु की ओर फिरते हैं, वहां कोई भी वास्तविक चंगाई या सीखी ना जायेगी।

यह क्या हमारे चर्च की एक मुख्य समस्या नहीं है? वचन का प्रचार बदलने के लिए नहीं, किंतु मनोरंजन के लिए हो सकता है। लोगो ने विश्वास खो दिया है कि परमेश्वर का वचन बदल सकता है। या वास्तविक आराधना परमेश्वर परमेश्वर परमेश्वर के लोगों को पवित्रता में रहने के लिए नेतृत्व नहीं कर रही है । क्या यह इसलिए क्योंकि वे परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश नहीं ठीक से सतह के नीचे जाने की जरूरत है ताकि परमेश्वर के लोगों के दिलों को तैयार करें।

शिक्षाएं

* आध्यात्मिक प्रशिक्षण हमारे सभी प्रशिक्षण में एकीकृत किया ही जाना चाहिए।
* आध्यात्मिक लक्ष्यों के महत्व में शैक्षिक लोगों का पल्ला झुकना चाहिए।
* कई मामलों में शिक्षकों ने गलती से मान लिया है कि छात्रों की प्राथमिक आवश्यकता ज्ञान है।
* हमारे प्रशिक्षण का पुर्नमुल्यांकन वर परमेश्वर के प्रशिक्षण प्रक्रिया के प्रकाश में होनी चाहिए। अन्यथा हमारे विशेष अवसरों को शिक्षायें बर्बाद हो जाएगी।

मनन चिंतन

* मत्ती 13:14 – 15

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ क्या आपने बाइबिल संबंधित कक्षाएं लिया है ? (रविवार स्कूल सहित) क्या सबसे अच्छा था जिसने कक्षाओं को महान बना दिया? क्या बुरा था? जिसने बुरे को भयानक बनाया?

⇨ क्या आपने महसूस किया कि आपकी शिक्षा/प्रशिक्षण आपको सेवा के लिए तैयार कर रहा है ? कैसे समझाओ।

⇨ क्या सुधार किया जा सकता है ?

26
अंतर को पूरा करना

पश्चिमी शिक्षा ज्ञान में अपने विश्वास को रखता है। मसीहियों को इस दृष्टिकोण का खंडन करना चाहिए और विशेष रूप से धार्मिक शिक्षा का। हम एक बड़े लक्ष्य के लिए मजबूर किये जा रहे हैं और परमेश्वर के वचन की शक्ति को लोगों के जीवन में रिहा कर रहे हैं।

धार्मिक प्रशिक्षण और प्रभावी सेवकाई के बीच काटना विशाल अवशेष रहता है। उनमें से जो स्नातक प्राप्त कर चुके बड़ी कठिनता से तैयार रहते है कि उनके सामने क्या है। इस समस्या के लिए दुनिया का समाधान अधिक शिक्षा की आवश्यकता है। मास्टर और चिकित्सक की डिग्री अब अहम बात है लेकिन पुरानी धारण है कि ज्ञान ही सभी की जरूरत है यह भावना नहीं बदला है।

बेशक, इन डिग्रीयों को ज्यादा हासिल करने के लिए प्रयास करने के लए कहां जा सकता हैं । आत्म अनुशासन अपने आप में एक बड़ा इनाम है, लेकिन हमें इस पर्दे को वापस खींचना और पर्दे के पीछे की घटना को देखने के लिए शुरू करना चाहिए। क्या हमारे पास साहस है कि हम अपने छात्रों से पूछें कि वे सेवकाई और जीवन के लिए तैयार है? ज्यादातर मामलों में वे नहीं कर रहे हैं।

हमारी शैक्षिक दृष्टिकोण सही ज्ञान के साथ, यह बताती है कि एक व्यक्ति महान कार्य के लिए आगे बढ़ेगा। ज्ञान शिक्षा का हिस्सा है, लेकिन पूरे रूप में नहीं हैं। वहां बहुत सारी महत्वपूर्ण तत्व हैं, जो आध्यात्मिक आकार देने, जो हमारे मसीह जीवन में जगह लेने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

ज्ञान में विश्वास अक्सर हमें लोगों से नहीं बल्कि हमें एक साथ जोड़ने की तुलना में दूरी पैदा करते है। आत्मिक परिपक्वता गलत तरीके से धार्मिक प्रशिक्षण के साथ समीकृत है, लेकिन यह इससे दूर है। जब ज्ञान पर जोर दिया गया है, तब प्रभावी रूप से धर्मी जीवन जीने के लिए दिल और अनुसचिवीय कौशल विकसित करने और प्रभावी ढंग से सेवा करने के लिए बहुत कम समय है। उदाहरण के लिए हम उच्च आलोचना के बारे में सीखते हैं, लेकिन हमारे पास कम समय है कि परमेश्वर को अनुमति दें कि वो हमें वचन के माध्यम से सीखायें ताकि हम दूसरों को सीखा सकें।

हम अपवाद के बारे में सुनने के लिए खुश है, लेकिन एक पूरे के रूप में हमारे आगामी चर्च के अगुवों को अनुचित तरीके से एक महान वित्तीय परिव्यय में प्रशिक्षित किया जा रहा है। इन बातों में कोई संदेह नहीं है मदरसा (सेमिनरी) के आधे लोगों को जमा करें जिसमें से पांच साल में आधे लोग सेवकाई छोड़ देगें।

विफलता क्यों?

भ्रम और विफलता क्यों है? क्या इसलिए है कि परमेश्वर का वचन नाकाम रही है? और क्या वह सम्भव है कि परमेश्वर का वचन हमारे दिल में प्रवेश नहीं किया है? या हमने चर्च में प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है? जो हमें जरूरत है कि कलिसिया में ठीक से सेवा दें?

प्रेरित पौलुस थोड़े विश्वास के कारण परमेश्वर का वचन श्रोता के कान तक नहीं पहुंची है, इससे निष्कर्ष निकाला है। बोनेवाला के दृष्टांत में हालांकि, यीशु इस सोच को गहराई से लेता है। वह कहता है कि परमेश्वर के लोग सही ढंग से नहीं सीख रहे हैं क्योंकि उनके हृदय तैयार नहीं है।

क्या होगा जब हम हमारे ध्यान को बदलते है ताकि हम इन छात्रों के हृदय को तैयार कर सके जिससे वो ठीक तरह से परमेश्वर के वचन को प्राप्त कर सकते है? उन्हें सीखने की जरूरत है कि वे कैसे परमेश्वर के वचन के द्वारा विश्वास हासिल करने के बजाय वे इसे सामान्य रूप से एक समनुदेशन (असाइनमेंट) के समान पढ़ते हैं या सिर्फ इसलिए अध्ययन न करते है कि दुसरे लोग बाइबिल के बारे में क्या कहते हैं।

मेरी पढ़ाई के दौरान एक पुराने नियम के प्रोफेसर ने मेरी कक्षा में यह कहां ''यह समय ही एक ऐसा समय है जब आप पुराने नियम को अपने जीवन में पढ़ रहे हैं''।

सोचे कि वह क्लास में क्या पढ़ा रहे थे।

* पुराना नियम महत्वपूर्ण नहीं है।
* पुराना नियम आपके जीवन के लिए प्रासंगिक नहीं होगा।
* पुराना नियम को एक बार पढ़ने के बाद आप उसे दुबारा पढ़ना नहीं चाहेगें।

शायद उसने अनजाने में अपने निजी विश्वास के आधार इन बातों का कहां है। बेशक ऊपर बिंदु के निशान की बातें सही नहीं वह इन बातों को सीधे नहीं कह रहे थे, वहां ऐसा लग रहा था व यह मेरे जीवन के लिए प्रासंगिक नहीं है, और मुझे नहीं लगता कि पुराना नियम आपके जीवन के लिए प्रासंगिक होगा। यह स्पष्ट रूप से दिया जा रहा संदेश था।

पुराने नियम का अध्ययन शुरू करने से पहले ही कई विद्यार्थी डरते हैं, ऐसे परिदृश्य में उनके विश्वास को विकसीत करने की कोई संभावनाएं नहीं हैं। और प्रोफेसर (या) प्राध्यापक यह जानते है कि छात्रों को स्नातक प्राप्त करने से पहले उनके लिए यह कक्षा (क्लास) जरूरी है।

कुछ प्राध्यापक या प्रोफेसर शायद सोचते ही नहीं कि पुराना नियम विश्वसनीय या भरोसेमंद हैं। (कि यह कैसे अपने आपको विपरीत प्रस्तुत करता है) वे इसे एक आलोचक कि तरह सिखाते है और वे उनके आगे आरोपों के विश्वास को कम कर देते हैं। अन्य प्रोफेसरों को इसके विश्वसनीय होने का विश्वास है, जैसा मैने एक का उल्लेख किया, लेकिन वह हमारे जीवन व सेवकाई में प्रासंगिक या ऐसा विश्वास नहीं किया।

वैसे ही कई उपदेश या था संदेश बार-बार वे अपने धर्मोपदेश में सुनाया या बताया करते है। इसके बजाए कि नए संदेश की शुरूआत नए सिरे से विश्वास के साथ करें। प्रचारकों में विश्वास की कमी है जो इस मार्ग में उनके जीवन के लिए प्रासंगिक है।

एक भरपूर विश्वास

यीशु मसीह ने संपूर्णता के साथ पूरे नियम का पढ़ाया है। और पुराने नियम के अनुसार उन्होनें अपना धर्मी जीवन भी बिताया है। उन्होनें परिक्षाओं के समय पुराने नियम से ही उद्धत किया और परमेश्वर कि वचनों द्वारा स्वयं को सुरक्षित रखा था। वे जानते थे कि पिता कि इच्छा पुराने-नियम के माध्यम से उनके जीवन के लिए क्या थी।

> वह चालीस दिन, ओर चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी। तब परखनेवाले ने उससे पास आकर कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो कह दें कि ये पत्थर रोटियां बन जाए। उसने उत्तर दिया : कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकला है जीवित रहेगा''।(मत्ती 4: 2-4)।

हमने हमारे सीखने की प्रक्रिया और सामग्री को पुनः परीक्षण करने का महत्व कभी नहीं दिया। शिक्षकों का यह अत्यन्त आवश्यक हैं कि वे सामग्रीयों से परे जाकर विद्यार्थियों के विश्वास की ओर ध्यान दें ताकि उनके विश्वास का निर्माण उस निश्चित बातों में हो। यह विश्वास उन लक्ष्यों से सीधे संबंधित है जो परमेश्वर हमसे चाहता है।

यहां एक कारण है कि क्यों परमेश्वर के जन या लोगों की वृद्धि इस संसार में धीमी पड़ गई है। परमेश्वर के लोगों ने ज्ञान के क्षेत्र में अधिक ध्यान को आकर्षित किया है इसके बजाए कि वे परमेश्वर के लक्ष्यों को ध्यान में रखते कि उसका लक्ष्य पूरा हो या उसे हम पूरा करें।

यदि हम परमेश्वर को उद्देश्यों और शान्ति में दोहन सफलता के लिए जा रहे है तो ज्ञान से ही समस्या का समाधान किया जा सकता है उस दावे का खण्डन करना चाहिए। हमें चाहिए कि परमेश्वर का वचन हमारे जीवन में सक्रिय रूप से कार्यान्वित हो जाए।

कई छात्र-छात्राएं बाईबिल कॉलेज से जब बाहर आते हैं। तब परमेश्वर के बजाए या परमेश्वर को छोड़ अपने ज्ञान पर ही निर्भर रहते है। सौभाग्य से परमेश्वर हमारे सिस्टम या हमारे तरीके से काम तो कर सकते है पर उनसे अच्छा करते है। लेकिन कैसा होगा यदि हम विद्यार्थी से ऐसी उम्मीद रखें कि वे अपने सेवकाई के ढंग को बदले और यीशु की तरह बने? स्वर्ग में हमारे प्रभु अपनी भेजे की खातिर और उसके नाम के सम्मान के लिए हमारे प्रशिक्षण अधिकार पाने के लिए हमारे लिए इन्तजार कर रहे हैं।

* क्या होता यदि हमारे विद्यार्थियों को स्कूल से सीधे सेवकाई क्षेत्र में कैसा सिखाया या लाया जा सकता है ? (यह आदि ज्ञान, कौशल, भक्ति, चरित्र के संदर्भ में, क्या ले जाएगी?)
* या तो चर्च के संदर्भ में, क्या होगा यदि परमेश्वर के लोग सच में पूरी तरह से या परिपवक्ता में बढ़े तो? (क्या करने की आवश्यकता है कि लोग कलीसिया या चर्च में आए)?

हम निश्चित ही अभी तक थोड़ा सा अपने छात्रों और थोड़ा सा परमेश्वर पर भरोसा रख रहे हैं क्योंकि हमारे शिक्षकों में बहुत कम था उनका (शिक्षकों का) विश्वास कम हैं। हालांकि यीशु को परमेश्वर के वचन पुराने नियम में अधिक या बहुत विश्वास था। ऐसा लिखा है कि मुद्दा यह है कि परमेश्वर ने कहा और आज भी उसका वचन शक्तिशाली है।

शिक्षाएं

* हमारे प्रशिक्षण में, ज्ञान में विश्वास हमारे लक्ष्यों को औपचारिक व अनौपचारिक में भरमा देता है।
* एक शिक्षक का विश्वास एक छात्र के सीखने और विश्वास, दोनों को अच्छे व बुरे के लिए प्रभावित करती है।
* केवल यीशु की तरह परमेश्वर के वचन हमारे शिक्षा, प्रासंगिक, गतिशील, चमत्कार के लिए उपयोगी होगें जब हम पुन: अपने जीवन को समर्पित करेगें।

मनन और चिंतन

* मत्ती : 4 : 4

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ बाइबिल संबंधित किसी भी दो क्लास या वर्गो को ले लो। और उनके क्या उद्देश्य थे उन कक्षाओं में। (सेमिनारी या सण्डे स्कूल इत्यादि के बारे में सोचें)

⇨ शिक्षकों को किस प्रकार का विश्वास था इसके संबंध में?

⇨ कैसे यह क्लास (कक्षा) आपके लिए मददगार साबित हुई या आपको इसके द्वारा चोट लगी ?

27
नए विश्वासीयों को प्रशिक्षित करना

पिछले अध्यायों में हमने धर्मभ्रष्ट और अनुचित नेतृत्व प्रशिक्षण की पहचान या अध्याय किया जिसमें कलीसिया के अगुवों में बड़ी खमियां पाई गई है।

हम यहां मसीही विकास के हर चरण में किस बात की आवश्यकता है संपूर्ण विवरण नहीं दे सकते। हमें आशा है कि हम पर्याप्त समझदारी के साथ प्रस्तुत करेगें कि क्या या किस बात की आवश्यकता को अपना स्थान यहां लेना चाहिए। इसकी प्रस्तुति प्रशिक्षण, पादरी और अनुयायों के नजरिए से की जाएगी कि कैसे उन्हें वे कम से कम परमेश्वर के लोगों को तैयार करें।

यूहन्ना के प्रस्तुतिकरण की शान्ति आध्यात्मिक विकास के प्रत्येक चरण की शुरूआत हैं। यूहन्ना ने विश्वासियों को तीन भागों में बांटा है। (ध्यान दें यह संप्रदाय, जाति या उपाधि पर नहीं है) परन्तु जैसे -छोटे बच्चों का समूह, युवा पुरूषों और पिता। इस अनुभाग में छोटे बच्चों और विश्वासीयों पर ध्यान दिया जाएगा।

''हे बालको, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूं कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए। हे पितरो..... कि तुम पिता को जान गए हो। (1 युहन्ना 2 : 12-14)।

पिछले भाग में, हमने संक्षेप में चर्चा किया कि कैसे एक छोटा बच्चा, विश्वास में आये नए विश्वासी का चित्र इन्हें कैसे एक एक विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। और साथ-साथ भोजन की। एक प्रशिक्षकों या शिक्षक के रूप में हमारे लिए वे सब संकेत है। यूहन्ना के वचनों के अनुसार, हम आसानी से समझ सकते है कि परमेश्वर के प्रमुख लक्ष्य इन विश्वासीयों के विकास के लिए क्या है। ठीक वैसे ही हमें यह समझने की आवश्यकता है कि एक नए विश्वासीयों कैसे प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। परमेश्वर का लक्ष्य विश्वासीयों और प्रशिक्षणकर्ता दोनों के लिए परस्पर समान ही है।

लघु प्रयास (Small Attempts)

किसी तरह चेले बनाने की इस (मत्ती : 28:20) विशिष्ट जरूरत को प्रभावी ढंग से शुरू नहीं किया गया हैं कुछ पासवानों का मानना ऐसा है कि चेले बनाना बहुत महत्वपूर्ण है, हालांकि वे निश्चित रूप से यह नहीं कहेगें, कि यह उनके प्रतिक्रियाओं की स्पष्टता है, या उनकी कमी से है। यद्यपि हमें प्रत्येक विश्वासी जो मसीह पर विश्वास रखते हैं उसके लिए धन्यवादित रहना हैं। हमारी सामान्य उपेक्षा नए विश्वासीयों के देखभाल के लिए काफी शर्मनाक है। यदि हम किसी महिला को किसी बच्चे को देते हुए देख लेगें तो हम हैरान होकर वहां से चले जाएंगे, ऐसा सोचते हुए कि उसका कार्य हो गया। कुछ सु.समाचार प्रचार, जैसे बिलीग्राहम जिन्होनें अनुवर्ती पर थोड़ा और अधिक काम कया हैं लेकिन प्रचार की परम्परा के लिए बहुत कम कमजोर विश्वासीयों के लिए प्रशिक्षण का योगदान एक दोष का पता चलता है।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारे इतिहास या परंपरा हमें नीचे सौंप दिया है, चर्च परमेश्वर के भव्य प्रेम के द्वारा नए विश्वासी को व्यक्तिगत, आत्मिक, देखभाल प्रदान करने के लिए बुलाया गया है। एक ही समय में विशेष रूप से शुरूआती चरणों में, चर्च की देखभाल करने के लिए भी उसे प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। पादरी (पासवान) या इंजीलवादी (प्रचारक)/शिक्षक चेलें बनाने के उस बुनियादी कार्यो को पुरा करने के लिए चर्च को तैयार करने की जरूरत है। ताकि उसके बुनियादी कार्यो को पुरा करने के लिए उसे बाहर ले जाया जा सके।

शिष्यता पर हमारी अन्य पुस्तकें इन क्षेत्रों में व्यापक प्रशिक्षण प्राप्त कर करती हैं लेकिन यह जरूरी है कि हम एक झलक पाए कि यह कैसे प्रशिक्षण समायोजन के साथ कार्य करते है।

सर्वप्रथम, प्रशिक्षकों को अपने दर्शन को बढ़ाना चाहिए यह कार्य परिपक्व विश्वासीयों की जिम्मेदारी हैं ताकि नए विश्वासीयों को पोषित और बुनियादी देखभाल दे सकें। दो वर्ष का एक विश्वासी उचित रीति से प्रशिक्षित होना चाहिए ताकि वो दूसरे विश्वासी को प्रशिक्षित कर सके।

दूसरा: हम देखेगें कि यह बुनियादी देखभाल किस प्रकार से परिभाषित करेगा। यह एक दोस्त के समान, उनके जीवन की समस्याओं में रूचि लेगा साथ ही साथ उन्हें बुनियादी सत्य के द्वारा परमेश्वर के वचन को बताएगा और समस्याओ को कैसे संभालना है और उसका सामना कैसे करता है, उन सारी बातों को बताएगा। अधिक कठिन समस्याएं पासवानों को ले लेनी चाहिए।

तीसरा : हमें दिखाने की जरूरत है कि वैसे नए विश्वासी आत्मिक विकास और प्रशिक्षण में, जब उन्हें प्रशिक्षित किया जा रहा है तो पूरे चित्र को कैसे जुड़ता हुआ दिखा सकता है ताकि वो अपने दर्शन को देता है कि नए विश्वासीयों में क्या हो रहा है और हम इसके द्वारा नए विश्वासीयों को भविष्य में प्रशिक्षण दे सकेगें।

चौथा :- नए विश्वासीयों में पहचान करें कि वे क्या सीखते हैं और मसीही विकास के पहले चरण में उन्हें गुरू बना दें। यह प्रशिक्षण सामग्री को खोजने या उसके विकास में शामिल होगा (इसे पूरा करने के लिए शायद 7 से 10 सप्ताह चाहिए) और वह इसके द्वारा अपने समय का उपयोग नए विश्वासी के मार्गदर्शन के लिए कर सकते हैं।

यूहन्ना के पास वास्तव में प्रत्येक स्तर पर इस पूरी प्रक्रिया के बारे में कहने के लिए काफी हैं इसमें अन्य वचन भी है जिसके द्वारा हम और भी अच्छे तरीके से सीख सकते है। हम जल्दी से शिष्यत्व उपकरणों में एक संग्रह इन विश्वासीयों के लिए प्राप्त कर सकते हैं। उनके बदले में अन्य नए विश्वासीयों को प्रशिक्षित करने में सक्षम हो जाएगा।

एक बड़ा संदर्श

परमेश्वर शिक्षक और शिष्य दोनों में साथ-साथ काम करता है। माँ और शिशु के बारे में सोचो। परमेश्वर उस माँ को देखते हुए खुश होते है जो बच्चे को स्तनपान कराती है जिसे उसने इस दुनियां में लाया है और माँ यह देखते हुए कि अपने वह अपने बच्चे को स्तनपान कराती है खुश और आशिषित होती है (यद्यपि वहां बहुत सी कठिनाईयां होती है) इसी तरह से, नए बच्चों के भुख महसूस उन्हें पोषण करने के लिए परमेश्वर अधिक परिपक्व और उन्हें पोषित करने के लिए उन्हें कर्त्तव्य की याद दिलाता है। परमेश्वर के लोग नए विश्वासीयों के लिए अपनी व्यक्तिगत देखभाल और सलाह को पेश करते है, वे भी सीखेगें, यह देखने के लिए कि जैसे परमेश्वर उनकी छोटी किन्तु आवश्यक योगदान के माध्यम से नए विश्वासीयों के लिए कैसे काम करता है।

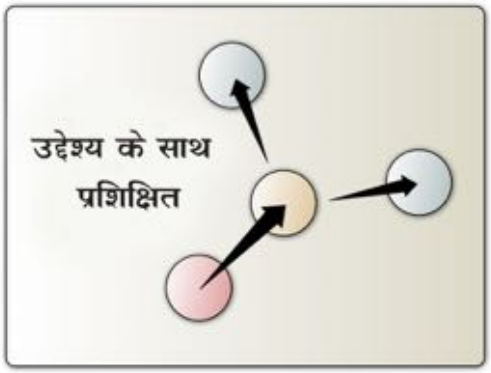

प्रशिक्षक को कभी भी इस बात से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए कि ये नये विश्वासीयों को प्रशिक्षण दे रहे हैं, और यह उसका/या उसकी देखभाल के अंतर्गत में आ गया है। लेकिन उन्हें इस तरह से प्रशिक्षित करने की जरूरत है जिससे वे दूसरों को प्रशिक्षित कर सकें। यद्यपि यह विस्तृत संपर्क और सर्मपण होगा। चेलें अधिकता से हमारे उदाहरणों के द्वारा सीखेगें।

नए विश्वासीयों का प्रशिक्षण सीमित समय के लिए है, हम पसंद करते है या नहीं जैसे एक शिशु शीघ्रता से बढ़ता ओर दो साल के उम्र में दूध छोड़ देता है, नए विश्वासी को बुनियादी सच्चाई के सत्य विश्वास को सिखाए जाने की जरूरत है। मैं शिष्य निर्माताओं को सलाह दूंगा कि वे नए विश्वासियों से मिले और उनसे इन सत्य पर कम से कम सात से दस बार तुरन्त बात करें जब वे उनसे मिलते है और चर्चा करें।

जो लोग पासबानों और सु.समाचार प्रचारकों को प्रशिक्षण देते है उन्हें अपने दर्शन का विस्तार करना चाहिए जो परमेश्वर विश्वासीयों के माध्यम से करवाने की चाहत रखता है, निर्देश सहित अधिक परिपक्व विश्वासीयों के प्रशिक्षण के साथ नए विश्वासीयों को प्रशिक्षित करना है। जब तक यह हमारी प्रशिक्षण का प्रमुख लक्ष्य नहीं बन जाता, तो जिसे हम प्रशिक्षित करेगें वह जैसे मैं एक नया विश्वासी था और इस बात से अनभिज्ञ था कि कैसे दूसरे को प्रशिक्षित करूं और यहां तक कि कैसे अपने खुद के संघर्ष को सम्भालूं।

समस्या इस तुलना में बहुत अधिक हैं, हालांकि, जब हम इस दृष्टि से या नए विश्वासीयों को कैसे प्रशिक्षित या उनकी देखभाल कैसे की जाए का ज्ञान नहीं है तब हम अच्छे अवसर को बरबाद कर देते हैं, हम अगुवों को प्रशिक्षित करते है ओर नए विश्वासीयों को आगे बढ़ने और पनपने के लिए क्या जरूरत है वो नहीं दे पाते।

क्या आपने कभी विश्वासीयों की समस्या के बारे में सोचा कि वे वास्तव में उनके जीवन में समस्याओं की शुरूआत उनके जीवन में प्रशिक्षण के शुरूआती दिनों की कमी के कारण है? कितनी शर्म की बात है कि चर्च अकसर विश्वासीयेां के आत्मिकता में ना बढ़ने के कारण उनकी आलोचना कर रहा है इसके बजाए अपने प्रशिक्षण की कमी और व्यक्तिगत रूप से बाइबिल के द्वारा पोषण और प्रशिक्षण ना पहुंचने के लिए उन्हें पछताना नहीं चाहिए।

समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था तो भी क्या तुम्हें आवश्यक है कि कोई तुम्हें वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? और ऐसे हो गए हो, की तुम्हें अन्य के बदले अब तक दूध ही चाहिए। क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है'' (इब्रानियो : 5:12 – 3)।

हमारी चुनौती :

इस युग में बढ़ती हुई आवाजों की संख्या में सलाह दी जा रही है, हमारी जरूरतें है जैसे एक माँ तो उसके जन्में बच्चे के लिए, वास्तविक दूध उनके जीवनों की दुनिया के लिए जाए।

हमारी कलीसिया/मण्डली में लोगों द्वारा टिप्पणियों को सुनना मुझे पसंद है। ''मैं बहुत ही महानतापूर्वक किसी भाई–बहन के द्वारा सहायतों को प्राप्त किया था। मैं कभी भी नहीं भूल सकता जिसे मैंने सिखा है। इस तरह की टिप्पणियों से पूरी दुनियांभर का गुणा किया जा सकता, तत्काल जरूरत है ''बच्चे'' प्रशिक्षण मजबूत और सक्रिय मसीही जीवन के लिए मार्ग खोल देता है। जैसे इन शिष्यों की परवाह की गई तो वे दूसरों को प्रशिक्षित करने की स्थिति में होगें।

शिक्षाएं

* प्रत्येक नया विश्वासी को अधिक परिपक्व विश्वासी की आवश्यकता है जो व्यक्तिगत रूप से उन्हें चेला बना सके।
* व्यक्तिगत शिष्यता के बिना नए विश्वासी अनेक अतिरिक्त संघर्ष से गुजरते है और अक्सर चर्च को त्याग देते हैं।
* जो सु. समाचार प्रचार की सेवा में लगे हुए है और सेवकाई में ध्यान दे रहे है उन्हें न सिर्फ परामर्शकर्ताओं को प्रशिक्षित करना है व्यक्तिगत रूप से नए रूप विश्वासीयों तो चेले बनाना लेकिन अपनी दृष्टि को भी विस्तृत करके एक दिन में परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल होकर नए विश्वासीयों को प्रशिक्षित करना है।

मनन और चिंतन

* इब्रानियो : 5:12 – 13

समनुदेशन (असाइनमेंट)

* क्या आपने नए विश्वासीयों को उपदेश दिया हैं कब ? और कौन?
* यदि नहीं तो क्यो नहीं?
* आपने उन्हें कैसे प्रशिक्षित किया? कोई सामग्री या विषय जिस पर चर्चा की गई उसे लिखे या ध्यान दें।

28

नए विश्वासीयों को तैयार करना

हमारे नए विश्वासियों को ध्यान देना अधिकता से प्रशिक्षण की पूरी प्रक्रिया को प्रभावित करती है। यदि हम उचित रूप से हमारे अगुवों को चेले बनाने के लिए तैयार नहीं करते है तब एक अच्छी जीवन की कमी इन विश्वासियों की सहायता नहीं करती परमेश्वर का श्रेणी या तरीकों के द्वारा नहीं किया जा सकता।

उचित प्रशिक्षण जीवन के विश्वासियों को प्रशिक्षण को विभिन्न क्षेत्रों में दूसरों को प्रश्क्षिण करने के लिए अगामी अगुवों को तैयार ारने के द्वारा अवश्यक परिवर्तन के बारे में लाने के लिए सक्षम बनाता है यह अध्याय नये विश्वासियों को प्रश्क्षिण करने के लिए नये तरीके प्रदान करेगा और इस प्रश्क्षिण को एकीकृत करने के महत्व को जीवन सत्व के साथ बताएगा।

जीवन के मूल सत्व (पुस्तक) परमेश्वर के विशिष्ट और व्यक्तिगत कार्य चर्च और वास्तविक विश्वासी में होता है के बारे में वार्ता करती है। पुर्नजन्म आजीवन की शुरूआत है, अथक सगाई प्रत्येक विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के पवित्र काम हैं।

''तो उसने हमारा उद्धार किया, और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला''। (तीतुस : 3:5-6)।

ध्यान दें। कैसे हमारे जीवन में पवित्रात्मा द्वारा ''उण्डेले जाने का कार्य'' लगातार परमेश्वर के अटूट एक बह रही नदी के रूप में संदर्भित करता हैं।

यूहन्ना प्रेरित ठीक रीति से इस बात की पुष्टि /पहचान छोटे से या शिशु को होती है। परिवार अपने छोटे सदस्य के लिए (छोटे बच्चे के लिए) प्रमुख समय और वित्तीय समायोजन को समायोजित करता है। उदाहरण के लिए: आमतौर पर वे अपने सीमित संसाधनों का उपयोग या कीमती एक कमरे को पुन: बनाते हैं, नए बच्चे के लिए आवश्यक खाद्य सामग्री खरीदने के लिए तैयार हैं। यूहन्ना जीवन को बनाए रखने के लिए नया विश्वास-मूल बातें पोषण के लिए महत्वपूर्ण जरूरत के बारे में हमारी जागरूकता बढ़ाने के लिए इस सादृश्य का उपयोग करता है।

सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है हमने स्वयं को व्यक्तिगत रूप से अनुशासित नहीं किया है और जब हम नए विश्वासीयों को पोषित करते हैं तो हमें दूसों को प्रशिक्षण करने के सामना करना पड़ता है।

क्या हमें नहीं देखते कि अविश्वास बडे पैमाने पर हमारे युवाओं में दौड़ रहा है? वे अपने निजी जीवन में सु.समाचार की शक्ति को नहीं देख रहे है। हमारी सबसे बड़ी चुनौती प्रत्येक विश्वासी के जीवन में सु.समाचार की प्रासंगिकता को दिखाना है।

हमारी कलीसिया ने नए विश्वासी के पौषण पर दूसरों के जीवन लेकिन शायद ही किसी को सु.समाचार को लाने पर इतना समय और पैसा खर्च करते है। यह एक विशेष प्रकार की फसलों को विकसित करने के लिए सबसे अच्छा बीज हासिल करने पर करते है उस आदमी की तरह है। लेकिन प्रारम्भिक अंकुरित देखने का प्रारंभिक उत्साह के बाद वह पानी देने के लिए भूल जाता है।

एक चर्च, मदरसा (सेमनरी) या ट्रेनिंग स्कूल है, हमें जानबूझकर करना होगा।

1. परमेश्वर के लोगों को समझाने के लिए और नए विश्वासीयों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।
2. नए विश्वासीयों को कैसे प्रशिक्षित करने के लिए उन्हें तैयार करें।
3. नए विश्वासीयों को प्रशिक्षित करने के लिए सूचित किए गए सामग्रीयों को प्रदान करें।
4. उन्हें चुनौती दे कि नए विश्वासीयों को पूरे मन से सेवारत प्रक्रिया के साथ प्रशिक्षित करें।

दुसरों को समझाए

यदि आपके आस पास नए विश्वासी हैं, तो परमेश्वर के लोगों को समझाने में आसान हो जाता है कि हमें उन्हें पोषित करने कि जरूरत है । लेकिन जब आस पास के लोग सुसमाचार के प्रति कठोर है, जैसे पश्चिमी देशों में यह बात आम नहीं हो सकती कि नए विश्वासीयों से मिले। नए विश्वासीयों में कल्पना करने के लिए अवसर ढुढ़ना इसलिए, मुश्किल हो जाता है । यह दो मोर्चो पर घेरने की कोशिश करने की जरूरत हैं। हमेशा हर कदम में भावुक प्रार्थना को शामिल करे।

सबसे पहले, हमे खोए हुए की तलाश करनी चाहिए मसीही लोग अस्वस्थता में तैयार किए गए कौशल और दृष्टि दोनो में कि खोए हुओं तक पहुंच सके। (यह उन्हे गुप्त कि तुलना में दुनिया कि आलोचना करने के लिए बहुत आसान लगता हैं।) अपना अतिरिक्त समय दे, यदि यह आवश्यक हो तो प्रभु के लिए दुसरों का नेतृत्व करें।

इंजीलवाद जीवन सत्य पाठ्यकम का सत्य है नही तो एक प्रमुख जोर बनाओं। दूसरा हम इस तरह हमारे चर्च या स्कूल के रूप में हमें वहां जाने के आवश्यकता है जहां हमारी जरूरत हैं। अपने अवसरों को विस्तारित करें और चेले बनाने के लिए अपने एक वातावरण में बने रहे। कई परेशान भेड़ अपनी राह से भटक गए हैं। प्रभु के लोगों को परमेश्वर के साथ काम करने के लिए सीखना चाहिए ताकि वे उनकी परवाह और देखभाल कर सके जैसे उन्हे नेतृत्व करता है।

दूसरों को तैयार करें

एक बार यदि लोग इस बात को समझ जाए की नए विश्वासीयों को चेले बनाना आवश्यक हैं, तो हम उन्हे आसानी से तैयार कर सकते हैं। ठीक उसी तरह किसी भी रूप में प्रशिक्षण, वो प्रशिक्षण तरीकों के साथ समान होना चाहिए। शिक्षकों को सर्वप्रथम नए विश्वासीयों के साथ प्रशिक्षण में समान होना चाहिए, तब वे दूसरों को प्रशिक्षित करेंगे।

कई अगुवे इसे करने में दूसरों की अपेक्षा अधिक तैयार है। उन विशेष वरदानों से भरे हुए लोगों का इस्तेमाल करना ना भूलें, अन्दर या बाहर आपके चर्चो में और प्रशिक्षण में है। मैं स्मरण करता हूं कि जब मैं पन्द्रह लोगों को एक पाठ्यक्रम के बारे में एक नए विश्वासी की छोटी पुस्तकों को लेकर उनका अध्ययन कराया, मैंने उन्हें छोटी पुस्तिका के केवल रूपरेखा को ही दिया। ताकि वे इसे भर सके। यह बाद में उनके लिए कुंजी की पुस्तक बन जाएगी जिससे वे दूसरों को चेला बना सके। मैनें उनके दर्शन को उनके कौशल और ज्ञान के प्रशिक्षण के साथ बनाया वे इसका इस्तेमाल बाद में दूसरे लोगों को प्रशिक्षित करने में सक्षम होगें।

इस माध्यम में वृद्धि करने के लिए कई तरीके है एक तरह से इसे पूरा करने के लिए और इसे कैसे प्रदर्शित करने के लिए भूमिका के माध्यम से एक कक्षा में इसे खेलने की जरूरत है। एक कक्षानायक (मॉनिटर)/अगुवे सबसे पहले इन्हें शिष्यत्व प्रशिक्षण की देखरेख करनी चाहिए या तो वे नए प्रशिक्षु के साथ जुड़ेगें जब वे उन्हें चेले बना रहे है या ध्यान से पहले शिष्यत्व सत्र के बाद अनुभव पर चला जाता है। याद रखें यह एक बार की बात होने की जरूरत नहीं है। हम शार्मिले लोगों से कह सकते हैं कि वे हमारे साथ जुड़कर शुरू कर सकते है। हम उनसे अनुरोध कर सकते है कि वे शिष्यत्व समय में एक हिस्सा या हिस्से के बारें में बता सकते है। हम उनसे अनुरोध कर सकते है । उदाहरणत: जब सु.समाचार और विश्वास के बारे में बोल रहे है वे कह सकते है कि यीशु ने उन्हें कैसे बचाया। वे सीखते हैं, कुछ तेज कुछ धीमी लेकिन बाद में परमेश्वर उन्हें दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

माताएं अपने बच्चों को खिलाने में सक्षम है, (बहुत कुछ अपवादों को छोड़कर) लेकिन यह समस्याग्रस्त है कि वे कठिन परिस्थितियों में वे नहीं जानते कि कैसे सम्भालना चाहिए हमें उनके बाजू में रहकर उन्हें उत्साहजनक तरीके से सुझाव देने की जरूरत है। आप उनके पूछने का इन्तजार न करें। आप नए विश्वासीयों के साथ समय व्यतीत करें जिससे वे निराश नहीं होगें। आप उन्हें पहली बार में एक महान अनुभव दे जिससे वे दूसरों को चेला बना सकें।

दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए आपूर्ति दें।

शिष्यत्व, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सामग्रीयों बढ़ती हुई संख्या से है। यह अच्छा है। कुछ लोग इसके बारे में सोच रहे हैं। जब मैं छोटा था कुछ ही परिसर गुट/समुह था जिन्होनें अपने शिष्यत्व प्रशिक्षण छोटी पुस्तिका का विकास किया। एक प्रमुख दोष यह था कि वे चर्च केन्द्रित नहीं थे परन्तु एक व्यक्ति के आत्मिक विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे थे। चर्च के ध ार्मिक शास्त्र उचित रीति से एकीकृत नहीं किए गए थे। व्यक्तिगत को मूल्य दिया गया था। जिससे प्रेम और सेवा का स्थान छीन

लिया गया। हालात कुछ हद तक बेहतर हो रहे थे लेकिन अभी भी चर्च और संगठनों के बीच तनाव बना हुआ था उन्हें आम उद्देश्य के लिए एक साथ काम करने की जरूरत थी।

कुछ चर्चों ने अपने स्वयं की सामग्रीयाँ तैयार किया है। में इस प्रवृति को प्रोत्साहित करूंगा। प्रत्येक चर्चों को जरूरतों के साथ नये विश्वासीयों के लिए संस्करणों की पेशकश करनी चाहिए, यहाँ तक कि लोगों कि आवश्यक्तानुसार उन्हे संस्करणों को प्रस्तुत करना चाहिए। एक बड़े प्रिंट का बुकलेट बुजुर्गो के लिए तैयार किया जा सकता है। विशेष भाषा के संस्करणों का विकास किया जा सकता है ताकि उनकी सेवाटहल के लिए आप्रासियों या तस्वीर संस्करण अनपढ़ के लिए विकसित किया जा सकता है।

आप हमारे साथ शुरू कर सकते हैं और अपने लिए बना सकते है। सबसे महत्वपूर्ण है, हालांकि यह वास्तविक साम्रगी है। इस किताब ने शिष्यत्व के तीन चरणों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों की अवधाारणा पर चर्चा की है, लेकिन समझने के लिए हमारे तीन शिष्यत्व पुस्तकालय की जाँच करें।

विशेष देखभाल

नये विश्वासियों की आवश्यकता के लिए देखभाल चर्च में एक प्राथमिकता के रूप में खड़ी होनी चाहिए। जैसे एक परिवार अपने समय सारणी और संसाधन को शिशु की उचित देखभाल के लिए बदलता है, तो कलिसिया को भी परमेश्वर के नये बच्चे की उचित देखभाल चाहिए।

नया विश्वासी सुसमाचार के बुनियादी स्पष्टीकरण की मांग करता है। परमेश्वर के वचन से पोषित होना और समझना की कैसे उनका नया पिता उनकी देखभाल करता है। उनके विश्वास को मजबूत बनाना, जिससे वे ठीक इस संवेदनशील समय में विश्वास पर आधारित रहे, यही उद्देश्य है।

उनके विश्वास की मजबूती आवश्यक है जिससे वे आसानी से दूर नेतृत्व न किये जा सकें। लेकिन पाप, क्षमा, मसीह और विश्वास के बारे में स्पष्ट समझ होनी चाहिए। जिससे उनकी दी हुई परिस्थितियों में वे अधिक गहराई से परमेश्वर के निरंतर प्रेम और प्रावधान को उनके जीवन के लिए भरोसा कर सकें।

यदि एक नया विश्वासी जन के माहौल से बाहर आता है तो उन्हें आगे अलग-अलग समुदाय और पवित्रता के पहलुओं में मसीह जीवन के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है। यदि वे विधि परायणता की एक पृष्ठभूमि से आते हैं तो उन्हें उद्धार पवित्रीकरण और सु.समाचार की स्वतंत्रता पर विशेष स्पष्टीकरण की जरूरत है।

एक और विश्वासी को उपभोक्तावाद में पकड़े जाने पर या घर या काम पर किसी प्रकार की समस्या है तो विशेष सलाह के द्वारा उसकी सहायता की जानी चाहिए जिसका वे सामना कर रहे हैं। किसी भी दुनिया से वे क्यों ना बनाए गये हों उन्हें इस क्षेत्र पर एक साथ जो जोर की जरूरत होगी। इस आध्यात्मिक विकास के पहले चरण में एक से एक शिष्य बहुत महत्वपूर्ण है। हमें मूल बातो को भूलना नहीं है हालांकि नये विश्वासियों की मदद करने के लिए मसीही विकास के दो चरणों में ध्यान केंद्रित किया जायेगा, जबकि नए विश्वास के लिए केंद्रित बुनियादी मसीही समझ पर हैं।

उसके नये जीवन में एकीकरण और समझ एक पूरे रूप में कि परमेश्वर उनके जीवन में क्या कर रहा है यह बहुत ही नाजुक है। पूरी तस्वीर गहरी सत्यता को प्रगट करती है जो उनके मसीही जीवन के लिए एक नींव रखने के समान है। मुझे दो उदाहरण प्रदान करने दें।

परमेश्वर के वचन के लिए उनकी नई इच्छाओं को पहचानें। यह ठीक उसी तरह समान है जैसे एक बच्चा अपनी माँ के दूध की तमन्ना रखता है। उन्हें एहसास दिलायें कि यह उनका नया जीवन है जिसे परमेश्वर के वचन की चाहत और जरूरत है। जैसे खाना खाना, यह एक निरंतर प्रक्रिया की तरह होगी, इसकी जागरूकता के द्वारा यह इस स्तर पर महान है।

नए विश्वासी को इस बात की भी चाहत होनी चाहिए कि वे दूसरे विश्वासी के साथ भी रहना चाहिए, ताकि वे दूसरों के लिए प्रार्थना करें। और उन्हें परमेश्वर के वचन को बनायें। परमेश्वर की आत्मा अवगत करा रहा है कि वे एक बड़े आत्मिक परिवार के भाग है। जैसे हम लगातार इन बातों को ध्यान दे रहे हैं नये मसीही उनके जीवन में परमेश्वर की भागीदारी को अच्छे

से संभालने के लिए शुरू कर रहे हैं। सारी छोटी शिक्षायें विधि एक बड़ा चित्र - परमेश्वर उनसे प्यार करता है। उनके जीवन में क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है इस बात को जोड़ने के लिए स्मरण रखें। परमेश्वर का आत्म उनमें काम कर रहा है। वह जीवन बढ़ रहा है और अपने स्वयं को व्यक्त कर रहा है।

परमेश्वर का निरंतर प्रेम

परमेश्वर का प्रेम निरंतर और वास्तिवक है। यदि हम असफल हो तो भी, परमेश्वर ने एक राह दिया है मसीह के द्वारा क्षमा की प्राप्ति, वह हमारा वकील है (1 यूहन्ना 2: 1-2)

यदि हम एक अच्छे परिवार में बड़े न हुए हो, हम अक्सर यह सोचते हैं कि हमें स्वयं को साबित करने या युद्ध के साथ अपने आप को अप्रिय जानना है। लेकिन उचित शिष्य के साथ नये विश्वासी परमेश्वर के उनके जीवन में निरंतर प्रेम की समझ के द्वारा आगे बढ़ेगें, उनके गरीब पालन पोषण के बावजूद

दया की भावना (कृपा और दया के शिक्षण के प्रारंभिक गठन) गहरी है जब वे सीखते है कि कैसे ठीक से सराहना और मसीह के माध्यम से उनके पापों को मसीह माफ करते है। वे यीशु मसीह के प्रेमी कार्य का अधिक महत्व क्रूस पर देखेगें जो उनके लिए किया। यह मनुष्य के स्वयं के अनुष्ठान के माध्यम से नहीं हुआ।

प्रत्येक स्तर पर, परमेश्वर विकास के अगले मूलभूत मूल्यों का निर्माण अगले चरण पर निर्भर करता है। परमेश्वर के प्यार की एक अच्छी समझ के बिना, नए विश्वासीयों के लिए आध्यात्मिक विकास के दूसरे चरण के माध्यम में चलना एक कठिन समय होगा।

आज कलीसिया की यह सबसे बड़ी समस्या है जो विरासत में मिली है। अनुचित देखभाल नए विश्वासियों में बेकार ''पुराने'' विश्वासीयों को पैदा करता है।

सारांश

अत्यधिक रूप से कहा जा सकता है, लेकिन सारांश में हम नए विश्वासीयों का पोषण करते है जिसमें प्रशिक्षण के इस पहले चरण के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को सुदृढ करने की प्राथमिकताओं को समायोजित करते और इसे याद किया जा सकता है। सुनिश्चित करें। हम प्रभावी रूप से इन नए विश्वासीयों की देखभाल के लिए परमेश्वर के लोगों को सही प्रशिक्षण देते हैं।

ये सबक बुनियादी और आवश्यक है, और विडंबना यह है कि अभी तक चर्चो में इनकी कमी है। इस देखभाल के बिना, वे निश्चित प्यार की नींव और लाभ मसीह प्रशिक्षण के दूसरे चरण में विकसित करने के लिए प्राप्त नहीं कर पाएगें। वे लोग वो या उस प्रकार के विश्वासी नहीं बन पाएंगे जिसकी आशा उन्हें दी गई लेकिन वे अपने मसीही जीवन में लड़खड़ा जाएगें।

वो समय आ गया है कि अब हमें नए विश्वासीयों पर उनके इतना चंचल होने को दोष लगाना बंद होगा और उन्हें वह देखभाल प्रदान की जानी चाहिए जिसके लिए परमेश्वर में हमें शुरूआत में ही निर्देश दिया है।

नए विश्वासी के संक्षिप्त चरण को शीघ्र ही लागू किया जाना चाहिए क्योंकि शैतान उन्हें नाश/नष्ट करने के लिए तैयार है। हमें अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिए कि हम उनके साथ रहे व उन तक पहुंच कर उनका मार्गदर्शन करें। वे थोड़े समय के लिए बेहद प्रेरित रहते है कि अध्ययन करें और विकसित रहे, और यह बहुत ज्यादा आनंददायक समय होता है कि हम उनके साथ रह कर काम करें। परमेश्वर की इच्छा तो पूरी करने में सक्रिय रहे और प्रयास करें कि हारे और भटके हुए लोगों को वे कहां रहेगें उसे प्रयास करते हुए उनके साथ उन्हें पूर्ण रूप से रखें।

शिक्षाएं

* चर्च और मसीही प्रशिक्षण के समूह को व्यक्तिगत रूप से और ध्यान रखना चाहिए कि परमेश्वर उन्हें कैसे इस्तेमाल करेगा। ताकि ने दूसरों को प्रशिक्षित कर सके।
* नए विश्वासीयो को उनसे पूर्ण विकास के संबध में उनसे दोनों के भविष के लिए एक हृदय के साथ प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, और इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि परमेश्वर उन्हे वैसे इस्तेमाल करेगा ताकि वे दूसरों को प्रशिक्षित कर सके।
* नए विश्वासी के लिए सामग्रीयों को उनकी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्रदान करना और वे जीवन के किस बात का सामना करते है। उसे अनुकूलित बनाना चाहिए।

मनन और चिंतन

(तीतूस : 3:5 - 6)

समनुदेशन (असाइनमेंट)

- ⇨ क्या आपने किसी नए विश्वासी को प्रशिक्षित किया है? समझाओ।
- ⇨ नए विश्वासीयों को प्रशिक्षित करने के लिए कौन सी सामग्री या कार्यक्रम का प्रयोग करेगें?
- ⇨ तीन विश्वासीयों के बारे में सोचे जिन्हें आप जानते है आप उन्हें शिष्य बनाना चाहेगें? क्या विशेष आवश्यकता का सामना उन्हें करना पड़ता हैं जिसे आप ध्यान में रखना आवश्यक समझते है?
- ⇨ यदि आप अगुवेपन की सेवकाई/प्रशिक्षण शामिल है तो लोगों के लिए अनुकूलित और विशेष सबक को रखें ताकि आप दूसरों को प्रशिक्षित कर सकें। नीचे लिखें कि आप कितनी दूर तक इस संबंध में इनके साथ हैं और आप कहां रहना चाहेगें ?

29
नए विश्वासियों का समर्थन करना

किशोरों के पास और छोटे बच्चों के तुलना में बहुत ही अलग आवश्यकताएं होती है, जैसे युवा विश्वासी के पास उसकी जरूरत नए विश्वासी की तुलना में अलग ही होती है जरूरत के एक साल की हो सकती है, लेकिन उसी वर्ष में नई बदलाहट आ सकते है। यह अध्याय युवा मसीही विश्वासीयों के प्रशिक्षण पर अपना ध्यान केन्द्रित करता हैं।

परिवक्वता की ओर कदम जब बढ़ता है तो युवा विश्वासी को नए परिस्थिति में लाना चाहिए जो उन्हें आत्मिक व्यस्कता के लिए तैयार करती है जहां वे अभी तक नहीं है उन्हें आत्मिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि उसके माध्यम से मार्गदर्शन प्राप्त कर सके जब वे निराशा का सामना कर रहे है जैसा उनके जीवन में संभव है।

हे पितरों, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि जो आदि से है, तुम उसे जानते हो: हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है: हे लड़कों मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि तुम पिता को जान गए हो।

हे पितरों, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो: हे जवानो, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि बलवन्त हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है।(यहून्ना : 2:13 – 14)

यहून्ना ने फिर से विशेष अंतदृष्टि के साथ हमें प्रस्तुत किया है (1 यहून्ना :2:12 – 14) उसने हम सभी पर ध्यान केन्द्रित करते हुए संघर्ष परीक्षाएं या प्रलोभन और परमेश्वर के वचन का अध्ययन आध्यात्मिक कवच में व्यक्ति की छवि को प्रगट करना इफिसियों 6:अध्याय से हमारे जीवन में आता है।

> 'परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो की तुम शैतान की सारी मुक्तियों के सामने खड़े रह सकों, क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहु या मांस से नहीं परन्तु प्रधानों और अधिकारियों से और इस संसार के हाकिमों से, और उस दुष्टताओं की आत्मिक सेनाओं से हो जो आवारा में है (इफिसियों :6 11 – 12)

एक महत्वपूर्ण बात जिसे याद रखना हैं केवल यह नहीं कि विश्वासी इससे जाते है लेकिन सारे विश्वासी अंत में मुठभेड़ का सामना करेगें और उनके प्रशिक्षण का एक बड़ा हिस्सा ही शामिल होगा।

दूसरे चरण में उनकी सफलता अधिक निकट से संबंधित है कि कैसे वे अच्छी तरह से अपनी पहली चरण के दौरान ध्यान दिये गए थे। नए विश्वासी की प्रशिक्षण उनकी मदद करता है ताकि वे सही परिपेक्ष्य के हासिल करें और उन्हें इस बात का एहसास दिलाता है कि परमेश्वर उनकी सहायता के लिए उनके पास ही है। यह ये भी सहायता करता है कि उपदेशकों के साथ सही रिश्तों को स्थापित करता है। इस गहरी जागृति के बिना जो अंदर रोपण किया गया है। वे आसानी से परमेश्वर पर भरोसा रखगें के योग्य नहीं रहेगें जब वे युवा विश्वासी को प्रशिक्षित करने जाते है। शंकाए/संदेह आसानी से उन्हें निराशा और हार की तरफ नेतृत्व करते हैं, जो हो सकता है कि निराशा ला सकता है, वे चकित होगें कि क्या वे कभी विजय हो पाएगें।

ज्ञान, जो सभी आत्मिक ''किशोर के इस चरण के द्वारा जाते है यह प्रशिक्षकों के लिए आसान बन जाता है। चलो हम नए दोस्तों और छात्रों के बारे में जाने जो हमारे चर्चो में आते है, हम उनके आत्मिक यात्रा का आंकलन करने के लिए शुरू कर सकते है। यह भी हमारी सहायता करेगा कि हम विशेष मुल्यांकन उपकरणों के विकास में मदद मिलेगी जिससे चर्च उनकी इस वर्तमान स्थिति पर सहायता कर सके। क्या एक बार अस्पष्ट था अब काफी स्पष्ट हो सकता है।

सुनिश्चित करें कि अन्य लोगों के साथ अपने आपकी तुलना करना खतरे की परिस्थिति को ला सकता है, लेकिन ठीक से प्रस्तुत किया जाना चाहिए यह आत्मिक विकास की तालिका (चार) प्रत्येक विश्वासी के उसका /उसकी सहायता कर सकता है ताकि वो उन्हें उत्साहित करें और किसी की संगति में किसी का न्याय ना करें। हमारा मकसद आलोचना या तुलना के लिए नहीं है.....लोगों के बढ़ने में मदद करने के लिए है।

युवा विश्वासी की जरूरतें

नए विश्वासी को उद्धार के बारे में बुनियादी सत्य को जानने की आवश्यकता है, अनंत आश्वासन इत्यादि। ये सच्चाई परमेश्वर में बुनियादी भरोसे का निर्माण करती है। यहून्ना इसी के बारे में कहता हैं। परमेश्वर हमारा पिता जो हमारे देखभाल के लिए ही है।

नए विश्वासी को, हालांकि अपने जीवन में परमेश्वर के वचन का उपयोग करने के लिए सीखना चाहिए अब उसे चम्मच के द्वारा खाने वाला नहीं परन्तु अपने आप के परमेश्वर के वचन को खिलाने वाला बनना चाहिए। यह संक्रमण सीधे हमारे प्रशिक्षण के साथ संबंध रखेगा। हमें विश्वासी को कौशल /योग्यताओं को प्राप्त करने के लिए लगातार चलने वाले आत्मिक अनुशासन के साथ एक संवेदनशील और विश्वास करने वाला दिल परमेश्वर के वचन की सराहना करने के लिए उनके जीवन को तैयार करना चाहिए। उदाहरण के लिए - अध्ययन करें जिससे वे अधिक कौशल को प्राप्त कर पाएगें या उन्हें वह प्राप्त करने में मदद मिलेगी उन्हें प्रेरक बाइबिल अध्ययन करने के लिए भी तैयार करें, किन्तु हमें इस बात को स्मरण रखना हैं प्रत्येक लोगों के पास इस बात के लिए एक ही शैक्षिक पृष्ठभूमि नहीं है।

युवा विश्वासी के एकीकरण की गहराई है कि, परमेश्वर का वचन सीधे कैसे प्रवाहित करेगा कि वे कैसे वे बुराई से अपने आप कि निगरानी करेगें। समूह के शिक्षण यहां संभव है लेकिन सलाह व्यक्तिगत संघर्ष के साथ काम करने के लिए बेहतर हैं, स्थापना अच्छा काम कर रहे रिश्तों, लोगों के विकास के अपने अलग-अलग चरणों के माध्यम से कैसे कर रहे हैं पर नजर रखने के लिए सक्षम करें।

एक शारीरिक उम्र एक विश्वासी के आत्मिक विकास को जैसे जल्दी प्रभावित कर सकता है। एक जवान बच्चा नए विश्वासी के चरण के माध्यम से जाने के लिए एक व्यस्क की तुलना में काफी लम्बा समय लेगा। यह उनकी योग्यता की जानकारी के साथ हैं जब वे दूसरों के साथ वार्तालाप करते हैं।

युवा विश्वासी के लिए लक्ष्य

शिष्यत्व के इस दूसरे चरण की अवधि को अलग किया जा सकता है। इसीलिए इसके विषय में आम तौर पर बातें की जाती है कि यह अवधि तीन वर्षा की होगी चाहिए। या हम ऐसा कहे कि यह और अधिक लम्बे समय का होना चाहिए, दुर्भाग्य से ऐसा नहीं कहना चाहिए कि ये बाहर हो जाए। उन शिष्यों ने जरूरी सबक या महारतों को हासिल नहीं किया है। उनकी परिपक्वता मसीह को जानने की पूरी एक छोर तक नहीं हो सकती। हम यहून्ना के द्वारा यह जान सकते है कि उन युवाओं के पास बहुत कुछ अभी और सीखने के लिए है।

1. परमेश्वर के अन्तिम वचन के साथ खुद को पोषित करते है (उदाहरण : नियमित रूप से और आवश्यक मनन समय)।
2. क्रुस पर यीशु मसीह के कार्य के माध्यम से शैतान पर विजय के रूप में, इस तरह से इस प्रमुख शिक्षण को समझा जा सकता है।
3. लगातार उनके जीवन में आए लालच और विचारों को पहचाना जा सकता है।

यह कठिन है, यदि नामुमकिन नहीं है। यह कहने के लिए कि एक व्यक्ति किशोरवस्था और व्यवहार पीछे छोड़ देता है जब वह एक किशोर अवस्था मे आ जाता है। यह भौतिक दायरे में स्पष्ट हैं, हम आध्यात्मिक दुनिया में यह भी स्पष्ट होने की अनुमति दे सकते हैं। जब कई बार ऐसा पाया जाएगा कि वह लड़का या लड़की आध्यात्मिक रूप से जवान है और परिपक्व कार्य और उपाध्यक्ष विपरीत करते है।

युवा विश्वासी के लिए मुख्य लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने औन उन लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए कि क्या होना चाहिए कि पहचान करने के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। हमारा प्रभु हमें किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में उपयोग करने में सक्षम है। पररमेश्वर के लिए कोई भी सीमाएं सीमित नहीं है। सिखनेवाले बनों। हमारे जीवन का कर्त्ता-प्रशिक्षक एक भी क्षण बर्बाद नहीं करता है।

धार्मिक उपदेश के उठाना/बढ़ाना

हमारे प्रशिक्षण की दो पुस्तकें उन विशेषताओं को बताती है कि कैसे एक विश्वीास को परमेश्वर के वचन से सीखना और युवा विश्वासी के स्तर में बढ़ना चाहिए। 10 ढूंढते है एक धर्मी संरक्षक/शिक्षक जो यह विश्वास करते हैं कि हमने ना की बुराई पर जय पाई है। केवल परिकल्पना के हाथ नहीं परन्तु प्रायोगिक रूप से सीखते व इसके प्रकाश डालते है जो अत्यंत उपयोगी है। कई विश्वासीयों को ठीक से प्रशिक्षित नहीं किया गया है, वे केवल विश्वास के इस सबक को ही नहीं सीखना चाहते है,

किन्तु प्रशिक्षण देने वाले/शिक्षक को यह मालूम हो कि वे कैसे उनका ध्यान उस और केन्द्रित करें जहां उन विश्वासीयों को होना चाहिए था। यदि शिक्षक स्वयं इस बात को नहीं सीखते है कैसे उन्हें अपनी समस्याओं पर जय पाना है तो युवा विश्वासीयों में शंका पैदा होगी कि परमेश्वर शायद उनकी मदद करें। यह विश्वास को मजबूत करने के बजाए इसे कमजोर बनाता है।

मुझे याद है जब मैनें परामर्श और पासबानों के प्रशिक्षण की पुस्तकों का अध्ययन किया है जिसके द्वारा मैनें आत्मविश्वास प्राप्त किया और मैं व्यक्तिगत रीति से आगे बढ़ सकता था। जिसमें मैं संघर्ष कर रहा था। वे सारी बातों को मुझे अपने जीवन मे बहुत पहले पढ़ लेनी चाहिए थी।

कलीसिया /चर्च में, एक सामान्य अविश्वास बढ़ रहा है कि विश्वासी जो विभिन्न -व्यक्तिगत संघर्षो का सामना कर रहे हैं वे उससे उभर कर आ सकते है। यह संघर्ष उनके जीवन में अक्सर उनकी अखण्डता के साथ आते जो ना कि अपनी ही चिन्ताओं पर ध्यान केंन्द्रित करते हैं परन्तु दूसरों की आवश्यकता को कैसे जाने इसके बजाए कि स्वयं के साथ क्या करना आवश्यक है। जो व्यक्ति पहले से ही मानसिकता से पीड़ित रहते है। उनके लिए जीतने का कोई रास्ता नहीं हैं।

प्रशिक्षणदाताओं के पास यदि इतिहास में परिस्थिति पर काबू नहीं पाया तो उनके पास आशा का कोई संदेश हो ही नहीं सकता। बल्कि वे अविश्वास और उससे गुजरे है तो वो बता सकते। किसी एक की विफलता का होना एक सबब का विषय बन सकता है।

यही कारण है कि हमें आध्यात्मिक विकास का मानचित्र/सारणी बना लेने चाहिए और उपलब्ध करना चाहिए ताकि शिक्षक और हर कोई यह देख पाएगें कि वे कहां है। यह शिक्षकों, पासबानों/पास्टर और प्रशिक्षकों को कि वे परमेश्वर पर विश्वास रखें कि वह उनके पापी व्यवहार के साथ उनकी मदद कर सकता है जैसे वह नग्नता (वास्तव में व्यभिचार) आत्मिक अभिमान, क्रोध इत्यादि देखते हैं। हम बढ़ती हुई प्रवृत्ति विश्वासीयों को उनकी समस्या के साथ ''विशेषज्ञो'' और ''मनोवैज्ञानिक प्रलाप'' जो दवाओं के द्वारा उन्हे वश करते का परित्याग करते है। इसके द्वारा वे उन्हें अतिवादी व्यवहार से रोक सकते है। उनके आध्यात्मिक प्रतिक्रया प्रणाली को अपंग कर देते है। क्यों न हम उन्हें यह सिखाए कि परमेश्वर पर भरोसा रखने से वे अपनी परिस्थितियों को काबू में करते हुए उससे उभर कर आ सकते हैं? हमारा उद्देश्य युवा विश्वासीयों के प्रभेद का निर्माण करना है। ताकि वे उस दुष्ट को देख सके जो आकर्षित करता है, और फिर कैसे उसे दिन जवाब दे सके। जब वे लगातार इन बातों को करेगें तो मैं आत्मिक विकास के तीसरे चरण में बढ़ेगें। जब एक के साथ यह कार्य स्थानांतरित करेगा तो वह पृथ्वी पर लगातार सभी दिनों के लिए जीवित रहेगा।

परमेश्वर पर विश्वास के बिना, प्रत्येक चरण में, हम पूरी परिपक्वता के अंतिम लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते। लेकिन यदि हम विश्वास करें तो किसी भी तरह या किसी न किसी प्रकार से जो उद्देश्य परमेश्वर का मेरे और अन्य लोगों के लिए है हम आध्यात्मिक परिपक्वता के दूसरे चरण तक पहुंच सकते हैं, तब हम उस पर विश्वास भी रखेगें। हमारा विश्वास परमेश्वर के कार्यो को हमने बनाए रखना हमें मदद करता है।

शिक्षाएं

* युवा विश्वासी के प्रक्षेपवक्र विकास की तुलना में नया विश्वासी भिन्न है।
* युवा विश्वासी को स्वयं यह सीखना चाहिए कि वह कैसे खुद को परमेश्वर के वचन के माध्यम से पोषित करें ताकि वह लालच से परे रहे।
* चर्च में संकट है क्योंकि पुराने विश्वासी को यह आश्वासन नहीं है कि वे किसी भी समस्या या प्रलोभन को दूर कर सकते है। या उससे उभर कर आ सकते है। (वे इस चरण के माध्यम से गुजरे ही नहीं है)
* हालांकि, प्रलोभन के साथ-साथ मौलिकता, युवा विश्वासी उनके प्रशिक्षक के साथ अक्सर स्पष्ट रूप से ऐसा चित्रित नहीं कर सकते है। इसीलिए विश्वासीगण एक नास्तिक और गुनगुने चरण में डुबते चले जाते है।

मनन और चिंतन

* इफिसियो : 6: 11 – 12

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ आप ऐसा क्यों सोचते है कि आप युवा विश्वासी नहीं है? कुछ कारण बताइए।

⇨ आप एक युवा विश्वासी को उसके छोटे – छोटे प्रलोभनों से बाहर लाने में, आप स्वयं कितने सज्जित है।

⇨ वे कौन से क्षेत्र है जिसमें आप स्वयं उभर के नहीं आ सके या दूसरों को भी उसमें मदद नहीं कर सके? वे क्या है?

⇨ परमेश्वर के पूछे कि वह आपके विश्वास का पुर्नस्थापन करे कि उसके लोग प्रलोभन का सामना कर सके, और कि वह कैसे परमेश्वर के ही लोग इसे कर सकते है।

30

युवा विश्वासीयों को तैयार करना

आईए युवा विश्वासीयों के प्रशिक्षण की चर्चा करे। प्रत्येक छोटे बच्चे का शारीरिक विकास होता, लेकिन कई परिपक्वता का सामना करते है। वे कई बातों में गलत फैमी कर सकते है, विशेष करके जब वे प्रेम रहित घरों में बड़े होते है। जितना अधिक बेकार अभी पृष्ठभूमि होगी तो इन युवाओं तो उतनी अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जो भौतिक जीवन में सच है वह आत्मिक रूप से युवा विश्वासीयों के लिए प्रासंगिक है।

नई लोगों को प्रशिक्षित और सेवकाई में तैयार करने के विषय में बात करने के द्वारा, मैं महसूस करता हुँ कि कुछ लोग ही सेमीनरी (मदरसे) में जाते हैं लेकिन अधिक संख्या में लोग व्यक्तिगत समस्या के द्वारा कार्य करते हैं वे ऐसा सोचते है कि धार्मिक शिक्षाएं उन्हे व्यक्तिगत समस्याओं को प्रकट नही करते है। 11 उन्हे इस समस्या से बाहर निकलने के लिए उनके चर्चो में इस आंतरिक समस्या से बाहर निकले के लिए प्रशिक्षण मिलना चाहिए और तब बुलाहट के कारण शसनीय प्रशिक्षण और अधिकता में प्रवेश करते है।

दुर्भाग्य से, कई सेमिनारी में (मदरसे में) इस प्रशिक्षण के दूसरे चरण की आवश्यकता है। अर्थात शिष्यता जो आज चर्च में लापता है। परामर्श, पाठ्यक्रम और बड़ी-बड़ी बातें बड़े ही मोटे तौर पर अस्तित्व में आ गए है क्योंकि चर्च ने उचित रूप में परमेश्वर के लोगों को इन क्षेत्र में निर्देशित नहीं किया है।

मुझे आश्चर्य होता है, हालांकि अगर कई लोग ऐसी कक्षाओं में बैठे तो उन्हें वास्तव में इससे मदद प्राप्त होता हे। कारण यह है कि विश्वासीयों को कहां जाना चाहिए और कैसे जाना चाहिए इस रूप में उनके जीवन में विश्वास की बड़ी कमी है। कई सलाहकार इस बात को सिखाते है कि यदि एक व्यक्ति को उसके छोटे से क्रोध या सहन करने के लिए सीखना चाहिए, लेकिन यह एक परिपेक्ष को गोद लेते है जो धर्म शास्त्र से बिलकूल अलग है। हम क्रोध को खत्म करना चाहते है, इसे संभालने के लिए नहीं।

परमेश्वर के पास उसका लक्ष्य और एक मतलब है, किन्तु चर्च परमेश्वर के लक्ष्य को नहीं अपनाता और उनके लोगों के विकास में मदद करने के लिए उनके मतलब पर भी भरोसा नहीं करना। समस्या यह नहीं है कि नए विश्वासी इस संसार से आए हुए है लेकिन यह विश्वास की कमी के कारण और चर्च उनके अगुवों के कारण हैं। परमेश्वर यह चाहता है कि उसके लोग महान प्रशिक्षण को प्राप्त करें जिससे वे मजबूत और

परमेश्वर में आगे बढ़ सके। (देखे : इफिसियो : 4:15:16) यह प्रशिक्षण परामर्श में एक राज्य लाइसेंस के साथ कुछ पेशेवर में चलाए जाने के लिए नहीं है। विश्वासी तेजी से किसी एक के जीवन में बुनियादी, आध्यात्मिक संघर्ष से निपटने के लिए सक्षम होने के लिए एक तो डॉक्टर के डिग्री की जरूरत है यह मान रही हूँ, यह तो गलत है।

हालांकि, चर्चो में उनके लोगों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, परन्तु कई लोग ऐसा नहीं कर रहे है इसलिए यह निर्देश बाइबिल स्कूल या मदरसे (सेमीनरी) में इसकी जरूरत है। क्या पादरी या मिशनरी या मसीही शिक्षक, या युवा रहने या बाहर रहने की जरूरत नहीं है ? हम सभी की जरूरत है। धर्मी रहने वाले मसीह की तरह सेवा रहने करने के लिए एक सत्व है। हमें एक प्रशिक्षणों की आवश्यकता है जिससे हम सभी को विश्वास दिला सकते है कि परमेश्वर के लेाग आध्यात्मिक रूप से मजबूत और स्वास्थ्य है।

अगुवों को भी प्रशिक्षण की जरूरत है कि कैसे जीवन के सत्व उनकी प्रशिक्षण सेवकाई में उनको एकीकृत करती हैं। उन्हें परमेश्वर के लक्ष्यों को अपनाने और अन्य लोगों को प्रशिक्षित और सीखने की जरूरत है। यहां कुछ युवा विश्वासीयों के लिए प्रशिक्षण के लक्ष्य हैं प्रत्येक युवा विश्वासीयों को इसकी आवश्यकता है।

* पूरी तरह से प्रलोभन को हाजिर करने के लिए सुसज्जित किया जाना।
* प्रलोभन के मौलिक समस्याओं को समझना।
* निरीक्षण करें की कैसे प्रलोभन उनके पाप प्रवृत्ति और दुनियां से संबंधित है।
* मौल और प्रलोभन से लड़ने के लिए सच्चाई का उपयोग करें।
* उनके दिल में माफी की जगह को प्राथमिकता दे।
* व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर की शान्ति का गवाह बनें।

यूहन्ना प्रेरित ने सच्चाई को कहा: कि एक युवा पुरूष के बुराई पर जय पाई है। परमेश्वर के दोनों स्त्री व पुरूष में उनकी अपनी जीत सुरक्षित है। यह ऐसा कुछ नहीं, कि हो सकता लेकिन वह कुछ है। जब हम अपने जीवन में परमेश्वर के वचनों की पूरी शक्ति को अनुमति देते हैं, तब हमारा विश्वास मजबूत होना और हम शैतान के झूठ को परख सकते हैं। सच्चाई को लागू करें और स्थिर रहें।

> क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह संसार पर जय पाता है और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है वह हमारा विश्वास है। (1 यूहन्ना 5:4)।

फिर से, हमें तनाव की जरूरत है कि यह हमारे जीवन की बड़ी जीवन सत्व प्रक्रिया हमारे जीवन का हिस्सा है। आत्मिक जीवन हमें लगातार प्रलोभन से जीतने के लिए दिया गया है। (यद्यपि यह हमारा समाप्त होने वाला लक्ष्य नहीं है) कई सलाहकार परमेश्वर के लोगों को जीतने के बजाए हार को कैसे बर्दाश्त करें इस बात के लिए नेतृत्व कर रहे हैं। यह यीशु मसीह के सु. समाचार में परमेश्वर के उद्देश्य से दूर होकर रोना है। परमेश्वर लगातार हमें जीत देना चाहता हैं हमें अपने जीवन में बुराई को किसी भी रीति से काम होने से रोकना है।

प्रशिक्षण का लाभ

शुरूआत में, जाहिर है हमें लगातार क्रूस की शक्ति में क्षमा और वापसी को प्राप्त करने की जरूरत हैं यह हमें केवल परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह के बारे में याद दिलाता है।

जैसे विश्वासी सदा लड़ाई के बार लड़ाई हालांकि दुष्ट उसे नीचे कैसे गिराता है वह देखने की शुरूआत करता है। इस चरण के प्रशिक्षण के लिए अपने ध्यान को केन्द्रित करना चाहिए कि कैसे बुराई की योजनाओं पर निगरानी रखें और परमेश्वर के वचन की शक्ति के द्वारा मजबूत खड़े रहने की जरूरत है।

इस प्रशिक्षण को सारे छात्रों में लागु करने के द्वारा, चर्च के सदस्य, सहभागी, हम प्रत्येक विश्वासी के विश्वास को बढ़ावा देते है। यह साधारण धार्मिक सस्वर पाठ नहीं है ऐसा मेरा मानना है, लेकिन इस बात को सीखना है कि परमेश्वर के वचन को कैसे लें और इसका इस्तेमाल बुराई से बाहर निकलने के लिए करें।

यह प्रत्येक विश्वासी के जीवन के लिए परमेश्वर का उद्देश्य नहीं है? क्यों ऐसा है कि सबसे मुख्य विश्वासी इस चरण के माध्यम से नहीं गुजरते? कई पास्टर और शिक्षक मुझसे यह कहते है कि वे अभी भी दूसरे चरण में हैं। यदि वे अभी भी वहां है तो वे अभी तक अपने विश्वास में परिपक्व नहीं हैं जिससे वे दूसरों को इसके बारे में प्रशिक्षित करें या इससे बचें या कम से कम इन क्षेत्रों में बचें जहां उन्हें महसूस होता है कि वे कमजोर है। अभी तक वे अगुवे बदतर है जो यह विश्वास करते है कि धार्मिक जीवन और प्रलोभन पर काबू पाना असंभव है।

प्रशिक्षित करने के लिए सीखना

आप इस बात पर चकित होगें कि कैसे इन शिक्षाओं को लोगों को प्रशिक्षित करें? कहां सीखें कि इन व्यवहारों को और चरित्रों को कैसे प्रयोग में लायें? प्रशिक्षण व्यक्तिगत रूप से चुनौतीपूर्ण है, लेकिन यह जटिल और महंगा नहीं है। प्रेरित युहन्ना ने एक अद्‌भुत काम किया है लक्षित प्रमुख क्षेत्रों को जिन्हें हमें ध्यान देने की जरूरत है।

बुनियादी सिद्धांतों का पहले चार अध्यायों में विस्तार से बताया गया है साधारण कोटि से परे पहुंचना: बाहर निकलने वाला बनें, यह इस धारणा से बनाया गया है कि परमेश्वर ने हमें पहले से ही बाहर निकलने वाला बना दिया है और वह हमारी ओर से इस आध्यात्मिक युद्ध में काम कर रहा है, जिसमें हम बेहतर रूप से उनकी पवित्र छवि को प्रतिबिंबित करने के लिए व्यस्त हैं। बाद के अध्यायों में क्रोध, वासना और गर्व जैसी प्रमुख व्यक्तिगत समस्याओं को दूर करने के लिए हमें सशक्त बनाने के लिए इन सिद्धांतों का उपयोग करते हैं ।

यदि एक व्यक्ति यह नहीं सीखता कि कैसे उचित रूप से थोड़े पापों को संभाला जाये, ऐसे पाप अधिवासी बन जाते है और आखिर में उन्हें बरबाद कर देता है। कई पास्टरों के बारे में सोचों जिन्होनें अपनी सेवकाई को उड़ा दिया है। परमेश्वर का वचन आवश्यक सुरक्षा के माध्यम से दिल मे गहराई से जगह ले लेता है। ''सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।'' (नीतिवचन 4 :23)

यह प्रशिक्षण लंबा समय नहीं लेता है। जैसे-एक व्यक्ति को किशोरावस्था के माध्यम से बढ़ना चाहिए। एक युवा या जवान को कुछ वर्षो के एक मामले में पूरी परिपक्वता के लिए विकसित करना चाहिए।

मैं सामान्य रूप से यह कहता हूं कि इस चरण से गुजरने के लिए यह तीन साल लेता है। सिद्धांतो को जल्दी से समझा जा सकता है यदि शिष्य पहले से ही परमेश्वर के वचन का जानकर है। समस्या समय या खर्च नहीं है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि शिक्षकों और पास्टरों को कैसे समझाया जाए कि शिक्षकों और पास्टरों आसानी से सारे विश्वासी के जीवन में करें। हम लोग जादुई या चमत्कार की प्रक्रिया को पालन करने के लिए सलाह नहीं दे रहे हैं, लेकिन आगे के काम में बाइबिल के स्पष्ट सिद्धांतो को डाल रहे हैं।

हमारी दृष्टि को स्पष्ट करना

एक पल के लिए सोचो अवसत विश्वासीयों के बारे में आपके व्यक्तिगत विश्वास क्या है? क्या आप सोचते है कि वे पूरी आत्मिक की परिवक्वता में विकास कर सकते है? क्या वे हर प्रलोभन का सामना करने में सक्षम है? (यह चर्च में हम क्या देखते है उससे कही अलग है)

क्या यदि हम व्यक्तिगत रूप में यह विश्वास करें कि परमेश्वर लगातार यह चाहता है कि हम सारे प्रलोभनों पर काबू पाए जिससे हम न गिरे, क्या यह खबर बढ़िया सी नहीं होगी? चर्च गुनगुना सा है क्योंकि यह उम्मीद छोड़ चुका है कि कभी वास्ततिक परिवर्तन हो सकता है।

किस प्रकार के लोगों को हम अपनी प्रशिक्षण स्कूल और मदरसों से स्नातक की उपाधि देते हैं? हमारे चर्चो से हम किस प्रकार के चर्चो का उत्पादन कर रहे हैं? क्या हम उनके आत्मिक परिपक्वता से संतुष्ट है कई मामलों में, दुर्भाग्यपूर्ण जवाब नहीं है। कारण साफ है। हमने उसे उस रीति से प्रशिक्षित नहीं किया जैसे परमेश्वर का वचन निर्देशित करता है। उनके सीखने और अविश्वास ने हार के कारण, वे दूसरों के व्यक्तिगत जीवन की तलाश के लिए मुड़ेगें और उन्हें प्रशिक्षित किया जाएगा। यह आवश्यक है कि हमारे अगुवों को यह सीखना चाहिए कि वे परमेश्वर के वचन की सत्यता में जिएं और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए सिखाएं ।

हमारी चर्च सभाएं ऐसी मुसीबत में है, इसलिए नहीं कि वे बदल नहीं सकते, लेकिन वे विश्वास नहीं करते की वे बदले जा सकते हैं। हालांकि व्यसनों पर काबू पाने के लिए सीखना एक अतिरिक्त अवरोध से बाहर आना है, वे इसी तरह छलांग लगा सकते हैं लगातार विश्वास के एक दिल के साथ इन सिद्धांतों को लागू किया जा सकता है।

परमेश्वर के दर्शन को प्रयोग में लाना

हम कैसे हमारे स्कूलों या चर्चो ने इसे लागू करते हैं? कुछ निर्देशों को स्कूलों में पढ़ाया जा सकता हैं लेकिन छोटे समूह और व्यक्तिगत सलाह व्यक्तिगत संघर्ष की पहचान करने की कुंजी है। और यह दिखाने के लिए सक्षम है कि कैसे विजय की प्रक्रिया कार्य करती है।

लोग अक्सर सार्वजनिक रूप से अपनी कमजोरी और पापों को स्वीकार करना पसंद नहीं करते, उन्हें कुछ पाप से संबंधित

समस्याओं के बारे में बात करने के लिए कोई समस्या नहीं होती, लेकिन दूसरे लोग परदे के पीछे छिपे हुए हैं, नकारात्मक प्रतिक्रियाओ, और पापी सोच की रीतियों सहित छिपे हुए हैं। कई पापी माफ नहीं करने वाली आत्मा के समान प्रत्युत्तर देते है तो हमारे दिल में बैठ जाते हैं और यह हमारे बचपन से ही है और वह हमारी समानता से अधिक महत्वपूर्ण है और उन्हें दर्द के लिए सचेत करता है, हमारी भावनात्मक वापसी और अविश्वास को निकालना है।

मैं कैसे इन बातों को जानता हूँ ? परमेश्वर के वचन के हमें बताया इसलिए। मैंने देखा है क्या होता है जब हम परमेश्वर के महान सिद्धांतों के द्वारा जीवन नहीं बिताते। हमारा जीवन हार और असफलता के द्वारा चित्रण किया गया हैं अवधि और जीवन के बजाए दूसरी और मैंने अनुभव किया अपने सत्य के शक्ति में खौफ देखा। व्यक्तिगत जीत प्रभावी प्रशिक्षकों को स्थापित करने में एक लम्बी में जाती है तुम सचमुच कुछ भी पारित नहीं कर सकते जो तुम्हारे पास ही नहीं है। स्कूल की सेवकाई चर्चो के साथ विजय प्रशिक्षकों को लागू करने के लिए स्थापित करना चाहिए।

परमेश्वर हमें विजय होने के लिए उत्साहित कर रहा है, उसने बनाया है तो इसीलिए हम इससे उभर सकते हैं, अब हमें उसकी आज्ञापालन की जरूरत है, इन चरणों के द्वारा हमें विकास करने और परिपक्वता में बढ़ने की जो योजना उसने हमारे लिए बनाया है। हमारे फलदायी सेवा की गुणवत्ता और मात्रा हम दूसरे चरण में कितनी अच्छी तरह कर सकते है। इस बात पर निर्भर कर सकती है।

यदि चर्च इन सब सत्यों को उनके प्रशिक्षण में सारे विश्वासीयों के लिए एकीकृत करता है तो परमेश्वर के लोग उनके विश्वास में मजबूत होगें। जागृति उनके हाथों में होगी। परिवार मजबूत होगें। वहां कई महान अगुवे होगें। हृदय और मस्तिष्क को उचित आकार दिए बिना हालांकि हम केवल अपनी समस्याओं को बनाए रखते हैं। और तब बुराई के अंधेरे तरीके और मानसिकता हमारे जीवन को रिसाव में ले जाती है। सत्य प्रशिक्षण को मजबूत धर्मी जीवन की स्थापना को शामिल करना चाहिए, जिसके बिना वहां कोई सच्चा प्यार नहीं है।

शिक्षाएं

* कई विश्वासी हारे हुए मसीहीयों के रूप में है क्योंकि वे परमेश्वर के वचन की शक्ति और महिमा से मंत्रमुग्ध नहीं हैं जो उनके जीवन में कार्य कर रहा है।
* परमेश्वर ने चर्च को पवित्र जीवन जीने के लिए मतलब/अर्थ दिया हैं कि वे नियमित रूप से पाप पर काबू पाने और उसकी विफलताओं के लिए सच्चाई की पुष्टि की है।
* जब चर्च प्रलोभन और पाप को दूर करने के लिए विश्वास को गले लगाता है, तो वह यह सीखता है कि कैसे उसके शक्तिशाली परमेश्वर पर निर्भर रहता है और जागृति को पाता है।
* प्रशिक्षण अगुवों से ही आना चाहिए जिन्होनें परमेश्वर की शक्ति को उनके जीवन में आते देखा है।

मनन और चिंतन

* 1 यहून्ना 5: 4

समनुदेशन – असाइनमेंट

⇨ अपने जीवन में कमजोरी और इसे दूर करने के लिए आवश्यक कदम की पहचान करें। क्या आप सक्रिय रूप से इस समस्या पर काबू पाने के लिए काम कर रहे है? क्या आप इस प्रक्रिया से दूसरों से वार्तालाप कर सकते हैं?

⇨ क्या आपने चर्च या स्कूल अपरिपक्वता और पापी नजरिए को/ क्या इस तरह का व्यवहार अगुवों में विकसीत हो रहा है इस समस्या को कैसे सम्पर्क में किया जाना चाहिए।

31

विश्वासीयों को परिपक्वता में तैयार करना

एक सबसे बड़ी चुनौती उचित रीति से सोचने के द्वारा तीसरे आध्यात्मिक चरण के विकास की है। ''पिता'' के रूप में रूप में यहून्ना के वर्णन किया है कि यह संस्कृति रूप से एक परिपक्व विश्वासी के रूप में अपने आप को या दूसरों को वर्णन करने के लिए अनुचित हो गई है इस मानसिकता को विनम्रता की छूटी भावना का चित्र और जीवन के लिए एक बहूत जरूरी बाइबिल दृष्टिकोण होने से अपने लोगों को रोकता है। क्या आप किसी पिता को जानते है जो स्वयं को एक पिता होने से इन्कार करते है, ओह! तो आपके ऐसा लगता है। लेकिन मैं वास्तव में मैं एक पिता नहीं हैं यह दृश्य हास्यापद है (विशेष करके जब तुम देखते हो कि उसके दो लड़के अपने पिता की पतलून को कुछ अनुरोध करते हुए खींच रहे हैं) एक पिता के लिए यह जीवन की एक सामान्य अवस्था है इसके बारे में शर्मिंदा होने की कोई आवश्यकता नहीं है।

गर्व की समस्याओं और सोच के जाल में निश्चित रूप से हम एक बड़ी समस्या में आ चुके हैं, लेकिन हम पिता के स्तर पर एक उचित दृष्टि को पाते है, तो हम बाइबिल परिपेक्ष गर्व के साथ निपटने का अपना तरीका होता है के बारे में जान जाएगें।

पापी मानव जाति के साथ तुलना एक समस्या है। मनुष्य की प्रवृत्ति जो उसे उस बारे में अपने आपको दूसरों से बेहतर बनाने की सोचते हैं। हालांकि, बाइबिल में देखने के लिए हममें हैं:

(1) तेजी से परमेश्वर के मानकों और लक्ष्यों को अपनाए

(2) परमेश्वर को तलाशे ताकि वह लगातार हमें धार्मिक जीवन जीने के लिए उपदेश दे।

(3) बेहतर बनने के लिए प्रशिक्षण ले और आसपास के लोगों की मदद करें।

क्या आप अंतर देख सकते है? विकास की मांग करके, हम स्वीकार करते है कि विकास और आगे की परिपवक्ता के लिए हमारे पास कमरा है, दूसरों की सेवा पर ध्यान केन्द्रित करके, हम दूसरों के साथ खुद की तुलना नहीं करते। यह एक उचित आत्मा है जो इस पिता के तीसरे चरण के पीछे है। कुछ भी हो, हमारे आसपास के मसीही लोगों के लिए जो अभी तक पिता नहीं है लेकिन नहीं किसी राह पर जाल में फंस गए है हमें उनके लिए रोना चाहिए।

यीशु ने कहा :- यह ठीक और उचित है कि किसी एक के बारे में परिपक्वता से सोचें ''पृथ्वी आप से आप ही फल लाती है पहले अंकुर, तब बाल और उसके बाद बालों में तैयार दाना (मरकूस : 4:28)। यह अंतिम चरण है जहां हमें फल लाने की उम्मीद करनी चाहिए। इसके तुलना करना कि कैसे दुखदपूर्ण हमारा जीवन हैं, जब हम धर्मी फल का उत्पादन अपने विलासिता के द्वारा नहीं देते हैं, लेकिन इसके विपरीत शायद हम अपना समय वीडियो देखने या खेल खेलने में बर्बाद कर देते है। इसलिए एक पिता के लिए इससे बढ़कर पाप यह नहीं है कि अपने बच्चों की जरूरतों पर ध्यान नहीं देते हुए अपने रूपयों का इस्तेमाल और समय का स्वयं को अय्याशी में डालकर उपयोग करता है। ऐसा होता है लेकिन यह एक दुखद प्रसंग है।

पहले चरण में हमने देखा कि कैसे एक छोटा बच्चा अपने जीवन की बुनियादी आवश्यकता के लिए भी अपने माता-पिता पर निर्भर रहता है उस ही तरह हम तभी उचित रीति से यह पाते है कि प्रत्येक विश्वासी मसीह में बढ़ते है जब तक वे परिपवक्ता से दूसरों का नेतृत्व मसीह में करते और उनके आत्मिक चाल में उनकी सहायता करते हैं। यदि कोई भी नए और युवा विश्वासीयों की परवाह नहीं करते है तो उनके विश्वास में अशुद्धि आ जाएगी। यही पितृत्व की आत्मा है। अपने आस-पास के लोगों की देखभाल करना और कम से कम वो जिन्हें आप मसीह में नेतृत्व करते हैं

इस तीसरे चरण में जहां हम ठीक से दूसरों की देखभाल करने के लिए इन विश्वासीयों को प्रशिक्षित करते है। सेवा के लिए नींव की विकास, जब कि इसमें शामिल हैं कि कैसे परमेश्वर के साथ गहरी ओर अधिक अंतरंग जीवन खेती करने के लिए समझ पाए। पिता के रूप में, पुरूष और विश्वास की महिलाएं इस बातों के परिपक्व रूप में, वे अगुवों में विकास करते है जो चर्चो की जरूरतों की देखभाल करने के लिए तैयार है और इनके साथ ही साथ उनके आसपास के अन्य विश्वासीयों के लिए भी अपनी सेवा देने में तैयार है।

एक माता–पिता के नजरिए से

सबसे बड़ा और बाईस साल के सबसे कम उम्र के बीच, मेरे पास कुल आठ बच्चे हैं। अभी मेरे पास चार किशोर है, यह प्रवृत्ति अभी तक एक साल के लिए जारी रहेगा। कुछ लोग हाईस्कूल से स्नातक प्राप्त करने के लिए अभी करीब आ रहे है और कुछ लोग अभी भी उनके व्यस्क जीवन में नहीं बसे है, हम जल्दी में नहीं है लेकिन हम लगातार प्रार्थना कर रहे हैं कि वे आवश्यक शिक्षा तो प्राप्त कर ले जो उन्हें अच्छी नौकरी पाने के लिए सहायता करता है, जिससे वे अपने माता–पिता की ओर मुडकर उनकी देखरेख कर सके माता–पिता के रूप में हम उनके बारे में बहुत इच्छा रखते हैं जो कोई ओर नहीं रख सकता।

परमेश्वर हमारे अभिभावक के रूप में इसी तरह इच्छा रखता है कि हम पूरी परिवक्वता में आगे बढ़े। परिपवक्ता संपूर्णता की भावना के साथ और सम्मान के साथ कि परमेश्वर ने हमारे जीवन के लिए क्या आकार बनाया है उसके अनुसार बजता हैं सबसे आध्यात्मिक अलगाव उसके परिवार से और असली दुनिया से और उनके बाकी के जीवन का समय आध्यात्मिक ज्ञान की मांग कर रहा है। इसके विपरीत परिपक्व मसीही विश्वासी आगे परमेश्वर के साथ अंतरंगता का प्रयास करते है जिससे वे अपने आपको व्यस्त रखते हुए दूसरों की सेवा कर सके।

दुनियां में लोग शायद एक वित्तीय या भावात्मक इनाम प्राप्त करने के लिए सेवा करते हैं परमेश्वर के लोग सेवा करते है क्योंकि वे अपने जीवन में प्रशंसा के साथ परमेश्वर के अभिभूत प्राप्त करते है। वे परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए ढुंढते है, ओर दूसरों की भी देखभाल करते है कुछ मसीही लोग पास्टर को बुलाते है लेकिन सभी विश्वासी का तात्पर्य यही होता है कि वे आगे बढ़े और दूसरेां की देखभाल करे। पास्टर प्रत्येक को सेवा के लिए तैयार करता हैं (इफिसियो : 4:11–12)।

हृदय से सेवा करना:–

कैसे परिप्रेक्ष्य की सेवा हमारे जीवन में कैसे जुड़ सकती है? सेवा की दृष्टि गहरे विश्वास के दिल और दिमाग में एकीकृत किया जाना चाहिए यह एक पृथ्वी भर के विभिन्न समाजों में एक बड़ी चुनौती है यह सत्ता में उन लोगों में कार्य करने के लिए समय है या सेवा लेने के लिए अभी समय है ऐसा उन्हें महसूस हो गया है। यह स्वार्थ सूक्ष्म है लेकिन हमारे आधुनिक दुनियां में बहुत वास्तविक है। हम सेवा निवृत्ति के लिए तत्पर है। जहां हम अपने स्वयं के सुख में लिप्त रहते है। दूसरों की जिम्मेदारी की किसी भी भावना को समझे। पौलुस ने उन लोगों को डांटा है जो अपने स्वयं की आध्यामिकता पर ध्यान केन्द्रित करते हैं किसी दूसरे के बारे में ध्यान ही नहीं देते, ''हे भाईयों, तम समझ में धनो, तौथी बुराई में तो बालक रहेा, परन्तु समझ में सियाने बनों'' (1 कुरिन्थियों 14:20)

प्रशिक्षक के रूप में हमें ध्यानपूर्वक ध्यान देने की जरूरत है जो हमारे आसपास है उनकी जरूरत क्या है और प्रशिक्षण में जो आवश्यक है उसे किसी भी रीति से विशेषता देते हुए प्रदान करें। कुछ चर्च शिष्यता के कार्यक्रम के लिए देख रहे है। कार्यक्रम अक्सर परमेश्वर की व्यक्तिगत प्रमुख और इनपुट के लिए अनुमति नहीं दे रहे हैं। अच्छे संसाधन महत्वपूर्ण है। किंतु समय का उपयोग व्यक्ति के साथ करना चाहिए ताकि देख सके कि किसी तरह परमेश्वर उस व्यक्ति का नेतृत्व कर रहा है। कई संसाधन जैसे वीडियो प्रशिक्षण सेमिनार में इसका उपयोग किया जा सकता है, लेकिन हमें हमेशा अपने विशेष समय अकेले प्रभु के सामने शामिल करना है।

बस आज आप सुबह मेरे शांत मनन के समय के दौरान मैंने इसे लिखा मैं एक विदेशी प्रशिक्षण यात्रा के लिए तैयारी के बारे में प्रभु की मांग कर रहा था, प्रभु ने मुझे कुछ प्रेरित किया ताकि मैं उसे लिखूं वहाँ मेरे कुछ भाईयों के पास कुछ मुद्दे थे जिन्हें स्पष्ट करना था। जब मैं कम्प्यूटर पर गया वहाँ हमारे समन्वयक से एक ई–मेल के द्वारा पुष्टि की गई थी। परमेश्वर ने मेरे दिल को धकेल दिया था और उसके बाद यह पुष्टि की। निर्णय वित्तीय मांग था।

लेकिन परमेश्वर इसमें था मैं विश्वास करता हूं कि वह जरूरत को पूरा करेगा। इस तरह से मेरे विश्वास को अधिक से अधिक से अधिक काम के लिए बनाया गया था। ये दिल के सबक अधिकांश प्रभु के साथ गुप्त रूप में सीखे गये।

परिपक्व विश्वासी को प्रशिक्षत करें कि वे कैसे:

* परमेश्वर को अंतरंगता के साथ ढूंढे।
* वचनों की गहराईयों में जाएं।
* व्यक्तिगत संघर्षो के साथ गहरा मल्लयुद्ध करें।

* जब दूसरे छोड़ दें तब दृढ़ रहें।
* एक अशुद्ध समाज में रहते हुए भी शुद्ध रहे।
* परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करें दूसरों की सेवा कर लें।
* कृपया जरूरतों के समय दूसरों को सामना करें।

ईमानदार विश्वासी कभी भी बढ़ोत्तरी को रोकने की हिम्मत करेगा। हम अपने रिश्तों में परमेश्वर के साथ बढ़ते हैं। ताकि यीशु की तरह बन सके और दूसरों की बेहतर सेवा कर सकें। हम हमेशा परमेश्वर की ओर निहारते हैं कि कैसे हम हमारे जीवन का लालन-पालन अच्छे से एक या एक अधिक क्षेत्रों में करें।

शिक्षाएं

* आत्मिक विश्वासी होने के नाते विश्वासी को ''बड़ा होने'' का सपना देखना चाहिए, कि वे परमेश्वर के करीब जा सकते है, और उनके आस-पास के लोगों की सेवा के लिए उसके द्वारा सशक्त हो।
* परमेश्वर चाहते है कि हम अपने जीवनों के द्वारा फल लाए, यह अत्यधिक हद में जब एक आध्यात्मिक विश्वासी परमेश्वर की आत्मा का कार्य उनके जीवन में अद्‌भुत रीति से होता है।
* हमारा प्रशिक्षण केवल बना देना या व्यक्ति के चित्त पर प्रभाव डालना नहीं है। लेकिन उस संवारना है कि वे भाई या बहन परमेश्वर के साथ बने रहे और दुसरों की सेवा के लिए तत्पर रहे।

मनन और चिंतन

1 कुरिन्थियों 14:20

समनुदेशन – असाइनमेंट

⇨ क्या आप परिपक्व विश्वासी है? क्या सबूत है आपके पास की आप उचित जवाब दें।

⇨ परमेश्वर के करीब रहने के लिए कौन सी चुनौतियों का सामना आपको करना पड़ता है ?

⇨ क्या आपने कभी ''जला हुआ'' अनुभव किया एक का मानना है जहां अनुभव आध्यात्मिक रूप से सूखे और सेवा करने में असमर्थ हैं तो आप उसे कैसे सम्भालते हैं? इस स्थिति से निपटने के लिए आप कैसी सलाह देगें?

32

विश्वासीयों को परिपक्वता में तैयार करना

मसीही आध्यात्मिक विकास के तीसरे चरण का प्रशिक्षण इन दो पहले के चरणों से काफी अलग है।

पहले के चरणों का ध्यान विश्वासीयों को इन स्वरों में से गुजरने में मदद करता है। पहला यहून्ना 2: 12 – 14 के अनुसार हमारे सांसरिक अनुभवनुसार वहां और कोई चौथा चरण नहीं हैं। यह तथ्य है कि हमारे विकास की दृष्टिकोण से इस स्तर का तरीका बदल जाता है। इन एक और दो चरणों में, विश्वासी उसे या उसके लक्ष्यों में सक्षम होने के लिए जोर देता है कि वह अगले चरण में प्रवेश करें और आध्यात्मिक विकास के लक्ष्यों में बढ़ते जाए।

इस स्तर पर कुछ खतरे मौजूद हैं। हम अपने चर्च में उन पूर्वजों को बीस या उससे भी अधिक वर्षो के है वे ''प्रश्न'' जाते हैं या ऐसा सोचे, विश्वासी जो बीस साल से एक ही बेंच पर बैठता हैं। वह स्वयं को वफादार या विश्वासयोग्य समझने लगता है, और हाँ, वहाँ एक कठोर अनुशासन हैं मूसा ने चट्टान पर लाठी मारी इसके बजाए की वह परमेश्वर से बाते करता। (गिनती 20:11 – 12)।

इन समस्याओं को ठीक से मसीही विकास के इस स्तर पर विकास को समझने के द्वारा हल किया जा सकता है। आध्यात्मिक विकास निरंतर हमें उघडते रहेगी जब हम मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ उसकी अंतरंगता में बढ़ेगें। तब हमारे आध्यामिकता का विकास निरंतरता से होगा। व्यस्क भी उनकी परिपवक्ता में, ज्ञान में, तरस और मसीह की परिपूर्णता में आगे बढ़ेगें (इफिसियो: 4: 13)

सचेत रहे, हालांकि नए विश्वासीयों को तीसरे स्तर की तुलना में प्रशिक्षित करना बहुत ही आसान हैं जो लोग राह में फंस गए हैं, और जो यह सोचते है कि विकसित हो गए हैं उन्हें पुन: सीखना है।

हमारे विकास को बनाए रखना

हालांकि शब्द जारी रखना विकास के शब्दों को आच्छादित नहीं करता है यह लगातार एक के जीवन में कुछ आध्यात्मिक विषयों को देने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए- प्रार्थना परमेश्वर के साथ कि करीब अंतरंग और परमेश्वर के साथ इसके द्वारा चर्चा कर सकते हैं और हमें इसे बढ़ाना ही चाहिए व्यक्तिगत बाइबिल अध्ययन की तरह यह मजबूत बनाने के लिए इसे जारी रखने की जरूरत है।

इन बिन्दुओं में जब हम प्रलोभित होकर डगमगाने लगते है और गुनगुनाहट की परिस्थिति में फिसलते या अनाज्ञाकारिता के रूप में रहते हैं। और उस जगह पर ऐसे सेवा करते है जहां हम आगे विकास और सर्म्पण और परमेश्वर की योजना को जो हमारे जीवन के लिए है यही वो अंक या बिन्दु है। वे इस तीसरे स्तर पर बार-बार प्रभु के द्वारा पूछे जाते है। ''क्या और कौन तुम्हारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है?'' हमारी प्रतिक्रिया प्रगट करती है कि हम उस पूरे दिल से ढूंढ रहे हैं या नहीं।

वहां कुछ राजा जिन्होनें अपने शुरूआती दिनों में उनकी सेवा बड़ी अच्छे तरीके से किया। लेकिन बाद में घमण्डी और मुर्तिपूजक बन गए, इन खतरों, तथापि हमारी प्रतिबद्धता वाणी सही निर्णय लेने के लिए और सही रास्तों पर चलने के लिए हमें बहुत अवसर देती है। कई बाइबिल की आयत/वचन है जो हमें प्रोत्साहित करते है कि विकास के माप को पकड़े रहे जिसका हमने अनुभव किया है:

> और अपनी आशा के अंगीकार को दृढता से थामे रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा किया है वह सच्चा है'' (इब्रातियो: 10:24)।
>
> ''इसलिए, हे भाईयों स्थिर रहो, और जो जो बातें तुमने क्या वचन, क्या पत्री के द्वारा हमसे सीखी हैं उन्हें थामे रहो।'' (2 थिस्सलुनिकियो : 2: 15)

''सब बातों को परखो जो अच्छी से उसे पकड़े रहो'' (1 थिस्स : 5:21)

''मैं शीघ्र ही आने वाला हूँ''..... (प्रका: 3:11)

परिपक्व विश्वासी को हमेशा अपने प्रभु के लिए अपने उत्तर दिल को रखने के लिए सावधान रहना चाहिए यह मुश्किल है। उन्हें निराशा, बहुतायत, संदेह, शक्ति, शोहरत, कडवाहट, दु:ख और शायद उत्पीड़न के समय का सामना करना पड़ सकता या पड़ेगा। प्रत्येक परिस्थिति में जहां हमें का सामना करना पड़ सकता या पड़ेगा। प्रत्येक परिस्थिति में जहां हमें सच्चाई के साथ हमें दुबारा अपने पुराने समर्पण और सत्यता को लेना है जिससे हम परमेश्वर की राह पर चल सके। आध्यात्मिक जीवन है जिससे हम परमेश्वर की राह पर चल सकें।

आध्यात्मिक जीवन के बारे में महान बात यह है कि विकास में सम्भावना का कोई अन्त के बारे में महान बात यह है कि विकास में सम्भावना का कोई अन्त नहीं हैं। पौलुस इसे अच्छी तरह से व्यक्त करता है।

> यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सि) हो चुका हूं: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूं, जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। (फिलि: 3:12)।

पौलुस ने अपने आत्मिक विकास में यह महसूस किया कि उसका बाकी का जीवन उसके स्वयं के लिए नहीं है। लेकिन वह प्रभु के लिए और उसकी योजनाओं के लिए काम करने के लिए और दूसरों के लिए भी है वह उन सारी बातों को बड़े और छोटे को हासिल करना चाहता है जिसे प्रभु ने उसके लिए येाजना बनाई है।

तीसरे स्तर पर एकता

जब हम यहून्ना के प्रोत्साहन के बारे में सोचते हैं (1 यहून्ना 2:12 – 14) हम तीनों स्तरों को देखते है आध्यात्मिक विकास के उस विकास में अपना ध्यान केन्द्रित करने की शुरूआत करते हैं। यह मसीही जीवन जीने के इस तीसरे चरण के साथ भी सच है। हालांकि बाहरी रूप में ऐसा दिखता है कि हम धार्मिक नहीं है। हम अपनी योजनाओं को नवीनीकृत करते है ताकि हम उसको जानें और हमारे जीवन के माध्यम से अपनी योजनाओं और उद्देश्यों को रखें।

अगर हम सावधान नहीं है तो अक्रियाशीलता आती है सेवा दिनचर्या या सुखी हो जाती है। जब हम अक्सर प्रभु की उपस्थिति में ताजा नहीं बनाते हैं ध्यान दें कि पौलूस कैसे मसीहों को सूचित करता है (रोमियो : 12: 11)

जो चीज हम बाहर ले जाते है उसकी योजना को कभी भी नहीं भूलना चाहिए या तो अपने हताश स्थितियों में या फिर अपने व्यस्त जीवन में। यीश मसीह ही एक परम उदाहरण है जो सेवा के बीच संबंधों को दिखा रहा है।

मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो(जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। (यहून्ना : 15:5)

प्रत्येक शब्द हमें अंतरंग शब्दों की याद दिलाता है हमें इन बातों को बनाए रखना है ताकि हम परमेश्वर के जीवन जो हमारे द्वारा योजनाबद्ध तरीके से बाहर कार्य करना चाहता है।

प्रशिक्षण सामग्री पर एक नजर

इस स्तर पर प्रशिक्षण बहुत विकास, कि कैसे शैतान बड़ी चालाकी से विश्वासीयों को प्रलोभन या परीक्षा में डाल देता हैं और साथ ही साथ प्रभु के संग एक अंतरंग सम्बन्धों की जरूरत हैं। इससे बढ़कर भक्ति और परिपूर्णता दोनों आती है। कई मामलों में विश्वासी नियमित रूप से भक्ति समय को बनाए रखने के लिए सक्षम नहीं है। नतीजन, वे उदासीन होते जा रहे हैं मसीह की ओर से अलग बनने और बढ़ नहीं पा रहे है। एक अच्छा प्रशिक्षण इस तरह से मदद करता है।

* मनन चिंतन कि विशेष प्रक्रिया कि निरंतरता।
* गिरने के बाद मनन चिंतन के अच्छे समय के प्राप्ति की प्रक्रिया।
* कठिन मार्ग से अंर्तदृष्टि हासिल करना।
* शास्त्रों से परमेश्वर को सुनने के साधन।

कई चर्च या प्रशिक्षण मदरसे/सेमीनरी में इन प्रक्रियाओं के बारे में ध्यान केन्द्रित नहीं किया जाता है। महान प्रशिक्षण लोगों को जो प्रभु यीशु मसीह उन्हें प्यार से देना चाहता हैं। इसके बजाए हम जानने की कोशिश नहीं करते परन्तु लोगों पर दोष डाल देते हैं।

परिपूर्णता के पूरे क्षेत्र में विशेष ध्यान की भी जरूरत है। परिपक्वता फल पैदा करती है यीशु सिर्फ हमसे फल की ही नहीं परन्तु उससे बने रहने की अपेक्षा करते हैं। (यूहन्ना : 15:16)।

ज्यादातर मामलों में हम हमारी सेवकाई को उनके फालें के द्वारा मापते हैं। यह अच्छा है, लेकिन यह इस तीसरे चरण में विकास की एक व्यापक परिपेक्ष्य में रखने के लिए महत्वपूर्ण है। बस याद रखें कि मसीही विकास के इस स्तर में हमेशा फलवंत के विभाजन को नहीं देखा गया है जब एक व्यक्ति एक कठिनाई से स्थाई है। यीशु के जी उठने के बाद ही उसके कठिनाई का फल स्पष्ट हो गया।

मसीहीयों की उत्सुकता को बढ़ाने व हमारी सेवा को अनुकूल बनाने के लिए कई किताबें हैं। हमारे युग में यह महान आशिष है जहां हम अन्य मजबूत विश्वासी को उसके प्रशिक्षण के माध्यम से मिल सकते है, किताबे, वीडियों के अध्ययन के लिए, पढ़ने के लिए, लेकिन हम मसीह के साथ गहरी मित्रता के ऊपर जाने के रूप में हम देख सकेगें कि कई महत्वपूर्ण सबक आसानी से परिक्षण या वर्गीकृत नहीं ला सकते । इसमें कोई संदेह नहीं है। वे अक्सर स्कूलों में उपेक्षित हो रहे हैं यह भी एक कारण हैं।

एक व्यावहारिक नज़र

इस स्तर के समुह में उपदेश देना सबसे अच्छा है जहां एक से एक में प्रत्येक लोग आसानी से स्कूल के रूप में साझा कर सकते हैं। शिष्यत्व के बारे में महान पहलू यह है कि जब एक विश्वासी बहुत अधिक यात्रा कर रहा है या चर्च में जहां शिष्यता नहीं पाई जाती है। वह अभी भी आसानी ने दूसरे को शिष्य बना सकता है।

उदाहरण के लिए इस तीसरे स्तर पर बस आप एक बहन है या यदि बहनों) एक या दो भाई पाते है यह एक आम जरूरत है। जिसे वे पाते हैं। मैं अक्सर व्यक्ति से पूछता हूँ किस क्षेत्र में वह बढ़ना चाहता है और मैं यह भी उसे बताता हूँ कि वह दूसरे क्षेत्र में किस तरह से मैं उसे बढ़ते हुए देखना चाहता हूँ। उदा: के लिए (परमेश्वर से सुनना एक बाइबिल पुस्तक की खोजन इत्यादि) समय प्रार्थना और साझा करने के दो क्षेत्रों पर चर्चा के बीच में विभाजित हैं एक व्यवहारिक रूप से कहीं भी और किसी भी समय पूरा कर सकते हैं।

निम्नलिखित अध्यायों में, हम विकास और क्या यह औपचारिक प्रशिक्षण संस्थानों साथ ही इस तरह के कोई जहां कोई भी स्थान नहीं है। और वहां कोई शिक्षण भी नहीं है। उसे आगे प्रतिबिम्बित और वहां कोई शिक्षण भी नहीं है। उसे आगे प्रतिबिम्बीत करेगें।

शिक्षाएं

आध्यामिक विकास के इस तीसरे स्तर से अपने लक्ष्य के लिए इस चरण के भीतर पनपें लोगों से अलग है इसके बजाए कि इसे पारित किया जाए।

* किसी भी स्तर पर परमेश्वर हमारे जीवन के माध्यम से क्या कर रहा है इस बात में अपने ध्यान को केन्द्रित करने के द्वारा हम खतरे की धमकी से बच सकते है।
* प्रशिक्षक प्रत्येक विश्वासी को परमेश्वर के योजनाबद्ध कार्य से जो उसके लिए है, इस बात को याद रखने के द्वारा कि वे मसीह और परमेश्वर के दया के द्वारा बढ़ती हुई निकटता में परमेश्वर के संग रहे इस तरह से वह उन्हें तैयार करता है।
* मसीही प्रशिक्षण विश्वासीयों को इस तीसरे विकास के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए और अधिक कार्य करना चाहिए।

मनन और चिंतन

* फिलिप्पियों : 3 :12

समानुदेशन (असाइनमेंट)

- ⇨ तीन मसीही जीवन की कहानियों को नीचे लिखे/ (आपकी या किसी ओर की) जो आपके आध्यात्मिक विकास में मदद दिए हो। समझाईए।
- ⇨ क्या आपने कभी अक्रियाशीलता का या विश्वास में सुखेपन का सामना किया है? एक परिस्थिति को उठाकर यह कैसे आई इसके बारे में दर्शाए (और अंत में इसे कैसे हल किया गया था)
- ⇨ क्या आप परिपक्वता के तीसरे स्तर पर है? समझाए।
- ⇨ एक जीवन्त विश्वास बनाए रखने के लिए सबसे बड़ी चुनौतियां क्या है?
- ⇨ क्या आपने कमी किसी को आत्मिकता के विकास के तीसरे स्तर पर सलाह दिया है? यह कैसा दिखाई पड़ता था?

जीवन के स्रोत और प्रशिक्षण

अध्याय 33 – 40

33

मुख्य उद्देश्य

जीवन के सत्व परमेश्वर के क्या उद्देश्य विश्वासीयों के जीवन में है और कैसे विभिन्नता में जुड़ा है, परमेश्वर की शक्ति के प्रवाह को गहरा करने परमेश्वर के लोगों के जीवन परिवर्तन को तेजी से उकसाने की पहचान की है।

परमेश्वर विकास को लाने के बारे में मांग कर रहा है। जब हम उसके सीधे प्रयोजनों के लिए प्रतिकार करने जाते है, अज्ञानता में या नहीं, या भेष में यह महत्वपूर्ण मामलों की एक मोटी परत में परमेश्वर के विशेष जीवन बदलने का कार्य उनकी कृपा से कई मायनों में घटित होगा। लेकिन यदि हम सावधानी विवेचना से अपने स्वयं के लिए उसके उद्देश्यों को अपनाते हैं, तो हम उसकी शक्ति को लगातार अपने काम में देखेगें।

प्रत्येक स्कूल, चर्च परिवार और व्यक्ति को ध्यान से परमेश्वर के लक्ष्यों की रोशनी में अपने खुद की स्थिति की जांच करने और आवश्यक समायोजन करने की जरूरत है। अच्छा आकलन इस तरह के प्रशिक्षण के लिए वर्तमान इच्छाओं के साथ ही बारीकी से वर्तमान कार्यक्रमों और परियोजनाओं पर परमेश्वर के साथ काम नहीं होने के परिणामों पर विचार करना चाहिए।

जब अधिकतम चर्च और मसीही संस्थानों की स्थापना ठोस उद्देश्य के साथ की गई थी। कई लोगों का अपहरण कर लिया गया और वहीं कई दूर चले गये। यदि एक चर्च परमेश्वर के लक्ष्य की मांग नहीं कर रहा है, या फल नहीं दे रहा है, तो यह कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है कि यह बेल से टूटे नहीं है। (यूहन्ना 15:1-6)? कईयों ने महान लक्ष्यों के साथ शुरू करना बंद कर दिया है, लेकिन उनके पाठ्यक्रम से भटक गये हैं। यह प्रवृत्ति अक्सर इस बात अधिक ध्यान केन्द्रित करती है कि दूसरे लोग क्या उम्मीद करते है इसके बजाय कि परमेश्वर क्या करने की कोशिश कर रहे हैं।

परमेश्वर हमारा मूल्यांकन हमारे स्नातकों की संख्या से नहीं कितने साल हमने सेवा किया उससे नहीं करेगा लेकिन अंत उत्पाद के द्वारा कि क्या परमेश्वर के लोग परिवर्तित और तैयार है कि परमेश्वर के बदलाहट का प्रयोग दूसरे को बदलने के लिए कर रहे हैं ? शायद मसीह हमसे यह पूछेगा क्या उपाधि तुमने मेरे लोगों को दिया ताकि वे मेरे जैसा बनना पसंद करे और दूसरों की सेवा करने की इच्छा में अपने आप को सक्षम बनाए?

यदि हम अपने लक्ष्यों के साथ हमारे अंत परिणामों की जांच करते है, तो इस लक्ष्यों में से कुछ पुरा होने में हमें कोई भी संदेह प्राप्त नहीं होगा। यह अच्छा है लेकिन हम अपने आध्यात्मिक विकास के और परमेश्वर के उद्देश्य पर हमारे ध्यान और बढ़े प्रयासों के ठीक करने में सक्षम हैं और अधिक प्रभावी लेस वृद्धि की परिपूर्णता मे दिखाए जाएगें।

परमेश्वर उसके साथ काम करने के लिए साथ की मांग करता है और यह एक सत्व खोज की आवश्यकता हैं और जो वह सोचता है वह महत्वपूर्ण हैं परमेश्वर धारणात्मक रूप से जाना नहीं जाता है, लेकिन व्यक्तिगत तौर पर जाना जाता है प्रत्येक पुरूष और महिला को उसका या उसकी दोनों को परमेश्वर मे अपने विश्वास को हासिल करना चाहिए। यह विश्वास निरंतर चलने के द्वारा निर्माण होता है। हमारे अक्सर दोहराए अनुभव के माध्यम से जहां एक व्यक्ति यह देखता है कि कैसे परमेश्वर उनके कठिन समयों में उनके द्वारा आता हैं। सुनों, कैसे दाउद के शब्दों में आता है।

''हे परमेश्वर, हे मेरे बल, मैं तुझ से प्रेम करता हूं। यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है(मेरा ईश्वर, मेरी चट्टान है, जिसका मैं शरणागत हूं, वह मेरी ढ़ाल और मेरी मुक्ति का सींग और मेरा ऊंचा गढ़ है। (भजन : 18: 1-2)

हम क्या देखते है लेकिन एक मजबूत व्यक्तिगत विश्वास परमेश्वर में? दाऊद एक शक्तिशाली योद्धा और बहुत चालाक था, लेकिन इन सबके पीछे वहां कई जीवन के अनुभव थे जहां परमेश्वर ने अपनी शक्ति और इच्छा को प्रकट किया है ताकि

उसे सहायता दें परमेश्वर प्रत्येक वास्तविक विश्वासी के साथ भी अपने स्वयं के संदर्भ में इसी तरह से करना चाहता है जीवन परमेश्वर का प्रशिक्षण स्कूल है।

हालांकि हम इस प्रक्रिया से अवगत हैं कि हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ इस राह को बांधना मुश्किल हो गया है। हमारे निजी जीवन के विकास के परीक्षण कठिन और उसे मापना भी कठिन है। आधुनिक दुनियां इसके कई नियामक एजेन्सीयों और सरकारी बास्केट बॉल के माध्यम से कुदने के द्वारा सुधार करना कठिन है। वे कभी-कभी वे सिर्फ सरकारी एजेन्सीयों नहीं हैं, लेकिन हमारे अपने चर्च या मान्यता समूह में हमारी योग्यता को बनाए रखने के लिए मदद करने में विशेषताओं में हमें प्राप्त है। लेकिन एक ही समय में वे अपने मापदण्ड से मूल्यांकन करने के लिए हमें विवश करते है लेकिन परमेश्वर के नहीं।

तनाव हमें परमेश्वर के लक्ष्य से हटाता है वह हम पर दबाव डालता है ताकि हम मानकों और उम्मीदों के अनुरूप कार्य करें। इस प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए यह उपयोगी है। प्रभु ने हो सकता है कि विशेष मार्गदशन और ज्ञान से किसी भी तरह कि प्रणाली से बाहर आकर तोड़ने के लिए है लेकिन अक्सर वह सही मौजूदा प्रणाली के भीतर हमारे साथ काम करता है।

जीवन सत्व हमारे वर्तमान प्रशिक्षण विधियों के साथ परमेश्वर के आध्यात्मिक विकास प्रशिक्षण एकीकृत करने के लिए विभिन्न तरीके प्रदान करता है। नीचे हम कुछ विभिन्न तरीके प्रदान करेगें कि इसे कैसे करना है और कुछ विचारों को बांटेगें। स्पष्टता प्रयोजनों के लिए, हम उच्चस्तरीय महाविद्यालयों पर प्रशिक्षण स्कूलों का उल्लेख करेगें। पूरे समय की सेवकाई के लिए लेकिन यह अन्य परिस्थितियों के लिए बहुत लागू किया जाता है। जब आप इन प्रत्येक बिन्दुओं को पढ़ते हैं तो आप अपने चर्च, जीवन आदि को अपने दिमाग में रखें।

जीवन सत्व के लक्षण

यहां ध्यान में रखने के लिए दृष्टिकोण कुछ मौलिक विशेषताएं हैं जिसे ध्यान में रखना महत्वपूर्ण हैं।

⇨ बौद्धिक रूप से उत्तेजना

जीवन के दो उपमाओं का परिचय दिया गया है, एक जीवन के स्रोत के बारे में और दूसरा जीवन के विकास को चिंतित कर रहा हैं। प्रत्येक उपमा आत्मिक सत्यता मूलभूत बातों के लिए सचेतता प्रदान करती है, जब हम उनके बहुत विचार करते हैं आत्मिक जीवन के वास्तविक दुनियां में हम गहराई से अदृश्य परख को प्राप्त करते है।

बहुत समय पहले से नहीं, आदमी महासागर के तल का पता लगाने से पहले हमने जीवन से रहित होने के लिए सोचा हम जानते है कि, गहरे समुद्र के नीचे जीवन भरा हुआ हैं और रोमांच खोज की एक विशाल और नए क्षेत्र को प्रस्तुत करता है। परमेश्वर के उद्देश्यों और तरीकों के अध्ययन की समृद्धि इस तरह से हैं यह ध्यान, आश्चर्य और जानने के लिए हमें इच्छा देती है ताकि सीखे और परमेश्वर के बारे में जाने जो हमें यह जीवन देता है।

इस अध्ययन का, बौद्ध धर्म की तरह एक धर्म से तुलना करें, या कुछ ऐतिहासिककाल पर अध्ययन करें। अंत में वे आदमी के विरूपण को प्रतिबिंबीत करते है। चूंकि जीवन का सत्व हमारे लिए जीवन के बहुत स्रोत को लेकर आता है। वह ठीक है, अच्छा है सम्पन्न और सक्षम करने के लिए जीवन के मध्य बिन्दू में जहां मसीह हममें है। (1- यूहन्ना : 5:20)

⇨ आसानी से मूल्यांकन

ईमानदार रहे, विकास के चक्र के कुछ भागों, को मापना कठिन होता है, लेकिन उन चरणों या स्तरों में एक या दो अधिक आसानी से पहचानें और मुल्यांकित किये जा सकते हैं। यह कहा गया है कि हम मान्यता प्राप्त एजेंसियों के नियंत्रण से बचने के लिए सिफारिश नहीं कर रहे हैं जो छात्रों के जीवन में वास्तविक परिवर्तन की तुलना में, संख्या और डिग्री पर ध्यान केन्द्रित करते है। हम एक सार्थक प्रशिक्षण कार्यक्रम का निर्माण

करने में हमारा मार्गदर्शन करने के लिए इन मापों का उपयोग करें।

⇨ व्यक्तिगत रूप से पुरस्कृत

स्कूल और कक्षाएं शिक्षकों को लय करके नीचे जा सकते है। शिक्षाविदो पर भारी तनाव आध्यात्मिक जीवन का पोषण करने के लिए छोटा भाग देते है जब बगीचे की मिट्टी संकुचित हो जाती है तब पौधे के जडतंत्र में एक कठिन समय का विस्तार होता है। नतीजन वहां थोड़ी वृद्धि है छात्र इस समस्या से संबंधित है और यहां तक कि यह समस्या हमारे उत्तम सेमीनरी या मदरसे में भी मौजूद है।

प्राध्यापक और छात्र दोनों नीचे दब रहे है सत्र के कार्य के बौद्धिक मांग के साथ। उनके स्वयं के आत्मिक जीवन के लिए उनके पास बहुमूल्य समय कम है, विपरीत सच होना चाहिए। जब वास्तविक विकास पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है बौद्धिक उत्तेजना के साथ, सब कुछ और अधिक सार्थक और व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है।

⇨ सशक्त बनाना और जान डाल देना

हमारे सभी सीखने को अर्थ के ढांचे में वापस लाया जाना चाहिए। छात्र को न केवल ज्ञान की जरूरत उसे धकेलने के लिए है, परन्तु परमेश्वर से प्राप्त जीवन को पोषित करने के लिए है। बेहतर एक छात्र है कि वे अपने भीतर के जीवन के साथ क्या सीख रहे हैं संबंधित करने में सक्षम है, और अधिक सही मायने क्या सीखा है उसे कह सकते हैं। पाठ्यक्रम ज्ञान ही न केवल अच्छी बूझ है, लेकिन भली भांति जानते हुए किय कि यह जीवन और सेवकाई से कैसे संबंधित है। यदि वे अपनी बौद्धिक और व्यावहारिकता के अध्ययन के साथ एक साथ जीवन के सत्व अवधाारणाओं को शामिल कर रहे हैं तो, वे अपने जीवन में लगातार जांच कर सकते है कि परमेश्वर उनके और दूसरों के जीवन में क्या कार्य कर रहे हैं तब यह पाठयक्रम तेजी से परमेश्वर के उद्देश्य और साधना के लिए गठबंधित हो जाते हैं और यह अंतदृष्टि उत्तेजना पैदा कर सकती है।

⇨ परमेश्वर केन्द्रित है और आत्मा सहायता प्राप्त

वहां कई ऐसे खतरे हैं जिनका सामना छात्रों/ विद्यार्थियों को करना पड़ता है लेकिन धर्मीविज्ञान का होना और परमेश्वर को जानना एक बड़ी प्रतिस्थापना के साथ बाधा को उत्पन्न करता हैं। जब हम विशेष ध्यान को देते हैं हालांकि परमेश्वर की महिमा और उद्देश्य, तब वो सारी वस्तुएं उस स्थान पर गिरती जाती है। परमेश्वर के साथ एक संपन्न जीवन के इस मुख्य लक्ष्य के बिना, अन्य लक्ष्यों को नियंत्रित करना भारी हो जाता है।

⇨ फल जो बना रहता है

हमारे समाज में परिवर्तन की जरूरत है, लेकिन यह आवश्यक परिवर्तन परमेश्वर के लोग के साथ परमेश्वर के बजाए इस अंतरंगता के माध्यम से हासिल किया है। जब तक पर्याप्त समय और आध्यात्मिक परिवर्तन पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया जाता है तो आंतरिक विकास का पल जिसे पूरी तरह से विकसित किया जा सकता है पहले ही फल प्राप्ती से दूर चला जाता है।

सावधानी से निरीक्षण

हम सिर्फ इस बात को नहीं निहार रहे कि बाइबिल कॉलेज में पढ़ रहे या प्रशिक्षण प्राप्तकर्ता छात्रों के साथ क्या होता है, तत्पश्चात्! दुश्मन हमेशा सक्रिय है, लेकिन सही उपकरणों का इस्तेमाल और प्रशिक्षण देकर एक लम्बे रास्ते के दौरान परमेश्वर के लोगों को बनाया जा सकता है।

यीशु ने कहा उसके अच्छे कार्य अच्छे फल को लाते हैं (यूहन्ना :15:5)। कुशलता पर जोर देने के साथ, चरित्र और आत्मिक अनुशासन आवश्यक है। हम आगे की वास्तविक दूनियां के लिए उसे या इन छात्रों के बेहतर जुनून को उनके जीवन में एकत्रित कर सकते हैं।

पौलुस संक्षेप में इस परिवर्तन के बारे में कहता हैं कि हमें प्रोत्साहन कि जरूरत या बढ़ावा देने की क्या जरूरत है, ''लेकिन आत्मा के फल, प्रेम, आनंद, शांति, धैर्य, दया, भलाई, विश्वास, नम्रता, आत्म-नियंत्रण हैं।(गलतियों: 5:22-23)।

इन बातों के खिलाफ कोई कानून नहीं है। हालांकि भिन्न-भिन्न शब्दों का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन हमें अपने फल की गुणवत्ता पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए सावधानी की जरूरत है। अच्छा फल परमेश्वर की उपस्थिति में रहने वाले लोगों की विशेषता है। वे स्थाईरूपेण बंधे हुए है।

सारांश

आत्मिक विकास के एक विशेष जोर के साथ विकास की अपनी स्पष्ट पथ सेवकाई के लिए कठिन वर्षो के दौरान बाइबिल दृष्टिकोण को बनाए रखना अवश्य है।

इस जीवन परिवर्तन कार्यक्रम का हमारा मुख्य लक्ष्य छात्रों के जीवन से बड़े फल की तलाश करना हैं। अन्यथा, इस जीवन जांच पड़ताल की बजाय दूसरों के जीवन प्रत्यारोपित किया जाएगा। मसीहत धर्म के कई मामलों में एक मात्र एक और दर्शन या धर्म के साथ जीने के लिए है। और कुछ/रहने के लिए कुछ भी नहीं बना है। जीवन सत्व हमें परमेश्वर के पास वापस जीवन शक्ति को पैदा करने के लिए लाता है।

शिक्षाएं

⇨ परमेश्वर उसके मानकों और उम्मीदों पर ध्यान केन्द्रित करने करने के लिए हमें चुनौती देता है।

⇨ जीवन सत्व में मान्यता पाई गई और यह धनी और योग्य हैं कि इसे प्राथमिकता दी जाए।

⇨ जब हम इन्हें व्यक्तिगत रूप से पुरस्कृत तत्वों कें लिए देखते हैं तो कुछ भी विशेष नहीं है कि कैसे खोज करें कि प्रशिक्षण एक खास अर्थ रखता है और यह परमेश्वर के द्वारा हमारे पास लाया जाता है। और दूसरे लोग इससे परमेश्वर के करीब आते हैं।

मनन और चिंतन

* गलतियों: 5:22 – 23
* भजन संहिता: 18:1 – 2

समनुदेशन – असाइनमेंट

⇨ क्या आपके जीवन में लक्ष्य है यह क्या है? (यदि नहीं तो बाहर लिखे) क्या यह एक गहरी और अधिक निकटता से परमेश्वर को जानने में शामिल है?

⇨ आपके स्कूल और चर्चा के लक्ष्य क्या है जिनसे आप जुड़े हैं? उन्हें ध्यान से पढ़े कि वे कैसे परमेश्वर के अधिक से अधिक लक्ष्यों के साथ तुलना करते हैं।

⇨ भजन: 18 को पढ़े और ध्यान दें कि दाऊद कैसे गहराई से परमेश्वर के कार्य और जीवन से प्रभावित था। दो बातों को बताएं। यह कह सकते है कि परमेश्वर मेरी ताकत है या मेरी ढाल बन गया है। उदाहरण के द्वारा हमसे बाटें।

34

अंदरूनी कामकाज

हमारे निर्धारित कार्यक्रम में आध्यात्मिक परिवर्तन को एकीकृत करने के लिए काफी महत्व एक कठिन कार्य करता है। इस अध्याय में, हम एक या एक से अधिक करने के लिए मान्यता का सुझाव देगें।

पौलुस मसीह के वचन को सक्रिय रूप से, उसके सभी विचारों, निर्णय और व्यवहार और मार्गदर्शन के लिए अनुमति देता है और उत्साहित करता है''

सब काम बिना कुडकुडाए और बिना विवाद से किया करो। ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिन के बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों की नाई दिखाई देते हो, कि मसीह के दिन मुझे घमंड करने का कारण हो, कि न मेरा दौड़ना और न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ। फिलिप्पियो: 2:14 - 16)।

पौलुस नियमितरूप से उसके विचारों और कार्यो में परमेश्वर की रोशनी में उसके जीवन के द्वारा उत्साहित करता है। स्कूल, चर्च, मसीही कारोबार और व्यक्तिगत मसीही को इस तरह से करना चाहिए, हालांकि वे बाहरी रूप से कुछ इस तरह के आकार में अपने स्वयं के रूपों, भाषा, शैली और समय से ढले हुए दिखाई दे रहे है यह ठीक है। गहराई से नीचे हालांकि परमेश्वर के जीवन राह से कोई भी सच्चाई बदल नहीं सकती है फिर भी कोई भी विचार और डिजाइन हमारे जीवन और संस्थानों में अपनी अपनी क्षमता और अभिव्यक्ति तक पहुंचने के लिए है।

हमारी मुख्य समस्या यह है कि जानें कैसे उचित गति से जीवन सत्व को हमारे हृदय के प्रशिक्षण में जगह दें। बगीचें में, पौधों को यदि एक दूसरे के बहुत करीब रखा जाए तो यह समग्र विकास को दबा देते है। कमरा हासिल करने के क्रम में, हम अंतरिक्ष को प्राथमिकता दें जिससे वह व्यक्तिगत पौधा सही मात्रा में रोशनी और हवा प्राप्त कर सकता है। पौधों को कम कर सकता हैं। जगह कि यह प्राथमिकता परमेश्वर और हमारे मुख्य उद्देश्य मात्रा से अधिक है या गुणवत्ता से।

क्या नही लेकिन कौन

हमें इस बात की अनुभूति हो जानी चाहिए कि परमेश्वर जीवन में नया कार्य करता है और हमारे प्रशिक्षण का मुख्य पहलु बन जाता है इस महत्वपूर्ण घटक के बिना, प्रशिक्षण का प्रभाव कम हो जाता है।

कदाचित, हमारे पास व्यक्तिगत के जीवनों में परिवर्तन लाने का तरीका नहीं था। हमें यहां दो प्रतिरूप को उपलब्ध कराने की आशा है। प्रारंभिक चरणों को हम प्रथम चुनना चाहेगें।

पुन: जब हम यहां बात कर रहें हैं तो मसीही स्कूलों को अनमन/ विचारों में रखेगें, किन्तु इसे केवल अपने चर्चो में ही लागू करें। माता कलीसिया, संस्था या जेसे व्यक्तिगत जीवन में जरूरी यहां दो विकल्प है :-

(1) जीवन सत्व प्रशिक्षण एक अलग विकास कार्यक्रम हैं जो एक अधिक सामान्य कार्यावली के साथ चलता है।

(2) एक मौजूदा कार्यक्रम में आध्यात्मिक परिवर्तन कार्यक्रम को एकीकृत करें।

प्रत्येक के पास अपनी एक चुनौतियां हैं। यहां मैं पहली को समझाना चाहता हूँ। और दूसरे अन्य जिसकी चर्चा हमने संक्षिप्त में पहले ही कर चुके है वे अधिक स्पष्ट प्रकट हो जाएगा।

अपने ही सत्व के साथ अलग रखें

जीवन सत्व की खुद की पहचान बनाए रखने के लिए अपने लक्ष्यों, जीवन सत्व की खुद की पहचान बनाए रखने के लिए अपने लक्ष्यों, अन्य प्रशिक्षण /पाठ्यक्रमों के लिए उचित संबंध को स्पष्ट और इसके संरक्षण और पूर्ण विकास का बीमा करने के

क्रम में महत्वपूर्ण हैं। घुमावदार या सर्पिल आकार हमारे आध्यात्मिक जीवनों के लिए परमेश्वर की विकास योजना के विकास और समन्वय के प्रयासों पर जोर देता है। यह एक है और लक्ष्य एक है, वैसे ही जैसे की जीवन एक ही है। सब कुछ (अपनी खुद की योजना) यह हमारे उद्देश्यों के अत्यधिक स्पष्ट और संवाद स्थापित करने के लिए आता है।

प्रत्येक पाठ्यक्रम या कार्यक्रम प्रमुख जीवन सत्व के लक्ष्य के साथ उपयुक्त होना चाहिए। जैसे एक विभिन्न गतिविधियों या कक्षाओं के रूप में एक मूल्यांकन करता हैं, एक अपने मुख्य उद्देश्यों के लिए वापस संचालित किया जाना चाहिए। आध्यात्मिक लक्ष्य को अलग रखते हुए यह है, कि विकास के लिए प्रत्येक स्तर पर कैसा लगेगा, साथ ही साथ यह हमें स्पष्ट देखने में मदद करता है। आईए यह कल्पना करते है कि यह हमें एक तीन साल की प्रशिक्षण स्कूल में शामिल करता है। जो नीचे सूचीबद्ध प्रत्येक घटक और उचित क्रियान्वयन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

अंतिम लक्ष्य कभी भिन्न नहीं होगा, हालांकि इसका विभिन्न विवरण हो सकता है। हम अपने प्रत्येक विश्वासी का पूर्ण विकास देखना चाहते हैं ताकि वह स्त्री या पुरूष मसीह के साथ अपनी अंतरंगता के कारण जिसके लिए परमेश्वर ने उस स्त्री या पुरूष को बनाया वे एक वाहन का रूप होगें जिसे परमेश्वर पूर्णरूप से बाहर ले जाता है ताकि जिस कार्य को करने के लिए उसने योजना बनाई वह पूर्ण हो सके।

कई इस उच्च अंत लक्ष्यों से इन्कार करेगें जब वे आगे कुछ कर रहे हैं तो अपने स्वयं के हितों और क्षमताओं को उन्होनें दिया है, लेकिन यह आवश्यक है कि विश्वास दिलायें कि विकास जगह हो रहा है। तीन स्तरों के लक्ष्यों के साथ बड़े परिपेक्ष्य के साथ जुड़कर, हमारे पास रास्ता है जिससे हम दूसरों को और स्वयं को भरोसा दिला सकते हैं कि उम्मीदें की आध्यात्मिक परिवर्तन जगह ले रहा है।

शुरूआती जगह

प्रत्येक छात्र (या एक सदस्य एक चर्च के बारे में सोचते हैं) यह एक निश्चित स्थान पर है जहां वे इसकी शुरूआत करते हैं। अक्सर एक व्यक्ति के बाइबिल ज्ञान और व्यक्तित्व के लिए प्रवेश परीक्षायें ली जा रही है ताकि उसका मूल्यांकन किया जा सके। यद्यपि ये सारी बातें उनकी जगह है, हमें मुख्य रूप से एक व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है। तीन चरणों में से प्रत्येक पर कुछ मानदंडो का उपयोग करके हम परीक्षण या उसके विकास के लिहाज से उसकी छात्र को समझने में मदद करने के लिए अवसर है वहां उसका या उसकी छात्र को समझने में मदद करने के लिए विचार-विमर्श कर सकते हैं।

एक व्यक्ति की आध्यात्मिक परिपक्वता जरूरी बौद्धिक कौशल के रूप में ही नहीं है। यीशु ने कभी भी बौद्धिक ज्ञान की कमी के लिए फरीसियों की आलोचना नहीं की थी। उनके पास बल्कि सद्दीकियों की तुलना में बाइबिल की दिशा में एक स्वीकार्य दृष्टिकोण था, इसलिए उनका आध्यात्मिक मरा हुआ पन और दिखावे के अनुमान के कारण वे ठीक तरह से शास्त्रों को उनके जीवन में लागू नहीं किये और देख नहीं पाये।

हमारी पहली चुनौती एक व्यक्ति है, जहां का मूल्यांकन करने के लिए है, हमारी दूसरी कल्पना करना कि वे जा सके, और यह कि उनकी मदद करें ताकि वे वहां मिलें।

विकास के इन बिंदुओं को जल्दी पहचान करके साथ इस तरह की बातचीत धारण करके, हम सही दिशा में उठाने के लिए हम छात्र या (हमारे चर्च में सदस्य) की मदद करते हैं।

आशा के ऐसे बीज के रोपण यह दिखाता है कि हम छात्र की उम्मीद या केवल बाइबिल या सामान्य ज्ञान के लिए रखते हैं लेकिन मसीह के साथ यह आत्मिक जीवन की। उनके लिए हमारा विश्वास उनके ध्यान केन्द्रित को आकार देने की शुरूआत करते हैं। हमारा लक्ष्य प्रत्येक विश्वासी के लिए एक सामान्य नक्शा प्रदान करने के लिए नहीं है। यह सिर्फ उस तरह नहीं है जैसे वास्तविक जीवन में कार्य करती है। हरेक पास शुरूआत के लिए अलग जगह है। हम फिर भी किसी तरह कुछ क्षेत्रों में विकास देखना चाहते हैं। ये आम कारक हमें सत्य सिखाने के लिए और दूसरों से वार्तालाप करने की अनुमति देते हैं।

शायद, कुछ लोगों के पास क्रोध को नियंत्रित करने के लिए कुछ मुद्दे है। वे एक ऐसी ही समस्या के साथ दूसरों की तुलना में अलग परिस्थितियों के साथ हैं और अभी तक समाधान समान ही होगा। साथ इन बातों की चर्चा करने के लिए समय लेने के द्वारा, वो इस बात पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए अपने दिमाग को और इसे कुछ जरूरत है इसे संबोधित किया जा सकता है।

एक व्यक्तिगत/निजी उपदेशक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। लेकिन कक्षाएं और विशेष सेमिनार भी एक हिस्सा हो सकते है। शायद हम अधिक आध्यात्मिक परिपक्व छात्रों के प्रशिक्षण की वृद्धि, प्रशिक्षित युवा विश्वासी के होने से कर सकते हैं।

जो एक के विषय में वास्तव में नहीं जानते की विशेष निर्णयों को इस संबंध में किए जाने की विशेष निर्णयों को इस संबंध में किए जाने की जरूरत है। हम बपतिस्मा से पहले साक्षरता के साथ चर्च में ऐसा करते हैं। स्कूलों को भी बुद्धिमानी से इस भाग के मूल्यांकन प्रक्रिया को उनके लिए बनाना चाहिए। अविश्वासी में जीवन प्रस्तुत नही होता इसलिए विकास असंभव है। हालांकि एक विश्वासी के साथ जीवन का लक्षण देखना मुश्किल हो सकता है, जीवन अभी भी मौजूद हैं और हमारे पास उनके विकास के लिए बड़ी उम्मीद है यदि वे इसके लिए इच्छुक है।

छात्रों के साथ हमारे लक्ष्यों को स्पष्ट करने के द्वारा वे अपने आप को बाहर कर देगें यदि वे स्कूलों के लक्ष्यों को पहचान नहीं सकते (यह हमें लक्ष्यों और तरीकों को स्पष्ट और आकर्षक बनाने के लिए सूचित करता है।) अरूचि वाले छात्र स्वयं को बाहर निकालते है, और कहते है कि हम महान संगठित ध्यान केन्द्रित कर सकते है जो स्कूल या चर्च के लिए है।

विशिष्ट लक्ष्यों की पहचान करना

यह विद्यार्थियों पर निर्भर करता है कि वे अपनी आध्यात्मिक मात्रा में कहां पर हैं, हमें सावधानीपूर्वक उनके अगले आध्यात्मिक विकास के चरण की पहचान कराने में उनकी मदद करनी चाहिए।

कक्षाएं (नए पुर्नरचना की गई) इस प्रशिक्षण के कुछ इलाकों में मदद कर सकती है। हम केवल छात्रों को इस तरह से उनके जीवन के बारे में सोचने के लिए आश्वस्त कर सकते है। बाइबिल किस बात के बारे में वर्णन करती है ''जीवन प्रोजेक्ट'' या इसके विषय में चुनौती भरा समनुदेशन या असाइनमेंट उच्च श्रेणी के ना हो पर कुछ पास होने के ललक होगें।

प्रत्येक स्तर पर, छात्र/शिष्य बहुत सी बातों को करीब रहे है। मुझे संक्षेप में एक क्षेत्र पर कुछ कहना है:-

आध्यात्मिक विकास बहुतायतता से आंतरिक प्रतिबिंब के द्वारा जोड़ा गया है, जो एक अत्मिक अनुशासन हैं। व्यक्तिगत को यह आवश्यक है कि वे (यहां तक कि सेवा में, व्यस्त हो, परिवार में, या कक्षाओं में) तब वह सुनना चाहिए जो परमेश्वर कहता है। आध्यात्मिक विकास के हर चरण में, यह विभिन्न पहलुओं की ओर ले जाता है।

1. नए विश्वासी अपने-अपने पिता की आवाज सुनने के लिए सीख रहे हैं। विश्वासीगण अपने विवेक और पवित्र आत्मा अन्यथा के बारे में जागृत हैं।
2. एक युवा विश्वासी बुराई के शब्दों के विपरीत पवित्र आत्मा के शब्दों के बारे में विचार करने को सोचता हैं। इस प्रलोभन के पीछे गुप्त संघर्ष है। वे सीखेगें की किस तरह उचित रूप से परमेश्वर के वचन के लिए प्रत्युत्तर देगें और इसका उपयोग करेगें कि अपने जीवन को प्रलोभन से लड़ने के दौरान इससे रक्षा कर सकें।
3. परिपक्व विश्वासी क्या कहा गया है, उसके द्वारा आगे वे विकास करते हैं, लेकिन वे अपना ध्यान सम्पन्न समय के आराधना की और केन्दित करते है, प्रशिक्षित करने के द्वारा निर्देशित और परमेश्वर के द्वारा सुरक्षितता सारे लोग परमेश्वर के इंगित करने वाले राह या तरीके का इस्तेमाल फल लाने के लिए जो परमेश्वर उनके जीवन के द्वारा चाहता है।

इस तीन भाग के विकास के लिए कई पहलू है लेकिन एक विश्वासी के रूप में प्रत्येक के माध्यम से विकास करता है, और विकास को महसूस किया गया है।

उन लक्ष्यों और उद्देश्यों के लिए समस्वरण

एक मानसिक और शारीरिक परिपक्वता महान आकार देती है कैसे एक व्यक्ति आत्मिक रूप से जल्दी से विकास करता है लोग अपने आसपास में दूसरों को बढ़ता हुआ देख रहे है वे लोग तेजी से विकास करते है।

जोड़ों को साथ काम करना जो विवाह करने रहे हैं उनके लिए यह जबरदस्त मौका है कि वे उनकी शादी के लिए अच्छी नींव रख सकते हैं। यह एक अच्छा समय है कि उन्हें प्रशिक्षण दिया जाए और वे नए जोड़ों को प्रशिक्षण दे सकते है, और इस बात को उनके प्रशिक्षण सत्र के अन्त में जोड़ा जा सकता है। यदि इस बात में रूचि रखते है तो इसीलिए हमें हमारे पहले उदाहरण में वापस चलना चाहिए। हम सगाई की हुए जोड़े को सीखा सकते हैं जिससे वे उनकी रूचि के साथ महान शादी के गठन में परमेश्वर को सुनने की कला इन सारी बातों को इन जोड़ो को सीखा सकते हैं। हम उन्हें परमेश्वर को सुनने के लिए और कैसे एक पति पत्नी बन सकते हैं इसे जानने के लिए उनकी मदद कर सकते हैं।

जो लोग अकेले है, हम उनकी सीखने में सहायता कर सकते है। कि कैसे एक सही पति या पत्नी को पाया जा सकता है। या एक होने के लिए किस प्रकार के समर्पण की जरूरत है। परमेश्वर मुझे एक अच्छा पति होने के लिए किस तरीके से मदद कर सकते है? या एक अच्छी पत्नि के रूप में शादी के लिए अच्छे संचार के सिद्धान्त क्या है? कुल मिलाकर हम उन्हें इस बात का प्रशिक्षण दे रहे है कि वे परमेश्वर की सुने, ध्यानपूर्वक सुनने के लिए परमेश्वर उन्हें महान रूप से शादी की दिशा में अपने लक्ष्य को पूरा करने में प्रशिक्षण देता है।

बहुत सी बातें जो हम सीखते है वह जीवन पर निर्भर करती है, हम अपने जीवन के अनुभव के माध्यम से सीखते हैं। एक अविवाहित व्यक्ति को कैसे अच्छे पति बने सीखना यह सीमित मूल्य होगा। परमेश्वर को सुनने के हमारे लक्ष्य के संयोजन के साथ तो आगे के विषय की रूचि व्यावहारिकता के साथ उन्हें प्रेरित कर सकता है।

ईश्वरीय उपदेशक और शिक्षकों को नाजूक रूप से जरूरत है अन्यथा ये छात्र विश्वास को प्राप्त नहीं करेगें जिनकी उन्हें जरूरत है और वे बदतर हो जाएगें, बुरी तरह से प्रभावित हो जाएगें। यदि एक शिक्षक अश्लील सोचता व गंदी फिल्में देखना यह मानता है तो आध्यात्मिक व्याभिचार बन रहा है, यहाँ तक कि यदि एक शिक्षक ही इसके बारे में स्पष्ट नहीं हैं! छात्र एक महान शादी की सुन्दरता के लिए विश्वास को हासिल नहीं करेगें। लेकिन शिक्षक के मानसिकता से सांसारिक शादी के विषय में सीखेगें।

यहां इन सिद्धांतों का संक्षेप में वर्णन किया गया है

कैसे जीवन के प्रवाह के माध्यम से बाहर काम किया जा सकता है: परमेश्वर का व्यक्ति को बनाने का इरादा यह था कि वह प्यार से परमेश्वर की सुने अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसे कैसे कर सकते है।

परमेश्वर एक सुन्दर विवाह बनाने का इरादा रखता है तो हम उन्हें दिखा सकते है कि कैसे आध्यात्मिक अनुशाासन और परमेश्वर के साथ उनकी निकटता सब कुछ करने के लिए और उसके साथ एक महान विवाह करने के लिए सब कुछ हैं।

हमें केवल शादी के एक शैक्षिक परिप्रेक्षक अध्यापन करने से बचना चाहिए, लेकिन इसके बजाए एक सुन्दर धर्मी शादी की दृष्टि लाना चाहिए। हम छात्रों के लिए चाहते हैं, कोई नहीं की वे अपने जीवन में कहां हैं ये कार्य उन बातों के इस स्पष्ट लक्ष्यों के साथ परमेश्वर के महान उद्देश्यों और शान्ति के साथ इन बातों को जोड़ती है।

जीवन सत्व की एकता

हम केवल थोड़ा सा समय व्यतीत करेगें की जीवन सत्व के एकीकरण पर लगभग मसीही छात्रों के प्रशिक्षण के विषय में जब यह आशापूर्ण है तब यह फलत: पूरा होता है– जैसे कि प्रमुख लक्ष्य अधिक गहराई से संगठन के लक्षण है घुस सकते हैं उम्मीद हैं, हमारा ध्यान यहां तकनीक के बजाए दृष्टि वितरण पर अधिक है। हमने संकेत दिया है कि यह कैसे विशेष मामलों में परमेश्वर की सुनना और शादी के लिए तैयारी करना, लेकिन वहां बहुत अधिक यह करने के लिए और सबसे अच्छा एक बार के लिए आरक्षित है।

दृष्टि, टपकाना हमारे चर्च या स्कूलों में उस दृष्टि के प्रभाव के साथ मुठभेड़ करना है। परमेश्वर के लक्ष्यों को गोद लेने के लिए परिवर्तन की आवश्यकता है और उस दृष्टि के क्रियान्वयन के अन्य लोगों को समझाने की चुनौतियों को समझने के लिए समय लगता है। हमें जल्दी में नहीं होना चाहिए। और अभी तक यह है कि हमारे वर्तमान कार्यक्रमों और कार्यसूची में इन अवध ारणाओं का उपयोग करके परमेश्वर के साधन की तलाश के रूप में एक प्राथमिकता के रूप में खड़ा करने की जरूरत है।

संस्थानों में धन और दिशा को नियंत्रित करने के लिए उनके पास मजबूत दिमाग मंडल है। परिवर्तन तो मुश्किल बनाने के लिए हो गया है। हम शुरू करते हैं जहां हम परमेश्वर के नेतृत्व में आगे बढ़ सकते हैं। यदि हमारे पास अधिक नियंत्रण है तो हम अधिक कर सकते है। किसी ने बुद्धिमानी से घोषित किया है कि किसी नये विश्वासी को आकार देना आसान है इसकी तुलना में एक पुराने विश्वासी को आकार देना आसान नहीं हे। यह बिल्कुल सही हैं।

उपदेश, संचार, परामर्श पाठ्यक्रम और अन्य क्षेत्रों में सीखना शैक्षिक वातावरण जल्दी ही शाक्तिशाली यंत्र बन जाएगा जब प्राध्यापक और छात्र बेहतर जानेगें कि परमेश्वर उन्हें कैसे इस्तेमाल करेगा। जब छात्र यह देखना शुरू करेगें कि परमेश्वर का आत्मा उनके जीवन में काम कर रहा है, और दूसरे उनके जीवन के माध्यम से क्या सीख रहे हैं, वे साथी और अधिक जानने के लिए उत्सुक होगें।

प्रचार वास्तविक प्रवचन के समय से परे जाना हे, कक्षाओं में शामिल करने में बदला जाता है ओर प्रवचन के माध्यम से बदले दिलों को लाता है हम अब पूछ रहे हैं।

* परमेश्वर क्या चाहता है कि मैं प्रचार करूं?
* मैं कैसे सीखूं कि वह क्या चाहता है?
* कैसे मैं वास्तव में उसकी आत्मा की शक्ति में इन बातों को व्यक्त करूं?
* उपदेश में प्रार्थना की जगह क्या है?

चर्च के इतिहास बस चर्च अपंग या कुछ घटनाओं के माध्यम से मजबूत गया था क्योंकि एक विश्लेषण करने के लिए क्या मालूम है को देखने से तब्दील हो जाएगा। यह दृष्टिकोण हमें बेहतर दिखा रहा है कि कैसे है या परमेश्वर के सत्य बाहर अलग अलग सभाओं में बड़ी और लोगों के दिल में आकार और काम चर्च प्रभावित नहीं हो रही है देखने के लिए कैसे अनुमति देता है?

सिर्फ सुधार का अध्ययन करने के बजाए हम अब हम में रहते है संदर्भ को समझना चाहते हैं, और यह कैसे समान और अलग है इसे जानना चाहते है। इस तरह हम यह जान सकेगें कि परमेश्वर क्या करना चाहता है और इसमें हमारी क्या हिस्सेदारी है।

यदि जीवन सत्व अन्य शिक्षण के साथ पूरी तरह से एकीकृत हो जाता है तो, यह दुबारा खो सकता है और अंत में दफन हो जाता है। अन्य आवाजें ध्यान के लिए शोर मचायेगें या पुरूषों की परम्परायें ले ली जाएगीं। चाहे यह एकीकृत हो जाता है या हमारे स्कूल, चर्च या परिवार में एक अकेले खड़े रहने के पथ को पकड़ती है, हालांकि लक्ष्य आध्यात्मिक परिवर्तन का उद्देश्य यह है कि पढ़ाई व्यायाम करने के लिए चुनौती दी जाएगी। निम्नलिखित अभ्यास में हम अपने मुख्य लक्ष्यों को लिखने के लिए एक और मौका देगें।

चाहे जीवन सत्व कार्यक्रम अन्य अध्ययन साथ एकीकृत है या नहीं, कक्षाओं के छात्रों के व्यक्तिगत विकास के साथ कदम रखने के लिए कुछ हद तक पुर्नविकसित करने की आवश्यकता होगी।

इस पुस्तक में केवल इस बात का परिचय देना है कि स्कूलों, घरों और चर्चो में धर्मी प्रशिक्षण का पुर्ननिर्माण करना है सबसे पहले परमेश्वर की सूची में प्रस्तावना देना और फिर विभिन्न परिदृश्यों को प्रदान करना जहां परमेश्वर आपको जिम्मेदारी देने के लिए नेतृत्व कर सकते हैं। हम दृष्टि जारी कर रहे हैं और कुछ उदाहरण प्रदान कर रहे हैं जिससे शिक्षकों और छात्रों, पासवान और कलीसिया के सदस्य को प्रोत्साहन मिले और जहां भी वो रहें परमेश्वर में रहें।

परमेश्वर के लोगों की पीढ़ियां परमेश्वर की सच्चाई अंतरंगता से और शक्ति से धोखा दिया है। हालत को बदलना होगा। हमारा उद्देश्य मसीह के वापसी की आशंका एक शुद्ध दुल्हन अस्तित्व में मसीह के पूरे शरीर का निर्माण होता है। हमारे लिए परमेश्वर के लक्ष्यों की स्थापना करके हम तो विश्वास से कदम से कदम बढ़ाकर लक्ष्य के करीब जा सकते है।

जैसे हम जीवन सत्व को और यह आध्यात्मिक विकास के विभिन्न चरणों में कैसा दिखता है, पहचानते हैं जो हम इसे विशेष परिस्थिति के लिए लागु कर सकते हैं। सभी एक ही बार में विश्वासीयों के रूप में हमारी क्षमता परमेश्वर के उद्देश्यों और हमारे जीवन के लिए शक्ति के साथ एक साथ आता है। यह वह है जिसके लिए हम चुनें और बनाये गये थे। इसे गले लगायें और देखें कि कैसे परमेश्वर हमारी सहायता करेगा कि हम मसीह की समानता तक इस पृथ्वी पर पहुंचे।

दो सामान्य दृष्टिकोण

मुख्य पाठ्यक्रम से जीवन सत्व प्रशिक्षण को अलग रखने के द्वारा, यह छोटे रूप में शुरू करने के लिए सक्षम बनाता है, कम वित्तीय संसाधनों का उपयोग करता है, धीमी गति से दृष्टि से पर गुजरता है, धर्मी उपदेशकों को विस्तारित करना (सफलता आश्वस्त करने के लिए) और समग्र पाठ्यक्रम में धीमी गति से परिवर्तन करता है और अधिक बारीकी और गहराई से धर्मी प्रशिक्षण के हृदय जोड़े रखता है।

उदाहरण के लिए हालांकि मैं लेखन और अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण के इस सेवकाई में पूरी तरह से शामिल हूँ, मैं हमेशा प्रार्थनापूर्वक देख रहा हूं कि मैं कहाँ से कुछ स्थानीय लोगों से मिल सकता हूँ जिन्हें उपदेश की जरूरत है। यदि मैं जिस चर्च में शामिल हूं उस चर्च में सक्रिय शिष्यत्व कार्यक्रम है या नहीं कोई फर्क नहीं पड़ता (सौभाग्य से यह करता है) सही लोगों को खोजे सलाह शुरू करें। यह आलोचनात्मक है कि वह वहां से शुरू करते हैं जहां हम है और सीखते है कि कैसे जीवन सत्व सिद्धांत को हम क्या कर रहे हैं उसे आकार देने की जरूरत है । मैंने हमेशा मेरे साथ क्या शिक्षकों को सह सिखाने और व्यस्क प्रशिक्षक पाने के लिए कोशिश किया है। हम बदलने वाली शिक्षा को लेते है, लेकिन शिक्षण से पहले हम एक साथ मिलते है और सबक पर चर्चा करते हैं। ये व्यक्ति बाद में एक ही दृष्टि और उद्देश्यों के साथ शिक्षकों के ही जाते हैं। हमारे पास एक दिल है सिर्फ लोगों को रोमियों की पुस्तक पढ़ाने के लिए नहीं उदाहरण के लिए, लेकिन सत्य हमारे जीवन बदलता हुआ देखने के लिए।

हमारे पहले से ही स्थापित संस्थानों में जीवन सत्व की पूरी एकता को बनाने के लिए अधिक सुसंगत है लेकिन यह साहस नेतृत्व की मांग करता है और विपक्ष जोखिम यथाशक्ति को परेशानी के साथ असहज लोगों से वर्तमान स्थिति की ओहदे को बढ़ा देता है। शिक्षकों और पादरियों के चुनौती के साथ-साथ हमें धर्मी प्रेरित करने के लिए परमेश्वर के लोगों से उम्मीद की एक क्रांति के स्थान कि लिए दस और हजारों विदेशी मुद्राएं देता है जो उसे उचित रूप से तैयार नहीं करता?

क्यों एक संख्या चर्च में शामिल होती है जिसमें अपने सभी सदस्यों के लिए दृष्टि और विश्वास की कमी है जो मसीह की समानता में वृद्धि करते है? हमें पूरी तरह से चर्च की बढ़ती अप्रासंगिकता के बजाए चर्च को पूरी रीति से तैयार करने के लिए हमारे दिल, घरों, चर्च और प्रशिक्षण संस्थानों में जीवन सत्व के एवं परमेश्वर के सशक्त क्रियान्यन की जरूरत है। क्यों नहीं उन साहसी अगुवों के बिना जो हमारे जीवन में परमेश्वर की सच्चाई का उचित आरोहण पर जोर देते है उनके लिए आग्रह करते है?

शिक्षाएं

* छात्रों के जीवन में आध्यात्मिक परिवर्तन की एकता स्कूलों और चर्चो उनके कार्यक्रम और शिक्षण बाहर ले जाने के रास्ते के लिए महत्वपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता होगी।

* परमेश्वर की योजनाएं जीवन सत्व में देखी गई है, यह फूलने और पनपने के लिए, पुनरूत्थान देखने के लिए इन्हें चर्चो और स्कूलों में मुख्य रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।

* जीवन सत्व का उपयोग एक अलग भीतरी परिवर्तनकारी रास्ते बड़े पैमाने पर परिवर्तन की तुलना में बेहतर होता है, पुरी तरह से पुरे कार्यक्रम मे एकीकृत, छोटे से शुरू करो। सफलता का आनंद लें। दायरे को चौड़ा करें।

मनन चिंतन

* फिलिप्पियों 2:14 - 16

समनुदेशन

⇨ क्या आपने कभी आध्यात्मिक रीति से पहले एक व्यक्ति का मूल्यांकन किया है? ऐसा कैसे? आपने किन समस्याओं का सामना किया था?

⇨ जीवन सत्व को परिभाषित करें। क्या आप सहमत हे कि जीवन सत्व किसी भी मसीही प्रशिक्षण के मध्य जोर डालता है? समझाइये।

⇨ चुनौतियों का मूल्यांकन करें जो तुम परमेश्वर के जीवन को केन्द्रीय ध्यान करने के लिए तुम्हारे स्कूल, चर्च व्यक्ति इत्यादि को केन्द्रीत कर रहे हो? मूल्यांकन करो।

35

अगुवेपन की उन्नति

सेवकाई स्कूलों को यह कहने में कोई शंका नहीं होगी की निश्चित क्षेत्र के लिए अगुवों की उन्नति या बढ़ावा दे रहे है जिसके लिए बच्चों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। पासबान, मिशनरियों, सलाहकारों, प्रशासकों, शिक्षकों इत्यादि। लेकिन क्या वे है?

मैनें एक बार एक पासवान की अगुवेपन प्रशिक्षण कलीसिया/चर्च के बारे में पुछा। उनके साम्प्रदायिक अगुवों ने उनसे पुछा आप उन्हें बाइबिल स्कूल या सेमीनारी में क्यों नहीं भेजते? साधारणत: इस पासवान ने प्रतिउत्तर दिया कि बाइबिल स्कूल ठीक कार्य के लिए प्रशिक्षण नहीं देते। क्या हमारी सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों /बाइबिल कॉलेज में एक मजबूत विश्वास के साथ प्रलोभन के विरूद्ध लड़ने को सिखाया जा रहा, दयापूर्वक दूसरों की सेवा के रूप में परमेश्वर के शब्दों की माहिरता के साथ सुसज्जित किया जा रहा है?

इस पुस्तक में धर्मी अगुवों के बुनियादी आधार को विकसीत करने के तरीकों पर ध्यान केन्द्रित किया है। विकास की ओर बढ़ने के लिए उचित कमरे की आवश्यकता होगी, इसके अलावा यह व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास पर निर्भर करता है। विशिष्ट दशा की आवश्यकता है, हालांकि इस बुनियादी प्रशिक्षिण को विश्वासीयों के ही लिये बनाया गया है।

आध्यात्मिक जीवन की खेती के बिना, एक व्यक्ति एक अच्छा अगुवा नहीं बन सकता है। मुझसे अलग आप कुछ भी नहीं कर सकते'' (यूहन्ना 15:5)। दाऊद राजा के पास कुछ ऐसे ही विचार है ''धन्य है, यहोवा परमेश्वर जो इस्राएल का परमेश्वर है: आश्चर्य केवल वही करता है (भजन संहिता 72:18)।

आध्यात्मिक विकास उन चीजों का उन्मूलन है जो हमें परमेश्वर की गौरवशाली उपस्थिति के अंधेपन से दूर रखता है। एक सकारात्मक परिभाषा में, आध्यात्मिक विकास परमेश्वर के अत्यधिक तरीकों को अपनाता हैं जैसे एक व्यक्ति परमेश्वर के साथ परस्पर बढ़ता है। धर्मनिरपेक्षता, भौतिकवाद और परम्परावाद ये तीन ऐसे शब्द है जो आधुनिक दुनिया में हमें परमेश्वर से अलग करते है। जब तक कलीसिया परमेश्वर के वचन /शास्त्रें में तैयार नहीं तब तक चर्च या कलीसिया को उनके भय या डर में जीने की जरूरत नहीं है।

हमारे सीखने के मॉडल तरीके अक्सर वास्तविक उद्देश्यों को धोखा देते है। तथ्यों का एक जानकार आदेश महत्वपूर्ण है, इस लक्ष्य को सावधानीपूर्वक रखा जाना चाहिए इसके बजाए कि किसी व्यक्तित्व के आध्यात्मिक विकास को बाधा पहुंचे। आध्यात्मिक लड़ाई जीतने के लिए मसीही अगुवों को आत्मसम्मान और आत्मसम्मान की नहीं परन्तु एक नम्र विश्वास के मिश्रण और आधार कि आवश्यकता होती है।

मुझे डर है कि कई मसीही अगुवों और शिक्षकों को ठीक से मसीह के आसपास उनके सेवकाई जीवन के लिए कभी प्रशिक्षित कियाही नहीं गया है। उनके लिए यह वास्तविकता की तुलना में यह मात्र सार है। इस दुनिया भर के कई नेताओं के साथ मैनें काम किया है। जब वे इस शिष्यत्व के प्रशिक्षण शिक्षा को प्रस्तुत करते है तो कईयों ने मुझसे कहां इनमें से वे चरणों को भी नहीं जानते। वे अभी भी प्रलोभनों के साथ डिग्री का सामना करते है।

जब हम एक अगुवा गिरता है तो यह संभावना है कि वह दुष्ट से हतोत्साहित विचार के बारे में सोचने लगता है। हम सभी गिर सकते है और यह एक आम बात है, तब वहां दूसरों के जीवन के साथ बांटने के लिए कोई विश्वास नहीं रह जाता कि बताए कैसे वे रहे और समस्याओं का सामना करते हुए उभर न आए। इस प्रकार विफलता, विफलता को ही जन्म देती है।

मुझे कुछ तरीकों के साथ इन बातों को बांटने दे जब मैनें कुछ ऐसे विश्वासीयों को पाया जिन्होनें ठेठ मसीह प्रशिक्षण पाया है। हम आध्यात्मिक विकास के पहले दो चरणों में अगुवों की कमजोरी का विश्लेष्ण करेगें जो विकास के डंठल की कमी से आता है।

14 डीएनए स्वयं नकल और बढ़ने के लिए आणविक श्रृंखला विकसीत करने के लिए हमारे भौतिक शरीर के उद्देश्य में सक्षम है और इसे संदर्भित करता हैं।

चरण 1 : लक्ष्य परमेश्वर में भरोसे का विकास करना है जो उसके प्यार में शुरूआत से ही सुरक्षित रहने से आता है।

अगुवों ने भी कभी उनमें अपने जीवन के लिए लगातार परमेश्वर के प्यार की खोज नहीं किया है। (पहले चरण में हिस्से सीखना चाहिए था) वे अपने ही सेवकाई और उद्धार और विचारों के बारे में असुरक्षित हो जतो हैं क्रुस की सही पहचान के बिना, व्यक्तिगत रीति से वह क्या करता है, के माध्यम परमेश्वर की खोज करना चाहिए उन्हें ऐसा लगता है। कल्पवाद, विधि परायणता एक मूर्ति की पूजा की जगह सच्ची आराधना करने के लिए जोर डालता है।

दूसरी समस्या का विकास हो सकता है जैसे अन्य उनके ध्यान की अत्यधिक अपेक्षा करना, स्वयं के परे पाने के लिए एक असमर्थता की तलाश, ठीक से प्यार व दूसरों की सेवा करने की प्रवृत्ति के रूप में करना चाहिए।

चरण 2 : प्रलोभन पर काबू पाने के लिए परमेश्वर के वचन को सीखना चाहिए।

विश्वास के एक स्पष्ट विकास के बिना चरण रु। , विश्वासी आसानी से चरण रु 2 से परे नहीं जा सकता। मसीही जीवन के अधिकांश अनुभव निराशाजनक विफलता के एक क्षेत्र में ही रहेगें।

युवा विश्वासीयों को परमेश्वर के वचनों पर मजबूत विश्वास होना चाहिए, सही है? लेकिन क्या होता है जब वह प्रलोभन को दूर नहीं कर पाते है? और वे सोचते है कि परमेश्वर का वचन निष्फल है। परमेश्वर उनके दैनिक जीवन में वे कैसे रहते है उस संदर्भ का एक गौण लेता है ताकि वे आध्यात्मिक जीवन में पक्के होने का प्रयास करें।

इस प्रकार की अभिवृत्ति या मनोभाव सेवकाई में उनकी सारी परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करने के बजाए, शैतान उनके दिमाग के गहरी शंका डालकर उन्हें समस्याओं में ले जाएगा।

1. पाप की अनुमति उनके जीवन में।
2. धार्मिकता बर्दाश्त करने के बजाए परमेश्वर के साथ उत्कर्षता।
3. परमेश्वर के वचनों की निम्न अवधारणाओं की स्वीकृति।
4. ऐसा विश्वास करते हैं कि वे स्वयं उन्हें संभाल नहीं सकते उन्हें आध्यात्मिक संघर्षो से निपटने के लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता है।

वास्तविक सेवकाई की समझ

यदि हमारी महान सेवकाई मसीह की घनिष्टता के से आती है तो हमें कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम हमारे जीवन में अपवित्र पहलुओं को बर्दाश्त करते है ओर कितना लोगों के साथ हमें संघर्ष करना पड़ता है। परमेश्वर के साथ हमारी अंतरंगता की कमी हमारे लिए प्रभावशीलता की समझौता होगी। ऐसा हमें स्वीकार करना चाहिए। तब हमारी सेवकाई अपने अनुभव, जैसे कौशल और अवसरों के बजाए प्रभु और हमारे बीच जुड़ जाती है।

किसी भी शिक्षक या सेवक की बुराई या पाप, न केवल व्यक्ति को नष्ट करने के लिए, लेकिन अपने या अपनी सेवकाई को कमजोर करने के लिए एक कुंजी/चाबी है जो कमजोर बनने के लिए बाध्य है।

यह एक संक्षिप्त झलक है लेकिन हमें धर्मी अगुवों की आवश्यकता है इसके बजाए वो जिन्होनें अपने घुटनों को सफलता की दुनियां के विचार से आकर्षित अभिलाषाओं के आगे टेक दिया है। ऐसे लोगों ने अपने जीवन में कड़वाहट की छवि को बनाया है। गौरवशाली सुसमाचारीय प्रेम उनके जीवन के माध्यम से दिखाई नहीं पड़ता हैं, ऐसे लोग विकसित होने में सक्षम नहीं है और जो जीवन है वह उनमें से खत्म हो गया है।

चर्च और मसीही सेवकाई स्कूलों को यह एहसास होना चाहिए कि प्रशिक्षण में तत्काल अलगाव परमेश्वर के लोगों को वह उच्च सम्मान जिसके लिए उन्हें बुलाया गया जरूरी था।

तब सिखानेवालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा की नाई प्रकाशमान रहेगें।'' (दानिय्येल :12:3)।

मसीही विकास के तीसरे चरण से धर्मी अगुवों का परिचय दिया जाना चाहिए। वे अभी भी बहुत प्रशिक्षण, लग्न, और कौशल विकास के माध्यम से लाभ प्राप्त कर सकते है, लेकिन यह परमेश्वर के साथ अंतरंगता की डिग्री मापने के लिए धर्मी चरित्र प्रभावी मसीही सेवा के लिए मौलिक बनी हुई है।

धर्मी अगुवे

इसके एक रोमांचक पहलू में परमेश्वर की इच्छा है कि वह अगुवों की प्रशिक्षण प्रक्रिया के साथ शामिल रहे। ताकि वह जीवन जो बहुतायत से हमारे हित में मसीह की समानता और सु.समाचार के डीएनए द्वारा विकसीत होने के लिए उण्डेला गया है।14

ध्यान दे जिस तरह से पौलुस ने धर्मी अगुवों के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया है उनके जीवन को पुरी तरह से उनकी नेतृत्व की स्थिति के साथ मिलाने के जरूरत है।

जो निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हों, जिनके लड़के वाले विश्वासी हो, और जिन्हें लुचपन और निरंकुशता का दोष नहीं। क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए, न हठी, न क्रोधी न पियक्कड़ न मारपीट करनेवाला, और न ही नीच कमाई का लोभी। पर पहुनाई करनेवाला भलाई न चाहनेवाला, संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो। और विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे (तीतुस :1:6 - 9)।

यह मात्र एक गुणों की सुची नहीं है। कि जिसे यह समाज, जगह और समय पर संस्कृति में महत्वपूर्ण मानता है। उससे भी कहीं अधिक ज्यादा कहा जा रहा है। ईमानदारी के साथ हम अपने व्यक्तिगत जीवन में परमेश्वर की ज्योति और उसके पवित्र योजनाएं जो हमें सीधे प्रभावित करती है जिससे हम दूसरों को प्रभावित और प्रशिक्षित कर सके।

हमारी किताबों में से एक है, धर्मी पुरूष जो इस विचार को फैलाता है कि सच्ची धार्मिकता की शुरूआत परमेश्वर के दस विभिन्न चरित्र लक्षण को देख सकते है कि कैसे वे मनुष्य के जीवन में उपयोगी वे प्रभाव डाल सकते है।

हमारे भीतर परमेश्वर के पवित्र कामों से निकला विश्वास हमें सक्षम बनाता है और इसमें एक विश्वास पैदा करता है।

1. परमेश्वर के करीब रहे।
2. कोशिश के दृढ रहे।
3. परमेश्वर के वचन की सेवा प्रभावी ढंग से दूसरों के मध्य करें।

यदि हमारा विश्वास ऐसा नहीं है तो बेहतर है कि हम सेवा न करें। या उससे भी बेहतर है कि हम सेवकाई को जारी रखने के लिए सीखें कि आत्मविश्वास को कैसे प्राप्त किया जा सकता है। सही दिल और विश्वास के साथ सुधाार में तेजी से जगह ले सकते हैं।

परमेश्वर धर्मी अगुवों को बढ़ाने की चाह रखता है और बिना धर्मी चरित्र के अगुवों का उत्पादन करने के लिए हमारे प्रयास को नापसंद करता है। हम परमेश्वर की शक्ति को हमारे प्रशिक्षण में देखने के द्वारा एक दिल जो परमेश्वर को पाने का प्रयास करता है, चाहे वह हमारे व्यक्तित्व जीवन के द्वारा सेवकाई या दूसरों को प्रशिक्षिता करने में खड़ा कर देते हैं।

प्रभु ने शमुएल से कहा ''न तो उसके रूप दृष्टि कर और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।(1 शमुएल 16:7)

यदि हमारे चर्चो और स्कूलों में इस बात को निश्चित किया जाए कि यह बुनियादी प्रशिक्षण उनके लोगों में डाले गए थे। तब निश्चित रूप से परमेश्वर का वचन हमारे बीच में धर्मी अगुवों के लिए विकसित होगा और परमेश्वर की आत्मा शक्तिशाली रूप में हमारे मध्य में मण्डराएगी।

शिक्षाएं

* हमें अधीर और प्रशिक्षण योजनाओं का गैर सहिष्णु हो जाना चाहिए। जो जीवन परिवर्तन पर जोर नहीं डालता है यह धर्मी अगुवों और प्रशिक्षण के लिए अत्यधिक आवश्यक है।

* हमारे स्तरों/मारकों को धर्मी रहने के लिए शामिल करना चाहिए अन्यथा स्वीकार्य मानक परमेश्वर की दृष्टि में वीभत्स हो जाता है और हर किसी को सहना/भुगतना पड़ता है।

* परमेश्वर के पास प्रत्येक विश्वासी को पुनः निर्माण करने का अलग रास्ता है ताकि वे धर्मी जीवन और धर्मी अगुवे के योग्य पात्र बन सके।

14 डीएनए स्वयं नकल और बढ़ने के लिए आणविक श्रृंखला विकसीत करने के लिए हमारे भौतिक शरीर के उद्देश्य में सक्षम है और इसे संदर्भित करता हैं।

मनन और चिंतन

* तीतुस 1:5 – 9

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ क्या आप एक मसीह अगुवे है? आप ईश्वरीय है? समझाओ।

⇨ क्या आप किसी अधर्मी अगुवों को किसी में पाते है, मसीही स्कूल या सेवकाई में? यदि हां तो परखो और कुछ समस्याओं की तलाश करो।

⇨ यदि आपके सेवकाई स्कूलों में भाग लिया तो उनका रवैया या उनके दिलों की अभिवृत्ति कैसी थी? यह स्वैच्छिक था? काम कैसा था? इसमें क्या सुधार हो सकता है?

36

कलीसियोओं में प्रशिक्षण

स्थानीय कलीसिया और यहाँ तक की पूरे संप्रदायों के अगुवों की कलीसियाओं के अगुवों के प्रशिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है। क्योकि अगुवे चर्च को आकार देते हैं। जैसे चर्च के पादरी रहते व प्रचार करते है तो प्रभु के लोग बढ़ते है।

न्यायियों की पुस्तक और राजाओं की पुस्तक में हमें अगुवों के विभिन्न प्रकार के चित्रित उदाहरण देखने को मिलते है। गिदोन और राजा दाऊद की तरह बहादुर अगुवों ने अपनी पत्नी ईज़ेबेल और सैमसन और राजा आहाब की तरह गरीबों के साथ विषम रहे हैं। आज के पादरियों, शिक्षकों और साथ इन न्यायाधीशों और अतीत के राजाओ के बीच खिताब के मतभेद और उम्मीदें हैं– परमेश्वर के लोगों के अगुवों के आज –लेकिन परमेश्वर के लोगों पर अगुवों के प्रभाव से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

कोई भी स्थानीय कलीसिया/चर्च को उनके पास्टर/ पादरी जहां आध्यात्मिक रीति से है वहां से परे जाने की उम्मीद करनी चाहिए वही एक परिवार या स्कूल के साथ भी सच है।क्या यही मतलब यीशु का नहीं है, (मत्ती 10:24) ''एक शिष्य अपने गुरू से ऊपर नहीं है, और नहीं.....।

वहां प्रमुख सेनायें हैं जो बाइबिल विश्वास का मुकाबला करते हैं, जहां हम प्राकृतिक प्रवृत्ति के रूप में देखते हैं कि क्या उपज है। सभ्यतायें इसी तरह कमजोर करने के लिए मजबूती से जाने जाते हैं।

परमेश्वर की आत्मा मौजूद और सक्रिय रूप से काम कर रहा है, लेकिन जब अगुवे अपने जीवन में समझौता करने को बर्दाश्त कर लेते है तो आत्मा को कार्य करने से रोका जाता है।

तब परमेश्वर के लोग नकल करना या कम से कम पादरी के दुनियादारी व्यवहार को सहन करने के लिए धार्मिक ढोंग और अनैतिकता की ओर जाने और उनकी बातें को सहन करना शुरू करते हैं।

प्रभु केवल अगुवों के माध्यम से कार्य करने के लिए बाध्य नहीं है, लेकिन इन अगुवों के पास चर्च के आत्मिक स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा प्रभाव है। उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए सबसे अच्छी जगह सबसे पहले चर्च है, और उसके बाद मदरसे या (सेमिनरी)

लेकिन क्या यदि आपके पास एक पास्टर है जो आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर के लोगों का विकास करने के लिए उत्सुक है? यह कैसे मण्डली में कार्य करता है? पादरी साहब मुझे बताइये, ''मैनें इस पर या उस विधि के लिए कोशिश किया है, लेकिन नहीं जानता कि आगे क्या करना है।''

इस महान समस्याओं का सामना करे वाले चर्चो के पास कोई समग्र नक्शा नहीं है। उनके सामान्य लक्ष्यों की खोज योग्य और अच्छे हैं, लेकिन उनके पास कोई राह नहीं है जो परमेश्वर के लोगों को उस बिन्दु तक ला सके।

एक आध्यात्मिक नक्शा महत्वपूर्ण है!

वे यहां और वहां निश्चित जरूरत को देखते है और वे अपना सर्वश्रेष्ठ करते है, जिससे इसका पता दे सकें, लेकिन अक्सर अधिक बार नहीं, ये प्रयास सेवा अधिकतर निबटाने के रूप में कार्य करते है न कि हल के रूप में। वे अस्थायी है, और वे अंतनिर्हित मुद्दों को जो एक या और दो जो गहरी है आसानी से समस्याओं को देख सकते हैं।

15 इसके विपरीत सच भी हो सकता है। जैसे लोग है वैसे अगुवे हैं। जब नियुक्त अगुवे सच्चे अगुवे के समान कार्य नहीं करते हैं तो वे सिर्फ धर्मभ्रष्ट समाज की अभिव्यक्ति कर रहे हैं।

चर्चो में गतिविज्ञान जहां आत्मा उनकी सक्रिय क्रियाओं को छोड़ चुके हैं, उसका पुरी रीति से पता लगाया जाना चाहिए। (प्रकाशितवाक्य 2–3)।

परमेश्वर के महान कार्य

परमेश्वर के महान कार्यो को गले जगाये बिना हम अक्सर बड़ी मरम्मत के बजाए पट्टी पर केन्द्रित हो जाते है। पृथ्वी पर चर्च के लिए परमेश्वर की बड़ी योजना है। स्थानीय चर्च परमेश्वर के बड़े कार्य की और उनकी महिमा को प्रदर्शित करने की इच्छा रखता है। जिसके माध्यम से लोगों की एक बैठक और गतिशील समूह है।

प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव पर बनाया गया है, मसीह यीशु पुरी इमारत के कोने का पत्थर हैजिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो (इफिसियो 2:20-22)।

निम्नलिखित अध्यायों में हम अंतर पर प्रकाश डालेगें जहां जीवन सत्व मसीही प्रशिक्षण संस्था पर कार्य कर सकते हैं। ज्यादातर स्थानीय चर्च के दृश्य के लिए जो लागु होता है वह अन्य मसीही प्रशिक्षण संस्थानों के लिए भी लागू होता है।

चर्च हालांकि कई मायनों में प्रशिक्षण संस्थानों में विशिष्ट है। चर्च केवल परमेश्वर के लोगों को ही प्रशिक्षित नहीं करता, यह परमेश्वर के लोगों के लिए ही है। संस्थानिक बोल वे अभी तक अन्य मतभेद है। उदाहरण के लिए श्रमिकों का काफी हद तक भुगतान नहीं किया जा रहा है। वे स्वयंसेवक है। चर्च के सदस्य आम तौर पर स्थानीय चर्च में रहते है इसकी तुलना में वे लंबे समय तक स्कूल में रहते है। जहां वे अब केवल कई वर्षो के लिए भाग लेने के लिए हो सकते है।

अंत में, चर्च शिक्षकों के पास आमतौर पर एक मदरसा या बाइबिल कॉलेज की तुलना में कम लगातार संपर्क होते हैं। उदाहरण के लिए हालांकि एक प्राध्यापक केवल एक सप्ताह में एक ही बार छात्रों के साथ रह सकता है और छात्र, छात्राओं को सप्ताह भर में कागज के लेखन, किताबें पढ़ने की आवश्यकता हो सकती है। एक पास्टर या रविवार स्कूल कक्षा अध्यापक शायद ही कभी इससे दूर हो सकते है।

मुझे इन मतभेदों की एक-एक करके चर्चा करनी है।

विस्तारित सपंर्क और व्यक्तिगत सलाह

समय एक महत्वपूर्ण कारक है। चर्च लाभ रास्ते में देखा जा सकता है, जब यह जीवन में एक गहरी भागीदारी व्यक्तियों में हासिल करने के लिए अनुमति देता है। दूसरी और ज्यादा समय हमारे ध्यान को खोने का कारण बन सकता है। संकट परामर्श मामले को छोड़कर कुछ भी तत्काल मामला नहीं लगता है। चर्च, वर्ग या कार्यक्रम उपस्थिति अक्सर आध्यात्मिक विकास के साथ भ्रमित हो जाता है।

स्कूल हमेशा अपना ध्यान प्रत्येक सत्र में क्या किया है उस पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। दूसरे हाथ में चर्च लोगों को सिर्फ ईमानदारी से सेवा और रविवार स्कूल कक्षाओं में भाग लेने जब सब काम ठीक से चल रहा है या सब ठीक से करेगें उस पर मान देता है। छोटे उद्देश्य के मतलब के अलावा, लगातार भाग लेना और देना है।

जीवन सत्व फल लाने के अवसर के साथ एक जीवन विकास चार्ट के नक्शे से बाहर कार्य करने के लिए हमें मदद करता है। चर्च के अगुवे, और उनकी शिष्यत्व स्तर पर विचार में मदद करते है वे उनके नींव की अस्थिरता को पहचान करने में भी उनकी सहायता करते हैं। व्यक्तिगत सम्बन्ध और एक साथ समय बिताने के द्वारा हम इन व्यक्तियों को बिना परेशान किये समय सीमा के बिना कि कार्यक्रम में अगली कौन सी क्रिया है के लिए हमें यह अनुमति देता है।

एक चर्च में यदि एक व्यक्ति की शादी हो रही है वे अपने हनीमून से वापस लौटेगें प्रशिक्षण तब भी उनकी वापसी के बाद जारी रहेगी (या तो हम उन्हें बेहतर विवाह के लिए प्रशिक्षित कर सकते है।) समय हमारे पक्ष में हैं।

चर्च के अगुवों के पास उपयोगी विचार विमर्श हो सकता है, इस अस्थिर नींव विकसित करने के लिए पहचान करना और उनके आध्यात्मिक विकास में आगे इन लोगों को स्थानांतरित करना और अंतत: सेवा के लक्ष्य के साथ दूसरों की सेवा करना है।

एक प्राध्यापक के विपरीत पादरी के पास शायद ही कभी एक गहरी धार्मिक स्तर पर पढ़ाने का अवसर है। समय सीमित है हर एक घंटा गिना जाता है। चर्च की ताकत शक्तिशाली परमेश्वर के वचन का प्रचार और परमेश्वर के वचन के जड़ पकड़ने के लिए जगह बनाना है। बाइबिल हमें मोक्ष, पवित्रीकरण और आऊटरीच के प्रमुख विषयों पर ध्यान केन्द्रित रखना, यदि मांग नहीं करता, की अनुमति देता है।

एक समस्या है, तथापि हो सकती है और हुआ करती है जब विश्वासी स्वयं को नहीं बढ़ा रहे हैं। एक चर्च की स्पष्ट दृष्टि प्रेरणा बढ़ सकती है लेकिन जरूरी नहीं कि आध्यात्मिक विकास और परिपक्वता में वृद्धि हो। परमेश्वर को लोगों को अच्छे प्रचार या प्रशिक्षण में प्रतिक्रया ना करने के लिए वो कौन सी सुस्ती है जो कार्य करती है?

हमारे पापों को मिलाकर वहां ऐसे कई सत्य योगदान कर रहे हैं। यूहन्ना प्रकाशितवाक्य 2-3 अध्यायों में कई ऐसे क्षेत्रों की पहचान करता है जो इस गुनगुनेपन को दर्शाता है लेकिन हम यह भी देखते है कि यूहन्ना बार-बार पुन: स्थापना की ओर इशारा करता है।

प्रतीक सात कलीसियाओं को संबंधित करने से पहले यूहन्ना की शुरूआत ''चर्च में यीशु को'' उचित स्थान के लिए जिक्र करता है। प्रत्येक की शुरूआत प्रासंगिकता से होती है। स्मुरना के लिए यीशु पुर्नजीवित हुआ था। मृत्यु का भय चर्च में वापस कभी भी नहीं आना चाहिए (प्रका.2:8-11)। और पिरगमुन की कलीसिया के दूत को यह लिख कि जिसके पास दोधारी व चौखी तलवार है वह यह कहता है कि पुर्नस्थापना हमारे जीवन में हमारे ध्यान को वापस लाएगी जिससे हम महिमा महिम जगह को केन्द्रित करें और मसीह यीशु हमारे जीवन में है।

पुर्नस्थापना एक व्यक्ति के जीवन का पुर्नगठन है जो वापस योजना बनाता है कि जीवन के मध्य में केन्द्रित रहे, या प्रभु के साथ जुड़े या बने रहे। आत्मिक नक्शे से विश्वासी बेहतर महसूस करने की दिशा को प्राप्त करता है (उदाहरण: तीन स्तरों में शिष्यता) उनके विकास की उत्सुकता अक्सर पुर्नस्थापित होती हैं। जब पूरा लक्ष्य विशेष तर्क के साथ जुड़ जाता है जो उपदेशक प्रदान करता है तो वे आत्मविश्वास की सचेतता को प्राप्त करते हैं जिससे वे उस लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं और उसमें भाग लेने के लिए अत्यधिक इच्छुक है। एक पास्टर बड़ी आसानी से परमेश्वर के पूरे लक्ष्यों का कि वह अपने यदि वह ध्यानपूर्वक विकासशील सलाहकार कार्यक्रम के साथ जोड़ दिया गया, तो परमेश्वर के लोग उत्सुकता में बढ़ेगें, चर्चो के प्रमुखों के द्वारा नहीं लेकिन उनके प्रभु से और उनमें उसकी क्रिया के द्वारा।

कम उत्साही

परमेश्वर के लोग वर्ग में जाने के लिए नहीं बनाया जा सकते, उन्होनें 10 या 10 हजार विदेशी मुद्रा जमा नहीं किया है। जिससे वे दक्षता को प्राप्त करेगें। अगर चर्च प्रशिक्षण उचित रूप से आयोजित होगी, हालांकि लोग व्यक्तिगत रूप से देखेंगे कि परमेश्वर उनके जीवन को परिवर्तित कर रहा है। और वे खुशी के साथ इसका प्रत्युत्तर देगें और उसकी आराधना करेगें, लोग वहां रहना नहीं चाहते लेकिन वे वहीं रहना ही चाहते है। अन्य लोग उत्साहित रहते है कि इसमें शामिल हो और वे प्रसन्न रहते है कि उनके जीवन में परमेश्वर क्या कर रहा है।

यह परमेश्वर कलीसिया की तस्वीर है परमेश्वर उसके लोगों के बीच में मंडराता है। व्यक्तिगत परिवर्तन समुह प्रचार और शिक्षा में यदि परमेश्वर उनके मध्य में है तो जगह लेना ही चाहिए।

जब हम व्यक्तिगत पवित्रता की कमी और आत्मिक विकास को ध्यान नहीं देते है, तो हम वास्तव में परमेश्वर का स्वागत और उसे अपने मध्य में या उसके कार्य को नहीं पाते। जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थल होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो। (इफिसियों 5:22)

स्थानीय प्रशिक्षण के लिए एक महान जगह है और डर की आवश्यकता है। जबकि यह सेमीनारी के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते है। यह कर सकते है। यदि वह अपने कार्य को ठीक से कर सकता है तो चर्च में उद्देश्य और सलाह को प्राप्त नहीं कर पाते।

अधिक पाठ्यक्रमों को बाहर लेने के लिए चच्र कई मायनों में अच्छा है, और अभी तक मुझे आश्चर्य है कि चर्च में सेवा के लिए उचित प्रशिक्षण और अवसरों की कमी के कारण खुलासा नहीं करता है। जब पादरी लोग लगातार प्रभु और दूसरों के लिए उनके आध्यात्मिक प्रेम में बढ़ रहे हैं यह संक्रामक है। लोग भी ऐसा ही करेगें, वे विकास के लिए उत्सुक और दुसरों की सेवा अधिक करेगें।

चर्च को अधिक मजबूत बनना है। ताकि वो विश्वासीयों को मजबूती से विकास करें और यह सिर्फ स्वाभाविक रूप से आयेगा इसकी उम्मीद ना करे।

17 वहां समय में अधिकार हथियाने चर्च बड़ों अपने स्वयं के हितों की रक्षा करने के लिए पादरियों के खिलाफ काम कर रहे हैं। यहां यह चर्चा से परे चला जाता है।

शिक्षाएं

* चर्च के पास महान अवसर दायित्व है कि वे स्पष्ट करें कि विश्वासी अपने आध्यात्मिक विकास में जहां समस्या के बीच में कैसे काम करें और उनका नेतृत्व फलदायी सेवा में कैसे करें।

* परमेश्वर के लोग परमेश्वर की इच्छा को अपने जीवन में जानने के लिए बहुत उत्सुक है और इसे कैसे लागु किया जाना चाहिए। बाइबिल संदर्भ में इन मुद्दों का समाधान और परमेश्वर के लोग इसमें व्यस्त हो जायेगें।

* परमेश्वर महान रूप से यह चाहता है कि परमेश्वर के लोगों का निर्माण उसके पवित्र मंदिर के रूप में करें वे ऐसे अगुवों की तलाश कर रहा है जो उसके साथ कार्य करें और परमेश्वर की महिमा लाये, और परमेश्वर के लोगों को उसकी सेवा के लिए प्रस्तुत करें।

व्यक्तियों के विकास में सहायता करने के द्वारा चर्च एक महान सहयोग को अगुवों के विकास के लिए मजबूती से दे रहा है जिससे वे अपना और अन्य चर्च का विकास करें।

मनन चिंतन

* इफिसियो 2:21-22

समनुदेशन (असाइनमेंट)

⇨ उस चर्च का वर्णन करें जहां ऊपर कही गई चीजों को रोशनी में भाग लेते हैं। क्या लोग बढ़ने के बारे में उत्सुक है? क्यों? या क्यों नहीं?

⇨ क्या चर्च के अगुवे चर्च के सदस्यों को उपदेश देते है कि वे जान सकें कि अपने आध्यात्मिक विकास में कहां है और वे कैसे अगले कदम पर पहुंच सकते हैं।

⇨ क्या लोग परिपक्व और स्वाभाविक रूप से दूसरों की सेवा कर रहे हैं? (कितने प्रतिशत लोग प्रशासन और सुविधा के संचालन सहित चर्च की देखभाल और इमारत में भाग लेने के लिए है?

37

प्रशिक्षण विद्यालयों में एकीकरण

हम इस अध्याय में मसीही महाविद्यालय सादृश्य स्कूल के साथ सेवकाई प्रशिक्षण स्कूल के मन में इस जीवन स्रोत को रखने से लाभ प्राप्त कर सकते है और ध्यान को केन्द्रित किया जाएगा। स्कूल चर्चो की तुलना में एक अधिक विनियामित वातावरण है । पाठ्यक्रम एक समग्र पाठ्यक्रम में जुड़ेगा।

हालांकि, यदि एक उद्देश्य ठोस और सुरक्षित है, आध्यात्मिक जीवन का निर्माण होता है, जीवन प्रशिक्षण जीवन सत्व स्तर पर जगह होती है। ये आवश्यक जीवन इमारत अवरोधी प्रशिक्षण के हर दुसरे क्षेत्र से जुडे हैं। मुझे एक उदाहरण प्रदान करने दें।

एक युवा जोड़े उनके दो बच्चों के साथ एक मण्डली का पादरी बनकर आया। वे एक मदरसे से स्नातक प्राप्त किये हुए थे और वे अद्‌भुत रूप से चुस्त दुरूस्त दिखाई दे रहे थे। वे इस नये चरवाहे स्थिति में शामिल हाने के लिए और बाहर जाने के लिए उत्सुक थे। कई साल बाद, हालांकि यह है कि उन्होनें वैवाहिक जीवन में संघर्ष किया था यह बात उजागर हुई। वे एक दूसरे के साथ मिल नहीं सकते थे। यह तनाव भी नेतृत्व के समय में अभिमानी पति के रूप में प्रगट हुआ। दुख की समाप्ति काफी उम्मीद के मुताबिक है। और केवल बाद में ही हमने इस बात का खोज किया कि ये सारी समस्याएं मदरसे में प्रशिक्षण के दौरान भी चल रहे थे।

यद्यपि मदरसे में अच्दी शिक्षा दी जाती है उनके गरीब शादी का मतलब सेवकाई के लिए नींव वहां नहीं थी। इस प्रकार की समस्याएं हर समय बढ़ रही है। जेसे बेकार परिवार में वृद्धि हो रही है।

हमारे लक्ष्यों में वापसी

आदमी मदरसे से स्नातक की उपाधि प्राप्त करता है, लेकिन अभी तक उसका जीवन खंडहर में था। मदरसे या सेवकाई के लिए लोगों को तैयार करने के लिए उन स्कूलों का लक्ष्य क्या है? उन लोगों को स्नातक प्राप्त करना चाहिए जिसके व्यक्तिगत या वैवाहिक जीवन में संघर्ष है? कुछ लोगों के लिए ये सवाल निरर्थक है। कैसे वे उन्हें स्नातक नहीं कर सकते थे?

चर्चा का मानना है कि जो इन मदरसो से स्नातक हुए है वे परिपक्वता में बढ़ गये हैं इसीलिए क्योंकि वे अपने आवंटित पाठ्यक्रम में पास हो चुके हैं। और अभी तक स्कूल इन व्यक्तियों को चरित्र और आत्मिक परिपक्वता प्रशिक्षण जिसकी इन्हें जरूरत है प्रदान नहीं कर रहा है। यह ठीक रीति से क्यों महज गुजर रहा है ज्ञान आध्यामिकता परिवक्ता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपर्याप्त ठीक है।

हमें आगे हमारे प्रशिक्षण परिष्कृत करने के लिए प्रभु के अधिक से अधिक उद्देश्य के लिए हमारे स्कूलों में शैक्षिक तरीका का विषय होना चाहिए। यही यह लक्ष्य है कि सेवकाई के लिए लोगों को तेयार करना है तो हमें पर्याप्त रूप से उन्हें सेवकाई के लिए आकार देना चाहिए। प्रशिक्षण की सेवा करने के लिए उद्देश्यपूर्ण उनके नजरिये को आकार देने और प्रतिबद्धता के लिए ज्ञान की आपूर्ति से परे जाना चाहिए।

कुछ इस जरूरत को चुनौती देगें कि यह सु.समाचार के लिए मौलिक है। हमें एक दूसरे से प्रेम करना है। हमारा जीवन दूसरों के लिए पर वास्तविक देखभाल गुजर के उनके उद्देश्यों के बाहर रहने के लिए परमेश्वर ने जब्त कर लिया है।

हे भाइयों, तुम स्वतंत्र होने के लिये बुलाए गए हो परन्तु ऐसा न हो, कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने, बरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो। (गलतियो 5:13)

यद्यपि हम सबसे अच्छा चाहते है यह निंदक बनने के लिए आसान है, जब वर्ष के बाद वर्ष जब ये लक्ष्य पूरे नहीं हो रहे हैं, जरूरत असाधारण समस्या बन जाती है, अगर आपका चर्च इनमें से एक अनुचित पादरी को प्राप्त करता हैं।

एक बेहतर तरीका

जीवन सत्व (जीवन प्रक्रिया सादृश्य के साथ) कैसे इन चुनौतियों का सामना करें उसे स्पष्ट करता है। परमेश्वर के जीवन लक्ष्यों का उपयोग प्रशिक्षण के लिए केन्द्रिय पूरी तरह से एकीकृत ढांचे जो पूरे व्यक्ति के विकास के लिए बनाया गया है बौद्धिक के साथ-साथ आध्यात्मिक रूप से भी हासिल कर सकता है। इस व्यापक दृष्टिकोण के लिए निहित विकास के विभिन्न क्षेत्रों कुछ के दौरान हो कि लक्ष्यों और प्रक्रियाओं का पालन करने की क्षमता आध्यात्मिक विकास की अवधि है। इस दृष्टिकोण को अपने छात्रों के विकास में सहायता करने के लिए पाठ्यक्रम प्रशिक्षण के अवसर और विशेष परियोजनाओं को बनाने के प्रशिक्षकों को सक्षम बनाता है।

जीवन सत्व के प्रशिक्षण के केन्द्रीय ध्यान केन्द्रित करने के लिए सुझाव और अध्याय के बाद में आएगा। यहां किसी तरह, हम इस व्यापक परिपेक्ष्य समन्वयक शिक्षक और छात्र के लिए क्या कर सकते है देखेगें।

मसीही स्कूल अक्सर नीचे सूचीबद्ध चुनिंदा चीजों का ही उपयोग करता है लेकिन यदि वो अच्छी तरह से समन्वित नहीं हैं तो या केवल आकार है भाग के बजाए तो वे परमेश्वर की पूरी शक्ति का जो परमेश्वर इस दृश्य में लाना चाहता है अनुभव नहीं कर सकते। स्पष्टता के लिए हमने इनको इस अंक से देखने के लिए तीन अंक से इसका विश्लेषण किया है। प्रधानाध्यपक (समन्वयक) शिक्षक और छात्र।

समन्वयक की जिम्मेदारियां (उदाहरणः के लिए प्रधानाचार्य या योजना समिति)

* एक एकीकृत सत्व सभी प्रशिक्षण को एकीकृत आश्वासन देता है।
* प्रशिक्षण छात्रों के दिल तक पहुंच रहा है आत्मविश्वास प्रदान करें।
* परमेश्वर की महिमा के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने पर ध्यान केन्द्रित करें।
* हर किसी को प्रशासन, शिक्षक और छात्र के साथ की पहचान कर सकते हैं कि एक लक्ष्य पर निशाना लगाओं।
* खुले तौर पर पहचान करों कि प्रत्येक शिक्षक, प्रशासन और छात्रों सहित विकास की एक ही पृष्ठ पर हैं।
* स्पष्टता से कहे कि परमेश्वर का लक्ष्य सेवा के लिए उत्तम और आवश्यक है।
* स्कूल के समर्थकों के साथ पारदर्शिता प्रदान करें।
* प्रशिक्षण में आत्मा का हिस्सा और उद्देश्यों के बारे में जागरूकता बढ़ायें।
* प्रत्येक पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण के अनुभव के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया को स्पष्ट करना।
* पाठ्यक्रम प्रशिक्षण के साथ आध्यात्मिक जीवन एकीकृत।

शिक्षक और प्रशिक्षक की जिम्मेदारियां

* प्रत्येक पाठ्यक्रम को और पूरे भीतर इसकी जगह देखें।
* खुलकर पाठ्यक्रम में छात्रों के आध्यात्मिक विकास और सेवा से जुड़ रहे हैं चर्चा करें।
* शैक्षणिक शिक्षण में अर्थ और उत्साह में वृद्धि को पायें।
* एक पूरे के रूप में साथ ही साथ प्रत्येक कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम में परमेश्वर की उपस्थिति का शोध करो।
* उत्साह प्राप्त करे देखे कि कैसे परमेश्वर उन्हें उचित रीति से दुसरों के लिए तैयार कर रहा है।
* प्रशिक्षण प्रक्रिया में परमेश्वर को भाग के रूप में रखें।
* परमेश्वर की उच्च शिक्षा को गले लगाओ और इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए परमेश्वर की तलाश करो।
* इस दृष्टि का शिक्षार्थियों से वार्तालाप करें।
* परमेश्वर के सत्य की शक्ति का उजागर करो जब वह छात्रों को तैयार करता है? वे अविश्वसनीय व्यक्तिगत समस्याओं का सामना करते हैं।

* आत्मविश्वास से छात्रों को परमेश्वर पर भरोसा रखने और समाधान खोजने के लिए इंगित करें ना कि उन लोगों से जो चर्च के बाहर रहते हैं।
* विश्वास करें कि छात्र व्यक्तिगत रूप और बौद्धिक रूप से देखभाल किये जा रहे है।

छात्र की जिम्मेदारियां

* परमेश्वर की समग्र तैयारी जो वह उनके जीवन के द्वारा उसके उद्देश्यों को बाहर ले जाने के लिए समझे।
* औपचारिक प्रशिक्षण कैसे परमेश्वर की योजना उसके जीवन और सेवकाई के लिए है पहचानो।
* देखें प्रशिक्षण आगे उन्हें परमेश्वर के महान लक्ष्यों को पूरा करने में उसके जीवन के द्वारा सक्षम बनाता हैं कैसे।
* मूल्यांकन करें कि वे अपने आत्मिक जीवन के पथ पर कहां है।
* आगे के विकास की दिशा पर हड़कंप मच गया है। और इस तरह गौरव की ओर प्रलोभन कम होनी चाहिए।
* अतीत के विकास द्वारा प्रोत्साहित हो।
* नियमित रूप से प्रशिक्षण अपने या अपने पूरे जीवन के साथ एकीकृत है कि उसे या स्वयं को याद दिलाना है।
* अपने पूरे जीवन में परमेश्वर के व्यक्तित्व ध्यान को समझें।
* एक एकीकृत चित्र को प्राप्त करें कि कैसे कौशल और ज्ञान प्रशिक्षण उनके आध्यात्मिक नींव से जुड़ा हुआ है।
* समृद्ध किये हुए समाधान की खोज से ना सुलझे हुए व्यक्तिगत संघर्ष के लिए समृद्ध किया गया है।
* पाप से मुक्त होना तय है। विश्वास में आगे बढ़े।
* सेवा पर ध्यान दें।
* पिछली नाकामियों से निराशा में काबू पायें।
* दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए सीखें, उनके आध्यात्मिक विकास को स्तर को न देखें।
* यह एक जीवित परिस्थिति सबके लिए हैं। जब यह लक्ष्य छात्रों को महान समानता के परमेश्वर के समग्र उद्देश्य चर्च मसीह की तरह हो जाता है और उसकी महिमा यहां पृथ्वी पर उज्जवल है और अधिक से अधिक चमकता है।

एक अलग पाठ्यचर्चा

एक अलग जीवन सत्व विकास किसी के नियमित पाठ्यक्रम के होने के द्वारा इन बातों को बेहतर अपने या अपने अनुभवों से सबसे अधिक लाभ के लिए छात्र एक सलाहकार की तरह संबोधित कर सकते हैं। कोई छात्र यदि सेवकाई में जा रहा है तो केवल व्यक्तिगत रूप से परीक्षण नहीं किया जायेगा लेकिन यह दुसरों को और अधिक गहराई से प्रभु को उनके जीवन के लिए प्रतिबद्ध है और अभी तक आगे के विकास में विश्वासीयों को प्रोत्साहित करने के लिए, उनके जुनून हासिल करने में मदद करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा।

स्कूलों में कठिनाईयां उभरेगीं। कैसे एक नियमित पाठ्यक्रम के साथ जीवन सत्व को लिपटाया जाता है? क्या होता है जब लोग आगे बढ़ने की इच्छा नहीं रखते? या हम बहुत समस्या का सामना करना पड़ता है उन लोगों के लिए क्या कह सकते है?

यह सभी विवरण के माध्यम से काम करने के लिए जगह नहीं है। अंत में एक स्कूल या चर्च को दिमाग से बड़ा जीवन पा रही है, तो हमें प्रार्थनापूर्वक प्रक्रिया को माध्यम से पुर्नविचार करने की जरूरत है।

शिक्षायें

* समन्वयक बढ़ते हुए आत्मविश्वास को प्राप्त करने और आवश्यक प्रशिक्षण एकीकृत करने और सेवकाई के लिए वास्तविक तैयारी को प्रदान करते हैं।
* शिक्षक आगे उनके प्रशिक्षण छात्र के पूर्ण विकास का हिस्सा है कैसे की खोज के द्वारा शिक्षण में वृद्धि हुई है लगता है।
* छात्रों को पाप से दूर रहने को सीखना है और दूसरों को मसीह में प्रशिक्षित करने के लिए सीखना है कोई बात नहीं कि वे अपने आत्मिक विकास में कहां है।

मनन चिंतन

गलतियों 5:13

समनुदेशन (असाइनमेंट)

- ⇨ एक अतीत या वर्तमान छात्र के रूप में अपने अनुभवों को स्पष्ट करें। आध्यात्मिक विकास के अपने स्तर क्या है? क्या आप सोचते हैं कि प्रशिक्षण धर्मनिरपेक्ष है या अन्यथा आप पवित्र आत्मा की पूरी शक्ति से दुसरों की सेवा में मदद मिलेगी? समझाइये।
- ⇨ क्या आपने किसी को प्रशिक्षित या सिखाया है? क्या आपने अपने छात्र की आध्यात्मिक आवश्यकताओं या उनके लिए परमेश्वर के जीवन लक्ष्यों के साथ एक विषय को एकीकृत करने के साथ समस्याओं का सामना करते हैं? समझाइये।
- ⇨ पौलुस ने कैसे अपने जीवन के उद्देश्यों को संक्षेप में प्रस्तुत किया? (प्रेरितों के काम 27:23) क्यों ये तत्व में से प्रत्येक को पुरा करने के लिए और हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है? समझाइये।
- ⇨ यदि आप एक मसीही कॉलेज के शिक्षक या व्यवस्थापक हैं तो क्या आप पाते हैं कि आपका स्कूल जीवन सत्व की योजना को गले लगाता है? समझाइये। यदि आप इसे आगे लागु करते हैं तो क्या मुश्किलें पैदा हो सकती हैं?

38

मसीही स्कूलों में प्रशिक्षण के-12

मसीही स्कूलों में कई बच्चों को प्रशिक्षित किया जाता है। एक से अधिक और सालाना एक चौथाई मिलियन अमेरिकी स्कूलों में भाग लेते हैं। धर्मनिरपेक्ष शिक्षा अपनी गतिविधियों में तेज अनैतिक और एकमुश्त अशिष्ट हो रही है। जबकि माता पिता की एक बढ़ती हुई संख्या मसीही स्कूलों और शरण के लिए घर स्कूलों को बदल रहे हैं। धर्मनिरपेक्षता हमारे बच्चों में क्या नुकसान जा रहा है। इन परिणामों में से एक ज्ञान को बढ़ावा और परमेश्वर के साथ संबंध बनाना है।

जो प्रशिक्षण मसीही स्कूलों में उपलब्धा कराए जाते है वे समयों को इस्तेमाल करते है। लेकिन सलाह की दृष्टि, मुख्य रूप से चर्च और परिवारों में अपना स्थान रखे नहीं भूलना चाहिए। हालांकि शायद ही कोई चर्चो में उनके लोगों को अनुयायी बनाया जाता हो। परिवारों को हमेशा अच्छा समर्थन देना चाहिए। (वे दूसरे परिवारों के साथ भी जो इस प्रकार के प्रशिक्षण को पूरा करने का कार्य कर रहा है के साथ काम करना चाहिए।)

क्या मसीही विद्यालयों में इस शिष्यत्व अवधाारणाओं और प्रशिक्षण उपकरणों का उपयोग होना चाहिए। बिलकुल! सबसे महत्वपूर्ण सही हिस्सा अगुवों या शिक्षकों के साथ शुरू होता है। जब हम एक बार परमेश्वर के प्राथमिक कार्य को पहचान करते है तो हम सक्रिय रूप से काम को बढ़ावा देने में मूर्खता नहीं होगी। यह सिर्फ इसलिए कि कुछ अपनी जिम्मेदारी की उपेक्षा करते हैं। इसका मतलब ये नहीं कि हमें उनके पक्ष में खड़ा होना चाहिए और उन्हें नष्ट होने देना है। यह एक अधिक संपूर्ण अवसर है कि प्रशिक्षण को बढावा दें।

केवल शिक्षित नहीं रूपान्तरण

* इन स्कूलों और बच्चों के लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है सोचो:
* बच्चे जो उत्साह के साथ अपने जीवन में परमेश्वर के प्यार से प्रेरित है।
* बच्चे परमेश्वर के तरीके और उद्देश्यों के प्रति आश्वस्त है जो उन्हें इस दुनियों से भी अधिक उपेक्षित करता है।

जब दुनिया शक्तिशाली दिखाई पड़ती है तब परमेश्वर के वचन की शान्ति अप्रसांगिक प्रतीत होती है। सबसे अच्छा हथियार परमेश्वर के गौरवशाली उद्देश्यों को पूरा करना है।

> कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दाने दें, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ। और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डालकर। सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई, और ऊँचाई और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सके। जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ। (इफिसियों :3:16 - 19)।

परमेश्वर के लक्ष्यों को हमें हमारी कार्यप्रणाली में हमारे लक्ष्य में ईमानदार और हमारी दृष्टिकोण में स्प्ष्ट और रचनात्मक करने की अनुमति देता है चुनौतियां अक्सर उत्पन्न होती है जब परिवर्तन गठित होता हैं इसी कारण के लिए अगुवों को तैयार किया जाता है।

ध्यान से अपने स्कूल के लक्ष्यों को देखें। क्या वे पूरे (या) उन लक्ष्यों को निभाया जा रहा है। कमियों या कमजोरियों को ढूंढ निकाले। इस सूची में अक्सर अनुरोध करने के लिए एक के कारणों को मजबूत या परिवर्तनों को लागू करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

स्कूलों को बदतर या उसे इन्कार नहीं करना चाहिए। माता - पिता अपने बच्चों के लिए एक और अधिक चरित्र केन्द्रित शक्षाओं को ढूंढते हैं लेकिन वे चर्चो से नफरत करते हैं। किन्तु उन्हें अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए स्कूल की सहायता उनके भागीदारी के रूप में, इस पर विचार करना चाहिए।

वहां पर कुछ सतर्कताएं है फिर भी, अविश्वासी या ईश्वर रहित लोगों के साथ काम करना एक बड़ी चुनौती या कठिन है। एक संपूर्ण चर्च जब अपने विश्वास को कबूल करता है तो वहीं पर कई छात्र उसे नहीं मानते। जबकि परमेश्वर प्रत्येक शिक्षक और छात्रों के जीवन में पवित्रता देखना चाहते है। प्रत्येक के जीवन छात्र या छात्रा के जीवन में पवित्र आत्मा कर्म नहीं करता है। कई लोगों के पास परमेश्वर के लिए हृदय नहीं है। वे केवल धर्मनिरपेक्ष स्कूल पर एक मसीही स्कूल से लाभ उठाना चाहते है।

आस्था के सतही बयान वास्तविक भावना के लिए कोई विकल्प या उत्थान का काम नहीं है। उनके दिलों में परमेश्वर के कार्य की कमी की कोई रूचि दिखाई नहीं देती है। और ना ही वे यह ढोंग या दिखावा करना चाहते है कि प्रत्येक छात्र ''परमेश्वर का बच्चा'' है इससे पहले कि परमेश्वर अपने गतिशील रूप से इन बच्चों में कार्य करें इन्हें बचाया जाना जरूरी है।

यही समस्या घरों में मौजूद हैं। हम आशा और प्रार्थना करते हैं कि बच्चे प्रभु को जाने। ऐसा सभी नहीं करते। फिर भी हम प्रशिक्षित करते है, कुछ भी हो, एक आशा के साथ कि वे एक दिन प्रभु को जानेगें। बिना यीशु के, कुछ भी हो, वहां आत्मिक जीवन नहीं होगा। इसलिए कोई आत्मिक विकास भी नहीं है। घरों में हम विभिन्न प्रकार की शिक्षा को अपना सकते हैं। और उसके जिम्मेदार हो सकते, पर यह अर्थ को रखता है। स्कूलों के साथ यह कठिन है।

शायद, वैकल्पिक या इसका एक हिस्सा के बजाय यह एक बेहतर प्रशिक्षण के लिए निकट आए। अपेक्षाकृत की बच्चों के लिए आदेशक। जो माता-पिता या बच्चे इच्छुक है उनके लिए सलाह प्रदान करें।

विद्यालय के पास समय और रिश्ते की निरंतरता दोनों के लाभ के लिए काफी कुछ है। इसके अलावा, विद्यार्थी के पास अतिरिक्त समय (उदाहरण के लिए स्कूल प्रदान की ''विस्तारित डे केयर'' करने के लिए) इन बातों पर ध्यान व उन्नति करने के लिए दिया गया है।

योग्य उपदेशक को ढूँढना

बजट की समस्या हमेशा मौजूद होगी। लेकिन सबसे बड़ी समस्या सही उपदेशकों प्रशिक्षणदाता को ढूंढने की हैं कुछ ही लोग है जो सही रूप से उपदेशक, शिक्षक है और वे परिपक्व है। मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि कुछ शिक्षक बहुत अच्छे व बच्चों का प्यार व उनकी आत्मिक उन्नति में मदद करते हैं।

यदि स्कूल चर्च के साथ कार्यरत रहे जो अक्सर मामला है, चर्च इस चुनौती को लेकर अपने ही सदस्यों को मदद प्राप्त करने के लिए स्वयंसेवी या कुछ कम वेतन देकर प्रशिक्षण दे सकता हैं तो यदि शिक्षा के आधार पर दूसरों को प्रशिक्षित कर पाएगें। इस बात में स्पष्ट रहे कि परमेश्वर बच्चों के माध्यम से आश्चर्यजनक रीति से काम कर सकते हैं।

स्कूलों में प्रभावशाली प्रशिक्षण

यदि योग्य शिक्षक बच्चों के प्रशिक्षण के लिए साधन और दर्शन को रखें, तो यह अच्छे प्रशिक्षण के लिए साधन और दर्शन को रखे, तो यह एक अच्छे प्रशिक्षण के लिए एक ढांचे को अच्छी रूपरेखा के रूप में प्रायोगिक या इस्तेमाल होगा। व्यक्ति सलाह पूरित चयनित पाठ्यक्रम और बाईबिल अध्ययन आध्यात्मिक विकास के लिए सबसे अच्छा वातावरण प्रदान करता है।

बच्चों में आध्यात्मिक विकास के मायने के लिए तात्पर्थित चार्ट के उपयोग के संबंध में सतर्क रहें उदाहरण के लिए, एक नियमित रूप से व्यस्क विश्वासी विकसित कर सकते है। एक नया विश्वासी को आम तौर पर जरूरत है तीन से चार महीने की उम्र और स्थिति कर सकते है। इन पाठ्यक्रमों को मन में इन तथ्यों के साथ समायोजित करने की जरूरत है। कई अलग चार्ट सही ढंग से बच्चों में परमेश्वर के लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित और विशेष स्थितियों के लिए उपयोगी हो सकते है।

स्कूल बेहतर ढंग से अपने बच्चों को काम में वचन और जैसे वे अपने मानसिकता की परिपक्वता में है और जवानी में बढ़ रहे हैं तब उन्हें व्यस्त रख सकता हैं। वहां विशेष चुनौतियां और सवाल भी होगें जिन्हें जीवन के लिए उनके जीवन में जीवन सत्व की प्रासंगिकता को दिखाना होगा।

ऐसे समय में शारीरिक व मानसिक परिवर्तन के बारे में व्याख्या करना जो उनके जीवन में हो रही है उन्हें आत्मिक करेगा। यद्यपि वे प्रशिक्षण के दूसरे चरण को भी पूर्ण कर चुके हो तो (उदाहरण: युवा विश्वासी)। यह शारीरिक और भावनात्मक विकास के विभिन्न चरण में समस्याओं और आध्यात्मिक लडाई के अपने नए सेट पर विशेष ध्यान देना अच्छा हो सकता है।

स्कूलों में उपलब्ध समय की वृद्धि प्रशिक्षण के लिए बहुत उपयोगी है जो विशेष समस्याओं और विचारों का सामना कर रहे हैं। उदाहरण के लिए वे अपने काम के अंत में पहुंचते, वे अपने कैरियर विकल्प, दोस्त विकल्प मन में परमेश्वर का उद्देश्य पुरा करने का अध्ययन कर सकते है। बाइबिल एक उद्देश्य के साथ सिखाया जाना चाहिए। बच्चों को यह मसीह में पूरा जीने के लिए लागू होता है और उन्हें यह देखने की जरूरत है कि ये कैसे होता है। (2 तिमु. 3:16 – 17) कहता है कि ''हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, ओर सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है)।

जब तक यह सत्य हम उनके जीवन में बाध्य नहीं करेगें तब तक वे इस सत्यता को अप्रासंगिक रूप में देखेगें और ''वहां'' आसानी से बाहर चले जाएगें। यदि हम उन्हें परमेश्वर के वचन की प्रासंगिकता उनके जीवन में दिखाएंगे तो, युवा विश्वासी पीढ़ी का मजबूती से विकास होगा।

गर्व का खतरा हमेशा बना रहता है, यहां तक कि बाइबिल प्रशिक्षण और सच्ची आराधना में। उनकी अपरिपक्वता के कारण, बच्चों को विशेष रूप से अति संवेदनशील होते हैं उचित प्रशिक्षण के साथ, तथापि बच्चे (और व्यस्क जैसे) अपने प्रलोभन से और अभिमान से हिल सकते है जब वे अपना ध्यान को दूसरों की सेवा नम्रता एवं खुशी वापसी की पकड़ शैतान को हराना होगा। बच्चे दूसरों में आध्यात्मिक विकास को देखना उसका सम्मान करते हैं।

सारांश

मसीही स्कूल अद्भुत आत्मिक प्रशिक्षण अवसर की पेशकश कर सकते हैं। वर्ग प्रशिक्षण अच्छे उपदेशकों के साथ महान प्रशिक्षण समय का सृजन करते हैं। एक निरंतर छवि पेश करके बच्चे और अधिक आसानी से पहचान करके और दुनिया में पाई जाने वाली बुराई को खारिज करते हुए परमेश्वर के मुल्यें को स्वीकार कर सकते हैं।

शिक्षायें

के-12 मसीही स्कूलों के पास अद्भुत अवसर है जिससे वे विश्वासीयों को प्रशिक्षित करते है। इन स्कूलों की सबसे बड़ी चुनौतियां यह है

* अविश्वासी छात्रों को कैसे संभाला जानाना।
* युवाओं के लिए प्रशिक्षण साम्रगी का विकास करना जो अपनी उम्र के कारण और धीरे – धीरे परिपक्व बनते है।
* सुसज्जित तब्दील उपदेशकों को जीवन सत्व दर्शन के साथ प्राप्त करना।
* उचित रीति से माता – पिता, चर्चो और अधिकारियों से सम्बंधित।

मनन चिंतन

2 तिमुथियुस 3:16 – 17

इफिसियो 3:16 – 19

समनुदेशन

क्या आप कभी भी मसीही स्कूल या घर स्कूल में रहे हैं? किस तरह का आध्यात्मिक प्रशिक्षण थां क्या वह पर्याप्त था? समझाओं।

क्या इन स्कूलों का चर्चो के साथ प्रतिस्पर्धा हो सकती है? आप इससे कैसे निबटेगें। और अधिक क्या किया जा सकता है?

क्या आप के-12 स्कूल के व्यवस्थापक या शिक्षक है? इन परिवर्तनों को लागु करने के लिए इन चुनौतियों में से कुछ पर विचार करें। प्रत्येक को समझाओ। प्रार्थना शुरू करें।

39

एक दीर्घकालीन परिपेक्ष्य

जिस तरह परमेश्वर ने शारीरिक रूप से आगे बढ़ने और विकास करने के लिए हमारे शरीर को बनाया ताकि उसके लोग आत्मिकता का विकास करें प्रभु प्रत्येक विश्वासी को अनोखे रूचि की जोडी और इनाम प्रदान करता है जो व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा किए गये क्षमता का रास्ता दिखाता है।

जब हम कई चुनौतियों को प्रस्तुत कर रहे हैं। यही अभी तक हमने जो प्रस्तुत किया है उसके साथ बंद कर दें तो हमारा दृष्टिकोण जो कुछ हद तक विकृत किया जा रहा है वह खत्म होगा। तीन से परी एक और चरण की हमने चर्चा की है, एक हमें जरूरत है आत्म्कि अंतदृष्टि को जिसे हमें गले लगाने की जरूरत है।

आने वाले युग में, परमेश्वर हमारे शरीर को बदलेगा और हमें उसके सामने सम्पूर्ण और पुरे हुए के रूप में नये शरीर के साथ प्रस्तुत करेगा।

> धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है(क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है। (याकूब 1:12)

जीवन की एक विशेषता, निरंतरता के लिए कामना करने के लिए लंबे समय के रूप में संभव और प्रजनन से अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए बहुत है। यद्यपि कुछ लोग यह सिखाते है कि मृत्यु सामान्य है यह बहुत ही असत्य है। यदि मृत्यु सिर्फ जीवन का एक और हिस्सा है तो अंतयेष्टि दुख से भरे घटनाओं से नहीं होगा।

हमारा आत्मिक जीवन उनके सम्पूर्णता और परिणति तक पहुंचने जब हम उसके सामने सही और पूर्ण रूप से इकाई के सामने परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा करते हैं। यीशु ने अपने अनुयायियों को जो हम इस पृथ्वी पर देखते हैं वह कहां है इस बात को ना सोचने के लिए उन्हें चिताया। पृथ्वी पर हमारा जीवन अनुभव से अधिक है। विश्वास के द्वारा रहना परमेश्वर की इच्छा समझने का मतलब इस पृथ्वी उसकी इच्छा को पूरी करने के लिए जो यह थोड़ा सा समय हमें दिया गया है। यह तब आता है जब हम अनंतकाल के प्रकाश में रहते हैं।

तो फिर हम सही अनुपात करने के लिए हमारे समय को शुरू करते है और पृथ्वी पर हमारी ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित कर सकते हो।

लम्बी अवधि के प्रशिक्षण

अनंतकाल की हमारी अवधारणा ना केवल हम अपने स्वयं को देखते है, लेकिन हम दूसरों को कैसे प्रशिक्षित करते हैं उसे आकार देती है बहुत ज्यादा परिप्रेक्ष्य के बिना समय बाहर चल रहाा है और अनंतकाल हमारी प्राथमिकता में हमेशा तिरछी हो जाएगी। यूहन्ना ने कैसे इसे कहा है कि मै उसे प्यार करता हूँ।

18 यह मेरा पसंदीदा बाइबिल वचन है।

> हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है। (1 यूहन्ना 3:2 - 3)

ध्यान दे यह आशा क्या होगी जब हमारे आत्मिक विकास कैसे होगा। विशेष रूप से पवित्रता के क्षेत्र में (लेकिन वह भी हमारे फल को आकार देता है) सच्चाई के बारे में हमारी स्पष्ट दृष्टिकोण तो हम इसके द्वारा अधिक आकार को प्राप्त करते जाऐगें।

परमेश्वर के लिए शहर की खोज

चरण # 3 परिपक्वता के बारे में कहता है लेकिन वह हमारा अंतिम लक्ष्य नहीं है। यह महज पृथ्वी पर एक पकड़ने वाली प्रथा है।

> क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं। क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है। क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करनेवाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से की गई। कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कहरती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। (रोमियो : 8: 18 - 22)

यह भविष्य परिवर्तन पृथ्वी पर सबसे अधिाक महत्वपूर्ण है के रूप में हमें सतर्क करता है जीवन के सारे सादृश्य जी उठने की सच्चाई से बदल रहा है। जीवन का केवल पृथ्वी पर रह कर हम क्या अनुभव करते है, लेकिन इसके द्वारा आकाशीत होकर और क्या होगा। वो महान आशा हमारे वर्तमान गतिविधियों और सपनों को प्रतिबिम्बीत करती है।

प्रत्येक विश्वासी को आने वाले परिवर्तन के आलोक में यहां पृथ्वी पर उसके जीवन में करने के लिए परमेश्वर क्या चाहता है संभावनाओं पर अच्छी तरह से उत्साहित किया जाना चाहिए। भविष्य के वादा की विशालता की तुलना में यहां परिवर्तन कम हो रहे हैं, लेकिन अभी भी महत्वपूर्ण है। हम नहीं कर सकते, हम साहस नहीं दिखाते। हालांकि हम अपने आध्यात्मिक जीवन और विकास को इस पृथ्वी पर कम करते है। नए जीवन में बिना, वहाँ अनंत जीवन नहीं हे। परमेश्वर के परिवार में शामिल होने के बिना, हम लगातार उसके परिवार के सदस्य नहीं हो सकते ।

हमारे प्रशिक्षण के लिए जवाबदेही

हमारे सांसरिक आध्यात्मिक विकास और यहाँ पृथ्वी पर फल का असर उसके अनुसार भविष्य में पुरस्कृत किया जाएगा जिसे परमेश्वर के बनाया। यह एक माप है जिसके हाथ विश्वासी का न्याय किया जाएगा जब यह जीवन समाप्त होगा। वह हमारे प्रयासों और भक्ति के द्वारा हमारी परख करेगा। परमेश्वर वास्तव में हमें क्या करना चाहिए था और क्या करना चाहिए इस बात की तुलना करेगा।

यीशु ने एक दृष्टांत में परमेश्वर की उम्मीदों के बारे में हमें याद दिलाया है। और उसने एक व्यक्ति को डांटने के द्वारा जिसने अपनी प्रतिभा को बचाया था इस बात से बंद कर देता है।

> ''उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और आलसी दास जब यह तू जानता था, कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां से काटता हूं और जहां मैं ने नहीं छीटा वहां से बटोरता हूं।(मत्ती :25:26)।
>
> पौलुस पहला कुरिन्थियों तीन में रोपण बीज और विकास की इस छवि का उपयोग किया है''लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं, परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा।(1 कुरि 3:8)।
>
> परमेश्वर उनके मानक के अनुसार हमारे कार्य के गुणवत्ता की जाच करेगें। हमारा नहीं हर एक का काम प्रगट हो जाएगा क्योंकि वह दिन उसे बताएगा इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा: और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है? जिस का काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो हानि उठाएगा पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते जलते (1 कुरि 3:13 - 15)।

परमेश्वर के आध्यात्मिक विषयों के साथ ही भविष्य के बारे में कई बातों और रहस्यों को उजागर किया है वहां अभी तक कोई शंका नहीं है। जीवन की परिपूर्णता और महिमा की कई बातें अभी तक प्रकट नहीं हुई है जिसने हम उसके वारिस बनेगें

वह उन्हें संकेत और भरोसा दिलाता है कि अभी तक वह युग आया नहीं जो आने वाला है (मरकुस :10: 29:30) (रोमियो : 8:21) यह सच्चाई हमें अतिरिक्त प्रेरणा प्रदान करती हैं इन शाश्वत सत्य के प्रकाश के साथ कहने के लिए हमारे प्रशिक्षण में हमें अनंत सत्यता के प्रकाश में ले चलती है।

जीवन के बाद सब नहीं है, ना केवल कुछ जो परमेश्वर हमारे जीवन में होने के लिए कारण बनाता है लेकिन हमारे स्वयं के प्रतिक्रियाओं के साथ कि परमेश्वर ने हमें क्या दिया है। हमारे पास एक महान प्रभाव हैकि अनंतकाल में हमारे साथ क्या होगा के द्वारा पृथ्वी पर रहकर हम क्या करते हैं और किस आत्मा के साथ करते है। यह संक्षिप्त वर्तमान जीवन हमारे अनंत भविष्य को आकार देती है।

कई बार हम अपने बच्चों के साथ बैठ जाते है। और पुरानी तस्वीरें या वीडियो देखते है पिछले निर्णयों की यादों को प्रकाश में लाते जो अतीत से दृश्यों पर हमारे निर्णय में कब्जा करते हैं। हम दस वर्षो की अवधि के लिए विदेश में रहने के लिए चुनते है। मेरी पत्नी और मैने भी अपने बच्चों के लिए घर पर ही स्कूल करने का फैसला किया, ये निर्णय हमोर बाद के जीवन में प्रतिबिम्बीत करता है और हमारे तस्वीरों पर - - - उनको आकार देने के लिए उनका प्रभाव पड़ा है। अनंतकाल भी ठीक उसी तरह हैं हमारे अनंतकाल के जीवन का सम्बन्ध हम इस समय में कर रहे हैं उससे सम्बंधित है।

हमारे अवसर

इस अध्याय में हमारा उद्देश्य वह है कि वहां अधिक से अधिक लक्ष्य हैं जो हमारे जीवन के लिए है और केवल हमारे ही विकास के लिए है यह इसी बात को हमें याद दिलाता है। हमें हमारे आसपास के लोगों के लिए या उन्हें प्रभावित करने के लिए जल प्राप्त करना चाहिए। मसीह के साथ घनिष्ठता के साथ सम्बन्ध रहने से फल प्राप्त होता है और यह ना केवल प्यार और प्रकाश हमारी दुनियां में लेकिन आकार देता है कि कैसे परमेश्वर अनंतकाल में हमसे कैसा व्यवहार रखेगें।

अवसरों की एक श्रृंखला के लिए पहली जगह हमें भौतिक और आध्यात्मिक जीवन अनुदान की एक जवाब देने के लिए जीवन के एक रूप में देखने के लिए सबसे अच्छा सिर्फ प्रतिज्ञा के पुरस्कार के ही लिए नहीं। जो वास्तव में एक प्रेरणा है, लेकिन उस आनंद का अनुभव हमारे आसपास में रहने वाले लोगों में देखते है। उसमें सफल हो जाते है। हम इच्छा रखते है कि वे हमें पसंद करते है यह परमेश्वर की एक झलक को पाना हो सकता है। गौरवशाली प्रकाश और जीवन में बदलाहट, मसीह में बढ़ना और उसकी संपूर्णता में अंत तक फल लाना और शानदार प्रभु और हमारे साथ अनंतकाल में अपने सांसरिक और आध्यात्मिक विकास का आनंद लेगें। (यूहन्ना 15:16)

यीशु के पास स्वर्ग और पृथ्वी का पुरा अधिकार है बस हमें चेला बनाने के लिए इसलिए कहा है क्योंकि इससे अच्छा कोई भी कार्य नहीं है कि दूसरों को प्रशिक्षित करके और परमेश्वर से प्यार करने के लिए और कोई महान कार्य नहीं है।

इसके पास हमारे लिए महान लाभ है कि यह यीशु ने वास्तव में क्या किया था (यशा: 53: 10-12) चेले बनाना हमारे आसपास के लोगों के कल्याण के लिए, और हमारे जीवन के लिए भी महत्वपूर्ण है और सीधे पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा को प्रभावित करता है।

ऐसा क्यों हैं कि कुछ ही लोग चेले बना रहे हैं, क्यें हम योग्यता, ज्ञान, उपस्थिति इत्यादि के साथ और इतने से छोटे जीवन परिवर्तन के इस अवधारणा के साथ लगे हुए हैं? हमारे जीवन में परमेश्वर की शान्ति की कमी के कारण हम हमारे आसपास के लोगों के जीवन में परिवर्तन के लिए हम तलाश कैसे करते है शायद ही हम इसके साथ सब कुछ कर सकते हैं।

शिक्षाएं

* पृथ्वी पर आध्यात्मिक विकास के तीन चरण है हालांकि वह अंत नहीं है। हम अधिक गौरवशाली अनंत चरण में एक पुनरूत्थान का अनुभव लोगों जैसा यीशु ने किया।

* हम पूरी तरह से हमारे जीवन में और श्रम के अनुसार आने वाले युग में पुरूस्कृत किये जायेगे। परमेश्वर के लोगों में भक्ति प्रशिक्षण के शिक्षा नहीं देने के कारण उनका परिणाम दुखद होगा।

* हम प्रशिक्षण में व्यस्त हो जाते हैं क्योंकि हमें परमेश्वर के लोगों को उनके संपूर्णता में बढ़ता हुआ देखकर और उनके विकास के द्वारा फल प्राप्त करने में सक्षम होगें जो उनके लिए बची हुई है।

मनन चिंतन

* 1 यूहन्ना: 3:2 – 3
* याकूब : 1:12

समनुदेशन : (असाइनमेंट)

➪ अनंतकाल प्रभु की सेवा के लिए आपके स्वयं की प्रेरणा और भक्ति को कितना अधिक प्रभावित करता है।

➪ मत्ती :28:18 – 20 मनन करें ; क्या आप सोचते है कि यीशु हमारे लिए इन्तजार कर रहा है कि हम चेले बनाए, जिससे वह अपनी पृथ्वी पर की शक्ति को खड़ा कर दें?

➪ उसके अधिकार प्रमुख रूप से आपके स्वयं के विकास और दूसरों के विकास के बारे में सोचते है? आपके प्रेरणा की योग्यता और उल्लास का आना दूसरों की सफलता को देखने के द्वारा आता है।

40

जीवन शक्ति

इस पुस्तक में हमारी चुनौती सर्वनाश और वास्तविक हे जो लगातार विशेष रूप से हमारे प्रशिक्षण के संबंध में, हमारे जीवन के दृष्टिकोण से प्रभावित करतीं है इतनी ज्वलंत होने के लिए इसे बनाया गया है।

हम सिर्फ एक मैदानीक तरीके से एक प्रक्रिया को नहीं देख रहे है जैसा एक जीव विज्ञानी करता है। एक जीव विज्ञानी केवल अपने प्रयोगों को देख सकता हैं। हम परमेश्वरके जीवन के लिए जो विचार रखा है उसका अनुभव करने के लिए बुलाए गए हैं उसका शोध करने के लिए नहीं।

शायद हमने भी धर्म शास्त्रियों, पादरियों, शिक्षकों और मसीही अगुवों के समान प्रतिबद्ध कब्र में त्रुटि को प्रतिबद्ध किया है हमने हमारी सेवा पर ध्यान केन्द्रित किया है लेकिन मसीह के भीतरी सशक्तिकरण पर थोड़ा ध्यान दिया हैं।

जीवन सत्व ने बार-बार कुछ महत्वपूर्ण सवालों पर ध्यान केन्द्रित किया है।

- ⇨ क्या हम उचित रीति में दूसरों को सेवकाई और सेवा के लिए तैयार कर रहे हैं?
- ⇨ क्या हमने ध्यान पूर्वक मुल्यांकन किया है कि अगुवों को प्रशिक्षित करने के लिए क्या करना है ?
- ⇨ क्यों हम धर्मी नेतृत्व की कोई उम्मीद को बर्बाद करते हैं जो उनके चरित्र को खराब कर देती है।

कोई बात नहीं कि हम किसी प्रशिक्षण केन्द्र से संबंधित है या किस स्थानीय चर्च में हम सेवा करते है, या हम कौन सी स्थिति या श्रेणी में है जो बात मायने रखती है वह यह है हम दूसरों को चेला बनाते है जिससे वे अपने जीवन के परिवर्तन का अनुभव करते है। ''मैं उपदेश, शिक्षण, परामर्श घर का दौरा करना सलाह, साक्षात्कार, जीवन परिवर्तन पर ध्यान केन्द्रीत करके एक से एक शिष्यता एक आसान तरीका है। जिसे हम एक स्थान पर देख सकते है कि क्या होगा।

अगर हम जो करते है वह इस जीवन को बदलने का उत्पादन नही करता तो हमे तुरंत जरुरी है कि हम उसे पुर्नगनणा करे कि क्या और कैसे करे चाहे यह हमोर जीवन के लिए हो या दूसरो के लिए। हम अपने स्कूलो,चर्चो और संख्याओं मे स्वयं पर गर्व कर सकते है, लेकिन लोगों को मसीह की छबि दर्शाने के बिना और दूसरों में मसीह के प्रेम व प्रकाश के नकल के बिना हमारा परिश्रम व्यर्थ है।

कार्यभार लेते हुए

हमारी चुनौति यह है कि दूसरों को तैयार करे जिससे वे दूसरो को चेला बनाने में तीन अलग चरणों का प्रयाग आत्मिक विकास के लिए करेगें। प्रत्येक विश्वासी इन तीनों स्तरो से गुज़रता है। और इसके द्वारा प्रभावी कार्य में परिवर्तन करके नयापन लाना और कार्यप्रणाली में भाग लेने पहिया बदलने और विकास के लिए इसके माध्यम से चले जाते है।

> "जिस का प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें। और इसी के लिये मैं उस की उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ"
>
> (कुलुस्सियों 1 :28-29)।

प्रत्येक स्तर पर विशेष रुप से सोचने के द्वारा कि परमेश्वर विश्वासीयों के जीवन में उस विशेष्र चरण में क्या कर रहा है, तो हम बेहतर जान सकते है कि हम परमेश्वर के साथ कैसे कार्य कर सकते है।

दुनिया भर के चर्च में शिष्यत्व की कमी के लिए मुख्य कारण यह है कि हम इच्छा को छुड़वाना चाहते है कि यीशु की आत्मा से हमे क्या करते है हमारा समाधान परमेश्वर के जीवन के साथ जो उसने लोगों को दिया है। परमेश्वर की इच्छा पर निर्भर करते हैं कि उस जीवन का विकास और उसके लोगों को बढ़ने के लिए उस विशेष तरीके में और उनके बीच भावना को बढ़ावा देने के लिए खोज करें की क्या परमेश्वर उनके जीवन से चाहता है कि वे दूसरों के साथ करें।

प्राथमिकता देने के लिए एक तत्काल आवश्यकता

महत्वपूर्ण सकारात्मक परिवर्तन तब ही आएगा जब हम अपने स्वयं के लिए और अपने संस्थाओं का ध्यान देते हैं और इस आत्मिक जीवन की प्रक्रिया को प्राथमिकता हमारे प्रशिक्षण में देते हैं। छात्रों और लोगों के साथ हमारे समय में इन महत्वपूर्ण अंतदृष्टि के लिए महत्वपूर्ण है।

यदि परमेश्वर के लोग नहीं बढ़ रहे हैं तो हम प्रशिक्षक के रूप में असफल रहे है। एक पौधा लगातार बढ़ता है आकार में बढ़ना और परिपक्वता के साथ फल उत्पादन करना और खुद को गुणा करना है। यदि एक पौधा बढ़ना कर देता है तो चौकस किसान यह जान जाता है कि यह नकारात्मक हैं बीमारी का चिन्ह हैं या पानी और पौषण की कमी का एक नकारात्मक संकेत है जो अंत में उसे मरने के लिए नेतृत्व कर सकता है।

परमेश्वर के लोगों को बढ़ने नहीं देने के कारण चर्च को एक बड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है। गुनगुनेपन की भावना एक साधारण जगह है समस्या मसीही प्रशिक्षण स्कूलों के द्वारा मदरसे और चर्चो के द्वारा संयोजित है जो उचित रीति से आत्मिक अगुवों का उत्पादन नहीं कर रही हैं ताकि जाने की कैसे उनके छात्रों को धर्मी रहने और परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध के लिए तैयार करें।

बिना विश्वास के की परमेश्वर दूसरों को उसकी परिपूर्ण में विकास के लिए बदल सकता है, तो वहां धर्मी प्रशिक्षण नहीं होगा। तब चर्च की कमी भक्ति का ढ़ोग करेगी और धार्मिकता जो मारती है और अपना ध्यान जीवन के लेखन और वास्तविक जीवन विकास जो सारे विश्वासीयों के जीवन में प्रकट होती हैं उस पर ध्यान केन्द्रित करती है।

जब हम पुन: देखते है कि परमेश्वर हममें क्या कर रहा है आत्मिक जीवन की प्रक्रिया के द्वारा और पवित्रता की शान्ति, तब हम देखेगें कि परमेश्वर का जीवन एक बार फिर हमारे बीच में पनपेगा। यह जीवन सत्व है, चर्च का डीएनए।

हम परमेश्वर के कर्मकार के रूप में खड़े है। और परमेश्वर हमारा अंतिम लक्ष्य के प्रकाश जहां ये प्रकाश को सहन करते है और परमेश्वर के प्रेम यह हमारा अंतिम लक्ष्य है।

> उसका महिमायुक्त नाम सर्वदा धान्य रहेगा(और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण होगी। आमीन फिर आमीन।।(भजन : 72:19)।

शिक्षाएं

* यद्यपि आत्मिक जीवन प्रक्रिया दृष्टि से छिपी हुई है, इसकी सच्चाई और विकास पथ परमेश्वर के द्वारा बनाया गया है। और शारीरिक विकास में संकेत दिया गया है।
* परमेश्वर के सभी लोगों के पास एक गंभीर दायित्व है जिससे वे अपने स्वयं के आध्यात्मिक जीवन के विकास के साथ-साथ उसमें अन्य लोगों का पोषण करते है।
* परमेश्वर के चर्च में अगुवे, हमें मसीह के आदेश की तात्कालीकता का पालन करना और हमारी प्राथमिकताओं और गतिविधियों का बदलाव करे, और निश्चित करे कि परमेश्वर के लोग आत्मिक रूप से बढ़ रहे है और सीख रहे है कि कैसे दूसरों की सहायता करें कि वे धर्मी पुरूष या स्त्री बनें।
* परमेश्वर हमारे साथ काम करने के लिए तैयार है और वो प्रयास करते हैं कैसे हमारे आत्मिक जीवन का पोषण करने, कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह असंभव सा लग सकता है। यह परमेश्वर की योजना है कि उसके लोग उसकी समानता में बढ़े और फल लायें और इस तरह धूमधाम से पृथ्वी पर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यह परमेश्वर का उद्देश्य है।
* परमेश्वर की सबसे अधिक महिमा होती है जब हम उसकी कृपा और उसके साथ के द्वारा, उसके समान और हमारे पिता की तरह बन जाते है, और वे हमारे अच्छे कामों को देखकर स्वर्ग में महिमा की जाती है। (मत्ती 5:16)

मनन चिंतन

कुलुसियो 1:28 – 29

समनुदेशन : (असाइनमेंट)

⇨ आप जहां हैं वहां से शुरू करें, संकल्प लें कि परमेश्वर की शक्ति को रिहा करने पर ध्यान केन्द्रित करें। आपके जीवन में आपके आसपास के लोगों में।

⇨ अपने खुद के दिल में वरीयता दी गई है कि अविश्वास के किसी भी क्षेत्र स्वीकार करें। उससे पश्चाताप करें। यहां कुछ सुझाव है। मुझे संदेह है कि ''कबूल है कि .....''

* परमेश्वर के लोग पुरी तरह से विकसित करने के लिए सक्षम है।
* परमेश्वर सक्रिय रूप से मेरे जीवन या दुसरों में अपने भव्य जीवन उद्देश्यों को पुरा करने के लिए काम कर रहा है।
* इस जीवन को बदलने में महत्वपूर्ण है।
* ये अपने जीवन के एक या एक से अधिक क्षेत्रों में बदल सकते हैं।
* परमेश्वर के मुख्य उद्देश्यों में आध्यात्मिक जीवन के पोषण के आसपास केन्द्रित होना चाहिए।

⇨ कुलिसियों 1:28:29 अपने शब्दों में लिखिए और इसे व्यक्तिगत बनाए।

⇨ अपने सर्वोच्च सम्मान बनाओ ताकि परमेश्वर को महिमा मिले उसके साथ कार्य करने के द्वारा लोगों की सहायता करने में आगे बढ़े और उसके उद्देश्यों को पुरा करें।

⇨ रोके और देखे कि प्रभु ने आपके मन में कोई तत्काल कदम रखना है उन्हें आपको लेने की जरूरत है। उनकी सूची बनोए और एक समय डाले और आप इसके कार्यान्वयन को शुरू करे।

परिशिष्ट

1-4

परिशिष्ट # 1: उत्कृष्ट शिक्षण के लिए मार्गदर्शन

जीवनसत्व के इस चित्र के पीछे दो मुख्य सिद्धांतों का सार है। चर्च शायद ही कभी विकास सादृश्य के साथ साथ जीवन सादृश्य की अंतदृष्टि को जोड़ती है और इसमें एक परिणाम के रूप में जीवंत जीवन और सेवकाई के लिए आवश्यक शक्ति और ध्यान केन्द्रित की कमी पाई गई है।

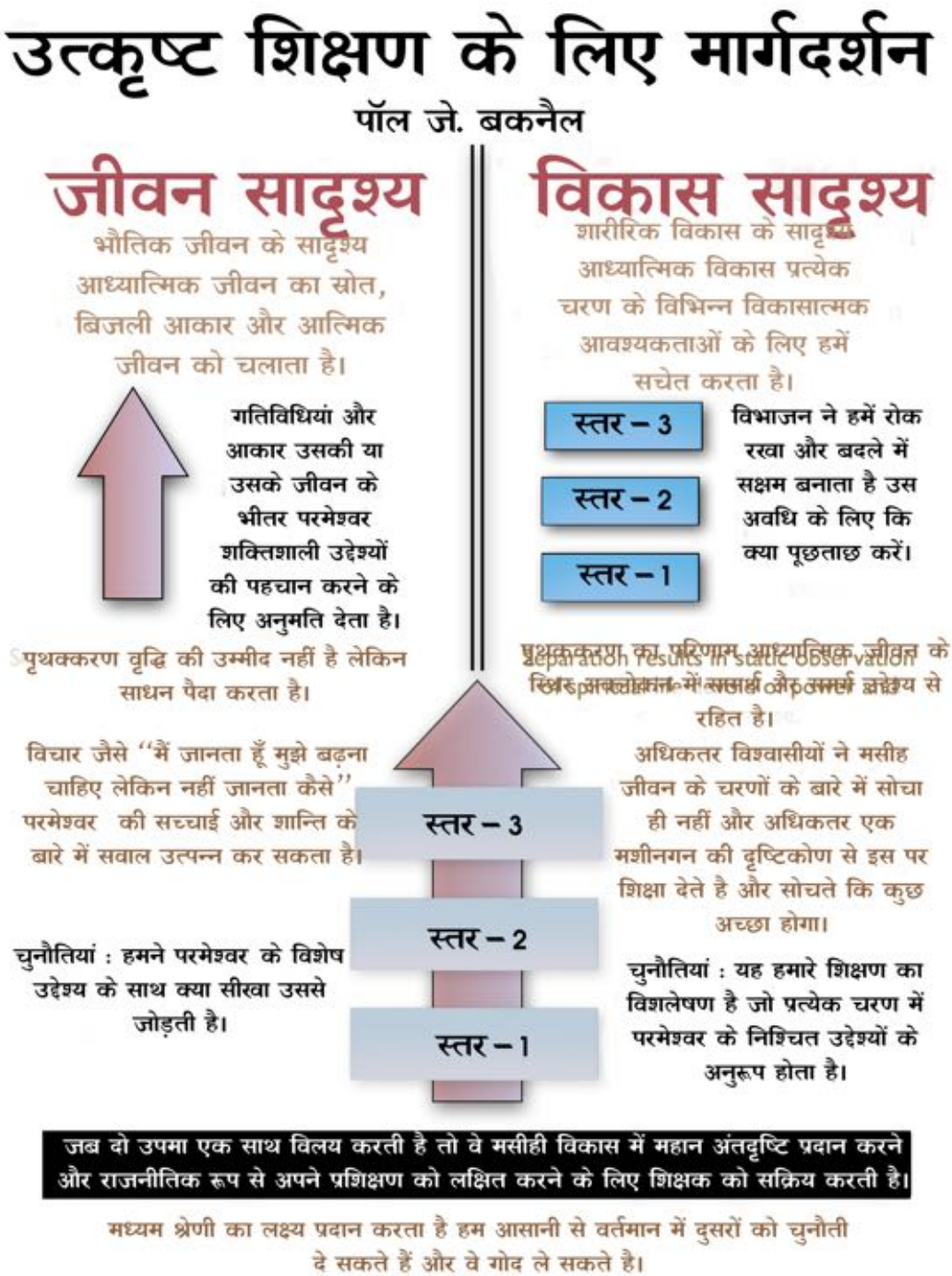

जब ये दो सादृश्य एक साथ मिलते हैं, तो उनके शक्ति की रफ्तार जीवन में आती है। वे मिलकर प्रभावशाली प्रशिक्षण की शक्ति को प्रस्तुत करते हैं और अधिक महत्वपूर्ण उत्साह को हमारे व्यक्तिगत जीवन और सेवकाई में लाती है।

परिशिष्ट – 2 जीवन की समानता

परमेश्वर को भौतिक दुनिया अक्सर आध्यात्मिक समझ के बारे में हमारी समझ को गहरा कर देते हैं। परमेश्वर सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सत्य को आश्चर्य जनक रूप से स्पष्ट करता है जब हम इन समानताओं का अध्ययन करते हैं जो वह हमारे जीवन के लिए देता है। यहां जीवन की चार समानताएं है।

1. जीवन का जन्म – बीज सादृश्य

आत्मिक विकास की शुरूआत

मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है(और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करता करेगा। युहन्ना 12:24.25

क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। 1 पतरस 1:23

2 जीवन का क्षेत्र- जीवन सादृश्य

आध्यात्मिक विकास के सिद्धांतों

जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है(परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोधा उस पर रहता है। युहन्ना 3:36

परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ। युहन्ना 20:31

3 जीवन का विकास - विकास सादृश्य

आध्यात्मिक विकास के चरण

हे पितरों, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि जो आदि से है, तुम उसे जानते हो: हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है: हे लड़कों मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि तुम पिता को जान गए हो। हे पितरों, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो: हे जवानो, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि बलवन्त हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है। 1 यूहन्ना 2:13 - 14

4. जीवन का परिवर्तन - परिवर्तन सादृश्य

आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य

परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को देह देता है(और हर एक बीज को उस की विशेष देह। सब शरीर एक सरीखे नहीं, परन्तु मनुष्यों का शरीर और है, पशुओं का शरीर और है(पक्षियों का शरीर और है(मछलियों का शरीर और है। स्वर्गीय देह है, और पार्थिव देह भी है: परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और हैं, और पार्थिव का और। सूर्य का तेज और है, चान्द का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, द्धक्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज मे अन्तर हैऋ। मुर्दो का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। 1 कुरिन्थियों 15:38 - 42

परिशिष्ट 3 : बहाव (प्रवाह)

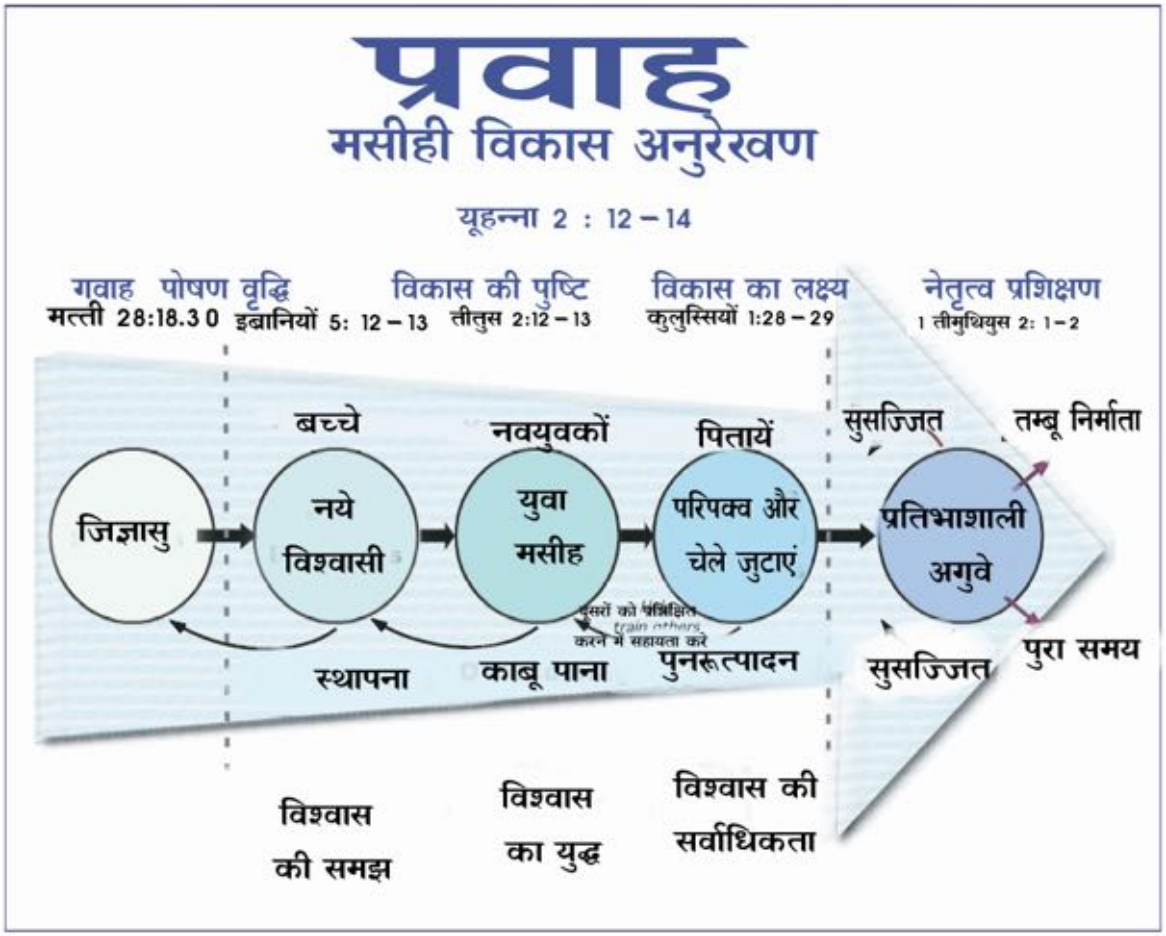

पॉल जे. बकलेल और ह्गोचेंग द्वारा

ऊपर दर्शाया गया चित्र का प्रभाव। यूहन्ना 2:12 – 14 में दो बातों की ओर आर्कषित करता है। 1. परमेश्वर के शक्तिशाली उद्देश्य के साथ–साथ लहर की गति। 2 तीन चरणों में परमेश्वर के तरीके से आत्मिक विकास में क्या हेाता है।

बिन्दीदास रेखा तकनीकी रूप से 1 यूहन्ना में दिखाई तस्वीर का हिस्सा नहीं है, लेकिन हमने दो वर्गो में इसे जोड़ा है, एक शुरूआत में और एक अंत में कि एक चर्च की पूरी तस्वीर या चित्र को दिखा सके। साधन के चरण वहां से परमेश्वर लोगों को उकसाता है कि वे उसको जाने। चित्र का अंतिम बिन्दु एक प्रवर्धन के रूप में कार्य करता है। जो तीसरे चरण के उपवर्ग में चर्च की दिशा को आकार देता है। सुसज्जित कार्यकरने वाले, पूर्णकालिक या नहीं, वे परमेश्वर लोगो को पुन: तैयार करने में अपनी शान्ति को लगाते है।

दिव्य जीवन दे रही नदी लगातार धर्मी चरित्र बनाने के लिए उनके लोगों में बहती रहती हैं और अच्छी उनको बढ़ते विश्वास के रूप में देखा जा सकता है। जितना अधिक वे विश्वास के माध्यम से परमेश्वर को जानते है उतने वे परमेश्वर के करीब रहते हैं और बेहतर रीति से अपने भव्य उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम रहते हैं। जो परमेश्वर के कार्य को महिमा देता है वह उसके पवित्र काम को स्थिर बनाए रखेगें। इस तरह के सच के अस्तित्व के पराक्रम से इस दुनियां में हमारे प्रभु के काम को अधिक–अधिक प्रतिक्रिया करने के लिए हमें जाग जाना चाहिए तब यह हो सकता है वह हमारे जीवन के शक्तिशाली और प्रशिक्षण दे सकें।

परिशिष्ट 4 : लेखक के बारे में

1980 दशक के दौरान पॉल ने मिशनरी के रूप में कलीसिया की स्थापना का कार्य किया और 1990 में उन्होनें पासबान के रूप में सेवकाई किया। सन् 2000 में परमेश्वर ने उन्हें बाइबिल पर आधारित स्वतंत्रता की नींव स्थापित करने के लिए बुलाया और उसके बाद से वह सक्रिय रूप से अंतराष्ट्रीय मसीही नेतृत्व प्रशिक्षण सेमिनार और स्थानीय कलीसिया में लेखक के साथ सेवारत रहे।

मसीही जीवन पर पॉल की विस्तृत श्रृंखला सामग्री :-

शिष्यत्व, धर्मी रहने वाले, नेतृत्व प्रशिक्षण, विवाह, लालन-पालन, चिन्ता, पुराना और नए नियम इत्यादि। आत्मिक जीवन के विषय उनकी ऐसी कई किताबें प्रशिक्षण सामग्री में मिश्रित है जो विशेष अंतदृष्टि प्रदान कराते है।

कलीसिया के जीवन शक्ति कि बहाली के लिए पथ के खोज

जीवन सत्व मसीही चर्चो में अंतनिर्हित कारणों अफवाहों कमियों और ठहराव कि पहचान करती है। और उचित प्रशिक्षण के माध्यम से चर्च के दिल में परमेंश्वर के जीवन को एककित्र करने के तरीके के बारे में व्यवहारीक समाधान का प्रस्ताव देती है

प्रभावशाली प्रशिक्षण की शूरुवात तब होती है जब प्रभु के दर्शन उसके कार्य और कलीसिया इस तरह से पारित होती है जब लोग परमेश्वर की इच्छाओं को पूरा करने के लिए स्वयं को तैयार करते है। परमेश्वर के लोगों को उनके चर्चो सेमिनारी स्कूलों और अगूवों को परमेश्वर की शक्ति को सत्यता के साथ परिवर्तन करना है, उनके जीवन को सुसज्जित करना है इन बातों के लिए सशक्तिकरण की आवश्यक्ता है। उसके बाद ही परमेश्वर के वचन की शक्ति जारी की जा सकती है।

रेव्ह. पॉल जे. बकनैल दूनिया भर के कई देशों में मसीही सेमिनारीयो में प्रशिक्षण देते है। और कई विषयों पर जैसे मसीही जीवन, शिष्यता ईश्वरीय जीवन बाइबल अध्ययन सेवकाई के लिए बुलाहट विवाह अभिभावक और चिंताओ जैसी कई पुस्तकों को लिख चुके है। पॉल और उनकी पत्नि लिंडा पित्त्सबर्ग पेंसिलवानिया यू.एस.ए के निवासी है और उनके आठ बच्चें और तीन नाती–पोते भी है। वे बाईबल कि नींव व आजादी के संस्थापक भी है, एक वेब आधारित सेवकाई दूनिया भर मे परमेश्वर की शक्तिशालि और जीवन बदल सत्य विज्ञाप्ति करता है।

ISBN 978-1-61993-026-1
9 781619 930261